

पाश्चात्य मध्ययुगीन राजनीतिक सिद्धांतों का इतिहास

लेखक
प्र० डब्ल्यू० कार्लाइल
तथा
ए० जे० कार्लाइल

खण्ड 4

दशम शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी तक की
साम्राज्य एवं पोप पद के सम्बन्ध
निर्णायक सिद्धांत

लेखक
ए० जे० कार्लाइल

अनुवादक
एम० पी० राय
अध्ययन राजनीतिशास्त्र विभाग राजकीय महाविद्यालय, गाँव



राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
जयपुर

प्रस्तावना

भारत की स्वतंत्रता के बाद इसकी राष्ट्रभाषा को विश्वविद्यालय शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रश्न राष्ट्र के सम्मुख था। किन्तु हिन्दी में इस प्रयोजन के लिए अपेक्षित उपयुक्त पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध नहीं होने से यह माध्यम-परिवर्तन नहीं किया जा सकता था। परिणामतः भारत सरकार ने इस न्यूनाता के निवारण के लिए वार्षिक तथा पारिभाषिक शतावली आयोग की स्थापना की थी। इसी योजना के अन्तर्गत १९६६ में पाँच हिन्दी भाषी प्रदेशों में ग्रन्थ अकादमियों की स्थापना की गई।

मध्य युग में पाश्चात्य देशों में राजनीतिशास्त्र के सिद्धांतों के विकास का जो इतिहास डा. ए. जी. कार्लाइल द्वारा लिखा गया है वह इस विषय का प्रामाणिक एवं विद्वान समाहित ग्रन्थ है। यह उसका चतुर्थ खण्ड है। भाषा है इसमें राजस्थान के अध्येता लाभान्वित होंगे।

प्रस्तुत पुस्तक इसी अम में तैयार करवाई गई है। इस पुस्तक की परिवीक्षा के लिए अकादमी प्रो. अम्बादत्त पंत अध्यक्ष राजनीतिशास्त्र विभाग प्रयाग विश्वविद्यालय प्रयाग के प्रति आभारी है।

खेतसिंह राठौड़

शिक्षा मंत्री राजस्थान सरकार एवं

अध्यक्ष राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर

गोपीकृष्ण यास

निदेशक

प्राक्कथन

इस ग्रन्थ में दसवीं शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के बीच पाप पद एवं साम्राज्य के सम्बन्ध विषयक सिद्धांतों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। मैन धार्मिक एवं लौकिक व्यवस्थाओं के सम्बन्धों एवं विरोधों के अधिक सामान्य विषय के विवेचन का प्रयत्न नहीं किया है। उनके कुछ पक्षों का विवेचन इस ग्रन्थ की प्रथम एवं द्वितीय पुस्तकों में किया जा चुका है तथा सम्भवतः इन पर हम अगली पुस्तक में पुनः विचार करेंगे किन्तु मैं अपने पाठकों को स्मरण दिलाना चाहता हूँ कि इस ग्रन्थ का विषय मध्ययुग का धार्मिक अथवा नागरिक इतिहास नहीं है किन्तु राजनीतिक सिद्धान्त हैं तथा हम लौकिक एवं धार्मिक सत्ताओं के सम्बन्धों पर उतना ही विचार करेंगे जहाँ तक वे इन सिद्धांतों के विकास को प्रभावित करने को प्रवृत्त होते हैं।

मैं वास्तव में नहीं समझता कि साम्राज्य रूप से इन सम्बन्धों का उतना ही प्रभाव राजनीतिक सिद्धांतों पर पड़ा है जितना प्रायः सुझाया जाता है। मध्ययुग की महान् राजनीतिक अवधारणाएँ जैसे विधि की सर्वोच्चता समाज की सत्ता शासक एवं शासित के बीच सांविधिक सम्बन्ध दोनों सत्ताओं के सम्बन्धों के प्रश्नों से मात्र प्रासंगिक रूप से ही प्रभावित थे। तथापि मेरे विचार में हमारे द्वारा ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दी में साम्राज्य एवं पाप पद के सम्बन्धों का एक सम्पूर्ण पुस्तक में विवेचन करने का हमारा कार्य दो कारणों से उचित है। प्रथम इस कारण से कि दो सत्ताओं द्वारा जिनमें एक लौकिक एवं दूसरी धार्मिक है मानव समाज के नियंत्रण का सिद्धान्त उस विकास का प्रतिनिधित्व करता है जो प्राचीन एवं आधुनिक जगत् का विशिष्ट विभेद है। दूसरे इस कारण से कि कभी कभी यह सोचा जाता है कि मध्ययुग में धार्मिक जीवन की स्वतंत्रता का अथवा धार्मिक सत्ता की सर्वोच्चता समझा जाता था। मैं इस पुस्तक में इस सम्पूर्ण विषय के विवेचन का दावा नहीं करता। अगली पुस्तक में हम तेरहवीं शताब्दी में इसके विकास को प्रदर्शित करने की आशा करते हैं। मैं इस पुस्तक में यह विचार करने का प्रयत्न किया कि ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दी के महान् सघर्ष से कौन कौन से प्रश्न उठे तथा इस समय में सर्वोच्चता के सिद्धांतों के स्वरूप तथा विस्तार के बारे में हम किन निष्कर्षों पर पहुँचे।

मैं कायस बॉलिंग केम्ब्रिज के श्री जेडब्रक के प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिनमें इसके प्रूफों को पढ़ा तथा जिनके सशोधनों एवं सुझावों के लिए मैं अत्यन्त आभारी हूँ यद्यपि इस विषय के विवेचन के अंतिम स्वरूप अथवा इसमें व्यक्त निराशा के लिए उनका कोई दायित्व नहीं है। मुझे यहाँ यह आशा व्यक्त करने की अनुमति दी जाय कि शीघ्र ही उनके द्वारा किया गया रेगोरी सप्तम का अध्ययन हम सबको सुलभ हो सकेगा।

मैं प्रोफेसर माटो पान गीक के अष्ट ग्रन्थ विवेचन स्वर्गीय प्रोफेसर मैटेनेण्ड द्वारा अनुसूचित ग्रन्थ के प्रति निरन्तर आभार व्यक्त करता हूँ। मध्ययुग के विशाल साहित्य पर काय करने का प्रयास करने वाले ही इसके चिरस्मरणीय विवेचन का महत्त्व तथा उसमें अत्यन्त प्रासंगिक रूप से भी लिये गए उल्लेखों की यथावधिता का अनुभव कर सकते हैं। मैं स्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दी के विद्यादास्यद साहित्य के प्रोफेसर मिंट द्वारा किये गए अष्ट एवं विस्तृत अध्ययन *Die Puschizistic im Zeitalter Gregors VII* के प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त करना चाहूँगा। तथा मैं जिनतापूर्वक मध्ययुग के धार्मिक इतिहास के एक सब अष्ट विद्वाद् लाहेर्जिग व प्रोफेसर हात्र के ग्रन्थ के प्रति आभार व्यक्त करना स्मरण रखूँगा। दुर्भाग्य से जिनका इन धीरता भरे बठिन वर्षों में देहावसान हो गया है।

धोसकोई दिसम्बर 1921

विषय-सूची

भाग एक

900 ई० से 1076 ई० तक धार्मिक एवं राजनतिक सत्ता के सम्बन्ध मे

प्रथम अध्याय

धार्मिक एवं राजनतिक सत्ता की अ-यो-याति-याप्ति ।

इस पुस्तक की विषय वस्तु दसवीं शताब्दी तथा बारहवीं शताब्दी में लौकिक राजाओं का पक्ष की परिषदों में योगदान दूसरे लौकिक यक्तियों का योगदान लौकिक मामलों की नियुक्ति में पोप तथा बिशपों का योगदान ।

द्वितीय अध्याय

दसवीं तथा बारहवीं शताब्दी में पोप का चुनाव 7

898 ई० में पोप के निर्वाचन के सम्बन्ध में रोम की परिषद के विद्यमान 962-64 में रोम में ऑटो प्रथम का काय लियो अष्टम का निर्वाचन ऑटो प्रथम के विरोधातिहार आदो तृतीय के काय एव दावे मर्सबर्ग के पीटमार की आनोवता सुजी में हेनरी का कार्य लोत्र के वाग्नो का दृष्टिकोण तथा डी बारबोने डो पोटीपीस की आलोचना पीटर डेमियन तथा कार्नेल हुम्बर्ट का दृष्टिकोण लियोनवम् के निर्वाचन की परिस्थितियाँ बिक्टर द्वितीय तथा स्टीफेन नवम् का निर्वाचन निमोजन न्तीय का निर्वाचन तथा पोप पब क निर्वाचनो के सम्बन्ध में उसकी घोषणा ।

तृतीय अध्याय

1075 ई० तक बिशपो की नियुक्ति 15

हमके विभिन्न ढाँचो के विषय में सामान्य मतस्य कुछ पेशको गारा पालरियो तथा जनता गारा निर्वाचन पर मत अन्य पेशको द्वारा लौकिक शासक के योगदान पर बब गेरब्रे का मत पीटर डेमियन का मत कुछ विशेष नियुक्ति के आहारण विशेषतया सीज के बचो की नियुक्ति बिशपों की नियुक्ति में पोप का स्थान ।

चतुर्थ अध्याय

लौकिक एवं धार्मिक सत्ताओं की सापेक्ष गरिमा 24

लौकिक सत्ता की तुलना में धार्मिक सत्ता की उत्कृष्ट गरिमा लौकिक मामलों में पादरी के लौकिक सत्ता के अधीन होने की स्वीकृति पीटर डेमियन धार्मिक मामलों में लौकिक सत्ता का स्थान स्वीकार

करता है किन्तु धार्मिक सत्ता के उन्मत्त और पर हत वेदा है प्रत्येक सत्ता के पुनरुत्थन कायों को स्वीकार करता है ।

भाग दो अधिष्ठापन विवाद

प्रथम अध्याय

धर्म विवाद

30

धार्मिक एवं लौकिक अधिकाधिकों के सामान्यपूर्ण सम्बन्धों में परिवर्तन तथा अपने कारण स्यारनों शशास्त्री में धर्म-विषय में बुद्धि रोमो-जम ग्रेबर कार्डीनल हम्बर्ट हर्सेरेट के लेखों जियो नबू द्वारा उनके समय के उपाय लौकिक कायों को करने की शक्त के कारण मनुष्यों की विषय पर विधिक के उन्मत्त बलिाहरी ।

द्वितीय अध्याय

अयाजकीय प्रतिष्ठापन का निपट

37

हेनरी तृतीय की मृत्यु के बाद लौकिक अधिकाधिकों का धर्म-विषय से सम्बन्ध इसके कारण पाठ के राजा के बिना बटोर जपानों के सफलत्व का प्रेयोरी बन्धन का निर्णय धार्मिक बनों पर विधिक के सम्बन्ध में लौकिक अधिकाधिकों के स्थान पर विवाह का प्रारम्भ कार्डीनल हम्बर्ट तथा पीटर केमियन का मत प्रेयोरी मज्जम द्वारा 1079 ई तक के पत्रों में किसी सीमा तक योगदान का निवेद्य नहीं दण्ड एवं मुक्त के प्रतिष्ठापन का प्रकल-कार्डीनल हम्बर्ट विधान नगर का प्रथम सभी गृहस्थ प्रतिष्ठापनों के निवेद्य के विषय में प्रेयोरी मज्जम की घोषणा 1078 ई व 1080 ई में निवेद्य की पुन उष्टि ।

तृतीय अध्याय

प्रतिष्ठापन प्रश्न पर वाद विवाद (1)

47

ट्रीवर का वेनेरिच वेरेरा का बिरो विषय की धार्मिक एवं लौकिक विषय में विरोध करता है मैनेगोड का दावा कि पादरियों एवं ज्ञान के निर्वाचन के बिना किसी भी विषय की विधिक नहीं हो सकती लौकिक अधिकाधिकों द्वारा मुक्त के प्रतिष्ठापन का विरोध कार्डीनल ब्रूहकेट द्वारा इस कल्पना का अर्थन कि राजा स्वयं से विधिक कर सकता है पीटर निकोलस द्वितीय की घोषणा की व्यवस्थाओं का अर्थन कि विधिक के विषय में पीटर मज्जम के सम्बन्धित ल करने के पानी क विषय में निर्वाचन के सिद्धान्त का उपयोग सक्षेप ।

चतुर्थ अध्याय

प्रतिष्ठापन प्रश्न पर वाद विवाद (2)

54

मध्यकालावदी इन्फिक्वेट का विचार पापेन का द्वितीय गृहस्थ द्वारा प्रतिष्ठापन का निवेद्य एक प्रशासनिक नियम अर्थ का विधान नहीं केनैटरी का ह्य व विचारकों तथा मज्जम दोनों के अधिकाधिकों को स्वीकार करता है जिसे लौकिक सम्पत्तियों के प्रतिष्ठापन करना चाहिए दण्ड अथवा मुक्त के नहीं

ट्रुनेटस दे इन्वेस्टी पर एपिस्कोपोरम -लौकिक सम्पदाओं के सम्बन्ध में लौकिक सत्ताओं का प्रतिष्ठापन का दावा नेटोगो का ग्रेगोरी गृहस्थ द्वारा प्रतिष्ठापन लौकिक सम्पदाओं के विषय में ही ह्यूब का रेनजेटियम मुदा एव दण के बारे में समझौता रहित सन्धि ।

पचम अध्याय

पस्कल द्वितीय तथा हेनरी पचम

61

पस्कल एव इंग्लैण्ड में प्रतिष्ठापन प्रश्न का निष्पत्ति 1106 ई. से 1110 ई. तक हेनरी पचम से समझौता बार्ता हेनरी पचम पटली में पारस्परिक प्रतिष्ठापन लौकिक सम्पदा का चर्चा द्वारा समर्पण प्रतिष्ठापन के अधिकार का सम्राट द्वारा समर्पण अभिषेक के निम्न जारी की जाने वाली पस्कल द्वितीय की घोषणा हेनरी द्वारा बहु सम्बोधित पत्र द्वारा बार्ता एव अपने दृष्टिकोण का वर्णन समझौते के प्रयत्न की विफलता पस्कल का बन्दी बनाया जाना तथा प्रतिष्ठापन के अधिकार को मान्यता देना पस्कल का विशेषाधिकार पत्र ।

षष्ठ अध्याय

पस्कल द्वितीय के कार्यों एवं प्रस्तावों पर विचार

70

पस्कल द्वितीय के आरम्भ समर्पण पर चर्च का विन्नेह सेगनी का बर्नो वेण्नेम का गार्डफ मध्यस्थता वादी प्रवृत्ति की निरन्तरता पाट्रस का र्वो तथा डिस्पूटियों वेग विन्नेसियो वेबनरिस पेपी मोनमत्रुला के प्लेसीडस द्वारा स्कल के आरम्भ समर्पण की निन्दा इसकी स्वीकृति कि दूसरे साधारण व्यक्तियों के समान राजा का भी व्यक्ति में स्थान है य प्रस्ताव कि अभिषेक के पश्चात् बिशप चर्च की सम्पदा के विषय में राजा से अधिकार प्राप्त कर सम्पदा का स्वप्न कि चर्च की को सम्पदा नहीं है ।

सप्तम अध्याय

वाम्स का समझौता

76

पस्कल द्वितीय हेनरी पचम को दी गई सुविधाओं का निषेध करने को बिदश पस्कल द्वितीय की मर्यु विन्नेसियम द्वितीय का निर्वाचन तथा उसकी मर्यु चालोस के बिष्प तथा बनुनी के एवट द्वारा स्ट्रासबर्ग में समझौता बार्ता माउरन की बार्ता की विफलता रोम्म का पोप परिषद में मतभेद वेडोम के गार्डफ के दृष्टिकोण का परिवर्तन एगो मेटेल्स तथा ह्यनाम्ब चार्मन राजकुमारों का हस्तक्षेप केनीवमटस द्वितीय तथा हेनरी पचम की समझौता बार्ता वाम्स का समझौता तथा उनकी व्यवस्थाएँ सन्धि ।

भाग तीन

पोप पद एवं साम्राज्य का राजनतिक सघष

प्रथम अध्याय

अगोरी सप्तम की स्थिति तथा दावे

88

नवीं शताब्दी में विन्नेसियन विद्वानों का पुन कथन एवं परिवर्तन लौकिक सत्ता की बुनना में

धार्मिक सत्ता की श्रद्धा की कल्पना रोडोलास ग्रेगर पीटर हेमिडन कार्डीनल ह्यूबर्ट हेनरी
 सुनीय की मनु के बन्धी नई परिस्थितियाँ ग्रेगोरी सप्तम की मन्त्रीयों की मध्यवस्था
 के लिए अनरुधी लौकिक सत्ता पर आक्रमण प्राप्त के सम्बन्ध में इस नीति का विनाश राजा को
 घम बहिष्कृत तथा परव्यक्त करने की सम्वत् 1073 ई से 1076 ई तक हेनरी चतुर्थ तथा
 ग्रेगोरी सप्तम के सम्बन्ध हेनरी चतुर्थ तथा बोम्बे की परिशुद्धता ग्रेगोरी सप्तम की पञ्चुति
 विगाओं तथा हेनरी चतुर्थ के पत्रों में उसने कारणों का विवेचन ग्रेगोरी सप्तम द्वारा हेनरी चतुर्थ
 का घम बहिष्कार तथा पञ्चुति हेनरी चतुर्थ तथा ग्रेगोरी सप्तम के पत्रों में अपने कार्यों का समर्थन
 जर्मनी में हेनरी चतुर्थ की सत्ता का अंत हेनरी द्वारा कैथोलिक आत्म समर्थन तथा उसकी
 मृत पोरगीम में हटोप का निर्वाचन हेनरी तथा हटोप के प्रति ग्रेगोरी की नीति
 ग्रेगोरी सप्तम तथा हेनरी चतुर्थ के बीच अन्तिम विपन्न हेनरी का घम बहिष्कार तथा पञ्चुति
 ग्रेगोरी के पत्रों का रूपन ग्रेगोरी सप्तम की विरोगेन म पञ्चुति विरोधी रूप पूर्व का निर्वाचन
 ग्रेट्र के हर्मन् की आन कार्यों का समर्थन करने हुए ग्रेगोरी का पत्र हटोप की मनु
 ग्रेगोरी सप्तम का परनाऊ के अन्तमान को पत्र ।

द्वितीय अध्याय

ग्रेगोरी सप्तम के कार्यों एवं दावों का विवेचन (1)

110

1076 ई से 1080 ई के बीच विवेचन काउन्सिल का बर्नार्ड तथा बर्नार्ड साइप्रस का
 गेबार्ड सपर्व का कारण घम बहिष्कृत व्यक्ति के सम्बन्धों के सिद्धान्तों की शक्यता का तथा ग्रेगोरी
 सप्तम का बोम्बे म पञ्चुति की बनावट है द्वीयर का वेनेरिष राजाओं को पञ्चुति करने के ग्रेगोरी
 सप्तम के दावों का अन्त करता है पीटर वेस्तम दिना मू देम के सिमकारियों पेरीए
 रेजिस में पोप के निर्वाचन में सम्राट के अधिकार का प्रतिपादन बोडनाइस के विरोध द्वारा पोप के
 निर्वाचन में सम्राट के अधिकार का प्रतिपादन तथा ग्रेगोरी द्वारा प्रजओं को निष्ठा की शपथ से मुक्त
 करने की निन्दा काउन्सिल का बर्नार्ड गार्बर वेनोनम बन्धा हेनरीसम बर्नार्ड मेनेगो-गारा
 ग्रेगोरी के कार्यों का सर्व गान समर्थन बोनीजा ह्यूरा का ए मलय बर्नार्ड-वेरेरा के
 विरोध द्वारा पन्ने ग्रेगोरी के अन्तिम एवं कार्यों का समर्थन वा में उसने मृत का अन्त डी सुनीय
 एकनीसिया कसरेवेदा राजाओं के घम बहिष्कार तथा पञ्चुति के इष्टानों की सर्व पूर्ण परीक्षा
 जिनेसियन सिद्धान्तों का सर्व पूर्ण रूपन पोप

तृतीय अध्याय

ग्रेगोरी सप्तम के कार्यों तथा दावों का विवेचन (2)

131

1085 ई में ग्रेगोरी सप्तम की मनु से लेकर 1105 ई में हेनरी चतुर्थ की मनु तक की ऐतिहासिक
 घटनाएँ कार्डीनल ह्यूमबेर्ट द्वारा लौकिक सत्ता की पुषक एवं दबी स्वीकृति किन्तु धार्मिक कानूनों
 की प्रधानता पर बल गेम्बलास के सीजबर्ट द्वारा उन स्थितियों का समर्थन जो हेनरी चतुर्थ के प्रति
 निष्ठा की शपथ से वे हैं पोप द्वारा ईसा के लायस का विरोध पेनेउरी के ह्येन गारा लौकिक सत्ता के
 पापपूर्ण अन्त का प्रतिपादन करने वाले ग्रेगोरी सप्तम के शासन का अन्त तथा इनका प्रतिपादन
 कि राजा पिता ईश्वर की प्रतिमूर्ति हैं तथा बिषय ईसा की किन्तु बिषय के पन् की परिभा उन्वत्तर हैं
 राजा के घम-बहिष्कार के अधिकार की स्वीकृति किन्तु पञ्चुति के ग्रेगोरी के दावों का अन्त
 डुन्टेस ह्योरेसेन्स राजा ईसा क दबी रूप का प्रतिनिधि है पुरोसिण मानवी रचन का केटीना
 का ग्रेगोरी राजा चर्च का अन्वय है नोनवत्सा का प्लेसीडस कान्स्टैटान के दान का चर्च
 पद बनावट है कि कान्स्टैटान के पश्चिम में पोप की सम्पूर्ण राजनैतिक सत्ता सीप दी वेन्डोम का

वाक्य कहता है कि लौकिक सत्ता का उगम देवी है तथा धर्म बहिष्कार के बुद्धिमत्ता हीन प्रयोग में खतरे हैं। आगसवय का होनोरियस मानता है कि ईसा ने केवल धर्मसत्ता को बनाया राजसत्ता को नहीं जो चर्च की शासन की। कान्स्टेन्टाइन के दान का अर्थ पोप को सभी राजनतिक सत्ता सौंपना धार्मिक सत्ता राजकीय सत्ता की स्थापना करती है तथा उसे आदेश देती है। लौकिक सत्ता के पापपूर्ण उगम क वाक्य एक दवी सम्था है पोप तथा सभी पापारी लौकिक विषयो मे उमके अधीन हैं राजा चाहे धर्मोनी नानिक एव धर्म मे पूट डालने वाला हो तो भी धर्मपूर्वक सहन किया जाए सक्षेप ।

चतुर्थ अध्याय

पोप पद की सामन्ती सत्ता का विकास

152

ग्रेगोरी सप्तम क ताकानिक पूर्वाधिकारियों - समय से महत्वपूर्ण बनी निम्नोत्सर्गिणीय तथा दक्षिण इटली क सिसनी क नारमनो क सम्बन्ध एनेन्जेन्डर द्वितीय तथा विरेठा विनियम ग्रेगोरी सप्तम तथा दक्षिण इटली के नारमन स्पेन ह्वरी रुस डेनमार्क बालिका बालमेथिया सेक्यनी=प्रोवेस पसाऊ क अठमान को पत्र तथा जर्मन साम्राज्य ।

भाग चार

घन एव साम्राज्य 1122 ई० से 1177 ई० तक

प्रथम अध्याय

फ्रडरिक प्रथम तथा पोप पद

157

बाइस का समझौता तथा तीस वषों तक साम्राज्य एव पोप पद क बीच शांति समझौते की शर्तों का पूर्ण तक पालन हुआ 1152 ई से 1157 ई तक पोपो एव फ्रडरिक प्रथम क सम्बन्ध 1153 ई मे कासटेन की सधि हेन्रियन चतुर्थ तथा नारमनों क बीच 1156 ई मे वेनेवेण्टम की सधि हेन्रियन क पत्र के कारण हेन्रियन चतुर्थ एव फ्रडरिक प्रथम मे सघप जिसमें साम्राज्य को पोप क अधीन सामन्ती पद माना गया था हेन्रियन तथा फ्रडरिक के बीच पोप की कुछ माँगो पर सघप एनेन्जेन्डर तृतीय तथा विक्टर का 1160 ई में विवादास्पद निर्वाचन फ्रडरिक द्वारा हमक नियम क लिए पवित्रों की परिषद् का आवाहन परिषद् द्वारा विक्टर के पद में नियम 1177 ई तक साम्राज्य एव पोप पद क बीच विवाद ।

द्वितीय अध्याय

सलिस्वरी का जान

169

धार्मिक सत्ता तथा कानून की लौकिक सत्ता पर व्यष्टता का प्रतिपादन-दो तलवारो क सिद्धान्त का प्रतिपादन जो दोनों चर्च की हैं सत बनाई तथा सत विक्टर क ह्यज क लेखों मे समानताएँ दोनों सत्ताओं के सम्बन्ध में उसकी मान्यता की आगमवय के होनोरियस से तुलना चर्च क पोप शासन मे विद्यमान लोभ तथा दूसरे दोषो की उसका द्वारा कटोर निदा ।

तृतीय अध्याय

राजसम्राज्य का गेरहोह

175

उस राज्य का ऐसे प्रति की रक १ क रूप में महत्त्व को दोनों मरणाक्षी में सन्तुलन रक्षता है। वर्ष की शीतक सम्पत्ति एवं मरणा क नियम म क्रिया ३ आन्तक का यह प्रारम्भिक प्रयोग में गेरहोह वर्ष द्वारा शीतक सम्पत्ति क धारण क शीतक पर संदेह करना है कुछ बाद में वह उसे स्वीकार कर लेता है। बाद में वह परम शिरो मरणा सम्पत्ति क सम्पत्ति का प्रस्तुत होने का विवरण देता है तथा वर्ष द्वारा उसके धारण को शीतक पर मदे करता है। 1151 ई. के मान गए उसके राज्य में पोप द्वारा राजा को धर्म-बहिष्कृत एवं पम्पन करने के अधिकार को मानना देता है किन्तु शीतक मरणा के एक धार्मिक सत्ता को पुनः अस्तित्व को स्वीकार करना है। उसका उत्तरवालीन राज्य में ५ शकिक प्रथम तथा एनेक्नेण्डर मृतीय के मरण का विवरण है। निर्वाचन की परिस्थितियों का विवरण उसकी शायनी अतिशयता यह भी सा प्रतीत होता है कि तबल सामान्य परिपन् ही इसका निर्णय कर सकती है—=पौर के दायित्व की नीति की निम्न विशेषता साम्राज्य पर राजनैतिक अधिकार को। 1166-67 में बाकीनों को सम्बोधित उसका 'राज एनेक्नेण्डर मृतीय को पोप मानता है किन्तु धीन करता है कि वे सम्राट के विरुद्ध पंडित क आरोप से पोपपद को मुक्त करें उसके अन्तिम राज्य में वर्ष तथा रोम दोनों क प्रति निष्ठा।

चतुर्थ अध्याय

उपसंहार

192

मानव समाज में शीतक एक धार्मिक विधि मरणा को बलना। वहाँ तक वास्तव में एक सत्ता दूसरी में हस्त ले करती थी। कर्ना तक एक पर दूसरी की उत्पत्ति का निम्नलिखित विवरण द्वारा स्पष्ट है तदा बारहवीं शताब्दी की वास्तविक परिस्थितियों में इन विद्वान्त का क्या मन्त्र रहा।

Texts of Authors Referred to in Volume IV

201

Index of Names Referred to in Volume IV

206

प्रथम भाग

900 ई० से 1076 ई० तक धार्मिक एवं राजनतिक
सत्ता के सम्बन्ध मे

प्रथम अध्याय

धार्मिक एवं राजनैतिक सत्ता की अन्योन्यातिव्याप्ति

इस ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में हमने नवी शताब्दी के धार्मिक एवं राजनतिक सत्ताधारियों के सम्बन्धों के मुख्य सिद्धांतों एवं विशेषताओं पर विचार करने का प्रयत्न किया तथा इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यद्यपि यह स्पष्टतया सोचा गया कि इन सम्बन्धों का नियामक सिद्धान्त यह था कि प्रत्येक सत्ता अपने अपने क्षेत्र में दूसरा से पूर्णतया स्वतंत्र एवं सर्वोच्च है वास्तविकता में यह सम्बन्ध अत्यन्त जटिल थे एवं यद्यपि इस सिद्धान्त से असंगत दिव्यता देते थे। वास्तव में राजनतिक सत्ता धार्मिक क्षेत्र में निरन्तर अधिक प्रभावशाली थी और धार्मिक सत्ता राजनतिक क्षेत्र में निरन्तर अधिक नियंत्रण करती थी। यद्यपि सिद्धान्त पर्याप्त रूप से सुस्पष्ट था किन्तु पूर्णतः सिद्धान्त पर आधारित व्यवहार करना निश्चय ही अत्यन्त कठिन था। सम्राट या राजा प्रायः अपने आप को ऐसी स्थिति में पाता था कि उसका कर्तव्य इस बात को स्वीकार करना था कि चर्च के धार्मिक अधिकारी अपना कर्तव्य निर्वाह ठीक से कर रहे हैं अथवा नहीं और इसलिये यथायत्न रूप में धार्मिक विषयों में उसको अनिर्धारित होने हुए भी व्यापक अधिकार प्राप्त थे। दूसरी ओर धार्मिक अधिकारी भी अनेक बार लौकिक विषयों में आदेश एवं निर्देश देने में प्रवृत्त होने थे।

जनता द्वारा गृहीत सिद्धान्त मुनिश्चित एवं देखने में सरल थे किन्तु दोनों महाद्वय सत्ताधारियों के वास्तविक सम्बन्ध अत्यन्त जटिल थे। तथापि समग्र रूप से यह कहना कठिन नहीं है कि इन जटिलता के होने पर भी दोनों सत्ताओं में गम्भीर सघर्ष अथवा विरोध नहीं था।

2 पाश्चात्य मध्ययुगीन राजनीतिक सिद्धांतों का इतिहास

इस सण्ड में हम इस बात का विचार करेंगे कि ये अपेक्षाकृत ज्ञान परिस्थितियाँ किस प्रकार उत्पन्न हुईं तथा पोप ग्रेगोरी सप्तम (Gregory VII) के अभियेक के वर्ष 1073 ई० से लेकर 1303 ई० में पोप बोनीफेस अष्टम (Boniface VIII) की मृत्यु तक उगमगदो से पचास वर्षों में पश्चिमी यूरोप साम्राज्य एवं पोप पद के महान् संघर्ष की शुरुआत से स्तब्ध हो गया जबकि दूरे पश्चिमी देशों में भी राजनैतिक एवं धार्मिक सत्ताओं का संघर्ष स्वरूप की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं होने पर भी स्वभावतः किसी प्रकार में कम गम्भीर नहीं कहा जा सकता। इस सण्ड में इन्नासेन्स तृतीय (Innocent III) के अभियेक की तिथि (1198 ई०) से आगे इस विषय पर विचार नहीं करेंगे क्योंकि उनके अधिकारी होने से पश्चात् सत्ता सम्बन्धों में एक नया परिवर्तन आया जिस तरहवा शताब्दी के शुरुआत में एवं परिस्थितियों के सम्बन्ध में ही अध्ययन करना चाहिए।

हम यह देखना है कि (1) यह महान् संघर्ष किस प्रकार प्रारम्भ हुआ (2) इस प्रश्न का यथाथ स्वरूप एवं संघर्ष के आधा-भूत सिद्धांत क्या-क्या थे एवं (3) बारहवीं शताब्दी में धार्मिक या स्थायी रूप से एक समाधान के लिए क्या-क्या उपाय किए गए? सर्वप्रथम हम यही विचार करना होगा कि यह महान् संघर्ष कैसे प्रारम्भ हुआ क्योंकि इतिहास के अर्थ स्थानों से गतिवत् नहीं पर निश्चित रूप में यह कहा जा सकता है कि किसी स्थिति की अग्रगत घटनाओं अथवा कारणों का विवेचन करके ही हम किसी परिस्थिति की यथाथ व्याख्या कर सकते हैं। इसलिए ध्यान करने से लिए हम पोप ग्रेगोरी के पत्नारोहण के पूर्व दसवीं एवं ग्यारहवीं शताब्दी में धार्मिक एवं राजनैतिक रूप से महान् साम्राज्य के सम्बन्धों के यथाथ स्वरूप के विचार से प्रारम्भ करेंगे।

जब हम इन बातों के इतिहास का निष्पक्षानुयायी परीक्षण करना प्रारम्भ करते हैं तो सर्वप्रथम हम यह तथ्य प्रभावित करता है कि यद्यपि इस विचार का कोई कारण नहीं कि किसी को इसमें सन्देह था कि धार्मिक एवं राजनैतिक सत्ताएं विभिन्न एवं दूसरे से पूर्णतया स्वतंत्र क्षेत्र वाली हैं¹ तथापि वास्तविक व्यवस्था में राजनैतिक शासक एवं जनसाधारण निरन्तर धार्मिक विषयों की व्यवस्था में बराबर भाग लेते थे तथा पोप एवं बिशप राजनैतिक विषयों में अनेक अधिकारों का उपयोग करते थे।

दसवीं शताब्दी में इस राजनैतिक सत्ताधारियों एवं जनसाधारण द्वारा चर्च की परिपक्वता में उपाय होकर विचार विनिमय में योगदान तथा उनके निगमों को अपनी सत्ता का समर्थन प्रदान करने का निरन्तर प्रयत्न मिलता है। इसका स्पष्ट उदाहरण आगसबुर्ग (Augsburg) में 952 ई० में हुई एक परिषद् की कार्यवाही का विवरण है। यह सभा बिशपों की सम्मति से आठे प्रथम (Otto I) द्वारा धार्मिक विषयों एवं ईसाई साम्राज्य की दशांश पर विचार करने के लिए बुलाई गई थी। इसमें धार्मिक विषयों में विचार के अवसर पर बिशपों से बिशपों ने उसकी उपस्थिति होने का निमन्त्रण किया। आठे ने वास्तव में चर्च के नियमों की उद्घोषणा में भाग नहीं लिया किन्तु वह उन पर विचार के समय उपस्थित था तथा उनके व्यवस्थापन के लिए भी पादरी उसकी सहायता की अपेक्षा करते थे।²

दसवां एवं ग्यारहवीं शताब्दियों में न केवल जर्मनी में बल्कि इटली में भी इसके अनेक

उदाहरण मिन सकते हैं। जान तेरहवें (John XIII) की पदावधि में हुई विभिन्न परिपदों की रिपोर्टों में सम्राट आटो प्रथम की उपस्थिति तथा सहमति का उल्लेख है।³ 998 ई. में पोप ग्रेगोरी पचम द्वारा बुलाई गई रोम की एक अन्य परिपद में सम्राट आटो तृतीय को आक्सोने (Auxonne) के बिशप पद के विवादास्पद निर्वाचन पर हुई बहस में सक्रिय रूप से भाग लेता हुआ प्रदर्शित किया गया है।⁴ पुनः आटो तृतीय ने पोप ग्रेगोरी पचम के साथ रोम में हुई परिपद की अध्यक्षता की जिसमें मसबुर्ग (Merseburg) के पादरी पत्र एवं उसके मूल गौरव की पुनः स्थापना की गई।⁵ सम्राट कोनाड द्वितीय (Conrad II) ने पोप जान उन्नीसवें के साथ 1027 ई. में रोम में सम्पन्न एक परिपद की अध्यक्षता की जो एक्वीनिया के पाधिधर्माध्यक्ष (Patriarch of Aquileia) के साथ गडो के सम्बन्धों के निर्धारण के लिए बुलाई गई थी तथा उसका निणय भी पोप एवं सम्राट द्वारा ही लिया गया बनाया जाता है। सम्राट कोनाड ने फ्रैंकफर्ट में बिशपों की एक परिपद की अध्यक्षता की थी जिसमें छोटे पादरी एवं एक बिशप सख्या में जनसाधारण भी उपस्थित थे।⁶

पाविया (Pavia) में 1046 ई. में हुई एक घम सभा में हेनरी तृतीय की उपस्थिति का उल्लेख मिनता है तथा उस घम सभा में बेरोना के बिशप (Bishop of Verona) की प्राथमिकता का निणय उसके निर्देशानुसार (Praceptum) होना बतलाया गया है। 1049 ई. में पोप लियो नवम द्वारा मज (Mantz) में बुलाई गई परिपद की विनियमा में पोप द्वारा हेनरी तृतीय के अपने साथ सभा में बठने एवं परिपद द्वारा बेसंसन (Besancon) के आच बिशप पत्र के सम्बन्ध में एक विवादास्पद दाव के निणय को स्वीकृति देने का उल्लेख किया गया है। छोटे पादरी एवं जनसाधारण भी उसमें उपस्थित तथा अपनी स्वीकृति देने हुए बताए गए हैं।

ये उल्लेख उस बात के उदाहरण हैं कि दसवीं शताब्दी के राजाओं एवं सम्राटों का धार्मिक सभाओं की गतिविधियों में प्रायः महत्त्वपूर्ण योगदान था। यह भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है कि फ्रैंकफर्ट एवं मज की पूर्वोलिखित परिपदों के विवरणों में जनसाधारण की उपस्थिति का भी उल्लेख है। इससे कुछ अर्थ दृष्टांत भी ध्यान देने योग्य हैं। पोप लियो नवम ने अपने एक पत्र में 1049 ई. में उससे द्वारा राइम्स (Rheims) में बुलाई गई परिपद के निणयों का उल्लेख किया है जिनको उसने स्वयं बिशपों की सम्मति तथा छोटे पादरियों एवं जनसाधारण की स्वीकृति से लिया था।⁷ कुछ वर्षों के बाद पोप निकानस गिनोय द्वारा गान (Gaul) एक्वीटेन (Aquitaine) तथा गेस्कोनी (Gascony) के बिशपों को सम्बोधित एक पत्र में 1059 ई. में बुलाई गई रोम की परिपद का बरण है जिसमें उसने पोप के चुनाव सम्बन्धी प्रसिद्ध नवीन आदेश दिया था तथा उस परिपद में बिशप एबट छोटे पादरी एवं जनसाधारण उपस्थित थे।⁸ पुनः कतिपय वर्षों के बाद 1067 ई. में पोप एनेक्ज्रेण्डर तृतीय द्वारा क्रमोना के चर्च (Church of Cremona) के पादरियों एवं जनसाधारण को सम्बोधित एक अन्य पत्र में ईस्टर के बाद प्रस्तावित एक परिपद के लिए प्रतिनिधि भेजने का निमन्त्रण दिया गया है।⁹ इसलिए हम यह आश्चर्यजनक प्रतीत नहीं होता है कि लैन्फ्रैंक (Lanfranc) के जीवन चरित्र में इसका उल्लेख

मिलता है कि धार्मिक विषयों सम्बन्धी व्यवस्था एवं इंग्लैण्ड व चर्च के आदेशों की पुनः स्थापना के लिए उसके द्वारा युनाईटेड किंगडम के परिपक्व को पोप एन्केलेन्डर एवं सम्राट विनियम के अधिकार से बनाया गया था तथा उमर विंशत राजकुमार छोटे पान्ती एवं जाना के सम्मिलित होने का उद्देश्य है।¹⁰ 1076 ई. में ग्रेगोरी नवम द्वारा आहूत धर्म सभा प्रथम राम की परिपक्व में जिसमें सम्राट हेनरी चतुर्थ को धर्म वंचित एवं पण्डित घोषित किया गया न केवल विंशत एव छोटे पान्ती ही बल्कि जनसाधारण भी उपस्थित बनाए जाते हैं।¹¹ ग्यारहवीं शताब्दी की समाप्ति के आसपास पोप ग्रिगोरि तीसरे (Pope Urban II) के दो पत्रों में हम उसी तथ्य का दूसरा उदाहरण पाते हैं जिनमें ग्रेगोरी ने दूसरे व आठ विंशत के धार्मिक अधिकारों का प्रश्न उठाया गया था। इनमें वह घोषणा करता है कि उसके निगम जिस परिपक्व में विंशत उमर केवल विंशत एवं अन्य छोटे पान्ती ही नहीं बल्कि रोमन साम्राज्य और वास्तव भी उपस्थित थे तथा निगम भी उनकी राय से लिए गए थे।¹²

ऐसा प्रतीत हो सकता है कि अपने आप में ऐसी बातें अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं निरस्तदेशीय स्थिति पर ये केवल औपचारिक मात्र हैं किन्तु उमरों द्वारा महत्व कम नहीं होना वास्तव में वे इस बात को सूचित करते हैं कि दोनों सत्ताओं तथा पान्ती एवं जनसाधारण के दो वर्गों की पृथक्ता के सिद्धांतों की जनता द्वारा चाहे जितनी मायता दी जाए व्यवहार में जनसाधारण को भी मर्यादित चर्च सम्बन्धी सत्ता में पूर्णतया वंचित नहीं माना जाता था।

यदि इस तथ्य को ध्यान में रखा जाय तो यह स्पष्ट है कि अन्तर्गत एवं ग्यारहवीं शताब्दी में राजनीतिक शासक एवं जनसाधारण को चर्च सम्बन्धी विषयों की व्यवस्था में कुछ स्थान प्राप्त था तो उस युग के लेखों में पाए जाने वाले कुछ उद्धरण भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं जिन्हें पोप व दूसरे चर्च सम्बन्धी अधिकारियों द्वारा राजनीतिक विषयों में हस्तक्षेप का उल्लेख है। हम बाद में इस पर गम्भीरता से विचार करना होगा कि इसके सम्बन्ध में किए गए दावा का जब महान् संधि छिड़ा यथाथ स्वरूप क्या था? इस बीच उमर समय से पूर्व इस विषय की ओर हम केवल प्राथमिक संकेत करना चाहते हैं।

इस ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में हम यह बताने हैं कि नवीं शताब्दी में यह प्रायः स्वीकार किया जाता था कि पोप एवं चर्च के विंशत का सम्राट एवं सम्राटों की नियुक्ति में महत्वपूर्ण स्थान था।¹³ जसा कि हम कह चुके हैं कि उन निश्चित सिद्धांतों का निर्धारण अर्थात् कठिन है जिन पर यह मायता आधारित थी। पोप द्वारा सम्राट की नियुक्ति के सम्बन्धों के मूल में एक शासकों की रोमन सम्राटों के रूप में मायता से सम्बद्ध विशिष्ट परिस्थितियाँ थीं। सामान्यतः विंशतों के बारे में यह कहना कठिन है कि उनके अधिकार किस सीमा तक उनके धार्मिक पण्डित सत्ता के प्रति सम्राट पर आधारित थे एवं किस सीमा तक इस तथ्य पर कि विंशत लोग समाज के वे बड़े व्यक्ति थे जिनको शासक को चयन एवं प्रस्तावित करने का दायित्व प्रायः सौंपा गया था। वास्तव में यह अर्थ स्पष्ट है कि नवीं शताब्दी में ये सब तथ्य जिन पण्डितों के अधिकारियों का राजनीतिक विषयों में हस्तक्षेप आधारित था सुस्पष्ट एवं सुनिश्चित थे और यह प्रतीत होना है कि

इस विषय में वही अनिश्चितता उसके बाद के युग में भी बनी रही ।

नवीं शताब्दी के अन्तिम वर्ष में हम पोप जान नवम को लिखे गए मज के आद्य विशप हट्टो (Hatto the Archbishop of Mainz) के नाम से प्रसिद्ध पत्र में कुछ महत्त्वपूर्ण वाक्यांश प्राप्त होते हैं जिनमें जर्मनी में लुई दो चाइल्ड (Louis the Child) के सम्राट रूप में निर्वाचन का उल्लेख है । हट्टो चुनाव के सम्बन्ध में पोप की सम्मति की अपेक्षा का कारण बताते हुए कहता है कि उस समय जर्मनी और रोम के बीच की सड़क मुनिपूजकों (Pagans) द्वारा अवरुद्ध थी । अस्तु पोप से प्रार्थना की गई है कि अब पुनः उसमें सम्पर्क सम्भव हो सकने के बाद इस कार्य की पुष्टि की जाय ।¹⁴ यह पत्र स्पष्टतया इस ओर सबूत करता है कि पोप का इस विषय में अधिकार इस प्रकार स्थापित था कि उसे राजी करना तथा उसकी सहमति एवं समर्थन पाना महत्त्वपूर्ण माना जाता था । दसवीं शताब्दी में जब पोप पत्र का गम्भीरतम अर्थ पतन हो चुका था तब भी पोप जान द्वाइश आठे प्रथम के रोम आने का बरण करता है ताकि वह उसके हाथों से मत पीटर द्वारा राजकीय मुकुट ग्रहण कर सके और यह भी घोषणा करता है कि उमन चर्च की रक्षा के लिए सत पाटर के आशीर्वाद से उसका सम्राट पत्र पर अभिप्रेत किया है ।¹⁵ रॉडोल्फ ग्लेबर (Rodolphus Glaber) ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में स्पष्टतया इस सिद्धान्त का बरण करता है कि पोप जिसे उस पत्र के लिए उपयुक्त समझे एवं जिस सम्राट पद प्रदान कर उसके अनिर्दिष्ट कोई न तो सम्राट बन सकता है न कहना सक्ता है ।¹⁶ एन्नाल्स ऑफ हिल्डेशीम (Annals of Hildesheim) के परिशेषकता न हेनरी तृतीय द्वारा अपने अनाथ पुत्र को पोप एवं अन्य विशपों तथा राजकुमारों द्वारा चुने जाने पर राजा बनाने का बरण किया है ।¹⁷

इस समय दसवीं एवं ग्यारहवीं शताब्दियों में धार्मिक एवं राजनतिक दो महात् सत्ताओं की अयो-याप्ति का सामाजिक उत्पत्ति का रूप में पर्याप्त कहा जा चुका है और यह भी बताया जा चुका है कि किस प्रकार प्रायः राजनतिक सत्ता धार्मिक विषयों में हस्तक्षेप करती थी एवं धार्मिक सत्ता राजनतिक विषयों में । अब हम अधिक विस्तार से उन विषयों पर विचार करेंगे जिनके सम्बन्ध में अन्ततः ग्यारहवीं एवं बारहवीं शताब्दी में महात् संघर्ष प्रारम्भ हुआ ।

सन्दर्भ

- | | |
|---|---|
| 1 Act Conc h I T la A D 909
M n C n l v l x C b p l
Th y q te | 5 M G H Legum Sect IV Con t
24 Con l n Roma m (998 999)
l |
| 2 M G H Leg m Sect IV C n t
9 Con e t s A g ta 95 A D | 6 Id d 51 |
| 3 M s Co c la l A
P 509 | 7 Pop Leo IX Ep stles 17 |
| 4 Mans C c lu vol xi p 228 | 8 Pope N h l II Ep tl 71 |
| | 9 P pe Al xa d II Ep stl 36 |
| | 10 M g e P L ol 150 Lanfra
Vita x |

- | | |
|--|--|
| 11 P ppe Grego y VII Reg strum III
10 () | 15 Id id p 461 |
| 12 P p Urb n II Ep tl 113 | 16 Rodolph s Gt b Hst i 5 |
| 13 Cf l pp 8 87 | 17 An l Hld s't imen C
A no 10 6 (p 104) (H n c) |
| 14 M n Corcla l x : A
p 204 | |
-

द्वितीय अध्याय

दसवीं एवं ग्यारहवीं शताब्दी में पोप का चुनाव

यदि हम गम्भारतापूर्वक उत्तरवर्ती सभ्य के स्वरूप को समझने का प्रयत्न करें तो हम सभ्यप्रथम आगे प्रथम में लेकर हेनरी तृतीय तक के जमाने सम्राटों द्वारा पोपों का नियुक्त एवं पञ्जुनि के लिए किए गए यागदान का विचार करना पड़ेगा। हम यहाँ उस काल के पोपों के चुनाव की सम्पूर्ण परिस्थितियाँ व विस्तृत एवं परिपूर्ण अध्ययन का निम्न दावा नहीं करते उसका अतीत आवश्यकता भाँ नहीं है कथाँ उस पर अनेक पाठों में प्रकाश पड़ा है विद्यमान है। फिर भी हमारे विचार में उस युग में सामान्यतः स्वीकृत कुछ महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को स्वीकार करना आवश्यक है तथा हम पर्याप्त निश्चिततापूर्वक विवाद एवं सदह के सजस महत्वपूर्ण स्थानों को पृथक् कर सकें हैं। एक ओर तो यह निश्चित है कि दसवाँ शताब्दी के प्रारम्भ में केवल ग्रैगोरी सप्तम के राजसरोहण तक की इस सम्पूर्ण अवधि में पोपों के चुनाव में सम्राटों का स्थान ही स्वीकार किया जाता था दूसरी ओर यह भी हम दाय सकते हैं कि चुनाव में राजकीय योगदान की सीमा के बारे में तथा किसी भी व्यक्ति द्वारा चाहे वह जनसाधारणों के या पादरी पोपों के ऊपर अनेक अधिकार के दावे को सिद्ध करने के प्रयत्न के विषय में गभार सदह भाँ थे।

पोप जान पारा 898 ई. में रोम में बुनाए गए परिपद की कायवाही का दसवाँ वर्ष इन परिस्थितियों का वर्णन करता है प्र माना जा सकता है जिन पर वास्तव में दमना गताएँ के पापों के चुनावों में राजकीय सत्ता का योगदान आधारित था। इस विवरण में किसी पोप की मृत्यु होने पर उत्तक उत्तराधिकारी के अभिषेक के अवसर पर रोमन धर्मगोष्ठ के विरुद्ध समाविष्ट हिंसा का भी उल्लेख है यदि सम्राटों को इसकी सूचना न हो और उनके दूत उस समय घटित होने वाली हिंसा तथा गौहापवानों के निर्वरण में बला पर उपस्थित न हों। इसमें यह निश्चित है कि भविष्य में विपरीत एवं पारियाँ द्वारा चुनाव सरेएँ एवं जनता के प्रस्ताव पर ही किए जाय

पोप का राजकीय प्रतिनिधित्व की उपस्थिति में अभिषेक किया जाय तब भी व्यक्ति द्वारा निर्वाचित पाप को प्राचीन भावनाओं से भिन्न कोई प्रतिष्ठा अथवा शपथ बन पूरक नहीं किया जाय ताकि चर्च तथापवाद से मुक्त रहे तथा सम्राट के लिए देय सम्मान भी कम न हो सक।¹

यह तब इस बात को स्वीकार करता है कि यद्यपि रामन जनसाधारण के प्रत्याय पर पोप का निर्वाचन विशेषा एव पादरिया का ही कर्तव्य है तथापि यह चुनाव बिना राजा को सूचित किए और अभिषेक के समय उसके प्रतिनिधित्व की उपस्थिति के बिना पूरा नहीं माना जा सकता। इससे लिए विशिष्ट कारण यह बताया गया है कि सम्राट के संरक्षण के अभाव में यह नियुक्ति शांति एवं स्वतंत्रतापूर्वक नहीं हो सकती।

यहाँ हमारा उद्देश्य दशवीं एवं प्रारम्भिक ग्यारहवीं शताब्दी में पाप का इतिहास के सम्पूर्ण ऐतिहासिक महत्त्व की समीक्षा का प्रयत्न नहीं है; यहाँ यह स्वीकार करना ही पर्याप्त है कि जब आठे प्रथम दसवीं बार इटली आया तथा 962 ई. में पोप जॉन द्वादेश द्वारा सम्राट के रूप में अभिषेक किया गया उसने रोम के पाप का अत्यंत हानि दशा में तथा रोमन साम्राज्य के गुट से नियंत्रित पाया। जान द्वादेश ने आठे का सम्राट पद पर अभिषेक किया तथा जसा बताया जाता है 'योर्गे आने न राम का छोड़ा उसके विरुद्ध पदच्युत करना प्रारम्भ कर दिया। आठे राम को नीट आया। क्रमोना के बिशप लूटप्रंड (Luitprand) के विवरण के अनुसार उसने एक परिपद बुलाई जिसमें इटली के सभी राजाओं को बुलाया कि वे रोम के पाप को तब प्रमुख नागरिक उपस्थित थे। पोप पर विभिन्न प्रकार के नतिक एवं धार्मिक अपराधों के आरोप लगाए गए तथा परिपद ने उसे उपस्थित हानि एवं उन आरोपों के विरुद्ध सफाई देने को कहा। जान ने इसके उत्तर में धमकी दी कि यदि उन्होंने दूसरे पोप को नियुक्ति का प्रयास किया तो वह उन्हें धमकाने का प्रयत्न कर देगा। अनिश्चित विचार विनिमय के बाद सम्राट ने परिपद के सामने भाषण किया कि पाप ने उसके साथ की गई शपथ को भंग किया है तथा उसके विरुद्ध शत्रुता का साथ मिलकर पदच्युत किया है। पादरिया एवं जनता ने कहा कि इस अपभूतपूर्व अपराध का त्रिणय भी अपभूतपूर्व साधनों से किया जाय पोप ने अपने कम्पट गवर्नर द्वारा न केवल स्वयं को ही बल्कि दूसरों को भी हानि पहुँचाई है तथा माँग की कि उसे पदच्युत करके नवीन पोप का निर्वाचन किया जाय। सम्राट ने उनका माँग स्वीकार कर ली तथा उन लोगों ने त्रियो को जो रामन चर्च का प्रोटोस्क्रिनरियस (Protoscrinarius) था एकमत से पोप चुन लिया² (964 ई.)। यद्यपि प्रतीत होता है कि रामन जनता एवं पादरिया की यह एकमतता केवल नाममात्र की थी क्योंकि जैसे ही सम्राट ने राम छोड़ा जनता त्रियो अप्टम के विरुद्ध हो गई तथा वह भागकर सम्राट के पास चला गया। पाप जान द्वादेश का देहावसान हो गया तथा रोमवासिमा ने वेनेडिक पक्ष को चुन लिया। सम्राट जोग तथा वेनेडिक को बटिकन की परिपद में प्रस्तुत किया गया और उस जमनी को निर्वासित कर दिया गया।³

दूसरे वर्ष (965 ई.) में त्रियो अप्टम की तुल्य हो गई तथा रेजियो के क्रानिक

के परिशेषकर्ता द्वारा किया गया उसके उत्तराधिकारी का चुनाव का विवरण महत्वपूर्ण है। वह कहता है कि लिया का मृत्यु पर रोमवासियों ने एजा (Azo) जो प्रोटोस्त्रीनरियस था तथा सुत्री के विशप मेक्सिमस को सम्राट के पाम को उस समय सेक्सोनी में था यह कहला कर भेजा कि वह चाहे जिसे पोप नियुक्त करे। किन्तु सम्राट ने वसा नहीं किया तथा स्प्रायस के विशप आन्गार तथा जमोना के विशप लियूजो को रोम भेजा तथा अनुमान किया जाता है कि उनकी उपस्थिति में रोमवासियों ने नार्नी के विशप जान का पोप चुन लिया।¹

यह निष्कर्ष निकालना अनुचित होगा कि यह विवरण सम्पूर्ण परिस्थिति का समग्र वृत्तान्त प्रस्तुत करता है। हम इस समावधान को स्वीकार करना चाहिए कि ये घटनाएँ उनके कारणकर्ताओं की पद स्थिति में अतिरिक्त हो सकती हैं।

आटा प्रथम एवं परिपद द्वारा पार जान द्वादश की पद्धति का काय 1049 में हनरी तृतीय एवं सुत्री की परिपद के काय के ममान ही थे। निया तृतीय तथा लियो चतुर्थ के अन्वीकरण ऐसे पूर्वोत्तरण हैं जो यह दितलाते हैं कि चर्च के अध्यक्ष के चरित्र के विषय में चर्च तथा सम्राट दोनों के ही हस्तक्षेप करने के दावे थे।² यहाँ यह ध्यान रखना अधिक महत्वपूर्ण है कि जान द्वादश के निष्कासन में चाह जो अमंगति रही है यह स्पष्टतया प्रतीत होता है कि लियो अष्टम एवं जान तरटवों के निर्वाचन के समय परम्परागत विधि का विशेषतया ध्यान रखा गया था। ल्यूटप्रैंड के विवरण के अनुसार रोम के नागरिकों एवं पादरियों ने ही लियो अष्टम को चुना था तथा सम्राट ने तो केवल उनके चुनाव की सहमति दी थी। राजाना के परिशेषकर्ता के विवरण से स्पष्ट है कि लियो अष्टम का मृत्यु के बाद आटा प्रथम ने किसी का भी पोप पद पर स्वयं नियुक्त नहीं किया किन्तु चुनाव का काय रोमवासियों को ही सौंप दिया जो सम्भवतः उस समय की उपस्थिति एवं सहमति से किया गया हो।

इस कारण की पुष्टि आटा प्रथम के पोर के चुनाव सम्बन्धी विशेषाधिकार पत्र (Privilegium) का व्यवस्थाओं से होती है जिसका समय 962 ई. माना गया है तथा जिसकी प्रामाणिकता को सही माना गया है। इसकी व्यवस्था के अनुसार रोम के पादरी एवं सामंत इस बात का ध्यान रखते कि चुनाव घम घघानिक तथा पापपूर्वक हो तथा जो इस पद के लिए चुना जाय उसका अभिपक्ष तब तक न हो जब तक वह साम्राज्यिक प्रतिनिधियों की उपस्थिति में वही घोषणाएँ न कर जो पोप लियो ने स्वच्छास की थी। यह भी कहा गया है कि राम के निवासियों की स्वतंत्रता में कोई हस्तक्षेप न कर जिनको प्राचीन परम्परा एवं पूज्य धर्माचार्यों के विधान के अनुसार निर्वाचन का अधिकार प्राप्त है और यह निषेध सम्राट के दूतों पर भी लागू होता है।³ ये व्यवस्थाएँ पायस सुत्र के समझौते तथा लोथर प्रथम के रोमन संविधान (Constitutio Romana) में उपलब्ध व्यवस्थाओं से मिलती जुटती हैं⁴ और यह स्पष्टतया स्वीकार करती हैं कि निर्वाचन का अधिकार रोमवासियों का है परन्तु इस प्रक्रिया में सम्राट को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

इसी शताब्दी में कुछ समय बाद हम यह देखते हैं कि इन संघानिक परम्पराओं

का इतने ध्यान से पालन नहीं किया जाता था। सत्र अन्ववट के जीवन चरित्र में 996 ई. में पोप ग्रगोरी पंचम की नियुक्ति का विवरण उपलब्ध होता है। इसमें यह प्रतीत होता है कि जब पोप जान पत्रहवें की मृत्यु हुई तब ग्राटो तृतीय रवना में था। रोम के प्रधान नागरिका (Proceres etsenatorius or do) ने पत्र एवं दूतों को भेजकर पोप की मृत्यु की घोषणा की एवं उससे स्थान पर किसको चुना जाए इस सम्बन्ध में राजकीय निगम पान की सहायता ली। ग्राटो तृतीय ने राजकीय गिरफ्तार के एक युवक एवं विद्वान् उपलब्ध करना को छाँटा जो उसका रिश्तेदार था उसे स्पष्टतया रवना में एक मजदूरीय (maioribus) के रूप में निर्वाचित किया गया तथा उस मजदूर को आठ निगम व अन्य विभागों के साथ रोम भेजा गया जहाँ उसका सम्मान पूर्वक स्वागत हुआ।⁹ यह प्रथा अधिकांशतः उगमे भिन्नती जुगती है जिसका उदाहरण हम तब पायेंगे जब अगले अध्याय में विशपों की नियुक्ति का वर्णन करेंगे।

कुछ वर्षों के बाद के एक लेख में गिस्तकी प्रामाणिकता पर संभवतः श्रवण ही सन्देह किया गया है हम पाते हैं कि ग्राटो तृतीय बहुत स्पष्टतया यह दावा करता है कि उसने स्वयं ही 999 ई. में गेन्वट (माइस्टर गिनीय) को पोप बनाया था।¹⁰ इसका वास्तविक अभिप्राय क्या है यह आसानी से नहीं कहा जा सकता किन्तु कम से कम इसका अभिप्राय यह है कि ग्राटो तृतीय को उसकी नियुक्ति में अपना रवण का भाग अत्यधिक प्रतीत होता था।

हमारे द्वारा उल्लिखित घटनाओं के साथ में समकालीन निरीक्षण एवं आलोचना के रूप में हमारे पास बहुत कम साक्ष्य है कि यह कितना सत्य है कि उसका कथन कि घाटमार न जा ग्यारहवीं शताब्दी के अन्त में चरण के घाट नही उल्टा रहा था वेनिसीय पंचम का जिसने *valentioem sibi: (i.e. the Emperor) in Christo* कहा है पत्रयुक्ति से अनहमति काट की है तथा यह माना है कि ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी को भी उसकी जांच करने का अधिकार नहीं है।¹¹

ग्राटो तृतीय की मृत्यु के बाद पोप सभ्रातृ दवाव ने अपक्षान्त मुक्त रहा परन्तु साथ ही उसका समर्थन भी जो था तथा एक बार फिर उसने सुरेष्ठिन आण क्योंकि जमना क हस्तों से मुक्त होकर वह अधिभ्रमसहाय रूप से स्थानीय गुटा के आधिपत्य में आ पड़ा तथा ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य तक स्थिति पुनः विषम हो गई। हम हेनरी तृतीय द्वारा किया गया हस्तक्षेप का विस्तार से अध्ययन नहीं करेंगे। यहाँ यही स्मरण रखना पर्याप्त है कि ग्रगोरी पंचम को हेनरी तृतीय का उपस्थिति में सम्पन्न परिपक्व में पत्रयुक्त किया गया था जो दिसम्बर 1046 ई. में गुटा में हुई थी तथा वेस्वस के रिशस स्कूडगर को कनेक्ट गिनीय के रूप में पोप चुना गया।¹²

इसमें सन्देह करने का कोई कारण नहीं कि हेनरी तृतीय का काम शत्रु उद्देश्य से प्रेरित था। वास्तव में उस पोप पद की दशाओं एवं स्वरूप में सुधार लाने में सफलता मिली जिनका स्थायी प्रभाव पड़ा। इसके लिए प्रयुक्त साधनों के औचित्य का प्रश्न इससे सबंधा भिन्न है।

1047 ई. में क्लेमट द्वितीय का देहावसान हुआ जबकि ग्रेगोरी पंचम जीवित ही

था। साम्राज्य के सबसे सम्मानित बिशपों में वोज़ का बिशप वाज़ो (Wazo) था जिसका बख़्त आगे और आया। हेनरी तृतीय ने कन्वेंट के उत्तराधिकारी की नियुक्ति के बारे में उससे राय मागी किन्तु उसका ज़ावन चरित्र के रचयिता के बख़्त के अनुसार वाज़ो ने अत्यन्त नम्रता एवं दृढता से उत्तर देने हुए धार्मिक पद के न्यायसंगत अधिकारी के जीवित रहते हुए अथ किसी की नियुक्ति के विरुद्ध हेनरी तृतीय को चुनावनी दी तथा धर्माचार्यों का यह भाव सिद्धांत बनाया कि उस सर्वोच्च धार्मिक अधिकारी का नियुक्त भगवान् के अतिरिक्त कोई अथ नहीं कर सकता।¹³ एसा प्रतीत होता है कि वाज़ो का उत्तर हेनरी तृतीय के पास तब तक नहीं पहुँचा जब तक कि त्रिक्लेन के पोपो की दममुम द्वितीय (Damasus II) के नाम से पोप पद पर नियुक्ति नहीं हो चुकी थी किन्तु उसका यह नियुक्त बहुत महत्त्वपूर्ण है।

वाज़ो ने जो मत दृढतापूर्वक किन्तु विनम्र एवं चुन हुए शब्दों द्वारा अभिव्यक्त किया था वही अधिक कठोर रूप में एक तत्कालीन फ्रेंच चर्च के पादरी की रचना में व्यक्त किया गया है। उसने सम्राट को अत्यन्त दुरात्मा बताकर उसका निन्दा की है तथा उम चुनौती देते हुए कहा है कि वह विचार कर कि पूर्ववर्ती सम्राटों एवं राजाओं के दृष्टांतों को ध्यान में रखते हुए उसका द्वारा एक धर्माधिकारी के सम्बन्ध में नियुक्त करने के लिए बठना कहा तक उचित है। वह यही तर्क कहता है कि हेनरी तृतीय अपना सबधी पोइतू का एग्नस (Agnes of Poitou) से निषिद्ध समागम विवाह के कारण एक साधारण आदमी का पादरी बनने का भी अधिकारी नहीं है। वह कहता है कि जिस प्रकार एक साधारण आदमी पादरी के सामने अपराध-स्वीकृति करता है पादरी बिशप के सामने तथा बिशप पोप के सामने उसी प्रकार पाप केवल ईश्वर के सामने अपराध स्वीकृति करता है क्योंकि ईश्वर न उसे अपने नियंत्रण के लिए सुरक्षित रखा है। वह दृष्टापूर्वक कहता है कि सम्राट ईसा मसीह के स्थान पर न होकर जब वह तनवार का प्रयोग एवं रक्तपात करता है शतान के स्थान पर है।¹⁴ यह भी महत्त्वपूर्ण है कि वह फ्रेंच बिशपों की राय एवं सहमति के बिना पोप के निर्वाचन का विरोध करता है तथा यह प्रतिपादन करता है कि चूंकि उनका चुनाव में कोई योगदान नहीं था वे आजापालन के लिए बाध्य नहीं हैं।

वाज़ो तथा इस फ्रेंच चर्च का दृष्टिकोण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है तथा उसी सिद्धान्त का निरूपण करता है जो पहले इसी शताब्दी में जसा कि हम देख चुके हैं मसबुग के थोटमार द्वारा अभिव्यक्त किया गया था। यद्यपि हम यहाँ पर ध्यान रखना चाहिए कि हेनरी के कार्यों की इस निन्दा से चर्च के सुधारवादी दल के प्रमुख सदस्य सहमत नहीं थे। सुधारों का सबसे प्रधान इटालियन प्रतिनिधि पीटर डेमीयन था तथा वह हेनरी तृतीय तथा उसके द्वारा धर्म विक्रय (Simony) जसा तत्कालीन प्रथाओं के विरोध द्वारा जो गई चर्च की सेवाओं का सर्वोच्च प्रशंसक था। लियो नवम के पन्द्रहवीं काल में लिखे गये एक ग्रन्थ में वह यही तर्क कहता है कि इस सबध में जो गई उसकी सबधा के कारण दली विधान द्वारा यह आदेशित हुआ कि रोमन चर्च उसके सकलानुसार अवस्थित हो तथा उसकी अनुमति के बिना किसी का भी

राम व घमासन व लिए निर्वाचन नहीं किया जाना चाहिए।¹⁵

यस काव का दूसरा सत्रम प्रसिद्ध मुधारक सिमोनिअस का पापरी कांडिनर हम्बट ग्रन्थ एन्ससत्र सिमानियेसोम (Adversus Simoniacos) नामक ग्रन्थ में घम विषय व खिताप हेनरी तृतीय द्वारा की गई चर्च की संस्था की प्रशंसा ग्रन्थ में उल्लेखपूर्ण शक्ति में करता है।¹⁶ और यह भी ध्यान देने योग्य है कि ग्रेगोरी सप्तम भी हेनरी तृतीय का प्रशंसा में सर्वोत्कृष्ट शब्दावली का प्रयोग करता है तथा उसकी और उसकी पत्नी की भूरि भूरि प्रशंसा करता है।¹⁷

एन बिरोधी सम्मतिया व विवचन में यह ता स्पष्ट है कि चर्च के मुधार के लिए सर्वाधिक उमाती ब्यापि भी मुधा में हेनरी तृतीय व कार्यों के सम्बन्ध में ग्रन्थे नियम में पूर्णतया एकरम ही थे।

पोप की नियुक्ति में सम्राट व योगदान व अधिकार का प्रश्न कुछ अज्ञात भिन्न था। यह कहा भी प्रतीत नहीं जाता कि अभी तक किसी न गम्भीरतापूर्वक राजा के उमम भाग में व अधिकार पर आपत्ति उत्पन्न हो किन्तु उनके योगदान का स्वल्प अनिश्चित था। अब हम मुध्री की परिपद के बाद में लेकर पोप निकोलेम तृतीय तक इन प्रश्न व तिास का तथा पोप व चुनाव के सम्बन्ध में उनकी शासकीय आपत्ति का संक्षेप में विवचन करण।

हेनरी तृतीय न रोम में पलाशिरता की उगाधि धारण की थी तथा कुछ वर्षक तो यहाँ तक व न है कि एक साथ पोप के चुनाव में कुछ विशेषाधिकार भी जुड़ा हुआ था।¹⁸ जमा हम देख चुके हैं कि क्लेमन्ट तृतीय ग्रन्थ अधिपक व दूसरे ही वर्ष 1047 ई. में विवृत हो गया तथा ब्रिस्मन का पोपो डेमसत तृतीय के रूप में जमनी के सम्राट एव उसकी सभा द्वारा सम्भवत वाडा द्वारा निरुद्ध गण ग्रेगोरी पठ व जीवित रहते हुए किसी ग्रन्थ व चुनाव की निष्ठा करा वाल पत्र व सम्राट की पहुँचने व पूर्व ही पोप पत्र पर नियुक्त कर दिया गया। इसलिए जय डेमसत तृतीय की भी उसी वर्ष मृत्यु हो गई तो यह स्पष्ट हो गया कि पोप के निर्वाचन के सही ढंग का प्रश्न गम्भीरतापूर्वक जोर मानस की प्रभावित कर रहा है। दून के ब्रनो (Bruno of Toul) व तुर्नवम के रूप में चुनाव के एक स अधिक विवरण उपलब्ध हैं। इनमें से पहला जो एनसत्रम (Anselm) द्वारा लिखे गए राइम्स व चर्च के इतिहास में विद्यमान है बखान करता है कि पोप डेमसस तृतीय की मृत्यु पर रोम वासिया न हेनरी तृतीय की किस प्रकार में सूचित करके कहा कि उसके स्थान पर नयी नियुक्ति का वाण। सम्राट ने बरशा और साम्राज्य के सामता (Optimates) की राय लेकर दून के ब्रनो की जो ग्रन्थ लिखि एव विष्ठा व लिए विष्ठात था तथा उसका ग्रन्थ सम्बन्ध था एक लिए बना। धमगुरु क गौरव का अधिकार चिह्न उस समर्पित किया गया तथा उसे रोम भेजा गया (ad haec s cumdum eccle siastione sanctiones sus iendas)। वहाँ पहुँचने पर रोमनिवासि न उसका सम्मानपूर्ण स्वागत किया तथा सत पीटर के सिद्धान्त पर नियो नवम के रूप में उसका अधिपक कर दिया गया।¹⁹

विबर्ट (Wibert) द्वारा निर्भेद्य रूप से लियो नवम के जीवन चरित्र में जो कि उसके अधीन दून का आकडीकन तथा अनिश्चित तथा महत्त्वपूर्ण विवरण मिलता है। लेखक ने लियो के सम्राट हेनरी तृतीय की उपस्थिति में वाम्स नामक स्थान पर बिगो एवं प्रोसेरो (proceres) की परिषद द्वारा चुने जाने का बखान किया है। उनके अनुसार लियो ने बिचार के बिना ही तिन की प्रवृत्ति माना तथा उन अवधि में उपवास एवं प्रार्थना करने के बाद ही स्वीकार करने के बिना इम शक्त पर अपनी स्वीकृति दी कि मारे रोमन पादरी एवं रोम निवासियों की सहमति का उसे विश्वास दिलाया जाय। वह नगर परा चलकर रोम आया तथा नगर में पहुँचकर उसने राजकीय चुनाव की घोषणा की परन्तु यह मान की कि रोम निवासियों को भी अपना वोट देना व्यक्त करें। उसने यह कहा कि परम्परानुसार सभी मताओं से पूर्व पादरिया एवं जनता द्वारा चुनाव है अतएव यह विश्वास किया कि यदि व उसने निर्वाचन में युग न हो तो वह प्रसन्नतापूर्वक अपने घर लौट जाएगा। जब उसने देखा कि व उस सबसम्मति से स्वाकार कर रहे हैं तभी उसने अभिप्रेत होने के बिना अपने स्वीकृति दी।¹⁰ इम हमें इस सम्भावना को स्वीकार करना चाहिये कि यह बगल जिन्नी सीमा तक लेखक के सिद्धान्तों में भी प्रभावित है किन्तु इस सम्भावना को स्वीकार करने पर भी यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह इस अस्वाकार करता प्रतीत नहीं होता कि पाप का नियुक्ति में सम्राट का भी योगदान है किन्तु वह रोम के पादरिया एवं जनता के अधिकारों का उल्लंघन अथवा अक्षयलना नहीं कर सकता जो कि प्राथमिक निर्वाचक मस्या है।

लियो नवम के उत्तराधिकारी के रूप में 1054 ई० में आल्मोस्ट के बिगो रेमाट (बिक्टर तृतीय) का नियुक्ति का विवरण बिभिन्न बिगानों में कुछ पृथक शब्दों में किया है किन्तु यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह चुनाव स्वयं सम्राट ने बिगो एवं राजसभा की राय से तथा रोमन चर्च के प्रनिनिर्णयों की स्वीकृति में किया था।²¹

स्टाफेन नवम (1057 ई.) के चुनाव के बिषय में सम्राट की राजसभा से सहायता का कोई सूत्र उपलब्ध नहीं होता किन्तु शकल रूप में यह दृष्टान्तों के बाद रोम के सम्राटों ने अपना अधिकार बनाए रखने का फिर प्रयास किया तथा बन्नेटरी के बिगो को बन्नेटरी दाम (Benedict X) के रूप में पोप बना किन्तु कार्डिनलों ने उन मान्यता देना अस्वीकार कर लिया तथा राजसभा की सहमति में निकोलस तृतीय को नियम नामक स्थान पर चुना गया। रोमन लोगों के इस प्रयत्न ने ही निस्सन्देह निकोलस तृतीय को अप्रैल 1959 ई. में पोप के चुनावों की विधि को नियमित करने का प्रसिद्ध आदेश जारी करने के लिए बाध्य किया। उसका सन्ने महत्त्वपूर्ण धाराएं य थीं—चुनावों में कार्डिनल बिगो एवं अन्य कार्डिनलों को प्राथमिक स्थान प्रदान करना आवश्यकता पडने पर रोम से बाहर पोप के चुनाव करने की स्वाकृति देना जो सुरन्त रोम में अभिप्रेत न किया जाने पर ना सम्पूर्ण पोप के अधिकार क्षेत्र की सत्ता को उपयोग कर सकता और अन्त में हेनरी एवं उसके उत्तराधिकारियों के चुनाव से सम्बन्ध की स्वाकृति देना। इच्छावली अस्पष्ट होने पर ही निर्वाचन रूप से यह

इसकी स्वीकृति देता प्रतीत होता है कि साधारण परिस्थिति में पोप की नियुक्ति की विधि में उनका भी न्यायाधिकार स्थान होगा।²

संदर्भ

- 1 *Ma s C cla* l xv A p 225
- 2 *Lutp and B h p f Cem* —D
Reb C i Ott (M G H
S S l)
- 3 *D F bc* Ge t Ott 21
- 4 *C t u t* Reg 6 7
(M C H)
- 5 Cf l p 263
- 6 Cf Ed t r f C nst tut o
M C H ad loc
- 7 M C H Leg m Sect IV C t
12
- 8 Cf l p 271
- 9 *V t S Ad lb t* Mg P L
v l 137 Ott III w at R
- 10 M G H Leg m Sect IV C t
26
- 11 *Th tm* Ch o 18
- 1 *न परिस्थितियों पर पूर्ण विचार के बिना*
दुनिया को। वैश्विक नवम एव प्रेसो
दृष्ट पर बार ए पुन गरा (Procee
d ngs of th British Academy)
में प्रकाशित देख।
- 13 *A elm* Ge ta Ep sc porum Leo-
d n m 65 M G H S S l
7
- 14 *P t r D ma* L b r C t m s
i L b D Lt p 56
- 15 M G H L b De Lt v l
pp 12 14 D O d d Po t fice
- 16 *H mbe t Ad rs* Smo acos
M G H L b D Lt
- 17 *G eg y VII* R g v 2
- 18 Cf *Bon* L b D Lt vol
p 586 and *A n R m* M G H
S S p 469 a d *P te Dama*
D pt i Sy d l M C H
L b D Lt p 80
- 19 *An lm* M k f Rh m H to a
de d cati Ecc e S Re gl
7 Mg e P L of 14
- 0 *Le IX* V t 2 Mg n P L vol
143
- 1 *A le R m* a 1054 Be
th ld A al a 1054 Ann l
H e n 1054
- 22 M C H Leg m Sect IV C n t
v l 382

तृतीय अध्याय

1075 ई० तक विशापो की नियुक्ति

१०७५ ई० तक विशापो की नियुक्ति के लिए निर्देशक सिद्धांतों के रूप में स्वीकृत थे। जमा की निष्पत्ति रूप में हमें बताया कि इन नियुक्तियों की वधता के लिए निम्न पूर्ण ताएँ अनिवार्य मानी जाती थीं—“मे प्रदेश के पार्षदों तथा जनता द्वारा चुनाव उसी प्रांत के विना तथा प्रमुख गिरजाघर के विशापो की स्वीकृति और राजा की मंजूरी सामान्यतः यह भी माना जाता था कि उनमें से किसी भी तत्त्व की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।” हमें मालूम नहीं कि उस समय व्यवहार तो प्रायः कुछ अनिश्चित था किन्तु स्वीकृत सिद्धांत स्पष्ट थे तथा उनके बारे में कोई गंभीर विवाद नहीं था। हमें अब सभ्यता में उस समय तक अर्थात् 1075 ई० तक हमें प्रश्न के इतिहास पर विचार करना है कि विशापो की नियुक्तियों के सम्बन्ध में पौराणिक सामान्यतः के बीच महान् विवाद छिड़ गया। वास्तव में इनका अध्ययन कुछ ध्यान में करना आवश्यक है यदि हम इस महान् सभ्यता का वास्तविक स्वरूप समझना चाहें तथा उसमें प्रतिनिधित्व किए गए विभिन्न दृष्टिकोणों के माध्यम से व्यक्त करना चाहें और इस महान् सभ्यता के विषय में उस दोषपूर्ण एवं अनतिहासिक विचार से बचना चाहें तो हमें केवल धार्मिक आक्रमण अथवा राजकीय अत्याचार के रूप में प्रस्तुत करना है।

यह हमें स्पष्ट प्रतीत होता है कि १०७५ ई० तक नवी शताब्दी के माध्यम में वर्णित सिद्धांत स्वीकार किए जाते रहे तथा कम से कम सिद्धांत रूप में तो यह स्वीकार किया जाता रहा कि पार्षदों तथा जनता द्वारा चुनाव उसी प्रांत के विशापो तथा प्रमुख धर्माध्यक्ष की स्वीकृति और राजा की सहमति से सभी किसी विशापो की वध नियुक्ति सामान्यतः थे। इसके प्रमाणों का हमें कुछ अधिक विस्तार में अध्ययन करेंगे।

हमें देखने हैं कि ऐटो के एक ग्रन्थ में जो कि 945 ई० में वसली का विशापो (Vercelli) बना तथा जिसका दहावसान 961 ई० में हुआ धर्माध्यक्षीय नियुक्तियों की

दशाघो को अग्रिम स्पष्टतया बरान किया गया है। मिढान्ता के अनुसार पार्लियमेंटों एवं जनता को जिसे वे सर्वोत्कृष्ट समझें चुनने का स्वतंत्र एवं निर्बाध अधिकार होना चाहिए। इस प्रकार निर्वाचित व्यक्ति की प्रधान गिरजाघर व एव उम प्रान्त के अग्र विशयो द्वारा सावधानी से परीक्षा की जानी चाहिए यदि व उम किसी गम्भीर दोष से प्रस्त पाय तो उसके अभिषेक को अस्वीकार कर दें। यदि वे उमे पत्र के घोष पायें तो जग प्रवेश में व पद स्थित है वहाँ के राजा को उचित सूचना देकर तथा उसकी रवा कृति में अभिषेक किया जाना चाहिए।³

यही मिढान्त ओटोरमनस की ओ स स (Sens) नामक स्थान पर विद्यमान सत पीटर के गिरजाघर का साधु था ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध की रचना में एक स्थल पर वर्णित है जो निर्वाचन का नियम प्रतीत होता है। सभ का गिरजाघर प्रबन्ध के राजा सम्प्रातीय शिक्षा महापुराण छोटे व बड़े पार्लियमेंट तथा दोना निर्गो के निर्णयाना की स्वीकृति एवं श्रद्धा में विशय की नियुक्ति की घोषणा करता है।³

एन उद्धारणा में विशय की नियुक्ति की उचित दशाघा के विषय में उस युग के सामान्य आदर्शों का विवरण प्रतीत होता है। नया पत्र सत्य है कि नियुक्ति व निर्धारण तत्त्वा में से किसी एक व मन्त्र की अनाधिक विवादास्पद स्थापना की दशा में ही प्रायः एन प्रश्ना का विवेचन होता था यह न विषय व विवेचन में किसी सीमा तत्र अग्रवस्था का कारण रहा है क्योंकि एक समावधान या अन्वय विचार्यों के लिए इस प्रकार के उद्धारण प्रायः अग्र तत्त्वा की उपेक्षा व उनके एक तत्त्व के महत्त्व पर अधिक वन गते हैं। अतः हम इस विषय का विवेचन सावधानी से प्रारम्भ करना चाहिए।

मध्ययुग हम उन वनियय वाक्यांश पर विचार कर सकते हैं जो पार्लियमेंटों एवं जनता द्वारा बनाये गये सिद्धान्तों को सामान्य शब्दांश अन्वय मानने पर वन देते हैं। फ्लुरी के एव (Fleury) ऐगो की दमवा शताब्दी व उन्नत की रचना में जिसका तीसरी पुस्तक में बहूधा उल्लेख किया गया है हम चर्च तथा राय में चुनाव के सिद्धान्त की अग्रिम प्रवृत्ति परिलक्षित मिलती है। व कहता है कि उसे तीन सामान्य (Generals) सिद्धान्तों का ज्ञान है राजा अथवा सम्राट का सम्पूर्ण साम्राज्य की स्वीकृति से विशय का नागरिकों एवं पादरियों की निर्विरोध सहमति से तथा मन्त्रियों का मदवासी माधु मन्त्री के प्रवृत्तर निगम द्वारा।⁴

एमी व माय ही हम इस प्रश्न का और अधिक निश्चित उत्तर पुनर्वट द्वारा किया गया पाते हैं जो 1006 ई. से 1028 ई. के बीच चाट्रेस का विशय (Chartres) था। अग्रिम एक पत्र में उमन हस्तापूर्वक थियोडोसियस नामक व्यक्ति के विशय के रूप में अग्रि वेक में इस कारण से भाग लेना अस्वीकार किया है कि राजा को कोई अधिकार नहीं कि वह किसी व्यक्ति को किसी धर्म प्रवेश पर विशय के रूप में क्षेत्र पर इस प्रकार घोष दे कि पार्लियमेंट जनता अथवा अन्य विशय स्वतंत्र रूप से निगम न न सकें। परन्तु उसके एक अग्रिम पत्र में यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि पुनर्वट का उद्देश्य यह निश्चय करना नहीं कि विशय पत्र पर नियुक्ति के निर्धारण में राजा का भी समुचित स्थान है। यह पत्र किसी एविमगउडस (Avismgaudus) को लिखा गया जिसने बिना पद से त्यागपत्र दे दिया

था तथा अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति के बग़ैर अपने पद पर लौटना चाहता था। फ़ुर्नस्ट कहता है कि उसे बसा करने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि उसके उत्तराधिकारों की नियुक्ति पादरियो एव जनता के चुनाव राजा की सहमति तथा रोमन प्रधान पादरी की स्वीकृति से सेन्स के आच बिशप द्वारा हुई है जो उस क्षेत्र का प्रमुख धर्माध्यक्ष है।⁶

बग़ैर मे ग्यारहवीं शताब्दी में हम पाते हैं कि चर्च तथा राज्य के सुधारवादियों द्वारा अत्यन्त दृढ़तापूर्वक पादरियो एव जनता द्वारा चुनाव के सिद्धांत का समर्थन एव क्रिया-ब्ययन किया गया। नियो नवम द्वारा राइम्स में 1049 ई० में बुलाई गई परिपद में यह व्यवस्था प्रकाशित की गई कि पादरियो एव जनता द्वारा चुनाव के बिना कोई चर्च पर शासन करने के लिए नियुक्त नहीं किया जाए। उसी वर्ष उसके द्वारा भेज म हर्ष परिपद में दो दावेदार बेसन्सो के आच बिशप पद (Besancon) के लिए उपस्थित हुए एक बर्यौंड जो यह दावा करता था कि उसको ब्रगण्डी के राजा एडोल्फ द्वारा इस पद पर स्थापित एव प्राप्त के बिशपो द्वारा अभिषिक्त किया गया है तथा दूसरा ह्य (Hugh) जो उसके विरोध में यह कहता था कि बर्यौंड का निर्वाचन अथवा स्वागत पादरियो अथवा जनता द्वारा नहीं हुआ अपितु उसने अपनी नियुक्ति रूप के बल पर राजा से खरीदी है परन्तु वह स्वयं जनता एव पादरियो द्वारा चुना गया है। परिपद ने व्यवस्था के नियमों को ध्यान में रखकर यह निर्णय दिया कि क्याकि बर्यौंड चर्च के पुत्रों द्वारा न तो चुना गया न धर्म गुरु के रूप में उसका स्वागत किया गया अपितु सदा ही उसे अस्वीकृत किया गया है अतः उसे अनिच्छुक जनता पर न तो थोपा जा सकता है न थोपा जाना चाहिए जबकि ह्य जो कि जनता एव पादरियो द्वारा आचबिशप के रूप में निर्वाचित एव वाञ्छित है तथा जिसने अनिदनीय रूप से इतने लम्बे समय तक अधिकार पद को धारण किया है शांतिपूर्वक उसे बनाए रखे क्योंकि वही सच्चा गडरियो (नेता) है जो द्वार से प्रविष्ट हुआ है तथा जो दूसरे ढंग से आया है वह चोर एव लुटेरा है।⁷ यह उन्नेतनीय है, कि परिपद का निर्णय ह्य द्वारा बर्यौंड पर लगाए गए धर्म विक्रय के आरोप के आधार पर जो कि सिद्ध नहीं किया जा सकता था न होकर इस आधार पर किया गया कि चुनाव में पादरियो तथा जनता के अधिकार की अपेक्षा की गई है। इसके अतिरिक्त यह और भी उल्लेखनीय है कि सम्राट हेनरी तृतीय भी जसा पिछले अध्याय में हम उल्लेख कर चुके हैं इस परिपद में उपस्थित था तथा यह विशेषतया वर्णित है कि उसने इस निर्णय पर स्वीकृति दी।⁸

यदि इन वाक्यांशों में हम इस सिद्धांत पर स्पष्ट बल दिया जाता हुआ पाते हैं कि बिशप का चुनाव उस धर्म क्षेत्र के पादरियो एव जनता द्वारा किया जाना चाहिए तो हम बसवा एव ग्यारहवीं शताब्दियों के साहित्य में ऐसे अनेक वाक्यांश भी पा सकते हैं जिनकी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि उनके अनुसार लौकिक शासक चाहें बग़ैर राजा हो अथवा सम्राट वास्तव में धर्म पद पर नियुक्ति के असौमित्र अधिकारों से सम्पन्न था। सेंट उगालरिक (St Udalric) के जीवन चरित्र में जो सम्भवतः दसवीं शताब्दी के आखिरी वर्षों में लिखा गया था एक स्थान पर कहा गया है कि उसने सम्राट से कहा कि

उसकी अपनी मृत्यु के बाद रिचर्ड पद जिस पर वह छातीन था उसने भतीजे अल्बेरो (Adalbero) को प्रान्त दिया जाए तथा सम्राट न बसा करने की प्रार्थना की।⁹ अब हम उन वाक्यांशों पर विचार करेंगे जिनमें उसके जीवनी लेखक ने सन उदारिक के उत्तराधिकारी की नियुक्ति की वास्तविक परिस्थितियों का वर्णन किया है इसका ही साथ यह उल्लेख भी महत्वपूर्ण है कि तबभग स्वेडवार्ड ने राजा के सम्राट को यह अनियमित अनुरोध स्वीकार करना हुआ बताया गया है।

पुनः यह भी उल्लेखनीय है कि वेरोना का राथेरियस (Rathenus of Verona) जो कि राजा की तुलना में बिशपों के उच्चतर गौरव का सबसे समर्थक है तथा उन राजा पर बल देता है कि राजा लोग जो बिशपों द्वारा पद पर स्थानित किये जाते हैं बिशपों को अभिविक्त नहीं कर सकते तो भी वह राजाओं द्वारा बिशपों के निर्वाचन अथवा पद स्थापना के अधिकार का वर्णन करता है।¹⁰

साथ ही रोमन ग्रेगर शपथ द्वारा पूर्ववत् धर्म विचार की व्यक्तिगत रूप में तथा एक भाषण द्वारा जो उसके कथनानुसार हेनरी तृतीय ने गाल तथा जर्मनी के बिशपों को किया था निंदा करते हुए यह स्वीकार करता हुआ प्रतीत होता है कि राजा को पवित्र पदों पर नियुक्ति का अधिकार प्राप्त है।¹¹

यह स्वाभाविक ही होता यदि कोई अधिचारी सम्राट से यह निष्पत्ति निकाले कि उस युग में धर्म पदों की अधिकांश नियुक्तियाँ नीच शासकों द्वारा पादरियों जनता अथवा दूसरे धार्मिक अधिकारियों की आज्ञा का ध्यान रख बिना की जाती रही हैं तो भी वास्तव में उस प्रकार का निष्पत्ति ही निवारना चाहिए परिस्थितियों के अभाव स्वरूप का ज्ञान हम तभी होता जब हम यह देखें कि उस प्रकार के स्पष्ट अस्पष्ट वाक्य उस युग के कतिपय प्रतिद्वन्द्व चर्च के अधिकारियों के लेखों में भी मिलना सम्भव नहीं।

ग्रेगट के पत्र व्यवहार में जो वाक्य में पोप सिक्लेस्टर द्वितीय द्वारा हम ऐसे वाक्य पा सकते हैं जो चर्च के पदों पर निष्पत्ति के सही तरीके के बिना भी मत का समर्थन करने के लिए उपयोग किए जा सकते हैं। राइम्स के पात्र बिशप अलेक्जेंडरो के नाम से आठो द्वितीय की बिशप रानी थियाफेनी को लिखे जाने वाले एक पत्र का प्रारूप प्रतीत होने वाले एक पत्र में उसमें कहा गया है कि यदि कोई बिशप पदों पर कत हो तो किसी ऐसे व्यक्ति की उस पर नियुक्ति न करें जिसकी सिफारिश पात्र बिशप न करता हो तथा विशेषतया ग्रेगट को एक ऐसा पत्र प्रदान कर। दूसरे पत्र में जो उसी आंच बिशप के नाम से लिखा गया है अलेक्जेंडरो राजा द्वारा प्रान्त बिशप पद को स्थापित करने की अनुरोध भतीजे को प्रान्त करना हुआ दिखता है।¹² पुनः एक अन्य पत्र में जो सम्भवतः ट्रीयर के आंच बिशप के नाम से लिखा गया है वह धरद्वन का जनता की उन राजा के लिए निंदा करता है कि उसने एक अन्य अलेक्जेंडरो को बिशप मानना अस्वीकार कर लिया है जो सम्राट द्वारा प्राप्त कि बिशपों की स्थापना एक महमति से नियुक्त किया गया था।¹³ आठो तृतीय का नाम से लिखे गए एक दूसरे पत्र में फिर आंचों को यह कहा हुआ बताया गया है कि उसने कापुआ में विद्यमान सत दिमेट के मठ को किता साधु को प्रदान कर

दिया है।¹⁵

यदि हम केवल इन वाक्यांशों से ही निष्कर्ष निकालें तो स्वाभाविक रूप से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि गेबर्ट धार्मिक पदों पर नियुक्ति को लौकिक सत्ताधारियों का अधिकार मानता था तथा अधिक से अधिक उसमें सम्प्रातीय विशपों व अधिकारों को केवल थोड़ा-सा महत्त्व देता था। किन्तु जब हम उसके पत्रों की गम्भीरतर परीक्षा करते हैं तो हम पाते हैं कि अन्य अवसरों पर वे पूर्णतया एक भिन्न मत का प्रतिनिधित्व करते हैं। राइम्स के मठ के भिक्षुओं के नाम से फ्ल्यूरी के साधुओं को लिखे गए एक अन्य पत्र में वह ऐसे एक व्यक्ति के प्रति शोध एवं घृणा व्यक्त करता है जो केवल राजकीय नियुक्ति के आधार पर एक मठ के लिए दावा प्रस्तुत करता है।¹⁶ पुनः 989 ई० में आनल्फ के राइम्स के आच विशप चुने जाने की घोषणा के अभिनेत्र में प्रान्त के विशप यह कहते हुए बताए गए हैं कि वे सभी पादरियों व जनता की राय से तथा सभी राजाओं की सहमति से उसे अपना अध्यक्ष चुनते हैं।¹⁷ उही विशपों के एक पत्र में जो स्वयं गेबर्ट के आनल्फ के पद-युक्त किए जाने के बाद वर्जों की परिपद द्वारा 991 ई० में राइम्स के आच विशप चुने जाने की घोषणा करता है जनता द्वारा निर्वाचन की आवश्यकता के यथाथ स्वरूप के बारे में एक मनोरञ्जक वाद विवाद है। वे कहते हैं कि आनल्फ को उनके द्वारा जनता की माँग के प्रभाव में चुना गया था क्योंकि जसा धर्म-ग्रन्थ कहते हैं जनता की आवाज ईश्वर की आवाज है तथा शास्त्रानुसार विशप के चयन में पादरियों एवं जनता की स्मृति एवं अभिलाषा से चुनाव किया जाना आवश्यक है। वे कहते हैं कि व नहीं समझते थे यह बात सदा सच नहीं होती कि जनता की आवाज ईश्वर की आवाज है और इसीलिए सभी पादरियों एवं जनता की आवाज को विशप के चुनाव के लिए आवश्यक मानने के बजाय केवल उही की राय आवश्यक है जो कि सरल चित्त एवं अद्रूपित हो। वे धमपिताओं को यह कहते हुए उद्धृत करते हैं कि विशप का चुनाव अनियमित भीड़ द्वारा न किया जाए किन्तु वह विशपों के ही द्वारा हो ताकि जिसका अभिप्रेत किया जा रहा है उसकी वे परीक्षा कर सकें। अतः वे राइम्स प्रांत के विशप राजाओं हूँ तथा राइट की सम्मति और स्वीकृति से तथा जनता एवं पादरियों की सहमति से जो कि देवताओं के अपने हैं घोषणा करते हैं कि साधु गेबर्ट को उनके द्वारा अपना आच विशप चुन लिया गया है।¹⁸

जब हम इन सभी वाक्यांशों को सम्मुख रखते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि गेबर्ट इससे सुपरिचित था कि विशपों एवं मठाध्यक्षों का नियुक्त लौकिक सत्ता व स्वच्छाचार्य नियम का विषय नहीं है। किन्तु उस नियुक्ति में उस धर्म-क्षेत्र की जनता के चाहे वे पादरी हों या सामान्य जनता तथा विशपों की नियुक्ति में प्रान्त व विशपों तथा मठाध्यक्षों की नियुक्ति के विषय में मठ के साधुओं के यथोचित एवं धार्मिक अधिकार हैं।

गेबर्ट का पत्र व्यवहार उस प्रकार दसवीं तथा ग्यारहवीं शताब्दियों के लेखकों के धार्मिक वाक्यांशों की व्याख्या करते समय अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता बताते वाला एक उदाहरण हो सकता है तथा पीटर डेमियन की रचनाएँ इसे बहुत स्पष्ट कर देती हैं कि ग्यारहवीं शताब्दी के तीसरे चतुर्थांश में सुधारवादी दल का सबसे प्रसिद्ध

प्रतिनिधि भी उन तन्त्रों की जटिलता को स्वीकार करता था जो एक यापसगत तथा सुव्यवस्था धार्मिक नियमों के लिए आवश्यक है। उस समय चर्च धर्म विषय के अपराधों को दृढ़ता से दंड देने के लिए सजग था हम प्रश्न पर हम कुछ समय बाद विस्तार से विचार करेंगे और चर्च के संघर्षक संस्य जस पीटर डेमियन इस दाव की निरन्तर निंदा करते रहते थे तथा हमारे दमन के लिए कठोरतम उपायों के प्रयोग करने का प्रतिपादन करते थे किन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि वे नीतिक सत्ताधारियों द्वारा धार्मिक पदा पर नियुक्ति में योगदान के अधिकार को अस्वीकार अथवा उस पर सत्तेह करते हो।

उत्तरागाम्य पीटर डेमियन के एक उत्तुतर प्रबंध में अत्यंत हृत्तापुवक मनुष्यों को राजकीय पदों के प्रशासन में की गई सेवाओं के लिए विशेष के कार्यालय के अन्तर्गत शाहा या राजकीय गिरजा के छोटे पादरी के रूप में नियुक्ति करने की प्रथा पर आक्रमण किया गया है तथा राजकुमारों एवं अन्य सभी सजाओं के धार्मिक पदा पर नियुक्ति का अधिकार है अनुरोध किया गया है कि उनका यह कृतव्य है कि वे यह ध्यान रखें कि उनको अपने अधिकारों का प्रयोग स्वेच्छाचारी अथवा अस्तिर डंग से नहीं करना चाहिए।¹⁹ वह उनको अधिकारों के दुरुपयोग के विरुद्ध चेतावनी देता है किन्तु वह यह नहीं कहता कि उनका अधिकार वायोजित नहीं। हमारे स्थानों पर फाएजा के (Faenza) पादरियों एवं जनता को लिखे एक पत्र में वह बहुत स्पष्टतया उनके विशेष को चुनने के अधिकार की तथा उसकी नियुक्ति में पोप के भी भाग को स्वीकार करता है किन्तु वह उनकी इसके लिए प्रशंसा करता है कि उनके द्वारा राजा के आने तक चुनाव नहीं करने का निश्चय किया गया था।²⁰ परमा के कडेलुस (Cadelous of Parma) को लिखे गए एक पत्र में जो कि एन्कजेण्डर तृतीय के सिद्ध 1061 ई. में जमान और देम्बाड विरुद्ध की एक धर्मसभा द्वारा होनोरियस तृतीय (Honorius II) के रूप में पोप पद के लिए चुना गया था पीटर कुछ सीमा तक अनियमित शब्दों में रोमन चर्च की इच्छा के बिना रोमन धर्मधिकार को पाने के प्रयत्न के लिए उसकी श्रुष्टता की निंदा करता है। यदि सेनेट छोटे पादरियों तथा जनता को बंधन दे तो भी उन कम से कम कार्डिनल विभागों का स्थान तो स्वीकार करना ही चाहिए जो कि पोप के निर्वाचन में प्रमुख स्थान रखते थे। धर्मवैधानिक सत्ता का यह आदेश था कि छोटे स गिरजाघर का पादरी भी इसका निगाह स्वतंत्र रूप से कर मने कि उसमें ऊपर के पत्र पर किसे नियुक्त किया जाए। वह पोप पत्र के उचित निर्वाचन के प्रमुख तत्त्वों का सन्निपत्त विवेचन भी करता है। वह कहता है कि कार्डिनल विभागों का प्रथम स्थान है उसके बाद सामान्य रूप से पादरियों और तीसरे स्थान पर जनता की स्वीकृति आती है। अतः में हम पर तबतक प्रतीक्षा की जाएगी जबतक कि राजकीय सत्ता की रचना न की जाय यदि जसा कि एन्कजेण्डर तृतीय के चुनाव में हुआ था परिस्थितियाँ ऐसी न हों कि प्रतीक्षा करना खतरनाक हो।²¹ इस पत्र के अन्त में पोप के चुनाव के सम्बन्ध में पोप निकोलस तृतीय के नए विधानों की आरम्भ करने प्रतीत होत हैं तथा उनका हम इस तथ्य के उदाहरण के रूप में उद्धृत करते हैं कि पीटर डेमियन विरुद्ध पत्र के निर्वाचनों में पादरियों

एव जनता दोनों के अधिकारो तथा राजा और सम्राट के सम्मति देने के अधिकारो को भी स्वीकार करता था ।

सम्भवत इम युग के धार्मिक पदो पर नियुक्तियो के सिद्धांता का सब ग्ठ उदाहरण चुनावो क उन कतिपय विवरणो मे उपन्यथ होगा जो कि सुरक्षित रखे गए हैं । सबसे पहला जिस पर हम ध्यान देगे वह सत उगलरिक् के जीवन चरित्र म सुरक्षित है जिसका हम पहले ही उल्लेख कर आय है । उससे हम पता चलता है कि उसकी मृत्यु के बाद उस बिशप घम प्रदेश म सम्राट को प्रतिनिधि भेज गए जो बिशप के घम ग्ठ को अपने साथ लेकर गए । कोई काउट बर्चार्ड (Burchardt) उनको रोकने म सफल हो गया तथा उसन उनको यह बहकर समझाया कि सम्राट न निश्चय किया है कि उसका पुत्र बिशप बन । प्रतिनिधि इस बात से परिचित बताए गए है कि उसे चुनना अथवा न चुनना उनके अधिकार म है अत मे उन्होंने वसा ही किया तथा अपने चुनाव नियम पर सम्राट की पुष्टि कराने के लिए राजसभा को खाना हो गय ।²

सत पीटर के मठ के उत्तराधिकार की परिस्थितियो क बरान से जो चार्ल्स के फुनबट क द्वारा किया गया है इसकी तुलना की जा सकती है । जब यह मठाधीश मरणांतन था मेगनाड नामक यक्ति चाटम क सामन्त थियाबाल्ड क पास मठाधीश पद पर नियुक्ति के लिए गया । काउट न उस पुन साधुओ क पास भेज दिया और यह इच्छा यक्त की कि वे उसका मठाधीश के रूप म स्वागत करें । किन्तु उनके द्वारा प्रत्युत्तर दिया गया कि तब तक कोई मठाधीश नही हो सकता जबतक पहना मठाधीश जीवित है या वह मठ के सदस्यो द्वारा निर्वाचिन नही ह । कुछ समय बाद जब मठाधीश की मृत्यु हो गई तो साधुओ न निर्णय किया कि वे मेगेनाड को मठाधीश बनाना नही चाहते और सामन्त के पास अपने प्रतिनिधियो को मठाधीश की मृत्यु का समाचार देने तथा नया चुनाव कराने के लिए उसकी अनुमति देने को भेजा । साधुओ म से दो यक्तिगत रूप स उम सामान के पास चले गए तथा उन बताया कि उनक साथियो न मेगनाड को चुन लिया है तथा उसने उनकी अनुवक्ति से सन्तुष्ट होकर अधिकार दण्ड उनको तुरत सीप लिया । दूसरे साधु इस पर बहुत क्रुद्ध हुए तथा उहान सामन्त का विता कि उनके द्वारा मेगेनाड निर्वाचिन नही हुआ है किन्तु उसन उनका विवश किया कि वे उसको उस पद पर स्वीकार करें ।²³

कैम्बराई (Cambrai) क बिशप सत लाटवट क जीवन चरित्र म हम एक अय चुनाव का रोचक एव विस्तृत विवरण पात है । पद के रिक्त होने पर उमे पादरिया एव जनता द्वारा बिशप पद के लिए चुना गया तथा वह एव कैम्बराई चर्च के प्रतिनिधि हेनरी शृतीय की रायसभा मे पिछन बिशप की मृत्यु की और नीटवट के निर्वाचन की सूचना देने के लिए भेज गय । हेनरी न घोषणा की कि वह नीटवट को कैम्बराई का बिशप चुनन म उनस सहमत है । प्रान्त क बिशपो की सहमति से फिर यह प्रस्ताव राइम्स के ग्राच बिशप के पास भजा गया जो बध अधिारत अधिधर्माध्यक्ष था तथा उसन अपना स्वाकृति दे दी ।

इन बरानो स अधिक् महत्वपूर्ण चीज क बिशप दाओ की नियुक्ति स सम्बद्ध घटनाओ का अत्यन्त विस्तृत बरान है । 1041 ई० म बिशप निथाड (Nithard) की मृत्यु के बाद

अपनी प्रतिष्ठा के बावजूद उसे विरोध रूप से चुना गया था। उसने कहा कि उसका चुनाव राजा को अप्रिय होगा तथा अनुरोध किया कि वे उसकी इच्छा जानने तक प्रतीक्षा करें किंतु उनके विरोध को अस्वीकार करते हुए उस चुनाव दिया गया तथा रेट्सबोन (Ratsbon) को भेज दिया गया जहाँ उस समय हेनरी तृतीय था। बाजो के वहाँ पहुँचने पर बाजो के गिरजाघर के पत्र के साथ-साथ पादरी का दण्ड भी राजा को सौंप दिया गया। दूसरे दिन राजा ने उस विषय पर राजभवन के राजकुमारों एवं विशपों से विचार विमर्श किया। उनमें से कुछ ने यह विचार प्रस्तुत किया कि यह चुनाव राजा की सहमति बिना हुआ है अतः अस्वीकार कर दिया जाय तथा यह भी अनुरोध किया कि त्रिणव का प्राणो गिरज के पादरिया भ से ही चुना जाय जहाँ बाजो ने कभी सवा नहीं की था। उन यत्तियाँ का मत स्वीकृत हो जाता यदि कोनोत का आचविशप हर्मान तथा बगबग का विशप इनो हस्तक्षेप नहीं करते जिनके द्वारा अतत हेनरी को बाजो के चुनाव को स्वीकार करने के लिये मना किया गया।⁴

इन विवरणों में सम्भवतः हम इस युग के नियुक्ति के सामान्य सिद्धांतों एवं तरीकों को पा सकते हैं। घम क्षेत्र अथवा मठ के पादरी एवं जनता चुनाव के अधिकार का दावा करते थे किंतु राजा को भी अपनी स्वीकृति देनी होती थी। हम देख सकते हैं कि जिस एक अधिकारी यत्तियाँ ने चुनाव अथवा अधिकार दण्ड के साथ राजा के पास भेजा गया तथा यदि उसने उसे स्वीकार कर लिया तो उसे पद पर उसे नियुक्त कर दिया गया। यदि राजा उनका चुनाव से सन्तुष्ट नहीं होता तो वह न केवल अपनी सहमति देना ही अस्वीकार करता अपितु स्वयं दूसरी नियुक्ति कर सकता था। इस प्रकार नियुक्त व्यक्ति को फिर उस प्रदेश के अधिकारमध्यक्ष के पास भेजा जाता था क्योंकि यह अधिकार प्रतिष्ठापित था कि उससे तथा विशपों से नवीन अधिकारी के अभियेक के पूर्व परामर्श किया जायगा।

अतः यह देखना भी उचित होगा कि इसी एक ग्यारहवीं शताब्दी में अनेक सदस्यों पर विशपों के चुनाव में पोप ने भी महत्वपूर्ण भाग लिया है। पोप जान ब्रयोन्स द्वारा बबरियन जनता एवं पादरियों से निर्वाचित होने पर साल्जबर्ग (Salzburg) के आचविशप की नियुक्ति का बरण उपनयन होना है।²⁵ पोप ग्रेगोरी पचम को आन्फ नामक व्यक्ति को आक्सोने के विशप पद पर नियुक्ति के हेतु सम्राट की आज्ञा विशपों के निर्णय तथा उस घम-क्षेत्र के पादरियों एवं सम्मानीय व्यक्तियों की स्वीकृति एवं मायता की पट्टि एवं उससे सहमति रखते हुए बरण किया गया है। बनमट तृतीय पादरियों जनता और राजकुमारों द्वारा सालनों के आचविशप के निर्वाचन को समुत्त करता है।²⁶ एन्केन्ड्रिण्ड द्वितीय विज्जन् विरिण्ड द्वारा एन्के के आचविशप की नियुक्ति के औपचारिक सहमति देता है²⁷ तथा जसा हम जानें कि विचार करने का अवसर प्राप्त होगा किन्नाड की मन्त्रणा से पोप ने यह भी माँग की कि मिलन के आचविशप प के लिये कोई भी चुनाव तबतक बध नहीं है जबतक पोप उसकी स्वीकृति न दे।²⁸ धार्मिक चुनावों में पोप की स्थिति का तर्कधार वास्तव में क्या था इस पर हम यहाँ विचार नहीं कर सकते किंतु उसके इन उदाहरणों की समाक्षा महत्वपूर्ण है।

सदम

- 1 देव चण्ड प्रथम वृ 267 70 ।
- 2 *Atto of V cell D Pr u s L cl*
astic s Mig P L ol
137 (p 87)
- 3 *Od n us (Op ul m) v Mi*
g P L vol 142
- 4 *Fulbe t f Cha tr s Ep v*
Mg e P L ol 141
- 5 *Abbo Abb t of Fl y Coll ct o*
Can n m sv Mg n P L l 139
- 6 *Id Ep x*
- 7 *Leo IX Ep 2 M P L*
v l 143
- 8 देवो वृ 4 ।
- 9 *V ta S Udair c x M n P L*
ol 135
- 10 *R the s of Verona P l qu o m*
2
- 11 *R dolfu Gl b r H t i 6*
Mgn P L vol 172
- 12 *G b t Ep lae 117*
- 13 *Id Ep 57*
- 14 *Id Ep 79*
- 15 *Id Ep 214*
- 16 *Id Ep 95*
- 17 *Id Ep 155*
- 18 *G rb rt Ep 179*
- 19 *St Pe r Dam Opus ulum*
4 Mg P L ol 145
- 20 *Id Ep tles Bk v 10 Mg e*
P L vol 144
- 21 *St P te Dam an Ep Bk 20*
- 22 *V ta S Udair i xvi i Mg e*
P L l 135
- 23 *F lbe t of Chartres Ep II*
Mg P L vol 141
- 4 *A selm G t Ep coporum Leod*
e n 50 M G H S S v l 7
- 25 *P pe Joh XIII Ep and D c III*
Ma ne P L v l 135
- 26 *Clement II Ep vi M ne P L*
l 14
- 27 *Al ndr II Ep 56 Mg e*
P L ol 146
- 8 *A nulf s G ta Ach p scoporum*
M di la ns m M G H S S
in 21



चतुर्थ अध्याय

लौकिक एवं धार्मिक सत्ताओं की सापेक्ष गरिमा

यह स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त कहा जा चुका है कि सम्भवतः दसवीं एवं ग्यारहवीं शताब्दियों में दा महान् सत्ताओं की सापेक्ष स्थिति को निर्धारित करने वाले कनिष्ठ सामाज्य सिद्धान्तों को प्रत्येक व्यक्ति स्वीकार करता था तथापि प्रत्येक सत्ता के यथाय क्षेत्र का वास्तविक परिसीमन कुछ अनिश्चित तथा अस्थिर था। लौकिक सत्ता के अपन धार्मिक दायित्व थे तथा धार्मिक सत्ता के राजातिक दायित्व थे जबकि अनन्त धार्मिक विषयों के निर्देश एवं नियंत्रण में ईसाई जनता अर्थात् जनसामान्य का अनिर्धारित किन्तु वास्तविक स्थान था। इस युग की कुछ अवधारणाओं पर जो उन विचारों के अविच्छिन्न स्वरूप के उदाहरण हैं, जिन पर बाद में सभ्य केचित्त हुआ तथा उन पर हुए चर्च के कुछ महान् सदस्यों के विचारों पर अधिक ध्यान देना उपयोगी होगा।

हम इस प्रकार के वाक्यांशों पर सक्त हैं जो बहुत स्पष्ट रूप में लौकिक सत्ता की तुलना में आध्यात्मिक सत्ता के उच्चतर गौरव पर बल देते हैं। हम पिछले पुस्तक खण्ड में कई बार दसवीं शताब्दी के रोचक किन्तु विचित्र विचारों के उदाहरणों का उल्लेख कर चुके हैं। उनमें से लता में हम राजा के पद की तुलना में अपन पद एवं स्थिति के उच्चतर हान के विषयों की निश्चिन्त अभिव्यक्ति पाते हैं। वह शरीर के राजा हुए के प्रभाव से वरोना का विचार बना था परन्तु उससे भगवान् के कारण कुछ समय के लिए पावित्र्य में बन्नी बना लिया गया था। प्रलाविचमोरियम (Praeloquorium) नाम से प्रसिद्ध उसने ग्रन्थ में उसने निस्संकोच रूप से राजा का ध्यान करते हुए उसे विषयों का सम्मान करने की चेतावनी दी है और उसमें यह स्मरण किया गया है कि वे उसके ऊपर नियुक्त किये गये हैं न कि वह उनके ऊपर। यह कासटेटाइन के बारे में एफनस की कथा तथा नाथन का परिपद में विषयों की उपस्थिति में उसकी विनम्रता का उद्धरण देता है।¹ वह दावा करता है कि शरीर के अनिर्दिष्ट ग्रन्थ किसी के द्वारा विषय के बारे में विचार नहीं किया

जा सकता² तथा विशप राजा से उच्चतर स्तर पर है क्योंकि राजाओं को विशपो ने बनाया है जबकि विशप राजा द्वारा नियुक्त नहीं होता।³

पुन पोप सि-वेस्टर द्वितीय (गेबर्ट) के नाम से प्रसिद्ध एक सन्दर्भ ग्रन्थ में विशपो को यह स्मरण रखने का अनुरोध किया गया है कि उनकी गरिमा की तुलना किसी से भी नहीं हो सकती तथा विशप क किरीटो की तुलना में राजाओं के मुकुट वैसे ही हैं जैसे सोने की तुलना में सीसा और राजा तथा राजकुमार पुरोहितों को सिर झुकाते हैं तथा उनकी आज्ञाओं का आदर करते हैं।⁴

इस सिद्धान्त का सबसे महत्वपूर्ण एव प्रबल प्रतिपादन सम्भवतः लीज के विशप वाञ्छो पर जिसका हम अनेक बार उल्लेख कर चुके हैं आरोपित शो में पाएँगे। उसका जीवनी लेखक बणन करता है कि किस प्रकार एक अक्षर पर सम्राट हेनरी तृतीय की राजसभा में उपस्थित होने पर उसने अपने लिए एक आसन की माग की क्योंकि यह उचित प्रतीत नहीं होता कि पवित्र विनयन से अभिषिक्त व्यक्ति का समुचित सम्मान न हो। सम्राट ने कहा कि उसे भी पवित्र तेल से सिंचित होने के कारण सत्ता प्राप्त हुई है किन्तु वाञ्छो ने उत्तर दिया कि जो यह अभिषेक उसने प्राप्त किया है वह पुरोहित का अभिषेक से बहुत भिन्न तथा हीनतर है क्योंकि वह मृत्यु की शक्ति का चिह्न है जबकि पुरोहित का अभिषेक जीवन की शक्ति का।⁵

उन दिनों में भी जबकि लौकिक सत्ता की तुलना में आध्यात्मिक सत्ता की उद्भृष्टता के दावे जसा हम देख चुके हैं कितने प्रबल थे हम सावधानी से यह ध्यान रखना चाहिए कि इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं कि लौकिक विषयो में भी धार्मिक व्यक्ति लौकिक सत्ता का अधीन नहों थे। बड़े पादरी जैसे, विशप एव बड़े बड़े मठा के मठाधीश दसवी शताब्दी के अन्त तक प्रायः सभी के सभी सम्राट या राजा के या किसी बड़े सामन्त के जागीरदार थे तथा इस रूप में वे उनके प्रति निष्ठा रखते थे तथा उनके सामन्ती पद के प्रति सम्मान के साथ-साथ सामन्ता जगानना के अधिकार क्षेत्र में आते थे।

हम ऊपर के शो उद्धृत कर चुके हैं जिनमें पोप सि-वेस्टर द्वितीय के रूप में गेबर्ट ने राजा की तुलना में विशपो को उच्चतर गरिमा का बणन किया है किन्तु साथ ही यह भी ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि उसी गेबर्ट ने जब वह बोवियो का मठाधीश था कहा है कि वह किसी समय वास्तव में स्वतन्त्र था परन्तु अब वह सम्राट का सेवक है।⁶ पुन सम्राट कानॉन प्रथम के जीवन चरित्र में विद्यो ने नोम्बार्डी के बड़े सामन्तों के विरुद्ध वैलवैसोरिस (Valvassores) के विरोध का बणन करते हुए उल्लेख किया है कि उसने सोम्बार्डी के तान विशपो को पकड़ लिया तथा निवासित कर लिया। वह कहता है कि इससे अनेक शक्ति क्रुद्ध हो गयी कि उसने बिना विचार किये इसका पुरोहितों को दण्डित किया तथा वह विशपतया कोनाड के पुत्र हेनरी का (जो बाद में हेनरी तृतीय हुआ) उल्लेख करता है जो अपने पिता के वयस में बन्त नाराज था। यदि यादिक नियम द्वारा अपराधी ठहराया जाने के बाद उनको सजा दी जाती तो उनके प्रति क्षान्ति का कोई औचित्य नहीं था किन्तु ऐन नियम सुनाये जाने से पूर्व वे पुरोहिता के योग्य सम्मान का पात्र थे।⁷ उचित यादिक तरीके को अपनाय बिना विशपो के खिलाफ कोनाड की कायवाही की

कठोर अस्वीकृति केवल नग्न तथ्य को ही प्रत्यक्ष स्पष्टतया सिद्ध करती है कि बिशप सम्राट के विरुद्ध अपराधा के त्रये उचित वायानयो नग्न ही दण्ड के पात्र होने के ।

इसको श्री अथिच वन पुनक नीज के बाजो के जीवन चरित्र म स्पष्ट किया गया है जिसका हम पहले अभी अभी ज्ञान कर चुके हैं । खन्ना के आचबिशप बीगर पर अनेक धार्मिक अनियमितताया के आरोप लगाये गये थे तथा उन सम्राट के वायानय म बुनाया गया था श्री यत् मामना बिशपो को सौंप दिया गया । उनम बुना हिचमिचाहट था किन्तु बाजो के धावणा की कि एक अनियमितताया का निगण एक उत्तरी बिशप नही कर सकता । अत म अपनी आगा के नाम पर जय संग्राह न गार मामना म उदास अपनी राय देने का नहा तो उग्न उत्तर दिया कि बिशपों के निगण पोप का आदेश एक संग्राह के प्रति निष्पक्ष मान्य है । नही लौकिक विषया म सम्राट को जवाब देना होता है किन्तु धार्मिक विषया म के पाप के प्रति उत्तरदायी हैं । अतिय यदि खन्ना के आचबिशप के धार्मिक अवस्था के विरुद्ध कोई अपराध किया है तो इसका निगण केवल पोप ही कर सकता है किन्तु उसने यदि सम्राट द्वारा सौंप गये नाकिक विषया म कोई असत्यवाणी या निष्ठाहीनता पूरा व्यवहार किया है तो निस्संशय सम्राट उगका निगण कर सकता है ।⁸

अपने दोषों के धार्मिक सत्ता के स्थापना बनाये गये के त्रिये बाजो की दृष्टता स्पष्ट है किन्तु लौकिक विषया म बिशपों के लौकिक सत्ता के अधान को के विषय म भी उगका निगण उतना ही स्पष्ट है ।

यदि हम सपोप म पुन पीटर डेमियन के दृष्टिकोण पर विचार कर जिसने बारे म हम अगेक बार उतरा कर प्राय है तो सम्भवन यह लौकिक और धार्मिक सत्ताया के सम्पन्ना और स्वरूप के बारे म उस समय मनुष्या की धारणा की जटिलता पर अत्रिक स्पष्टतापूर्वक प्रकाश डाल सकता है । जमा यदि हम कह चुके हैं वह ग्यारहवीं शताब्दी के तृतीय चतुर्थांश म चर्च की अवस्था और अनुशासन म सुवार नान का मवमे अत्रिक उमाही एक निश्चयी प्रतिपादन था किन्तु साम्राज्य तथा पोप के म सपप के चुन रूप म छिन्ने से पहले ही उनका देहावसान हो गया ।

उसके त्रयो से एने पन्नाश उद्धन करना बान सरल है जो यदि सम्भहीन रूप से ग्रहण किये जाए तो यह इगित करने प्रतीत होने है कि उन दो महान् दला म से जिनम यूरोप शीघ्र ही विभाजित होने वाला था किमी म भी उसका रखा जा सकता है । जमा हम देख चुके हैं धार्मिक नियुक्ति के तरीको म सुवार नान के उत्साह के आवृद्ध उसने स्पष्टतया उनके सम्पन्ना म लौकिक सत्ता की बच स्थिति का मापना दा । फागजा की जनता को लिखे गये पत्र म उसने राज हेनरी तुनीय के अपने स पुत्र अपने बिशप का चुनाव न करने के उनके निश्चय की प्रशंसा की ।⁹ लौकिक राज सत्ताधारिया को अपने को नियुक्ति के प्रसीमित अधिकारा से सम्पन्न मानन की गलता के विरुद्ध चैतायनी दत्त हुए भी वह स्पष्टतापूर्वक उनके अधिकार स्वीकार करता प्रतीत होता है ।¹⁰ यहा तक कि पोपीय पत्र पाठ का नियुक्तिया के विषय मे भी वह पोप निकालस तीय के आदेश का ध्यास्या स्पष्ट रूप से इस प्रकार करना प्रतीत होता है कि चुनाव को तबतक पूरा नही माना जा सकता जबतक की वह राजकीय सत्ता का प्रस्तुत नही किया जाय ।¹¹ उसके द्वारा किये गये हेनरी

तृतीय के उल्लेखों में जसा हम देख चुके हैं वह सबसे अधिक निश्चित शब्दों में धर्म पद का बचने से मुक्त करने के लिये हेनरी द्वारा की गई चर्च की सेवाओं को मान्यता देता है तथा उसकी राजा जोसिया (King Josiah) से तुलना करता है जिसने जब अपनी कानून की पुस्तक (Book of the Law) प्रवृत्त की तो पुराने राजाओं के अविश्वासों पुनर्मुसिप्त मूर्तियों एवं बर्दिया को उठाकर फेंक दिया था और कहता है कि क्योंकि उमने अपने पूर्वाधिकारियों के भ्रष्ट उत्पाहरण का अनुकरण नहीं किया इसलिए दबो व्यवस्था के अनुसार रोमन चर्च सम्प्रति उसकी इच्छाओं का अपीन रखा गया है तथा रोम की धर्म पीठ के लिए किसी का भी निवाचन उसके अनुसिप्त के बिना नहीं होना चाहिए।¹²

यदि हम इस प्रकार के वाक्यांशों से यह अनुमान लगाना ठीक नहीं समझें कि पीटर डेमियन धार्मिक मामलों में लौकिक सत्ता के हस्तक्षेप को उचित मानता था तो उसके लेखों में हम इस प्रकार के वाक्यांशों को भी पा सकते हैं जो लौकिक की तुलना में आध्यात्मिक सत्ता की उन्नति की भावना को स्पष्टतया अभिव्यक्त करते हैं। एक स्थान पर वह पाप का राजाओं का राजा तथा सम्राटों का राजा बताता है जो गौरव और सम्मान में सभी मनुष्यों में अग्रणी है।¹³ यह पीटर डेमियन ही है जिसने कुछ ऐसे शब्दों का सम्भवतः सबसे प्रथम प्रयोग किया जो उत्तरकालीन सभ्यता में प्रायः उद्धृत किये गये। उसने ईसा को सत पीटर को यह कहते हुए बताया है *Beato vitae aeternae clavi ero terreni simul et coelestis imperii iura* और दूसरे स्थान पर उसा सत पीटर को स्वर्ग और पृथ्वी का विधान सुपुन किये है।¹⁴

इन वाक्यांशों का एक महत्त्वपूर्ण इतिहास है तथा ये प्रायः इस अर्थ में माने गये हैं कि सत पीटर के उत्तराधिकारियों को भी विसा रूप में धार्मिक एवं लौकिक दोनों क्षेत्रों एवं सगठनों में अधिकार प्राप्त हैं।¹⁵ पीटर डेमियन का स्वयं इन शब्दों से ठीक क्या अभिप्राय था यह कहना अत्यन्त कठिन है।¹⁶ जिस सम्प्रदाय में ये कहे गये हैं वह उनकी व्याख्या पर कोई प्रकाश नहीं डालता। उसके सभी ग्रन्थों की परीक्षा से यह स्पष्टतया असम्भव प्रतीत होता है कि वह लौकिक विषयों में भी लौकिक की तुलना में धार्मिक सत्ता की सर्वोच्चता की स्थापना का प्रतिपादक था किन्तु निश्चित है वह धार्मिक सत्ता की गरिमा की महान् उत्कृष्टता को स्थापित करना चाहता था और यह सिद्धान्त मानता था कि महान्तम व्यक्ति राजा और सम्राट भी पोप के धार्मिक अधिकारों के अन्तर्गत हैं।

कम से कम एक स्थान पर उसके शब्दों में भावी सभ्यता के बारे में सूचना देने वाली भविष्यवाणी उपलब्ध होती है। हेनरी चतुर्थ को जिने गये एक पत्र में वह उसे रोम और जर्मन बिशपों की परिपद द्वारा 1061 ई. में चुने गये नकली पोप पारमा के वेनेलुअस के विरुद्ध चर्च और असली पोप अलबनजर तृतीय का समर्थन करने का अनुरोध करता है और आग्रहपूर्वक कहता है कि यदि हेनरी न वसा नहीं किया तो वह दोष का भागी होगा तथा सम्राट आज्ञापालन करवाने योग्य तभी होता है जबकि वह अपने सृष्टा की आज्ञा माने वह यदि दबो आदेशों की अवहेलना करता है तो उसकी प्रजा द्वारा उसकी पदच्युति चाय सगत हो सकती है।¹⁷

जबकि हम पीटर डेमियन के विचारों के विभिन्न पक्षों का विवेचन करते हैं तो यह

पूरी तरह स्पष्ट रहता है कि लौकिक और धार्मिक सत्ता के सम्बन्धों के बारे में उसका सामान्य निष्पक्ष व्यावहारिक रूप में जिसे हमने गेलेशियन परम्परा कहा पर आधारित है प्रथम पाँचवीं शताब्दी में पोप गेलेशियस प्रथम (Pope Gelasius I) द्वारा प्रारम्भ किये गये विचार जिनके अनुसार प्रत्येक महान् सत्ता अपने क्षेत्र में स्वतन्त्र है। हम समझते हैं कि रोचक तथा महत्वपूर्ण शब्दावली में यह उनके ग्रंथों के अनेक वाक्यांशों में अभिव्यक्त हुई है।

हमारे द्वारा अभी उल्लिखित हेनरी चतुर्थ को निश्चय उसी पत्र में पीटर डेमियन उस घनिष्ठ सम्बन्ध का वाग्वचन करता है जो राजकीय और धार्मिक सत्ताओं में होना चाहिए क्योंकि प्रत्येक को दूसरे की आवश्यकता है। पुरोहितों का सरक्षण साम्राज्य द्वारा तथा साम्राज्य का पुरोहिता के पद की पवित्रता द्वारा होता है। राजा ने स्वयं के शत्रुका सामना करने के लिए तलवार बांधी है तथा पुरोहित अपने को प्राथना में लीन करता है ताकि वह राजा और जनता के पक्ष में ईश्वर को प्रसन्न कर सके।¹⁸ वह एक अर्थ स्थान पर दो शक्तियों के बीच कायों का सावधानी में भेद करता है पुरोहित का काम बुराई का अन्त और बुराई के प्रति मातृवत् धारणा से भरा है यायाधीश का काम क्रूर व्यक्तियों को दण्ड देना तथा उनके हाथों से निरपराधा की रक्षा करना है उसे देवदूतों (Apostles) के इन शब्दों को सदैव स्मरण रखना चाहिए क्या तुम्हें सत्ता का कोई भय नहीं? वही करो जो उचित हो तुम्हें उसी की प्रशंसा मिलेगी। क्योंकि वह अन्धकार के लिए ही ईश्वर का प्रतिनिधि है। किन्तु यदि तुम बुरे करते हो जो बुराई है तो भयभीत रहो क्योंकि वह व्यर्थ ही तलवार धारण नहीं करता। राजा की तलवार और पुरोहित के दण्ड (Infula) में बहुत अंतर है।¹⁹

एक अर्थ स्थान पर वह कुछ भिन्न वाक्यों द्वारा इस मत का उक्त करता है। यायाधीशों का यायाग्य निश्चित रूप से पुरोहित के धर्म-पीठ से भिन्न है। यायाधीश इसलिये तलवार धारण करता है कि वह उनको दण्ड दे सके जो धर्मपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं पुरोहित निरपराधिता के दण्ड में सन्तुष्ट रहता है जिससे वह एक मौन तथा शांतिपरक अनुशासन बनाय रख सके। एक अर्थ स्थान पर वह उसी सिद्धान्त का उल्लेख दो तलवारों की शब्दावली में करता है तथा वह उस दशा के सुख का वर्णन करता है जहाँ साम्राज्य की तलवार पुरोहित की तलवार का साथ देती है जब पुरोहित की तलवार राजा की तलवार पर पानी बहाती है और राजा की तलवार पुरोहित की तलवार को तेज करती है क्योंकि ये दोनों तलवार वही हैं जिनका ईश्वरों का उद्गम (Lord's Passion) के समय वर्णन किया गया है। वास्तव में तभी साम्राज्य एवं चर्च का अन्त एव समाप्त होगा जब इन दोनों तलवारों का सुन्दर सामंजस्य हो।²⁰

ये दोनों तलवार ईश्वरीय हैं। दोनों दिव्य अधिकारों की प्रतिनिधि हैं दोनों का एक दूसरे से निकटतम समन्वय होना चाहिए। किन्तु यह उल्लेखनीय है कि पीटर डेमियन उनको एक दूसरे से पूणतया स्वतन्त्र एवं विभिन्न बताता है तथा वह किसी प्रकार भी यह संकेत नहीं देता जसा बाद में प्रतीत होने लगा कि दोनों तलवारें धार्मिक सत्ता के अधिकार में हैं।²¹

सन्दर्भ

- 1 RATHERIUS Praefatio : 4
Maigne P. L., vol 136
 - 2 Id id., 9
 - 3 Id id. iv 2.
 - 4 Sylvest II., De Informatio Episcoporum
 - 5 Anselm Gesta Episcop Leod., 66
M G H S S., vol 7
 - 6 Gerbert, 'Epistolae' I
 - 7 Wippo 'Vita Chuoni ad' (p 1245)
 - 8 Anselm Gesta Episcop Leod 58
M G H S S vol 7
 - 9 देवा वृ 25।
 - 10 देवा वृ 25
 - 11 देवा वृ 25
 - 12 देवा वृ 14।
 - 13 Peter Damian Opusc., xx 1
 - 14 Id Opusc., -9 The phrase is also in Peter Damian's 'Disceptatio Synodalis' M G H., Lib De Lite vol 7 78
 - 15 Id., Opusc v 9 The phrase is also in Peter Damian's 'Disceptatio Synodalis' M G H Lib De Lite vol 1 p 78
 - 16 Cf 1 pp 206-209
 - 17 Id Ep 3 of 144 col 441
 - 18 Cf vol., pp 190-193
 - 19 Id Ep v 3 p 440
 - 20 Id., Sermo 11 x.
 - 21 Cf vol II p 208
-

द्वितीय भाग

अधिष्ठापन विवाद

प्रथम अध्याय

धर्म-विक्रय

हम हमारी मनाशा तथा ग्यारहवीं व प्रथम मत्तर बर्षों में नैतिक तथा धार्मिक अधिकाारियों व सम्बन्धों व विवचन का प्रयास कर चुके हैं, तथा हमारे विचार में यदि वास्तविक विषय व विहाम का तत्सम्य परीक्षा कर तो उन पर स्पष्ट हो जाया कि यद्यपि उन सम्बन्धों में अनेकों कठिनायियाँ थीं तथा य अनेक प्रकार उ सम्बन्धापवन्तक व ता भी समग्र रूप से यह कहना मय है कि ये सम्बन्ध मित्रता एवं सहानुभूति से युक्त थे। हमारा को प्रमाण उपलब्ध नहीं होता कि सम्राट् अथवा राजाओं से वचन का स्वतन्त्रता में हस्तगत करने की अथवा पीठ या विचारों का नवीं एवं दूसरी गताश्रितों में परम्पराओं से स्वाहृत से अधिक राजनतिक मना का दाग करने का वास्तविक अभिनाश था। हम यह भनाभीति व मन्त्र है कि अब तक जनों मनाएँ पूरागण सम्मता की उत्पत्ति व लिए माय-माय सम्मता हीं यद्यपि यथाकला उनमें मत्तभेद भा होता था नैतिक समग्र रूप से उनमें सामान्य या तथा जहाँ तक प्रत्येक मना व सर्वोत्कृष्ट गतिविधियों का प्रग्न है उनमें एक बन्ध सामा तक पारम्परिक सौमन्य भा था।

हमें हम मुक्त गतिविध का अनुभव करना है किमन से मन्त्र परिवर्तित हो गया प्राचीन काल का शान्ति एवं महान् उद्य सधय एवं पारम्परिक दमनम्य में वन्द गया। हमें उम वटि व प्रति जागरूक रहना चाहिए जो एक असावधान अच्युता न हो सकता है। लोगों मत्ताओं का सधय विवेकात्मक वक्तव्य आशाकृतता तक निरन्तर बना रहा हम समय व वाक व बर्षों तक पाप एवं राजा व सम्बन्ध मित्रतापूर्ण रहे। यद्यपि यह गतिविध किया जा सकता है कि यह एक असाधारणता था आधारण रूप में हम समय न ना उनक सम्बन्ध विराट् नर से तथा परम्पर विराट् दावों का का हूँ वहीं मित्रता था तथा य भाति व मध्यान्तर एक मन्त्र मुक्त व बीच इन बात मन्त्र मुक्त विद्यम व समय का भाँति हा था। हम मत्र पर जब तक कि हम अपना सामग्री का विस्तृत

(राजा और सम्राट) निर्भर रहें। अतः इसका सबसे अधिक महत्व था कि तैकिक सत्ता को धार्मिक पदा पर नियुक्ति के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त हो तथा यह स्वामाधिक था कि वे सामान्यतया इसका लिए सर्वाधिक योग्य व्यक्ति उनमें से ही पाए जो राजकीय गिरजाघरों में सबके लिए प्रशिक्षण पा चुके हों। यह भी उचित अन्विष्ट था कि अतः तोगवा सुधारवादी दल का राजनीतिक सत्ता से भी प्रभु पर संपन्न छिड़ता क्योंकि धार्मिक सुधार के लिए यह सज्ज अधिक अन्विष्ट था कि विशेष एवं ऐक्य धार्मिक सिद्धांतों से निर्मात्र होना चाहता था तथा चर्च के अन्तिम के प्रति निष्ठावान व्यक्ति था। हेनरी तृतीय अथवा विजता तिसम जम धर्मनिष्ठ एवं बुद्धिमान शासक इस तथ्य को समझ सकते थे कि तु शुद्ध व्यक्ति जो अधिक ज्ञानिक तथा अदूरदर्शी थे वसा नहीं करते थे।

यहाँ हम मध्ययुगीन चर्च की धर्म विषय सम्बन्धी प्रथाओं के विकास के सम्पूर्ण इतिहास का अध्ययन नहीं कर सकते अतः हम ग्यारहवीं शताब्दी के साहित्य में उपलब्ध परिस्थितियों के संक्षिप्त विवरण में ही संतुष्ट रहना होगा। रोडोफस ग्लवर सामान्य रूप से कुछ काल में विद्यमान इन परिस्थितियों का एक नराम्यपूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है। वह कहता है कि जिन राजाओं को यह ध्यानपूर्वक देखना चाहिए कि चर्च के प्रशासन के लिए योग्य व्यक्ति नियुक्त किए जाएं वे प्रायः उन्हीं को सर्वाधिक योग्य मानते हैं जिनसे वे सबसे अधिक भेंट पाते हैं।¹ दूसरे स्थान पर वह जमनी तथा गान के विशेषों को सम्राट हेनरी तृतीय द्वारा भी विषय पर लिए गए एक मापण का विवरण प्रस्तुत करते हुए सम्राट को यह कहता हुआ बताता है कि वह धर्म विषय की सीमा से मुपरिचित था तथा उसने यह स्वीकार किया कि उसके पिता (सम्राट कोनाड सत्रिक) इस विषय में बड़ी सीमा तक दोषी थे। वह बताता है कि सम्राट हेनरी ने यह प्रस्ताव किया कि सारे साम्राज्य में घोषणा की जाय कि कोई भी पादरी पद या धार्मिक अधिकार मूल्य देकर प्राप्त न हो और यदि कोई मूल्य देने या उनका दुस्साहस करे तो उसे पद से मुक्त कर दिया जाय तथा वह अभिशप्त हो जाय।² तब उसका स्वयं का प्रभु या उससे प्रतिष्ठा की कि ईश्वर ने उसे मुक्त रूप से साम्राज्यिक किरीट प्रदान किया है तथा वह भी मुक्त रूप से धर्म सम्बन्धी प्रत्येक वस्तु को प्रदान करने के लिए प्रस्तुत है।³

सिन्हा की टिका का कार्डीनल हुम्बर्ट सुधारवादी सम्प्रदाय के उन उत्तरी पादरियों में से एक था जिन्होंने इनका अन्तिम जब वह 1048 ई. में तिसो नवम के रूप में घोषित बना अपने साथ चटनी लाया था। एक स्थान पर वह कहता है कि ओथोस (Othos) से लेकर हेनरी तृतीय के काल तक धर्म विषय का दोष जमनी काल एवं चटनी में फैल गया है। हेनरी तृतीय ने उसे दूर करने के लिए वास्तव में कुछ प्रयत्न किया और उसे पूर्णतया समाप्त करने की अभिनाया की किन्तु उसकी अकाम्यता ने इस प्रयास को विफल कर दिया। हुम्बर्ट विशेष बटुनापूर्वक प्राप्त के समकालीन राजा हेनरी प्रथम की निन्दा करता है जिसने अब तक हम दुःख को आश्रय दिया था।⁴ एक अन्य स्थान पर वह कहता है कि उत्तम में लेकर निम्नतम तक प्रत्येक व्यक्ति धार्मिक वस्तुओं के व्यवसाय में गया है सम्राट राजा सामन्त तथा अन्य तैकिक मत्ताधारी जिन्हें चर्च की रक्षा करना चाहिए अपने यथाथ काय को त्याग चुके हैं ताकि वे चर्च की मर्यादा हथिया

सकें।⁴ धम विक्रय वारस्य मे आदि प्रचारकों के काल मे ही प्रारम्भ हो चुका था किन्तु उत्पीडन के युग मे यह कुप्रथा 'पुष्ट' हो गई थी। परन्तु चर्च मे शान्ति की पुनर्स्थापना के पश्चात् तथा धार्मिक सत्ता के समक्ष सम्राट के समरण के युग मे यह प्रथा पुनर्जीवित हुई क्योंकि चर्च के दबन मे मनुष्या के लोभ को दीप्त किया।⁵ उसके बरान के अनुसार मामला यहाँ तक बढ़ चुका था तथा इतना खुला एवं निरालंघ था कि कोई भी जो चर्च या राय मे अधिकार पद पाना चाहता उसे शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करनी होती थी कि वह धम पद विक्रयी मनुष्या के कृत्रिम रूप से धारण किए गए अधिकारों को बनाए रखेगा। सम्राट की स्वयं शपथ लेनी पड़ती थी कि अपने पवित्र पूर्ववर्तियों द्वारा धम विक्रय के विरुद्ध बनाए गए नियमों का पालन तो दूर रहा वह उनको अवध घोषित कर देगा।⁶ वह कहता है कि उसे इस घटना का पान था जबकि प्रतिज्ञा किए शून्य को चुवाने के लिए पापी धम-पद ऋता चर्च के बहुमूल्य सगमरमर को और यहाँ तक कि अपनी छत की खपरेलो तक को उखाड़ने के लिए विवश हो गया था।⁷ दूसरे स्थान पर वह दयनीय शान्ति मे इस कुप्रथा के कारण विशेषतया बटली के चर्चों एवं मठों के विध्वंस एवं उनके उजड़ने का बरान करता है।⁸

हसफेल्ड के लेम्बर्ट (Lambert of Hersfeld) के विवरण के अनुसार ब्रमेन के प्राच विंशत तथा वाउट बर ने जबकि वे हेनरी चतुर्थ के आदेशमन्ता के काल मे शासन का नियन्त्रण करते थे सभी धार्मिक एवं लौकिक पदों को विशेषतः मठाधीशों के पदों को बेचा था।⁹

हम वास्तव मे ऐसे विवरणों को अक्षरशः अंगीकार नहीं करना चाहिए। हम चर्च की दशाओं के लिए गए इन विवरणों मे किसी सीमा तक अतिशयोक्ति की मात्रा को स्वीकार करने के लिए तयार रहना चाहिए किन्तु इसमें सन्देह का कोई अवसर नहीं है कि ये तात्त्विक रूप से सत्य हैं तथा चर्च की व्यवस्था मे और कोई ऐसा प्रश्न नहीं था जिस पर सुधारवातियों ने ध्यान देना अधिक आवश्यक समझा हो। हम मुभी मे पोप की पद-युक्ति के इतिहास का बरान कर चुके हैं तथा यह स्पष्ट चुके हैं कि प्रमुख सुधारकों मे से अधिकांश ने इस विषय मे तथा धम विक्रय के सम्पूर्ण विषय मे हेनरी तृतीय के कार्यों के प्रति आभार व्यक्त किया है।¹⁰

हमारे पास पोप लियो नवम द्वारा फ्रांस मे धम विक्रय को दवाने के लिए की गई कायदाही का विवरण उपलब्ध है। उसने 1049 ई. मे राइम्स नामक स्थान पर विंशत एवं मठाधीशों की एक सभा बुलाई तथा उसमें फ्रांसीसी सम्राट को भी उपस्थित रहने का निमन्त्रण किया। उसके दरबारियों ने उसे सम्मति दी कि यह साम्राज्य के सम्मान की दृष्टि से बहुत सकटपूर्ण होगा यदि वह फ्रांस मे परिपद के बुलाए जाने मे पोप का समर्थन करे और इसकी स्वीकृति उसके पूर्वजों द्वारा भी नहीं दी गई थी साथ ही उसे यह भी राय दी कि उस साम्राज्य के अशांत भागों पर आक्रमण के समय अपना साथ देने के लिए विंशतों एक एगटा को बुला लेना चाहिए ताकि वे परिपद मे भाग न ले सकें।¹¹ तदनुसार राजा ने पोप को उत्तर दिया कि वह तथा उसके विंशत इस परिपद मे उपस्थित नहीं हो सकेंगे तथा उससे प्रायना की कि वह अपनी फ्रांस की यात्रा को स्थगित कर दे। तिनो

नवम ने उत्तर दिया कि वह ऐसा नहीं कर सकता तथा जो भी उपस्थित हो सकते हैं उनको लेकर परिपक्व अवश्य बुनायेगा। जब परिपक्व की बटन हुई तो अनेक विषयों एवं एक्टों को विभिन्न अपराधा विशेषता घम विक्रय के कारण पञ्चयुत किया गया तथा राइम्स के प्राच विषय को ब्रां म रोम म होने वाली परिपक्व में उपस्थित होने की घाणा दी गई जहाँ वह अपने ऊपर नगाए गए घम विक्रय के आरोप से अपने को मुक्त कर सके।¹² परिपक्व ने एक आदेश जारी किया तथा यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि कोई भी विषय के पत्र पर पादरियों तथा जनता द्वारा निर्वाचन के बिना नियुक्त नहीं किया जाय कोर् भी पुरोहिताभियेक अथवा धार्मिक पदों को न तो बेचे न खरीदे तथा यदि किसी ने उनको खरीद कर प्राप्त किया है तो वे उसे विषयों को सौंप दें। आदेश में यह भी व्यवस्था थी कि कोर् भी जनसाधारण पादरी की वृत्ति अंगीकार नहीं कर सकता किसी भी पादरी को शस्त्र धारण नहीं करने चाहिए न कोर् लौकिक पत्र धारण करना चाहिए।¹³ बाइबल जो ट्रन का प्राचद्विकन था द्वारा लिखे गए पोप लियो नवम के जीवन में हम पोप द्वारा इटली में तथा अथवा घम विक्रय के प्रतिरोध के लिए उठाये गए प्रबल उपायों का और विवरण उपलब्ध होता है तथा वह बतान करता है कि किस प्रकार उसने प्राचविषयों एवं विषयों को जो इसके अपराधी थे पञ्चयुत कर दिया।¹⁴

पोप लियो नवम के ये कठोर उपाय चर्च के सुधारवादी दल द्वारा सशोधित पोप पद के नेतृत्व में धार्मिक पदों के क्रय विक्रय के दमन के लिए किए गए सबलियन प्रयत्न की दिशा में पहले कदम थे। वास्तव में कुछ सुधारवायियों का दृष्टिकोण इनका कठोर था कि अतलोगवा उसने उनमें परस्पर ही एक उग्र विवाद को जन्म दिया। काठिन्य हुम्बट जैसे कुछ लोगों का विचार था कि घम पद क्रय द्वारा प्राप्त अन्वियेक अथवा पदारीहण अव्यव है।¹⁵ जबकि पीटर डेमियन जैसे अन्य व्यक्ति उनको बंध मानते थे।¹⁶ तथा यह कहते थे कि जो वास्तव में अपराधी हैं उनको पदयुत करना चाहिए तथा जो अमानव्य एसे भोगों में धार्मिक आदेश प्राप्त कर चुके हैं उनको अपना पत्र धारण करने देना चाहिए।¹⁷ हमारा काय उस अतन्त्र में उठाये गए प्रयत्नों के महत्त्व का विवेचन करना नहीं है हम केवल यही देखना चाहते हैं कि यह बुरा किन्तनी फनी हुई थी तथा उसके उन्मूलन के लिए ग्यारहवीं शताब्दी के सुधारकों ने कितने प्रबल सबलपुवक प्रयत्न किए।

हमारे प्रयोजन से घम-पद विक्रय का प्रश्न मुख्यतः उन परिस्थितियों से सम्बन्ध रखने के कारण महत्त्वपूर्ण है जिन्होंने धार्मिक एवं नीतिक सत्ताओं के बीच अन्वय के जन्म दिया। जसा हम देख रहे हैं हेनरी तृतीय की 1056 ई. में मृत्यु होने तक चर्च के सुधारवायियों ने अपने घम विक्रय विरोध के प्रयत्नों में नीतिक सत्ता का स्पष्टतय वास्तविक उदाहरण समर्थन मिला। इस समस्या की पृष्ठभूमि में कुछ अन्य समस्याएँ भी थीं जिनका समाधान जसा कि हम कह चुके हैं अधिक कठिन था। यह उन्मूलनीय है कि पीटर डेमियन इस विषय में बहुत स्पष्ट है कि चर्च को वास्तविक घम पत्र विक्रय से जिन्तनी हानि हुई उनकी ही राय के प्रशासकीय पदों पर की गई सवाभों के लिए उनको विषय पदों एवं मठों में पदोन्नति से हुई है। पोप अनेक्जेण्डर तृतीय को लिखे गए एक पत्र में पीटर डेमियन उसके अनुरोध करता है कि किसी भी व्यक्ति को विषय न बनने दिया जाय

या पद पर न रहने निया जाय जिसने इसे मूल्य देकर या इससे भी अधिक निम्नीय राजकीय सेवा के द्वारा प्राप्त किया हो।¹⁸ एक ग्रन्थ में जो वास्तव में दरबारी पादरिया के विरुद्ध लिखा गया है वह कहता है कि उसे कोई भी चीज जितनी ग्रहण नहीं प्रतीत होती जितनी यह कि कुछ व्यक्ति धम पद के लालच में ऐसा व्यवहार करते हैं मानो वे उच्चपदस्थ व्यक्तियों के दास हों तथा यह अप्राप्त करता है कि विशेष पद को राजा की दरबारी सेवा से प्राप्त करना भी उतना ही धम-पद श्रेय है जितना उसे धन देकर खरीदना तथा वह राजकुमारों और दूसरों को चेतावनी देता है कि जिनको धम के पदों पर नियुक्ति का अधिकार है वे इन पदों को केवल अपनी इच्छा से या प्रसाद के कारण प्रदान न करें।¹⁹

कार्टीनन इम्बट इसी विषय को उत्तम तथा भावपूर्ण शली में वर्णन करता है। वह स्पष्टतः पादरी के प्रशासकीय कार्यों की निन्दा नहीं करना चाहता क्योंकि वह इसमें परिचित है कि कई अवसरों पर इस प्रकार का कार्य न केवल राज्य के लिए अपितु धम के लिए भी उपयोगी होता है किन्तु वह प्रभावपूर्ण शोभन उन लालची पादरियों की भीड़ की निन्दा करता है जो राजाओं के दरबारों में मडराते रहते थे तथा लम्बी परिश्रमपूर्ण सेवा करते थे ताकि अन्ततोगत्वा वे कोई धार्मिक पद प्राप्त कर सकें। वे इन मनुष्यों को सबसे अधिक धम-पद श्रेय मानता था क्योंकि वे न केवल धम को बरन् अपने आप को मूल्य स्वरूप देने थे। वह शिकायत करता है कि इटली विशेषतः ऐसे आदमियों से भरा हुआ था जिन्होंने धम का पद अपने धार्मिक कार्य के कारण नहीं किन्तु अपनी लौकिक सेवाओं के मूल्यस्वरूप प्राप्त किया है जो कभी-कभी लोभ विनिन्दित तथा अपमानजनक प्रवृत्ति की भी होनी थी।²⁰

निस्सन्देह इस प्रकार की शिकायतों और दाव एक बड़ी सीमा तक आधारपूर्ण एवं प्रायसगत थे तथा यह स्पष्ट है कि उठाया गया प्रश्न बहुत कठिन है भरा था। राज्य को प्रशासकीय कार्य के लिए प्रशिक्षित व्यक्तियों की तथा ऐसे व्यक्तियों की प्रबल आवश्यकता थी जिनकी व्यक्तिगत निष्ठा पर राजा और सम्राट निर्भर रह सकें तथा यह देख पाना कठिन है कि धार्मिक सम्प्रदाय से बाहर अन्य क्षेत्रों में ऐसे व्यक्ति उस समय कहाँ पाए जा सकते थे।

सन्दर्भ

- | | |
|--|--|
| 1 Rodolfus Glabe Historia II 6 | 9 Lambert f Hersfeld 1063 |
| 2 Id d v 5 | 10 दस्रो भाग I अध्याय 2। |
| 3 Cardinal Humbert Adversus Simo-
nicos Lib De Lite III 7 p | 11 Anselm Monachus Reme
Historia Decalogus 9 Migne
P L. vol 142. |
| 4 Id d II 5 p 204 | 12 Id d 14 15 16 |
| 5 Id id., I 35 p 183 | 13 Id id 16 |
| 6 Id d Lib De Lite II 36 p 185 | 14 Leo IX Vita 83 4 and 6 |
| 7 Id d I 43 p 192 | |
| 8 Id id. Lib De Lite 35 p 184 | |

- | | | | |
|----|---|----|---|
| 1 | Cardinal Humbert, <i>Adversus Simoniacos</i> III. 72, M. G. H., Lib. D. Lat. L., p. 239 | 18 | Peter Damian, <i>Ep.</i> , Bk. 1. 13 <i>Magne P. L.</i> , vol. 44 |
| 12 | Peter Damian, <i>Lib. Gratianus</i> VI. 3, M. G. H. Lib. D. Lat. L., p. 23 | 19 | Id., <i>Opus</i> , III, Preface |
| 17 | Id., <i>Opus</i> , III, p. 23 | 20 | Cardinal Humbert, <i>Adversus Simoniacos</i> III. 27 M. G. H. Lib. D. Lat. L., p. 234 |



द्वितीय अध्याय

अयाजकीय "प्रतिष्ठापन" का निषेध

हमने उन परिस्थितियों अथवा शर्तों में स कतिपय के अध्ययन का प्रयत्न किया जिनसे साम्राज्य एवं चर्च के बीच सघर्ष का उदय हुआ। यह स्पष्ट है कि चर्च में एक महान् दोष था चर्च के पदों का क्रम एवं विक्रम इस सीमा तक बढ़ गया था कि उनके लिए कठोरतम उपाय न केवल उचित बल् अत्यन्त अनिवार्य थे। यद्यपि यह स्पष्ट है कि हेनरी तृतीय के राज्यकाल में राजकीय सत्ता सुधारवाहियों के पक्ष में थी एवं सुधार की वृद्धि के लिए किए गए कुछ कार्यों के औचित्य पर कुछ संदेह होने पर भी समग्र रूप से सुधारवादी उसकी सच्चा अभिनाया को स्वाकार करते थे तथा उसकी कमशक्ति के लिए आभारी थे। अब हम धार्मिक एवं लौकिक सत्ता के सम्बन्धों के तीव्र परिवर्तना पर विचार करना है, जो लगभग 70 वर्षों (1056 ई. से 1076 ई.) की अवधि में ही सौहादपूर्ण सहयोग एवं सहकारिता से उग्र विरोध में परिवर्तित हो गए।

मुन्नी (Sutri) के बाह्य पोसा ने सुनार-काय का बीजा उठाया तथा उनको अपने प्रयासों में हेनरी तृतीय का समर्थन मिला। दुर्भाग्यवश वह काय के सम्पूर्ण होने से पूर्व ही मर गया तथा उसकी मृत्यु के बाद यूरोप की धार्मिक परिस्थितियाँ एक बार फिर अस्त-व्यस्त हो गई। हम पहले ही हेनरी तृतीय का अवयस्कता के समय ब्रमेन के आर्चबिशप एवं काउंट चनर के प्रयासों में जर्मनी की धार्मिक दशा का शासनाय विवरण प्रस्तुत कर चुके हैं किस प्रकार वे सभी पक्षों को चाहें वे धार्मिक हा अथवा लौकिक इस सीमा तक क्रम विक्रम का विषय मानते रहे कि कोई भी व्यक्ति चर्च में अथवा राज्य में तबतक पौनःपुन्य की आशा नहीं करता था जबतक कि वह उनसे उस खरीद न ले।¹ जब हेनरी तृतीय ने शासन का भार स्वयं समाला तो ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत थोड़ा सा सुधार हुआ था। बम्बर्ग के बिशप का 1070 ई. में रोम बुलाया गया तथा उस पर बिशप पद का खराद कर प्राप्त करने का आरोप लगाया गया। हंसफीड का लम्बट वास्तव में पोप एनक्जण्डर तृतीय पर यह अभियाग लगाता है कि उसने उसमें बड़ी भेंटें स्वाकार करके उसे स राज्य से मुक्त कर दिया। किंतु वह यह भी कहता है कि उसकी एवं

मज तथा कोनोन व आर्चबिशप की पोप द्वारा धार्मिक व्यवस्था का बचन तथा धर्म विषयों को स सम्भाल करने के लिए तीव्र मत्सना की गई तथा उनका इसकी शपथ दिलाई गई कि वे पुन बर्ता नहीं करेंगे।²

लेम्बट वर्णन करता है कि धर्म के रूप में हेनरी चतुर्थ ने राइखनाउ (Reichenau) के मठाधीश को मूल्य लेकर नियुक्त किया तथा कांसटेंस की धर्म सभा (Chapter) के अन्तर्गत एक पत्र ब्यक्ति को शिक्षण नियुक्त करने का प्रयास किया जिस पर कि चोरी एक धर्म विषय के आरोप थे।³ पोप ने इस प्रश्न का मज के आर्चबिशप का सौदा तथा हमें एक पत्र उपान व होना है जिसमें वह पोप के आनापावन के कारण उस पर आने बान महात् सन्त का वर्णन करता है क्योंकि सम्राट ने उसे स्पष्ट प्रवचन धर्मकी दी था कि वह कांसटेंस के लिए निर्वाचित शिक्षण का अभिषेक करना स्वीकार न करे।⁴

ग्रेगोरी सप्तम को लिख गए हेनरी चतुर्थ व 1073 ई के एक पत्र में वह अपने दोषों को स्वीकार करता है जिनमें शौरी व साथ साथ यह भी है कि वह धर्म विक्रय का अपराधी है तथा मापन को ठीक करने के लिए उसकी राय एक सत्ता समयन की मांगना करता है। वह मिलन (Milan) के चर्च के सम्बन्ध में अपना का गम्भीर दोषों का अपराधी बताता है।⁵

पुन 1074 ई के सप्तम लेम्बट वर्णन करता है कि जर्मनी में पोप के प्रतिनिधि हेनरी चतुर्थ से सहयोग न करने के प्रति सज्ज व क्योंकि उस पर धर्म विक्रयकारक कार्यों के आरोप थे। ग्रेगोरी सप्तम ने इन प्रतिनिधियों का धर्म विषय के अभियुक्त ब्यक्तियों का निर्णय करने के लिए भेजा था तथा वे एक धर्म सभा का बुलाना चाहते थे। शिक्षण ने इसका हतापूर्वक विरोध किया तथा यह तर्क प्रस्तुत किया कि पोप के प्रति रिक्त व किसी धर्म के द्वारा उसका सम्मान सहन नहीं करेंगे। पोप ने पहले ही वेम्बग के शिक्षण तथा अन्य शिक्षणों को निरन्धित कर दिया था तथा अपने पवित्र कसब्यों को करने से रोक दिया था जिनके विषय उनकी (पोप की) उपस्थिति में अपने की शुद्ध न कर लें। लेम्बट के अनुसार हेनरी चतुर्थ ने इस आशा में कि उसमें बान स व शिक्षण तथा आया को जिनान सेक्सन युद्ध में उसका विरोध किया था पत्न्युत किया जा सका पोप के प्रतिनिधियों का समर्थन किया किन्तु अतत वह पाप गया कि यह मामला इन दूनों के लिए बठिन है तथा उन स्वयं पोप की मुनवाई के लिए सोप दिया गया।⁶

कवल जर्मनी में ही धर्म विक्रय की समस्या उत्कट नहीं थी। हम फ्रांस में किया नवम द्वारा 1049 ई को राम्स परियद् में उठ ए गए कठोर उपायों का विचार कर रहे हैं किन्तु यह स्पष्ट है कि उसका प्रयत्न व बावजूद भी यह दोष दूर नहीं किया जा सका। ग्रेगोरी सप्तम के क्रम शिक्षण स पत्र-व्यवहार में उसने सबसे पहले नीकि सत्ताधारिया का विरुद्ध कठोर उपायों की धर्मकी दी। 1073 ई के शाना के बिगप (Chalons) को लिखे गए एक पत्र में वह फ्रांस के राजा क्लिप को किसी भी समकालीन राजा से अधिक चर्च का उनीडक बताता है तथा वह धर्मकी देता है कि यदि निर्णय धर्म विक्रय का अपयन नहीं त्याग देगा तो वह एक ऐसा सामान्य धर्म बलिष्कार का आदेश देगा जिससे धर्मकी जनता उसका आना पावन करना धस्वीकार कर देगा।⁷ उसी वर्ष उसने नियोजित

क आचविशप को आदेश दिया कि वह प्रोटन व निर्वाचित विशप का फ्रांस के राजा की स्वीकृति की प्रतीक्षा किए बिना अभियेक कर दें।⁸ अगले वर्ष म ग्रेगोरी ने फ्रांस के आच विशपों एवं विशपों को निष्ठा तथा फिलिप की भक्तता की कि यह राजा कहना योग्य नहीं था अपितु केवल निरवश शासक कहा जा सकता था। उसने (ग्रेगोरी ने) उन पर कड़ा आरोप लगाया कि राजा को अपराधा से रोकने के लिए उनका द्वारा अपने धार्मिक अधिकारों का प्रयोग नहीं किया गया तथा उनको आना दी कि वे एकत्रित होकर संयुक्त रूप से उससे भेंट कर तथा उसके मह पर उसके अपराधा के लिए उसकी निंदा करें। अगले राजा उनकी बात पर ध्यान देने से मना करता है तो उसने आना दी कि वे उसके समक्ष एवं आना पालन से विरत हो जाए तथा सारे फ्रांस में धर्म विषय में सावजनिक अनुष्ठानों का निषेध कर दें। यदि फिलिप उस समय भी न मान तो उसने उनको यह आश्वासन दिया कि वह अपनी शक्ति भर फ्रांस का राज्य उससे छीनने का प्रयास करेगा।⁹

ग्रेगोरी के पत्र यह सूचित करते हैं कि वे अपराध जिनके आरोप उसने फिलिप पर लगाए हैं केवल चर्च के सामान्य हितों के विरुद्ध ही नहीं थे क्योंकि वह दूसरे पत्रों में फ्रांस में इटेनियन यापारिषों के लूटने का विशेषतः संकेत करता है।¹⁰ फ्रांस के चर्च की अवनति एवं अव्यवस्था उसने अनुसार विशपों पर धर्म विषय में प्रचलन के कारण थी तथा उसके लिए सभसे अधिक कठोर सुधारों की अपेक्षा थी और यह भी स्पष्ट है कि उसने नैतिक एवं धार्मिक मत्ता में दोष बसी ही सचप की आशंका उत्पन्न की जसा हेनरी तृतीय की मृत्यु के बाद सामान्य में उठ खड़ा हुआ था।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि नैतिक और धार्मिक सत्ताओं के सम्बन्ध बिगड़ रहे थे तथा हमारे मत में यह बहुत उचित ही है कि किसी भी मतभेद को प्रकट करने वाली विशप घटना में पीछे एक अधिक सामान्य कारण था और यही कारण है कि हेनरी तृतीय के देहावसान के बाद नैतिक मत्ता सुधार के प्रयत्नों में धार्मिक सत्ता का सहयोग देने से विमुक्त हो गई थी तथा धर्म विषय एवं पादरियों की नैतिकता जैसे दोषों के बन रहने के लिए उत्तरदायी प्रतीत होती थी। इन परिस्थितियों में पोप ने नैतिक सत्ता में धार्मिक नियुक्तियों में हस्तक्षेप के नियंत्रण अथवा निषेध की नीति अंगीकार की। यह उचित या अनिश्चित भी माना जा सकता है किन्तु यह मानना होगा कि यह कदम तब तक प्राप्ति कारी था।

इस प्रश्न के प्रथम भाग में हम देख चुके हैं कि सामान्यतः यह विवादास्पद नहीं था कि विशप अथवा मठायाश की नियुक्ति में राजा या सम्राट का भी वायचित स्थान है जबकि इन विशपों में चुनाव में धर्म प्रदेश विशेष के पादरी तथा जनता के अधिकार और उनकी अभिप्राय में अधिकमार्ध्यक्ष तथा प्रांत के अन्य विशपों के अधिकार सामान्यतः मायम। वास्तविक व्यवहार में निस्संदेह राजा ही इन नियुक्तियों को प्रायः मतदाताओं की इच्छा का ध्यान रखकर कर देता था किन्तु यह मानना अतिवाचिक प्रण होगा कि कोई भी उत्तरदायी व्यक्ति उनको उपेक्षणीय मानता था। यद्यपि यह सत्य है कि इन अधिकारों में पारस्परिक समावोजन के प्रश्न को लेकर ही सबप्रथम भावा संकट के चिह्न

प्रवृत्त हुए। हम उस बढ़ते हुए भाष्य के कुछ स्पष्ट प्रमाण पहले ही देख चुके हैं जिसमें कि सुधारवादी चर्च के सदस्य तथा चर्च की परिपदे धर्म प्रदेश व पादरिया तथा जनता द्वारा बिशप के निर्वाचन में राय लिए जाने के अधिकार के बारे में बत देने लगे थे। हम यह भी देख पाए हैं कि कितने बलपूर्वक 1049 ई. में राइम्स की परिपद ने इस सिद्धान्त पर बत लिया कि कोई भी व्यक्ति चर्च के अधिकार-पत्र पर पादरियों एवं जनसाधारण द्वारा निर्वाचन बिना नियुक्त नहीं किया जाए।¹¹ और हम यह भी देख चुके हैं कि भेन्ज की परिपद ने किस प्रकार वेसासों के आचबिशप पद के एक दावेदार को इस स्पष्ट तर्क पर कि उसका निर्वाचन जनसाधारण एवं पादरिया द्वारा नहीं हुआ है अस्वीकार कर लिया।¹² हसफीड का नेम्बर्ग ट्रीयर व पादरिया तथा जनता के विरोध का बणन करता है जबकि 1066 ई. में आचबिशप एवरहाड की मृत्यु होने पर बपूनों को कोलोन के आचबिशप के हस्तक्षेप के कारण उनकी राय के बिना नियुक्त कर लिया गया था।¹³

हम सुधारवादी दल के दो प्रमुख लेखकों अर्थात् कार्डिनल हुम्बर्ट एवं पीटर डेमियन के कुछ सिद्धांतों पर विचार करने का पहले ही अवसर मिल चुका है अब हम इस प्रश्न के उन्मूलन के दृष्टान्तों के लिए पुनः उनके ग्रन्थों पर दृष्टिपात करना चाहिए किन्तु इस बात को स्पष्ट कर देना चाहिए कि कम से कम प्रारम्भ में सर्वाधिक प्रमुख सुधारक भी लौकिक सत्ता के धार्मिक पदों की नियुक्ति में लौकिक सत्ता के इस अधिकार को अस्वीकार नहीं करते थे कि इसका भी उसमें कुछ भाग है। एक स्थान पर कार्डिनल हुम्बर्ट अत्यंत प्रबल शब्दों में व्यापसगत एवं विधिविहित नियुक्ति की शर्तों को प्रस्तुत करता है। वह कहता है कि जिस व्यक्ति का निर्वाचन धार्मिक पद के लिए होता है उसका चुनाव पहले पादरियों द्वारा होना चाहिए फिर उसकी मंजूर जनता द्वारा हानी चाहिए तब ही उसका अधिधर्मव्यक्ष की स्वीकृति से प्राप्त के बिशपों द्वारा अभियेक किया जाना चाहिए। इनमें से किसी भी एक शर्त का पालन किए बिना जिसका अभियेक हुआ है उसे वास्तविक नहीं अपितु मिथ्या बिशप माना जाए।¹⁴ हुम्बर्ट व शान् वास्नव में दो अन्य प्रश्नों को जन्म देते हैं एक तो बिना किसी निश्चित धर्म क्षेत्र के बिशप की नियुक्ति के अनौचित्य के सम्बन्ध में दूसरा अधिधर्मव्यक्ष तथा रोम के धर्मसभ के मध्य सत्ता के पारस्परिक सम्बन्ध के विषय में किन्तु हम यहाँ इनका बणन नहीं कर सकते।

दूसरे स्थान पर वह समकालीन राजकुमारों की घृष्टता एवं धन लिप्सा की निन्दा करना है जिनके द्वारा सभी दवा तथा मानवीय कानूनों की अघट्टना करके धार्मिक नियुक्तियों के सभी अधिकारों को हथिया लिया गया था तथा इनके विरुद्ध पूर्वी साम्राज्य (Imperium Transmanum) की परिस्थिति से तुलना करता है जहाँ ऐसी नियुक्तियों को पूर्णतया प्रघात गिरजाघर एवं बिशपों पर छोड़ दिया गया था।¹⁵

यदि हम न वाक्याणा को पृथक् कर लें तो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हुम्बर्ट धार्मिक नियुक्तियों में लौकिक सत्ता को किसी भी प्रकार का योगदान से अशुचित रखना चाहता था किन्तु जब हम उसी प्रश्न के एक अन्य लक्षाश पर विचार कर तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि उसका यह अभिप्राय नहीं था। यहाँ वास्तव में वह क्षोभपूर्वक ऐसी नियुक्तियों में समस्त उचित क्रम के निरस्कार की शिवायत करता है। फलस्वरूप जो पहना

होना चाहिए वह अन्तिम तथा अन्तिम पहला हो जाता है। चयन में लौकिक सत्ता प्रथम स्थान का दावा करती है तथा जनता पादरी एवं यहाँ तक कि प्रमुख धर्माध्यक्ष को भी उनकी बात माननी होनी है चाहे वह उनसे सहमत हो अथवा नहीं। तथापि यह ध्यान में रखना चाहिए कि नियुक्ति का सच्चा तरीका बताते हुए वह कहता है कि प्रमुख धर्माध्यक्ष को पादरियों के द्वारा निर्वाचन की पुष्टि करनी चाहिए तथा राजा को जनता की माँग को।¹⁶ अर्थात् हुम्बर्ट बहुत स्पष्टतया यह स्वीकार करता है कि राजा स परामश लेना चाहिए तथा उसकी अनुमति प्राप्त करनी चाहिए।

यदि हम पीटर डेमियन को लें तो उनका ग्रन्थ के लेखाशा से¹⁷ जिनको हम पहले उद्धृत कर आये हैं यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि उसकी स्थिति भी हुम्बर्ट से भिन्न नहीं है। वह लौकिक सत्ता द्वारा अभिवाचित अधिकारों के दुरुपयोग का प्रबल विरोध करता है तथा विशप के निर्वाचन में पादरियों एवं जनता के अधिकारों पर बल देता है किन्तु साथ ही वह बहुत निस्सकोच होकर यह स्वीकार करता है कि लौकिक सत्ता का भी इस प्रकार का नियुक्ति में योग्यता एवं उचित स्थान है।

हम समझते हैं कि मुघारवादियों की स्थिति स्पष्ट थी वे धार्मिक निर्वाचनों की स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने के लिए तथा लौकिक सत्ता के दावों को अपने मतानुसार उचित सीमा तक संकुचित करने के लिए कृतनिश्चय थे किन्तु वे इनको पूर्णतया अस्वीकार भी नहीं करते थे। हम इस मामले को और आगे बढ़ा सकते हैं क्योंकि स्वयं ग्रेगोरी सप्तम का कम से कम अपने अधिकार काल के प्रथम वर्ष का पत्राचार यह सिद्ध कर सकता है कि वह धार्मिक नियुक्तियों में लौकिक सत्ता के अधिकारों को अस्वीकार नहीं करता था।

1073 ई. में लियोन के आठ विशप हुम्बर्ट को लिखे गए एक पत्र में जिसको पहले उद्धृत किया जा चुका है वह उसे किसी व्यक्ति नामक व्यक्ति का अभियेक फ्रांस के राजा की स्वीकृति की प्रतीक्षा किए बिना ही करन का निर्देश देता है जिस मोटन के धर्म-क्षेत्र द्वारा विशप पद के लिए चुना गया था।¹⁸ निस्सन्देह ग्रेगोरी यहाँ राजा के अधिकारों की अग्रहेलना करता है किन्तु वह उसकी उपेक्षा एवं विलम्ब के कारण ही बना करता है। ल्यूका के निर्वाचित विशप एनसलम को लिखे गए उन्नीसवें वर्ष के पत्र में वह उसे राजा के हाथों विशप पद की प्रतिष्ठा प्राप्त करने का निषेध करता है जब तक कि वह धर्म बहिष्कृत लोगों से सम्पर्क स्थापन कर रोमन धर्मनोष्ठ से सन्धि नहीं कर लेता है।¹⁹ किन्तु यह उन्नेखनीय है कि यह निषेध बसल तात्कालिक परिस्थितियों के ही कारण है। 1074 ई. में लियोन के काउंट (Die) तथा उस चर्च के निष्ठावान् लोगो को लिखे गए एक पत्र में वह काउंट द्वारा अन्य सभी की सहमति से विशप के निर्वाचन का उल्लेख करता है—अनुमानत उसका अभिप्राय उस क्षेत्र के पादरियों एवं जनता से है।²⁰ पुनः उन्नीसवें वर्ष फर्माँ के काउंट ह्युबर्ट तथा वहाँ की जनता को लिखे गए एक पत्र में वह कहता है कि उसने चर्च को तब तक प्रधान उपप्याजक को सौंप दिया है जब तक कि उसके स्वयं की देख रेख में राजा की राय एवं अनुमति से विशप पद के लिए उपयुक्त व्यक्ति न मिल पाय।²¹ एरेपान के राजा सको (Sancho) को लिखे गए 1075 ई. के एक पत्र में वह विशप के गिरते हुए स्वास्थ्य के कारण एक धर्म-क्षेत्र में की जान वाला व्यवस्था के बारे में विचार विनिमय करता है। राजा

तथा बिशप ने दो पादरियों के नाम सुमाए हैं जिनमें से एक को बिशप बनाना है। प्रगोरी दोनों को इस आधार पर अस्वीकार कर देता है कि वरगला के पुत्र हैं साथ ही यह वादा करता है कि यदि उपयुक्त चरित्र के व्यक्तियों के नाम जनता की सहमति से राजा एवं बिशप द्वारा प्रस्तावित हो तो वह उस पर विचार करेगा।²² हेनरी चतुर्थ को 1076 ई. की जनवरी में लिख गए एक पत्र द्वारा जिसमें वह उसको फर्माँ तथा स्पोजेतो (Spofecto) के बिशप पद उन दोनों व्यक्तियों को देने का लिए भयानक करता है जिनसे वह अपरिचित है वह केवल यह सन्देश प्रकट करता है कि क्या वह किसी भी व्यक्ति द्वारा देय है परन्तु वह स्पष्टतः यह नहीं कहता कि राजा को इस विषय में वसा करने का कोई अधिकार नहीं है।²³

प्रेगोरी सप्तम द्वारा भ्रयाजकीय प्रतिष्ठापन के विरुद्ध आदेश प्रकाशित करने के बाद भी उसके पत्र व्यवहार में ऐसे वाक्यांश पाए जाते हैं जो बिशा पद की नियुक्ति में नीतिक सत्ता के अतिरिक्त अधिकार को स्वीकार करते प्रतीत होते हैं। फिये के बिशप ह्य को 1077 ई. में लिखे गए पत्र में वह लिखता है कि फ्रांस के राजा फिलिप ने उस केनेडिया में सत यूपेमिया के मठाधीश को शासन का बिशप बनाने को कहा है किन्तु वह कहता है कि वह वसा नहीं करेगा जब तक कि उसे उस घम-क्षेत्र की जनता की सहायता का पर्याप्त पान न हो जाय।²⁴ स्वाबिया (Suabia) के स्टुडोफ को जो फारलान्म की बिधान सभा द्वारा 1077 ई. में जमनी का राजा चुना गया था लिखे गए एक पत्र में वह मेग्डेबर्ग के आर्च बिशप के निर्वाचन के बारे में इस प्रकार विचार विनिमय करता है जैसे वह विषय रुडोल्फ से सम्बन्ध रखन करना हो तथा ऊबल यह सन्देश करता है कि यदि वे उसकी राय देने को तयार हो तो वह उन दो पादरियों में से एक को चुनेंगे जिनकी वह सिफारिश करे किन्तु यह आर्चबिशपों का बिना पादरियों एवं जनसाधारण की सहमति तथा निर्वाचन द्वारा किया जाना चाहिए।²⁵

तब यह मानना एक त्रुटि प्रतीत होती कि जब का मुपार-प्रांत दल बिशपों की नियुक्ति में नीतिक सत्ताधारियों के परम्परागत स्थान को पूरणतया समाप्त करने पर तुला हुआ था। यह प्रतीत होता है कि यद्यपि वह यह अनुभव करता था कि वास्तव में तात्कालिक डय और तरीके जिनके माध्यम से ये अधिकार प्रयोग में आए जाते थे अस्वीकार्य थे तथा धार्मिक चुनावों की स्वतंत्रता पर बल दिया जाना चाहिए एवं उसे सुरक्षित रखना चाहिए तो भी वास्तव में स्वयं लौकिक सत्ता पर नहीं अपितु उनके अधिकारों की मात्रा एवं सीमा तथा उसके प्रयोग के स्वरूप पर उसका आग्रहण था।

जसा हम अगले अध्यायों में देखेंगे यह प्रश्न कि प्रतिष्ठापन किन स्वरूपों के अन्तर्गत प्रदान किया जाता था इस संधय में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने लगा। अन्तिम इस स्थान पर इस प्रश्न पर किए गए एक प्रारम्भिक मुनिचारित एवं तत्संगत विचार विमर्श पर ध्यान देना मुविधाजनक होगा। कार्डिनल ह्यूम्बर्ट का घम विक्रयी प्रतियों का विरुद्ध ग्रन्थ जिसका पहला हम कई बार उद्धृत कर चुके हैं 1058-59 ई. में लिखा गया था तथा उसके वाक्य जिनके कुछ शब्दों को हमने उद्धृत किया है इस प्रश्न का विस्तारपूर्वक बहान करता है। जसा हम इस चुके हैं, ह्यूम्बर्ट स्वीकार करता है कि राजा

की स्वीकृति जनसाधारण की इच्छा से मेन खाने वाली होनी चाहिए किन्तु वह शिकायत करता है कि विधानों के उल्लंघन में सभी अनुपातों एवं व्यवस्थाओं को पूर्णतया नष्ट कर दिया गया है तथा लौकिक सत्ता विधायी की नियुक्ति में प्रथम एवं सर्वोच्च स्थान का दावा करती है तथा पादरिया जनता एवं अधिधर्माध्यक्ष को स्वीकृति देनी ही होती है चाहे वे सम्मन हा अथवा नहीं तथा उसकी मांगता है कि उन परिस्थितियों में की गई नियुक्तियाँ वास्तव में अवैध हैं। व स्वोच्चार करता है कि गदरी को धम-दण्ड एवं मुद्रा प्रदान करना जनसाधारण का अधिकार है। हा सकता क्योंकि ये धार्मिक सत्ता एवं पद के संस्कारणत प्रतीक हैं तथा उनके एक बार प्रदान किए जाने के बाद निर्वाचन के विषय में जनता अथवा पादरी को तथा अभिधर्माध्यक्ष को कोई भी कार्य स्वातंत्र्य नहीं रहता।⁸

स्पष्टतः हुम्बर्ट यह अनुभव करता था कि जब लौकिक सत्ता धम-दण्ड या मुद्रा से प्रतिष्ठापित करती है तो इससे धार्मिक नियुक्ति के विषय में उसकी स्थिति की पूर्णतया मिथ्या धारणा बनती है। ये धार्मिक पद के प्रतीक थे जिन्हें लौकिक सत्ता प्रदान नहीं कर सकती तथा एक बार प्रदान किए जाने पर ये निर्वाचकों एवं अधिधर्माध्यक्ष के अधिकारों का अतिशयण करते हैं एवं उनसे ऊपर हैं। अतः यह प्रतीत होता है कि कम से कम 1058-59 ई. तक बिशप का मुद्रा एवं धम-दण्ड से प्रतिष्ठापन का विरोध एक निश्चित स्वरूप अंगीकार कर चुका था तथा इन्हीं विषयों के सम्बन्ध में धीरे-धीरे धार्मिक नियुक्तियों में लौकिक सत्ता के अधिकार के दावे के सम्बन्ध में सुधारवादी दल की स्थिति को एक निश्चित स्वरूप प्राप्त हुआ। किन्तु हमें निश्चित ही यह ध्यान रखना चाहिए कि इस विषय के सम्पूर्ण साहित्य में प्रतिष्ठापन शब्द के साथ एक अस्पष्टता जुड़ी हुई है हम कभी भी निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते कि 'म शब्द' का प्रयोग बिशप के धम-दण्ड एवं मुद्रा प्रदान के विधिक अर्थ में किया गया है अथवा नियुक्ति के सामान्य अर्थ में।

हम उन परिस्थितियों के सामान्य स्वरूप पर विचार कर चुके हैं जिनसे ग्रेगोरी सप्तम एवं हनरी चतुर्थ के बीच प्रतिष्ठापन के प्रश्न को लेकर संघर्ष उत्पन्न हुआ किन्तु इसका बर्णन करने में पूर्व हम एक बिशप विवाद पर ध्यान देंगे जो कि कुछ समय से चला आ रहा था तथा अंतिम विस्फोट होने में जिनका पचास मात्रा में महत्त्व हो सकता है। यह मिलन (Milan) का प्रश्न था।

पादरिया के विवाद को प्रतिगमित करने के लिए बिशपत 1059 ई. में पाप निकोलस के आदेश के बाद पोप पत्र के कुनससुरूप प्रयत्नों के द्वारा विशेषतः मिलन में तथा अथवा स्वानों पर उत्पन्न हुए गम्भीर सन्देहों के बारे में हम यहाँ विचार नहीं कर सकते। 1059 ई. में ल्यूका के आर्चबिशप तथा पीटर डेमियन को इन सन्देहों से निपटने के लिए मिशन भेजा गया था तथा यह साफ है कि मिशन शहर में पोप के उस नगर पर सत्ता के पचास स्वरूप के बारे में गहरा मतभेद था।⁹ हमारा सम्मान यहाँ उस प्रश्न से है जो पोप तथा सम्राट के मध्य मिलन के आर्चबिशप के चुनाव को स्वीकार अथवा अस्वीकार कर देने के अधिकार के सम्बन्ध में उठ खड़ा हुआ था। इस संघर्ष का विस्तृत विवरण आरनफ के मिलन के आर्चबिशपों के इतिहास में उपलब्ध होता है। यद्यपि यह

स्पष्ट है कि यह सम्राट के दल के पक्षपाती के रूप में लिख रहा है तथापि उसका ध्यान सधरत दलों के दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करने की दिशा में महत्वपूर्ण है। उसकी मान्यता है कि इटैलियन साम्राज्य की यह प्राचीन प्रथा रही है कि बिशप की मृत्यु के बाद राजा पादरियों एवं जनता के अनुरोध पर उसके उत्तराधिकारी को नियुक्त कर देता है। यह कहता है कि रोमवासी इसे 'यायसगत' ही मानते थे तथा हिल्डेब्रण्ड ने जबकि वह रोम का मुख्य उपराज्य या प्राचीन प्रथा को मिटाने के एक नया नियम लागू करने का प्रयत्न किया कि चुनाव के लिए रोम के घमण्ड की स्वीकृति आवश्यक समझी जाए।² 1071 ई. में पाचबिशप बिडो की मृत्यु पर यह सधप छिड़ गया। हरलेम्बाल्ड ने जो बिवाहित पादरियों के विरुद्ध आन्दोलन का एक प्रमुख नेता था एटो नाम के एक व्यक्ति का चुनाव रोम की अनुमति से कुछ पादरियों एवं जनता द्वारा करवा लिया। आरनल्फ कहता है कि अधिकांश पादरी एवं बुद्धिमान जनता राजा के अधिकारों एवं प्राचीन प्रथा को स्वीकार करने के पक्ष में थे तथा फ्रान्क के बिशपों ने राजा की अनुमति प्राप्त करके नौबारा में सम्मेलन किया तथा गोटोफ्रिड नामक व्यक्ति का पाचबिशप पद पर अभिषेक कर दिया। हिल्डेब्रण्ड ने 1073 ई. में पोप पर प्राप्त करने के बाद गोटोफ्रिड तथा उसके अभिषेक-वर्तियों को एक घमसभा में बुलाया तथा एटो के निर्वाचन की पुष्टि कर दी।³ कुछ समय के लिए हेनरी चतुर्थ चुप हो गया तथा उसने पूर्वोक्त पत्र में अपने अपराधों को क्षमाकार करके मिलन के बारे में पोप के निर्णय को स्वीकार करने की सहमति व्यक्त कर दी।⁴

1075 ई. में ग्रेगोरी सप्तम ने एक आदेश के द्वारा सभी अर्थात्कीय प्रतिष्ठापन को निषिद्ध कर दिया। खेद है कि हम उस आदेश के शर्तों का कोई विवरण उपलब्ध नहीं होता। ग्रेगोरी की पत्रिका में यह विद्यमान नहीं है तथा इसके विषय में केवल संक्षिप्त विवरण आरनल्फ के उपर्युक्त पत्र में उपलब्ध होता है। उसकी सूचना इतनी छोटी एवं संक्षिप्त है कि हम निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते हैं कि वह आदेश के ठीक शर्तों को प्रस्तुत कर रहा है। वह कहता है कि ग्रेगोरी ने रोम की एक घमसभा में राजा (हेनरी चतुर्थ) को बिशप पद प्रदान करने में किसी भी अधिकार (Ius) को प्रदान करने का निषेध कर दिया तथा उसने चर्चों के प्रतिष्ठापन से सभी जनसाधारण को हटा दिया।⁵ यह सम्भव है कि आदेश को तत्काल प्रकाशित करना अभिमत न हो तथा ग्रेगोरी अपने शर्तों को बदलने की सम्भावना पर विचार करने को प्रस्तुत हो जसा कि हेनरी चतुर्थ को जनवरी 1076 ई. में लिखे गए पत्र में विवक्षित होता है।⁶ आरनल्फ का कथन सार रूप में सही है यह केवल अभी उल्लिखित ध्यान से ही नहीं बल्कि उसके पत्र-व्यवहार में पाए जाने वाले इस विषय पर अन्य स्पष्ट उल्लेखों से भी स्पष्ट प्रतीत होता है।

माघ 1077 ई. में फ्रैंक के पाचबिशपों को लिखे गए एक पत्र में ग्रेगोरी कहता है कि उसकी जानकारियों में बिटोनी का राजा रॉबर्ट में बिशप के प्रतिष्ठापन के अधिकार के दावे तथा अपनी सहमति देने की प्राचीन किन्तु बिह्वन प्रथा को लागू करने के लिए सहमत हैं।⁷ मई 1077 में दिये के बिशप ह्यू को लिखे गए पत्र में वह गेरार्ड की कम्बरा के बिशप पद पर नियुक्ति की परिस्थितियों का बर्णन करता है। उसका निर्वाचन पादरियों

एव जनता द्वारा हृथा तथा तदुपरांत उसने विशप पद को हेनरी चतुथ से प्राप्त किया । गेराड अपनी सफाई में यह तक देता है कि उसे ग्रेगोरी की उस आनृप्ति का ज्ञान नहीं था—जिसमें यह निषिद्ध घोषित किया गया था तथा यह कि हेनरी को धम-बहिष्कृत कर दिया गया था । अतः ग्रेगोरी उसके निर्वाचन को स्वीकार करने के लिए तयार है किन्तु इस बात पर कि गेराड इसकी (अपने अज्ञान की) राइम्स प्रान्त के आचविशप एव विशपो की एक सभा में घोषणा करे । ग्रेगोरी दिने के विशप को भी इस परिपद में निर्देश देता है कि उपरिदत्त सभी लोगों को यह बताए कि कोई भी लौकिक सत्ता या व्यक्ति इस प्रकार के पद प्रदान करने में हस्तक्षेप नहीं करेगा तथा कोई भी अधिधर्माध्यक्ष या विशप जो ऐसे व्यक्ति का अभिषेक करता है जिसे विशप पद की प्राप्ति अयाजक से हुई हो अपने पद एव गौरव से वंचित कर दिया जाएगा ।³⁵ 1078 ई के माच मास में ग्रेगोरी ने स्पामस के विशप हूजमान के इसी स्पष्टीकरण को कि उसे पोप की घोषणा का ज्ञान नहीं था मान लिया तथा इसके परिणामस्वरूप उसके विशप पद की पुष्टि कर दी ।³⁶

अतः यह स्पष्टतः प्रतीत होता है कि अरनल्फ का कथन सही है और ग्रेगोरी ने 1075 ई में हेनरी चतुथ के स्थान तथा विशप पद पर अयाजक नियुक्तियों के सम्बन्ध में एक आज्ञाप्ति जारी की थी । रोम में नवम्बर 1078 ई में सम्पन्न एक परिपद की आज्ञाप्ति में अयाजकीय प्रतिष्ठापन की निन्दा की स्पष्ट रूप से अभिव्यक्ति की गई है । इस घोषणा में यह कहा गया है कि कई मामलों में धर्म पितामहों के आदेशों के विपरीत चर्चों के प्रतिष्ठापन अयाजकों द्वारा किए गए हैं अतः यह व्यवस्था दी जाती है कि कोई भी पादरी विशप पद में अथवा चर्च का प्रतिष्ठापन सम्राट या राजा के हाथों से प्राप्त नहीं करेगा अथवा किसी अयाजक पुरुष या स्त्री के हाथों से प्राप्त नहीं करेगा और यदि कोई ऐसा करता है तो वह प्रतिष्ठापन अवध होगा तथा उसे प्राप्त करने वाला व्यक्ति धर्म बहिष्कृत कर दिया जाएगा ।³⁷ यह भी व्यवस्था दी गई है कि सभी नियुक्तियों जो मूल्य देकर या पादरियों एव जनता की स्वीकृति बिना अथवा उनकी अनुमति बिना जिनको कि अभिषेक का अधिकार है प्राप्त की गई हैं अवधानिक मानी जाएंगी ।³⁸ माच 1080 ई की रोमन परिपद ने इस निषेध को दोहराया तथा इसमें कुछ महत्त्वपूर्ण व्यवस्थाएँ जोड़ दीं । यदि कोई व्यक्ति भविष्य में विशप अथवा मठाधीश के पद को किसी अयाजक के हाथों से प्राप्त करता है तो उसे विशप अथवा मठाधीश नहीं गिना जाएगा तथा प्रतिष्ठापन देने अथवा प्राप्त करने वाला व्यक्ति धर्म बहिष्कृत होगा ।³⁹ जब किसी चर्च में कोई स्थान रिक्त हो तो पोप अथवा अधिधर्माध्यक्ष द्वारा एक विशप भेजा जाएगा जिसके निर्देशानुसार पादरी और जनता बिना लौकिक हस्तक्षेप के भय अथवा पक्षपात के एक पल्ली-पुरोहित (Pastor) को पोप अथवा अधिधर्माध्यक्ष की सहमति से चुनेगे । यदि वे भयभीत करें तो निर्वाचन अवध होगा तथा वे अपना निर्वाचन का अधिकार खो देंगे जो कि रोम के पोप अथवा अधिधर्माध्यक्ष में निहित हो जाएगा ।⁴⁰

रोम की 1080 ई की परिपद की इन आज्ञाप्तियों से विशपो एव मठाधीशों की नियुक्ति के विषय में लौकिक सत्ता के सम्बन्धों के विषय में ग्रेगोरी सप्तम का दृष्टिकोण पूर्यत विकसित हो गया था । किन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं है कि उसके दृष्टिकोण की

ध्यास्या में हम पूणतया निश्चित हैं। वह दृढ़तापूर्वक धीरे स्पष्टता से सभी अयाजकीय प्रतिष्ठापन का निषेध करता है किन्तु क्या उसका अभिप्राय धार्मिक नियुक्तियों में लौकिक सत्ता के हाथ का पूणतया निषेध है यह पूरा रूप से स्पष्ट नहीं। जसा हम पहले देख चुके हैं कि प्रतिष्ठापन शब्द का एक पारिभाषिक अर्थ भी है। किन्तु सत्त्व उसका प्रयोग पारिभाषिक अर्थ में नहीं होता था तथा हम निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते कि इन दस्तावेजों एवं दगोरी की मान्यतियों में जिनका हम उल्लेख कर आए हैं इस शब्द का यही अर्थ है। इससे बान उठने वाले समय के दौरान ही ये अस्पष्टताएँ धीरे धीरे दूर हुई।

संदर्भ

- | | | | |
|----|--|----|--|
| 1 | देखें भाग 2 अध्याय 1। | 21 | Id id ii 38 |
| 2. | Lambert of He sf Id 1070 | 22 | Greg ry VII R g' i 50 |
| 3 | Id d 1071 (p 1108) | 23 | Id id i 10 |
| 4 | S gf cd Archb shop of M i tz,
Ep t l e ; M g v l 46 p 142 | 24 | Id id v 11 |
| 5 | G g y VII R g strum 29 () | 25 | G egory VII Ep C ii 26 |
| 6 | Lambert An al 1074 (d 215). | 26 | H mbert Ad Sm 6 |
| 7 | Greg y VII R g i 35 | 27 | J tola II Epp 7 8 |
| 8 | Greg y VII R g 36 | 28 | P t r D ma Opuseculum v |
| 9 | Id d 5 | 29 | Arnulfus Ge t Arch p scop rum
Med la c m i 21 |
| 10 | Cf Gr g ry VII R g i 18 & 32 | 30 | A ulfu Ge t Arch p scoporum
M d l um ii 25 |
| 11 | देखें भाग 2 अध्याय 1। | 31 | देखें भाग 2 अध्याय 2। |
| 12 | देखें भाग 1 अध्याय 3। | 32 | Arn lfu G t Arch p coporum
Med l um 7 |
| 13 | Lambert of H f id [An les
1066 (M G H S S p 173) | 33 | G gory VII R g 10 |
| 14 | H mbert Ad e Sm a os
5 | 34 | Id d 13 |
| 15 | Id d 10 | 35 | G eg ry VII Reg 22 |
| 16 | Id Ad su, S mon cos 6 | 36 | Id d 18 |
| 17 | देखें भाग 1 अध्याय 3। | 37 | G g VII Reg 5 (b). |
| 18 | देखें भाग 2 अध्याय 2। | 38 | Id d 5 (b) |
| 19 | G gory VII R gstrum i | 39 | Id d ii 14-s p 398 |
| 20 | Id id 69 | 40 | Id d 14 () p 400 |

तृतीय अध्याय

“प्रतिष्ठापन” प्रश्न पर वादविवाद-(1)

हमने कुछ उन परिस्थितियों को खोजने का प्रयास किया है जिनके परिणामस्वरूप 1075 ई. में अथानकीय प्रतिष्ठापन नियुक्त कर दिया गया। अब हम उस समय के इतिहास पर विचार करना है जिसे इसने जन्म दिया तथा विवाद की विषयवस्तु के वास्तविक स्वरूप पर जिस रूप में वह विवाद-कर्ताओं के मरिचक में उदित हुई विचार करना है। जमा हम देखेंगे विवाद प्रायः प्रतिष्ठानों में पादरी के घम-एव धार्मिक मुद्दा के प्रयोग के प्रश्न की ओर अभिमुख होना है किन्तु यह स्पष्ट है कि वास्तविक विवाद का यह विषय नहीं था। पोप की ओर से यह सिद्धान्त कि धार्मिक नियुक्तियाँ लौकिक सत्ता से पूर्णतया निर्वाचित नहीं होनी चाहिए तथा सामान्य के दृष्टिकोण से यह सिद्धान्त कि लौकिक सत्ता का भी हम प्रकार की नियुक्ति में कुछ स्थान है वास्तव में ये ही महत्वपूर्ण विषय थे।

साम्राज्यिक स्थिति का सघन विवरण 1081-82 ई. में ड्रीपर के अनरिश द्वारा लिखे गए बरदून में बिशप मिमोनेरिक के नाम से रचित पत्र या ग्रन्थ में उपलब्ध होता है।¹ वह स्वीकार करता है कि उस मान्यता में कुछ तक आमाहित होता है कि बिशपों की नियुक्ति राजा द्वारा नहीं की जानी चाहिए। तथापि वह शिकायत करता है कि इसका निषेध अवाधिन उग्रता एवं शीघ्रता के साथ किया गया है उसका वास्तविक प्रयोजन घम के प्रति उत्साह नहीं किन्तु राजा (अर्थात् हेनरी चतुर्थ) के प्रति घृणा है। स्वाबिया के रूडोल्फ तथा अन्य राजाओं के द्वारा की गई नियुक्तियाँ स्वीकार कर ली गई हैं अथवा कम से कम उनका ख्याल रखा गया है जबकि हेनरी चतुर्थ के प्रति निष्ठावान बिशपों की चाहे उनका सामान्य स्वीकृति से निर्वाचन अथवा स्वागत ही क्यों न हुआ हो निन्दा की गई तथा उनको घम-बहिष्कृत किया गया है। वह आग यह तक प्रस्तुत करता है कि राजा द्वारा नियुक्ति की यह प्रथा कम से कम बर्न युगों से विद्यमान एवं स्वीकृत है तथा यह इजराइल के राजा द्वारा पुरोहितों की नियुक्ति का उल्लेख करता है मेकबियन युग (Maccabean Period) के पूर्व दृष्टान्त उद्धृत करता है तथा ग्रेगोरी महात्मा तथा सेविल

के इसीडोर (Isidore of Seville) के लेखों से अनेक धारा प्रस्तुत करता है।¹²

साम्राज्यिक स्थिति को और विस्तृत रूप में सम्भवतः 1086 ई. की एक रचना में जो बेरेण के बिशप विडो द्वारा लिखी गई है निरूपित किया गया है।¹³ वह बिशपों के साम्राज्यिक प्रतिष्ठापन के विरुद्ध तर्कों का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है तथा सतत ग्रामबरोस की रचनाओं में विशेषतः बुद्ध वाक्य उद्धृत करता है जिनको कि इन तर्कों के समर्थन में प्रस्तुत किया जा सकता है किन्तु वह उनको यह कहकर धन्य कर देता है कि ये विवाद विषय से सगत नहीं हैं। वह इस पर बल देता है कि बिशप के पद के दो पहलुओं में स्पष्ट विभेद करना आवश्यक है। एक ओर उसका पद आध्यात्मिक है तथा उसकी समस्त आध्यात्मिक शक्तियाँ उसे पवित्र आत्मा (Holy Spirit) द्वारा दूसरे बिशपों के माध्यम से प्राप्त होती हैं। दूसरी ओर उसके लौकिक अधिकार एवं सम्पत्तियाँ हैं जो उसे राजा द्वारा प्रदान की जाती हैं। पवित्र आत्मा द्वारा उसे प्रदान की गई आध्यात्मिक शक्तियाँ साम्राज्यिक सत्ता के अधीन नहीं हैं किन्तु लौकिक वस्तुएँ क्योंकि लौकिक सत्ता द्वारा प्रदान की जाती हैं अतः उनको स्वामित्व का उस सत्ता के आनुक्रमिक धारणकर्ताओं द्वारा पुनर्नवीकरण किया जाना चाहिए। इसी के आधार पर वह इस तथ्य की व्याख्या एवं औचित्य सिद्ध करता है जसा वह कहता है कि पोप हेड्रियन प्रथम तथा पोप लियो तृतीय द्वारा सम्राटों को प्रतिष्ठापन का अधिकार प्रदान किया गया था। वह इसमें यह भी जोड़ देता है कि धार्मिक चुनावों में प्रायः घटने वाली सामान्य भ्रष्टाचारों को रोकने के लिए भी बसा किया गया था।¹⁴

विडो धार्मिक निर्वाचना में राजा की 'यावत्समस्त स्थिति के बारे में अपने मत की परिपुष्टि पोप निबोधस तृतीय की घोषणा की धाराओं से भी करता है जसा कि वह समझता है कि उसके अनुसार कोई भी व्यक्ति जिना साम्राज्यिक स्वीकृति के रोम का बिशप नहीं हो सकता। उसके अनुसार बड़ी सीमा तक उसके कारण यह तथ्य है कि धर्मोपस्थापीय निर्वाचना में लौकिक सत्ता के नियंत्रण न होने पर जो आनुक्रमिक उपद्रव होते थे विशेष रूप से हेनरी तृतीय के हस्तक्षेप से पूर्व पोप के धर्मसिद्धि के तीन अधिभोक्तारों के मध्य सघष उसके साथ ही साथ यह तथ्य भी कि बिशपों को सभी लौकिक अधिकार राजाओं और सम्राटों से प्राप्त होते हैं तथा उनके प्रदान किए बिना धारण नहीं किए जा सकते और वह इस पर बल देता है कि इसी अधिकार के कारण पादरी विस्ती भी प्रकार के बराधान में भुक्ति का दावा कर सकता है। उसके बाद वह सेविन के इसीडोर से ब्राउलियो (Braulio) के पत्र 'यवहार का उद्धार' देते हुए कुछ वाक्यांशों से यह निश्चिन्ता है कि इसीडोर बिशप पद की नियुक्ति में राजा का अधिकार मानता था। अतः वह कहता है कि जो यह मानते हैं कि बिशपों की नियुक्ति केवल पादरी का ही कार्य है उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि वह मूसा (Moses) ही था जो कि यद्यपि पुरोहित नहीं था जिसके द्वारा ईश्वर ने कानून प्रदान किए तथा पुरोहित वर्ग को आदेशित किया और यदि धार्मिक पद को धारण न करने वाले को इससे लिए अनुमति दी गई थी तो इसे अनुचित नहीं मानना चाहिए कि सम्राट और राजा बिशप पद पर नियुक्ति करें क्योंकि उनका जो अभिप्रेत होता है वह किसी सीमा तक पुरोहित से महानतर एक अधिक गोप्यकारी है तथा

उनको एक साधारण अयाजक नहीं समझना चाहिए।¹⁵

यदि हम उन तर्कों पर विचार करने का प्रयत्न करें और उनके महत्त्व को परिसीमित करें तो यह प्रतीत होगा कि बिडो की दृष्टि में वास्तव में महत्त्वपूर्ण विचार यह था कि बिशप की नौकिक सम्पदा लौकिक सत्ता के अधीन ही उसकी मानी जा सकती है और राजा ही उसे प्रदान करता है। वह हमें भी परिचित है कि बिशपों की नियुक्ति के विषय में नौकिक सत्ता के अधिकार के दावों के बारे में हेड्रियन प्रथम तथा नियो तृतीय के नकली दस्तावेजों का प्रमाणों का अतिरिक्त अनेक पूर्व दृष्टान्त थे जिनको कि जसा प्रतीत होता है उसने सबप्रथम प्रयोग किया है तथा वह इस पर बल देता है कि साम्राज्यिक सत्ता चर्च में व्यवस्था स्थापित करने में बहुत उपयोगी हो रही है। उसके अन्तिम तक के कि राजा और सम्राट अपने अभिवेक के कारण साधारण अयाजक नहीं माने जा सकते महत्त्व पर हमें पुन विचार करने का अवसर मिलेगा। सबसे महत्त्वपूर्ण मायता पहली थी क्योंकि यह 1122 ई. में वाक्स में हुए समझौते के स्वरूप का पूर्वाभास प्रदान करती प्रतीत होती है।

अब हम अयाजक प्रतिष्ठापन के निषेध के बारे में ग्रेगोरी सप्तम के कार्यों के पूर्वतर समयको के दृष्टिकोण एवं तर्कों की तुलना बेनेरिच तथा बिडो के दृष्टिकोण से करनी चाहिए। इनमें सबप्रथम एंटीनवाख का मेनेगोट है जिसका ग्रन्थ एड गेबेहार्डम (Ad Gebehardum) सम्भवत 1085 ई. में लिखा गया था।

वह 1078 ई. की रोमन परिषद् की अनुज्ञप्ति के रूप में उस निषेध को उद्धृत करता है तथा उल्लेखनीय कटुतापूर्वक दावा करता है कि यह केषोलिक परम्परा परिषद् के लिए या अब घम पितामहों के निर्णयों का प्रतिनिधित्व करता है। वह विशेषतः तथाकथित प्रेरितिक विधान (Apostolical Canons) के एक नियम पर बल देता है जो पोप लियो प्रथम की प्रायः उल्लिखित उक्ति है कि कोई भी व्यक्ति बिशप नहीं माना जा सकता जिसको पादरियों द्वारा चुना न गया हो जनता द्वारा जिसकी मांग न की गई हो तथा धर्माध्यक्ष के अनुमोदन से प्राप्त के बिशपों ने जिसका अभिवेक न किया हो तथा पोप सीनेस्टाइन प्रथम (Pope Celestine I) की समान रूप से सुपरिचित उक्ति भी (जिसे वह इनोसेंट प्रथम की उक्ति बताता है) कि कोई भी बिशप अनिष्टुक व्यक्तियों पर लादा नहीं जा सकता तथा वह तक प्रस्तुत करता है कि यदि यह सत्य है तो स्पष्ट है कि बिशपों को राजा और राजकुमारों द्वारा स्वेच्छा से नियुक्त नहीं किया जा सकता।¹⁶

कुछ आगे चलकर वह कार्डिनल हुम्बर्ट के ही समान शब्दों में जिनका हम पहले उद्धरण कर चुके हैं उस हेय कौशल की निन्दा करता है जिसके द्वारा अनेक लौकिक अधिकारियों के कृपापात्र बनते थे तथा धार्मिक पदों को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करते थे।¹⁷

तत्पश्चात् स्पष्टतः बेनेरिच के तर्कों के सन्दर्भ में मेनेगोट मकेबियन युग के तथाकथित पूर्व-दृष्टान्तों पर विचार करता है तथा निश्चयपूर्वक मानता है कि उनको गलत समझा गया था परन्तु यदि वास्तव में वे वैसे नहीं भी होते तो भी वे किसी अधिकार से युक्त नहीं हैं क्योंकि मकेबियन पुस्तकें (Books of Maccabees) प्रामाणिक घम ग्रन्थ संग्रह का अंग नहीं हैं।¹⁸ उसी प्रकार वह यह भी तक करता है कि सोलोमन द्वारा सेडोक को

उक्त पुरोहित नियुक्त करना एक गन्ती थी किन्तु यह बड़ा ठीक भी होता तो भी इसमें कोई बात सिद्ध नहीं होगी क्योंकि उक्त युग की परिस्थितियों को देख कर यदि राजा को यथा अधिकार दे भी दिया गया तो भी नवीन व्यवस्था के प्रागण उम्मा कोई घोषित नहीं था।⁹

यह विस्तारपूर्वक बेनेरिच की मायना की कि सत मीडोर तथा सन ग्रेगोरी मन्त्र विषयों की नियुक्ति में राजाओं और सम्राटों के प्राधिकार अधिकारों को स्वीकार करते थे परीक्षा करता है तथा तब देना है कि उनके प्रायों से जिन वाक्यों को बेनेरिच ने उद्धृत किया है वे सत समझे गए हैं तथा यह प्रमाण करने के लिए अपने दृष्टांत प्रस्तुत करता है कि रोमन धर्मगोठ का निर्वाचन अभी भी किसी लौकिक सत्ताधारी के अधिकार में नहीं रहा जबकि दूसरी ओर पोर को बिगना की नियुक्ति तथा नये धर्म क्षेत्र के संगठन का अधिकार था।¹⁰

इस प्रकार लौकिक सत्ता द्वारा विषयों की नियुक्ति के अधिकार के समय में उठाये गए तर्कों पर विचार करने यह राजाभा द्वारा मुना एव धर्म-दण्ड से निष्पत्ति के प्रतिष्ठापन की व्ययता एव घोषित की सिद्ध करता है क्योंकि ये धार्मिक व्यवस्थाओं के प्रतीक थे तथा जसा बेनेरिच कहता है कि यह प्रथा थी कि वे राजा से प्राप्त करने के बाद अधिकार करने वाले विषयों द्वारा पुनः प्रमाण लिए जाते थे यह एक प्रकृत मूल्य थी।¹¹

बेनेरिच दृष्टान्तपूर्वक लौकिक सत्ताधारियों द्वारा विषयों की नियुक्ति के दावों तथा धर्मराजों द्वारा मुद्रा एव दण्ड से प्रतिष्ठापन के विरुद्ध अपने तर्क प्रस्तुत करता है किन्तु यह स्पष्ट नहीं होता कि उम्मा अधिकार यह सिद्ध करना था कि नियुक्ति में लौकिक सत्ता का कोई भी हाथ नहीं है। वह राजा के स्वैच्छाकारी कार्य को स्वीकार करता है। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उसके मन में अनिश्चय किसी भी प्रकार के समझौते की अनिश्चयता नहीं थी।

1087 ई में फेररा के बिबो द्वारा उक्त प्राय के प्रणयन के जिस पर हम पहले विचार कर चुके हैं एक वर्ष बाद कार्डिनल ह्यूमडेडिट ने कलकियो केनोम (Collectio Canonum) नामक ग्रन्थ लिखा जिसमें उसने अनेक अधिकृत लेखाश प्रस्तुत किए जिन्हें द्वारा धार्मिक प्रायों के निर्वाचन की स्वतंत्रता का प्रतिपादन किया गया था तथा लौकिक सत्ता द्वारा विषयों की नियुक्ति की निष्पत्ति की नहीं थी।¹² 1097 ई में ह्यूमडेडिट ने एक नया ग्रन्थ प्रारम्भ किया जिसका शीर्षक लिखा दिवन्स कात्रा इनवासोरेस एट साइमोनिएकान (Libellus contra invasores et symonia os) था जिसमें उस प्राय पर वह विस्तारपूर्वक विचार करता है। वह प्राय के प्रारम्भ में उसका उद्देश्य बताता है कि वे बड़े धर्म विषयों तथा धार्मिक विभेदकारियों को उत्तर देना बताता है जो कहते हैं कि ईसा का धर्म सार्वभौमिक सत्ता के अधीन है तथा राजा को स्वविवेकानुसार धार्मिक प्रायों पर नियुक्ति का तथा धर्म सम्पत्ति को अपने धर्मराजों अथवा दूसरों को हस्तांतरित करने का अधिकार है। यद्यपि वह प्रतिज्ञापित करता है कि इस प्रकार बहकर व राजकीय गौरव का अपमान नहीं कर रहा है क्योंकि राजा का पद भिन्न है तथा पुरोहित का पद उससे भिन्न है। प्रत्येक को दूसरे की भावश्यकता है, तथा

किसी को भी दूसरे के काम में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।¹³

अतः वह तथाकथित प्रेरितिक विधान से वाक्यों को उद्धृत करना प्रारम्भ करता है।

Si quis episcopu s secularibus potestatibus usus ecclesiam per ipsis obtineat depona ur et segregentur omnes qui illi Communicant

उसका विचार है कि यह नियम प्रेरितों द्वारा इस अनुमान पर लागू किया गया था कि एक युग ऐसा आया जबकि लौकिक सत्ता ईसाई धर्म को अंगीकार कर लेगी तथा अपनी सत्ता को चर्च पर लागू करने एवं अपनी इच्छा तथा सत्ता से पादरियों को नियुक्त करने को अधिकृत होगी। वह हमसे परिचित है कि इन नियमों की प्रामाणिकता पर संदेह किया गया है किन्तु वह यह प्रतिपादन करता है कि वे विभिन्न परिपदों एवं धर्माचार्यों द्वारा स्वीकार किए जाते रहे हैं तथा वह इस पर बल देता है कि बहुत समय तक चर्च ने इन परम्पराओं को अनुष्ण बनाए रखा है तथा प्रत्येक चर्च के पादरी एवं जनता ही अपने बिशप को चुनते रहे।¹⁴ यह प्रथा तबतक चलती रही जबतक कि चर्चों की संख्या बहुत नहीं हो गई और वे धनवान नहीं हो गए तथा इसे पोप एवं सम्राटों द्वारा मान्यता प्राप्त रही। प्रथम सम्राट जिन्होंने इन परम्पराओं का उल्लंघन किया उनमें से ये जिनको वह यूटीशियन (Eutychian) कहता है उदाहरणार्थ जीनो तथा एरेस्टेशियस और उनका अनुकरण कुछ उत्तरकालीन पूर्वी रोमन सम्राटों ने किया। ड्यूसडेडिट इस तथ्य से परिचित है कि एक समय रोमन चर्च भी अभिधेक से पूव अपने बिशपों के निर्वाचन को राजाओं को सूचित करते थे। फिर वह अनेक पोप सम्बन्धी एष परिपदीय विशिष्टियों को गिनाता है जिन्होंने लौकिक सत्ताधारियों के हस्तक्षेप का निषेध किया था तथा जिनके अनुसार निर्वाचन स्वतंत्र होना चाहिए।¹⁵ वह पोप निकोलस तृतीय द्वारा पोप के चुनाव के सम्बन्ध में जारी की गई विनक्ति को इस व्यवस्था के बारे में कुछ कठिनाई अनुभव करता है जिसमें यह कहा गया है कि सम्राटों को सूचना पोप के निर्वाचन के बाद परन्तु उसके अभिधेक से पूव देनी चाहिए। इस विनक्ति को इस व्यवस्था के बारे में पहले वह यह तक प्रस्तुत करता है कि चाहे यह घोषणा में व्यक्त भी किया गया हो तो भी राजा तथा उनके सलाहकारों द्वारा बाद में निकोलस तृतीय को पदच्युत करने के प्रयत्न सम्बन्धी आचरण के कारण और तत्परचात्र पहले पारमा केडेलुप्रस तदनु रूप रेवन्ना के ग्युबट को पोप के विरोध में खड़ा करने के कारण भ्रम हो गई है। हमारे वह यह मानता है कि इस घोषणा की प्रतियों में इनकी जोड़-तोड़ हुई है कि वे एक-दूसरे से सात नहीं हैं। तीसरे यदि निकोलस ने यह माना भी दी हो तो भी यह भ्रम ही क्योंकि वह केवल एक अधिधर्माध्यक्ष या तथा बिशपों की परिपद की सहायता से भी वह पाँच अधिधर्माध्यक्षों तथा हजारों आचार्यों द्वारा अधिधोषित एवं ईसाई सम्राटों द्वारा परिपुष्ट व्यवस्था को नहीं बदल सकता क्योंकि उनकी घोषणाओं में राजकीय अधिधर्माचार्यों की बिशपों की नियुक्ति अथवा निर्वाचन में हस्तक्षेप का कोई भी अधिकार प्रदान नहीं किया गया है।¹⁶ तत्परचात्र यह पोप के लक्षो एवं रोमन कातून से अनेक आ उद्धृत करता हुआ यह सिद्ध करता है कि कोई भी काय जो भ्रम रूप से और गलती से किया गया है भ्रम घोषित करना चाहिए, अतः निष्पत्ति निश्चलता है कि पोप निकोलस की धना भ्रम ही।

वह प्रतिपादित करता है कि यह कहते हुए वह पोप की पावन स्मृति के विपरीत बोर्गसमानजनक बात नहीं कह रहा है क्योंकि वह भी मनुष्य था तथा यह सम्भव है कि वह बोर्गस प्रसार का काय करने को राजी कर दिया गया हो तो कि बयानिक एवं व्यासगत न हो तथा वह पोप बोनीफेस तृतीय का एक दृष्टांत देने हुए बताता है कि किस प्रकार उसने एक गलत जारी की गई विधि का रद्द कर दिया था तथा यह बताता है कि पोप निकोलस तृतीय भी वसा ही करता यदि हमने धर्मियों की सशुद्ध सम्मति को देखा होता एवं उनको अपनी धारणा के विपरीत पाया होता ।¹⁷

ड्यूसडेडिट इसके बाद उस तक पर विचार करता है कि विचार की नियुक्ति स्वेच्छा पूर्वक लौकिक सत्ता तथा दीपनामीन प्रथा से स्वीकृत है और इसके उत्तर में कहता है कि विभिन्न प्रथाओं के प्रचलित होने पर उसी प्रथा का मान्यता दी जानी चाहिए जो कि प्रतिक्रम युग जितनी पुराना हो तथा लौकिक राजाओं द्वारा इस प्रथा में लायी गई विधियों को समाप्त नहीं कर सकती ।¹⁸ अतः वह यह बलपूर्वक कहता है कि राजाओं द्वारा धार्मिक पदों पर नियुक्ति ही धर्म विचार की कुप्रथा के प्रचलन एवं पादरियों द्वारा कल्याण की प्रवर्धन का कारण है क्योंकि वे राजसभाओं में अपनी अनुचित सेवाओं के मूल्य स्वरूप प्राथमिकता प्राप्ति के लिए भीड़ करते रहते हैं । वरु इस तक को राजकीय गिरनों और उनके पादरियों पर आक्रमण के लिए प्रयुक्त करता है ।¹⁹

ड्यूसडेडिट की भावना है कि उस समय इसी कारणों से फ्रेगोरी सप्तम ने सभी बिशप पदों एवं मठों की लौकिक नियुक्तियों को अन्वय घोषित कर दिया था तथा घोषणा की थी कि उन सभी व्यक्तियों को जो प्रतिष्ठापन प्रदान करने का प्रयास करेंगे धम बहिष्कृत कर दिया जाएगा तथा वह 1080 ई की रोम की परिषद् की घोषणा को उद्धृत करता है ।²⁰

यह उल्लेखनीय है कि ड्यूसडेडिट उसी सिद्धांत को कस्वो के गिरजाघरों पर व्यक्तितगत प्रथम के प्रश्न पर भी लागू करता है तथा यह मानता है कि कस्वो के पुरोहित को भी कस्वो के पालरिया एवं जनता द्वारा चुना जाना चाहिए तथा किसी को भी उनकी इच्छा के विपरीत नियुक्त नहीं करना चाहिए ।²¹

यदि हम विवादास्पद साहित्य के उन प्रमुख तर्कों को सहित करने का प्रयास करें जिन पर हम विचार कर आए हैं तो हम कह सकते हैं कि यद्यपि साम्राज्यिक दल के प्रतिनिधियों द्वारा बहुत कुछ कहा गया है जो कि बिशपों की नियुक्ति के सम्बन्ध में लौकिक सत्ता को प्राथमिक अधिकार देने का समर्थन करता है जिनका वे एक लम्बे समय तक उपयोग भी करते रहे हैं तथापि साम्राज्यिक दल के समर्थकों ने पहले न इसे स्वीकार कर दिया था कि बिशप की स्थिति के लौकिक एवं धार्मिक पक्षों में एक अनिवाय अन्तर है तथा यह माना था कि धार्मिक नियुक्ति की निर्धारित करने के अधिकार के बारे में लौकिक सत्ता का दावा शुद्ध रूप से लौकिक पक्ष से ही सम्भव है । दूसरी ओर फ्रेगोरी सप्तम के समर्थक कभी-कभी यह स्वीकार करने के पूरणतया विच्छेद प्रतीत होते हैं कि लौकिक सत्ता का भी धार्मिक पदों पर नियुक्तियों में कोई भी स्थान हो सकता है किन्तु उनका मुख्य बल किसी सत्ता द्वारा स्वेच्छानुसार नियुक्ति करने के निम्न अधिकार के

खण्डन पर तथा घमप्रदेश व पातरिया और जनता द्वारा स्वयं चुनाव करने के अधिकार पर ह यद्यपि उनके द्वारा भी लौकिक सत्ता व दुरुपयोग के कारण होने वाले यावहारिक बोधा पर बहुत ध्यान दिया गया है । इस समय तक उहान साम्राज्यिक दल के इस तर्क पर जो कि उस घमधिकारियों की लौकिक पदस्थिति पर बल देता था न तो विमर्श किया था और न इसका खण्डन ही किया था ।

भारतीय शताब्दी की समाप्ति तक यह तर्क एक भिन्न स्वरूप प्राप्त करने गया तथा अब हम इस पर विचार करेंगे ।

संभव

- | | | | |
|----|--|----|--|
| 1 | व काफ ने M G H Libella De
Lite Vol I पृ 280-284 पर इसका
विरुद्ध विवेचन किया है । | 11 | Id d 64 |
| 2 | W a c h f Tier Epist la 8 | 12 | Ca d al Deusa d t C lle t o Can
on m e g 93 96 97 196 iv
11 16 17 20 146 |
| 3 | Cf M G H Lib De Lit vol 1
pp 529 532 | 13 | D sedet t L b llus contra invaso
res ic p logus |
| 4 | W do D S nna e H ld b and
L bell D Lte 1 p 564 | 14 | Id d i 3 9 |
| 5 | Id d d p 566 | 15 | Id d i 11 |
| 6 | Man g ld Ad G beha d m 50 | 16 | Id id 12 |
| 7 | Id d 53 | 17 | Id d 14 |
| 8 | Id d 55 | 18 | Id d 15 |
| 9 | Id d 56 | 19 | Id d i 16 cf p 79 |
| 10 | Id id 57 63 | 20 | Id id i 2 |

चतुर्थ अध्याय

“प्रतिष्ठापन” प्रश्न पर वादविवाद-(2)

हम ग्यारहवीं शताब्दी के प्रतिम वर्षों से लेकर पस्कल द्वितीय (Paschal II) तथा हेनरी पंचम (Henry V) द्वारा समझौते के प्रयत्नों तथा सघष के विकास पर विचार करना होगा। इस युग की विशेषता एक मध्यस्थतावादी मत का विकास है जो दोनों दलों के तर्कों में युक्ति-संगत तर्कों को विभिन्न रूपों में स्वीकार करता है। मध्यस्थ दल की अनेकानेक मध्यस्थ मत शक्त का ही प्रयोग करना अधिक प्रसिद्ध है क्योंकि यह हमें उन अनुष्ठापनों में पाएंगे जिसकी अपने-आपने अधिक सामान्य सघष के सम्बन्ध में जिस पर हम वाद में विचार करेंगे तथा जिसका एक महान् दल का कभी दूसरे का समर्थन करने हुए अथवा कभी कभी पूर्णतः किसी भी दल से सम्बन्ध न रखते हुए पा सकते हैं।

वस्तुतः यह प्रतीत हो सकता है कि ग्रेगोरी सप्तम की 1086 ई. में मृत्यु एवं हेनरी चतुर्थ की 1106 ई. में मृत्यु ने सारी परिस्थितियों को ही बदल दिया हो किन्तु जहाँ तक प्रतिष्ठापन का प्रश्न है यह सही नहीं था। ग्रेगोरी सप्तम के उत्तराधिकारियों विरोध के बाद अरबन द्वितीय (Pope Urban II) ने ग्रेगोरी सप्तम द्वारा अनाजक प्रतिष्ठापन के निषेध को अन्ततः बनाए रखा जबकि हेनरी पंचम ने भी पिता की मृत्यु के बाद उसके प्रति अपने अधिकार को बनाए रखा। तथापि यह सम्भव है कि चाहे विरोधी दलों की औपचारिक रूप में तथा वास्तविक स्थिति बनी ही दिखाई देती हो किन्तु मूल विरोधियों के हट जाने से परिस्थितियों में एक बड़ी सीमा तक परिवर्तन आ गया तथा मध्यस्थतावादी प्रवृत्तियों को विवक्षित होने तथा बल प्राप्त करने का अवसर मंगम हो गया।

जिस लेखक ने हमें यह मध्यस्थतावादी प्रवृत्ति स्पष्टतः दिखाई देती है वह सम्भवतः चार्ट्रेस (Chartres) का विश्वविद्यालय (Ivo) है। इन्होंने युग का सबसे विद्वान् व्यक्ति या जमा कि उसका महान् ब्रह्मिक अथवा डेक्रेटम (Decretum) तथा पैनोरमिया (Panormia) से पर्याप्त रूप में विद्वान् होता है। उनके पत्रों में स्पष्ट है कि वह प्रतिष्ठान के प्रश्न पर सघष से उत्तम अथवा सघष से अनुत्तम नहीं था तथा वह विश्वविद्यालय की नियुक्ति में लौकिक शक्त के योगदान के पूर्ण बहिष्कार को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। नियोजित

के आचबिशप ह्यू (Hugh) को जिसे वह फ्रांस का धर्माधीन तथा पोप का दूत मानता है 1096-97 ई. में लिखे गए एक पत्र में वह डेम्बर्ट (Dambert) की सेन्स (Sens) के आचबिशप पद पर नियुक्ति से उठने वाले प्रश्न पर विचार करता है। सबसे प्रथम वह लियोस के आचबिशप द्वारा सेन्स के आचबिशप पर प्रभुत्व की माँग का शास्त्र सम्मत न हान के कारण विरोध करता है¹ तदन्तर ह्यू द्वारा उसके अभिनेक पर इस आधार पर उठाई गई आपत्ति का कि उसने फ्रांस के राजा से प्रतिष्ठापन प्राप्त किया है विचार करता है। वह यह कहकर प्रारम्भ करता है कि उसे कोई विश्वतन्तीय सूचना नहीं है कि डेम्बर्ट ने क्या किया है साथ ही यह भी मानता है कि यदि उसने क्या किया भी हो तो यह धर्म का उल्लंघन नहीं है। पोपों ने स्वयं उन व्यक्तियों के जिनका विधिवत् निर्वाचन हुआ है बिशप पद प्रदान करने में राजा का अधिकार स्वीकार किया है तथा वह यह समझता है कि पोप अरबन तृतीय ने कबल अयाजक प्रतिष्ठापन का निषेध किया है न कि जनता के अध्यक्ष के रूप में राजा द्वारा निर्वाचन में योगदान अथवा पद प्रदान का भी निषेध किया है। वह इस पर बल देता है कि यह पूर्णतया महत्वहीन है कि किस रूप में पद प्रदान किया गया—हाथ से या शस्त्रों से या धर्म दण्ड से क्योंकि राजाओं का प्रयोजन कोई आध्यात्मिक वस्तु प्रदान करना नहीं था किन्तु उनका अभिप्राय या तो निर्वाचनकर्त्ताओं की अभिलाषा से अपनी सहमति प्रकट करना है अथवा चर्च की सम्पत्ति और अथवा नीतिक वस्तुओं को उन व्यक्तियों को सौंपना है जिनका निर्वाचन हो चुका है तथा वह सत आगस्तान के सुपरिचित शब्दों को उद्धृत करता है जिनमें यह कहा गया है कि सभी सम्पत्ति मानवीय कानूनों से नियंत्रित होती है। पुनः जबकि वह इसको प्रतिनापित करता है कि उसका अभिप्राय पाप के निरणयों के विरुद्ध अपनी सत्ता स्थापित करना नहीं है जहाँ तक कि ये तकसगत तथा धर्माचार्यों के अधिकारों के अनुकूल हैं वह यह भी मानता है कि ये नियम अर्थात् राजाओं द्वारा प्रतिष्ठापन का निषेध भी शाश्वत कानूना की किसी व्यवस्था पर निर्भर नहीं किन्तु केवल पोप के प्रमाण पर निर्भर है² (Quia ea illicita maxime facit presidentium prohibito)।

ईसा द्वारा अपन पत्र में अंगीकार की गई स्थिति बहुत उल्लेखनीय तथा महत्वपूर्ण है। सबसे प्रथम वह अयाजक द्वारा प्रतिष्ठापन के इस निषेध को जिसे हम प्रशासनिक नियम कह सकते हैं मानता है जिसे जसा सुविधाजनक हो चाहे क्रियावित किया जाए अथवा नहीं और वह इस चर्च के कानूना का स्थायी अर्थ नहीं मानता है। दूसरे यह इस निषेध का यह अभिप्राय नहीं मानता कि राजा का धार्मिक पदों की नियुक्ति में कोई स्थान नहीं है वह मानता है कि जनता के अध्यक्ष के रूप में निर्वाचन में उसका योगदान हो सकता है तथा उस संपुष्टि या पद प्रदान करने का अधिकार है। तीसरे राजा यह किस प्रकार करे—यह स्वरूप उसके मत में महत्वहीन है उसका धार्मिक अधिकारों से कोई भी सम्बन्ध नहीं है किन्तु उसका अर्थ या तो चुनाव से सहमति की अभिपत्ति के रूप में या उसे धर्म प्रवेश की भौतिक सहायता को प्रदान करने के रूप में लिया जाना चाहिए और ईसा इस बारे में स्पष्ट है कि ये राजा द्वारा ही प्रदान किए जाने चाहिए क्योंकि सभी सम्पदा लौकिक सत्ता के अधिकार में है।

कुछ वर्षों बाद सम्भवतः 1111 ई. अथवा 1112 ई. में ईवो सेन्स प्रांत के प्राच विशप तथा अन्य विशपों के नाम से लियोस के प्राचविशप आयोसवरेनस को लिखे एक पत्र में पुनः उसी प्रश्न पर विचार करता है। आयोसवरेनस ने प्रासीमी प्रांतों के प्राच विशपों एवं विशपों की एक परिपद् अयाजको द्वारा प्रतिष्ठापन के प्रश्न पर विचार करने के लिए बुझाई थी। ईवो अपने प्रांत के नाम पर उस परिपद् में सम्मिलित होना इस आधार पर अस्वीकार कर देता है कि धर्माधिकार के अधिकार में राज्य की परिपद् का आह्वान करना नहीं है साथ ही वह एस्केन तृतीय के जितने 1111 ई० में जसा हम अपने देवों के प्रतिष्ठापन का अधिकार सम्राट हेनरी प्रथम को प्रदान कर दिया था इस कार्य की सांयजनिक चर्चा अथवा निंदा करने का भी विरोध करता है किन्तु ईवो तथा दूसरे विशपों को वह यह सूचित कर चुका था कि उसने उन अधिकारों को वापिस ले लिया था तथा उसने वह स्वीकृति वाप्य लिये जाने पर हाँ दी थी। ईवो कहता है कि यह सही नहीं है कि वे पोप के कार्यों पर विचार करने के लिए परिपद् में एकत्रित हों क्योंकि जबतक वह धर्म से विचलित न हो तबतक उसका धर्म अथवा निंदा करने का उनको कोई अधिकार नहीं है।¹ वह इस पर बल देता है कि प्रतिष्ठापन का प्रश्न अथवा धर्मशास्त्र का प्रश्न नहीं है किन्तु जसा उसने अपने पूर्व पत्र में कहा था यह प्रशासनिक व्यवस्था का प्रश्न है अतः यह तर्कमगत है कि पोप विभिन्न व्यक्तियों को प्रतिष्ठापन प्राप्त करने के अथवा धर्म से दोष मुक्ति की अनुमति उनके द्वारा धर्म दण्ड समपण कर पुनः पोप के हाथों प्राप्त करने पर प्रदान कर दे। यदि कोई अयाजक यह सोच कि दण्ड समपण एक प्राप्ति में किसी प्रकार का सस्कार निहित है या वह धार्मिक सस्कार का साथ प्रदान कर सकता है तो वह अप्रामाणिक है। अतः वह अपनी राय इस प्रकार देता है कि जहाँ तक अयाजक द्वारा प्रतिष्ठापन दूसरे व्यक्ति के अधिकारों का अतिक्रमण है इसकी समाप्ति यदि यह बिना धार्मिक पूरे के हाँ सके कर देनी चाहिए किन्तु यदि इसका यही परिणाम होगा तो ऐसा कार्यवाही को स्थापित कर देना चाहिए।²

ईवो ने इस प्रकार पुनः स्पष्ट कर दिया कि वहाँ अयाजक प्रतिष्ठापन के प्रश्न को चर्चा की प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित मानना या आवश्यक एक शब्द का अर्थ का अर्थ नहीं है क्योंकि उसका विशप के आध्यात्मिक पद से कोई सम्बन्ध नहीं है। तथापि यह प्रतीत होता है कि वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि धर्म दण्ड द्वारा अयाजक प्रतिष्ठापन लोकाभिन्दा का कारण है अतः अस्वीकार है यदि किसी गम्भीर व्यवस्था अथवा संधि का उत्पन्न किए बिना किया जा सके कि इस समाप्त कर दिया जाए। लियोस के आयोसवरेनस ने अपने उत्तर में लिखा है कि यद्यपि प्रतिष्ठापन का कार्य धर्म विरुद्ध नहीं है तथापि यह मन कि यह अनुपात ही सत्ता है धर्म विरोधी है।³

यदि शासन का अर्थ उन लोगों के बीच जो कुछ मिलाने पर पोप के दल के समर्थक थे एक मध्यस्थतावादी प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है तथा जसा कि हम देख चुके हैं कि वहाँ स्पष्टतया यह कहना है कि वहाँ अयाजक प्रतिष्ठापन के प्रश्न पर पोप के कार्य की आलोचना की घुंटा नहीं कर रहा है हम पसुरा के हूँ जो उनका अस्वीकार प्रतिनिधि मान सकते हैं जो पोप के कार्य के आलोचक थे किन्तु प्रतिष्ठापन के प्रश्न पर जिसे स्वीकृति

मध्यस्थतावादी थी। उसका महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ De Regia Potestate et Sacerdotali Dignitate जिसका हम बाद में पूरा वलन करके बारहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में लिखा गया था तथा द्वाण्ड के हेनरी प्रथम को समर्पित किया गया था। उसमें वह यह कहता है कि राजा को (Praesulatus Honoris) प्रदान करने का अधिकार है जबकि आर्चबिशप आत्मा का उपचार प्रदान करता है तथा वह मानता है कि यह प्रथा उसके समय तक प्रचलित थी। जबकि पाप्टी एव जनता चर्च की प्रथा के अनुरूप बिशप को चुन ता राजा को धर्मोद्देश्य पुनर् चुनाव में हस्तक्षेप नही करना चाहिए किन्तु वह रूप में अपनी स्वीकृति यदि निर्वाचित प्रतिनिधि उचित रूप से योग्य है प्रदान करनी चाहिए किन्तु यदि वह अनुपुक्त व्यक्ति है तो राजा और जनता दोनों का ही अपनी स्वीकृति प्रदान न करने का अधिकार है। चुनाव के बाद राजा को सभा भौतिक सम्पदाएं प्रदान करना चाहिए किन्तु मुद्रा और दण्ड नहीं जो कि आर्चबिशप द्वारा ही दिए जाने चाहिए अतः वह कहता है कि इस प्रकार लौकिक एव आध्यात्मिक दोनों सत्ताओं के पास वह बना रहेगा ता उनके अधिकार की वस्तु है।⁶

हू की स्थिति सम्भवतः साभिप्राय सभी वादविषयों पर स्पष्ट नहीं है। वह निश्चयपूर्वक नहीं कहता कि निर्वाचन सर्व पादरी एव जनता द्वारा ही किया जाए किन्तु राजा की स्थिति के अर्थ विवरण में वह स्पष्ट कर देना है कि राजा को स्वैच्छा से काय नही करना चाहिए। वह ईश्वर की भांति बिशप के आध्यात्मिक-पद जिसे आर्चबिशप द्वारा प्रदान किया जाना चाहिए तथा उनकी लौकिक स्थिति में जिस वह राजा से प्राप्त करता है बहुत स्पष्टतया विभेद करना है तथा वह धर्म क्षेत्र की भौतिक सम्पदाओं को प्रदान करने में राजा द्वारा दण्ड एव मुद्रा के प्रयोग की निन्दा करता है।

बिशपों के प्रतिष्ठापन पर एक बहुत महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ सुरक्षित रखा है जो जसा विचार है 1109 ई. का है।⁷ इस ग्रन्थ का अर्थ अतः है किन्तु यह स्पष्ट है कि वह साम्राज्यिक अर्थ का था वास्तव में यह भावना है कि यह ग्रन्थ उस पक्ष के समर्थों की सम्भावना के अनुचित सुविचारित सुभाव का प्रतिनिधित्व करता है।⁸ लखक पूर्व दृष्टान्तों की भव्य शृंखला प्रस्तुत करके लौकिक सत्ता के बिशपों पर नियुक्ति के ऐतिहासिक अधिकार की पुष्टि करता है। वह पोप हेनड्रिक प्रथम की अप्रामाणिक घोषणा को उद्धृत करता है जिसे जमा कि हम देख चुके हैं फेररा के बिशपों ने भी प्रस्तुत किया था किन्तु यह सिद्ध करता है कि इसमें बहुत पूर्व ही सम्राटों राजाओं और राजभक्तों के भयानक द्वारा बिशपों की नियुक्ति तथा प्रतिष्ठा होती थी तथा यह प्रथा पोप ग्रेगोरी महाद्वारा स्वीकार की गई थी।¹⁰ वह इस पर बत देना है कि यह निष्प्रयोजन है कि प्रतिष्ठापन राजा द्वारा शांति से अधिकार दण्ड से अथवा किसी अन्य तरीके से ही किया जाय किन्तु वह सुभाव बता है कि अधिकार-दण्ड अधिक उपयुक्त प्रतीक है क्योंकि इसके दोनों प्रकार के अर्थ होने हैं भौतिक भा एव आध्यात्मिक भी। लखक स्पष्टतः लौकिक सत्ता द्वारा बिशपों के प्रतिष्ठापन के अधिकार का सम्बन्ध चर्च की भौतिक सम्पदा एव शक्ति से जोड़ता है। वह कहना है कि कांस्टेण्टिन के युग तक चर्च निघन था किन्तु अब ईसाई सम्राटों ने उस बहुत अधिक भौतिक सम्पत्ति तथा शक्तियाँ प्रदान कर दी

तो यह उचित ही था कि राजा जो जाता में से एक है तथा जनता का अध्यक्ष है बिनाप को जिगयो उसने राज्य की इतनी शक्ति प्राप्त कर रखी है प्रतिष्ठित करे एवं गद्दी पर बटाए। यदि बिनाप उतने ही निधन रहते जसा कि ग्रेगोरी महान् न एक बिनाप का बणन करते हुए लिखा है कि उनके पास एक शीतवालीन लबादा भी नहीं था तो स्थिति कुछ भिन्न होती तथा उन दगा म उत व्यक्ति से उदा एव निष्ठा की शपथ प्रप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं होती।¹¹

लेखक राजा व प्रतिष्ठापन के अधिकार का सम्बन्ध भौतिक धन सम्पत्ति के स्वामित्व से जोड़ता है तथा उस स्वरूप को महत्व नहीं देता जिमने अन्ततः यह सम्पत्ति हो किन्तु वह इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि उदा एव शपथ से समुक्त प्रतिष्ठापन जिस रूप में भी हो अभिप्रेत से पूर्व किया जाना चाहिए। यह इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि धार्मिक पदों पर नियुक्ति में राजकीय सहमति की स्वतंत्रता को पुष्ट करने के लिए वृत्तसम्पन्न है। उमका सुभाव कि यदि सब निधन बना रहता तो राजकीय दाव को प्रस्वीकार किया जा सकता था शपथ को हल करने की जिगा में परस्पर शीत के आश्चर्यजनक सुभाव से वहाँ तक सम्बन्ध हो सकता है इने जांचने का हमारे पास कोई साधन नहीं है तथा उन पर हम अगल प्रध्याय में विचार करेंगे।

अन लेखक यह कहता है कि राजाओं के बिनापों के प्रतिष्ठापन के अधिकार को छीनने के पोप व प्रयत्न का परिणाम ईसाई लोगों में बन्त बड़े भय एवं सशोक को निश्चितरूपेण उत्पन्न करेगा। वह स्वीकार करता है कि यदि इन अधिकारों का दुुरुपयोग किया जाए तो पोप को इसमें सुधार लाना चाहिए किन्तु वह शिष्यवत करता है कि पोप इस पर बल देता है कि यदि वह गलती करें तथा बिनापों की नियुक्ति में स्वतंत्राचार बरतें तो भी उनकी निन्दा नहीं करनी चाहिए और यह तक प्रस्तुत करते हैं कि सर्वों व पादरी का नियुक्त किसी मनुष्य द्वारा नहीं किया जा सकता वह उन्हें एन से अधिक बार स्मरण दिलाता है कि जब जब पोप के निर्वाचन के सम्बन्ध में झगड़े हुए हैं तब तब वे पूर्वी रोमन या फ्रैंक सम्राटों के हस्तक्षेप से ही सुनभे हैं।¹²

विद्यन ग्रन्थ में हम इस मायना का सबसे बट्टर समर्थन रूप में कि राजकीय सत्ता को नियंत्रित करना अशुभ था¹³ श्रुतियों व ग्रेगोरी की स्थिति पर विचार कर चुके हैं अतः यह आश्चर्यजनक नहीं कि वह बिनापों के प्रतिष्ठापन व राजकीय विशेषाधिकार का दृढता से समर्थन करता है। तथापि उसने मामले में भी यह उल्लेख करना लाभकर होगा कि वह प्रतिष्ठापन का क्या अर्थ समझता है तथा उसने समर्थन में लिए गए उसके तर्कों का क्या स्वरूप है। उसका ग्रन्थ ओर्थोडॉक्स डिफेंसिवो इम्पारियलिस (Orthodoxa Defensio Imperialis) हुनरा पचम व पन्तरौणक बाद लिखा गया था तथा यह माना जाता है कि उसका काल 1111 ई होना चाहिए लगभग वही समय जबकि हेनरी पचम ने परस्पर द्वितीय को कुछ समय के लिए प्रतिष्ठापन का अपना अधिकार मानने को बाध्य कर दिया था।

ग्रेगोरी वास्तव में चरम साम्राज्यिक स्थिति का प्रतिनिधि है तथा राजा का सब क अध्यक्ष व रूप में बणन करता है। कभी व थोड टेस्टामेंट से इसका समर्थन करता है

तथा सत क्रिसोस्टम (St Chrysostom) के नाम से आरोपित एक वाक्य से भी जो अप्रामाणिक प्रतीत होता है।¹⁴ हम इस धारणा पर बाद में विचार करना होगा। वह तक प्रस्तुत करता है कि यदि यह ऐसा है तो यह तकसम्मत नहीं है कि सम्राट को चर्च के धर्माधिकारियों के पद पर जो कि उसके समासद हैं नियुक्ति से वंचित रखा जाए तथा यह उपयुक्त प्रतीत होना है कि बिशप द्वारा अभिवेक से पूर्व उनको सम्राट द्वारा अधिकार दण्ड एवं मुक्त से प्रतिष्ठित किया जाए।¹⁵

पुन वह तक करता है कि यदि पाप व विशिष्ट आभूषण का संकटाज्ञ द्वारा प्रदान किए गए थे इसके लिए वह कांस्टेंटायन के दान पत्र (Donation of Constantine) के एक अंश को उद्धृत करता है ता यह और भी अधिक उपयुक्त है कि सम्राट बिशप को मुक्त एवं दण्ड प्रदान कर सक।¹⁶ किन्तु वह यह स्पष्ट करने के लिए सावधान है कि प्रतिष्ठापन किसी आध्यात्मिक पद या अधिकार का नहीं किन्तु बस लौकिक सम्पत्ति एवं अधिकार का प्रतिनिधित्व करता है।¹⁷ अनन्त वह तक करता है कि एक समय था जबकि चर्च निधन थे अब वे समृद्ध हैं तथा अपने अधिकार में वे सैनिक एवं सामन्तों को स्वतंत्र हैं तथा वह स्थिति राजा के लिए बहुत भयावह होगी यदि वे उसके नियंत्रण में न रहें इसलिए चर्च के धर्माधिकारियों का जिनसे यह अधिकार राजकीय या साम्राज्यिक सत्ता से प्राप्त है अपनी एवं अपने सैनिकों की राजा के प्रति निष्ठा का प्रतिज्ञा करनी चाहिए।¹⁸

वास्तव में पोप के दल का भी एक नखक इस युग में था जिसकी स्थिति हम सम्बन्ध में अनम्य माना जा सकती है वह था यूना के बिशप रेंगरियस (Rangerius Bishop of Lucca)। अपने छद्मदावद ग्रन्थ De Anulo et Baculo में वह मानता है कि धर्म दण्ड एवं मुद्रा पवित्र प्रतीक हैं जिनका एक साधारण व्यक्ति के हाथों में स्वीकार नहीं करना चाहिए वह अपने विचार के अनुसार उनका आध्यात्मिक महत्त्व का वक्ष्य करता है। उसका अनुसार मुक्त बिशप एवं चर्च के संगम का प्रतीक है तथा दण्ड अनुशासनात्मक पादरी के पद का।¹⁹ दूसरे स्थान पर इन व्याख्याओं को प्रस्तुत करने के बाद वह इस प्रस्वीकार करता है कि ये औपचारिक रूप में राजाशा द्वारा दिए गए हैं। वह मानता है कि पादरी का दण्ड कदापि तलवार के अधीन नहीं हो सकता अतः वह बिशप द्वारा राजा के प्रति शपथ ग्रहण का प्रबल विरोध करता है तथा इस मांग्यता का खण्डन करता है कि चर्च की भौतिक सम्पदा राजा को उसके ऊपर को अधिकार प्रदान करती है क्योंकि ये ईश्वर को धो गई थी तथा पुन मांगी जा सकती है।²⁰ पुन वह कांस्टेंटायन के दान पत्र का और पोप को उसके द्वारा प्रदान किए गए महान् सम्मान एवं उपहारों का उल्लेख करता है। किन्तु दृढतापूर्वक यह प्रस्वीकार करता है कि इनके कारण पोप को उसकी आध्यात्मिक सत्ता मिली है जो कि जसा वह मानता है पहले से ही उसके पास थी।¹

इसमें कोई संदेह नहीं कि रेंगरियस पूर्णतया मुक्त एवं दण्ड से प्रतिष्ठापन के बारे में अनम्य है तथा चर्च की भौतिक सम्पदा के बारे में उसका दृष्टिकोण सरासरी नहीं है।

अब यदि हम उन लक्षकों व अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों को जिन पर हम अभी विचार कर आए हैं एकत्रित करने का प्रयत्न करें तो यह कहना तकसगत प्रतीत होगा

कि समय रूप से वह एक मध्यस्थ प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। अथवा कम से कम वास्तविक विषयक प्रश्नों के प्रति स्पष्टता बाध का परिचय देते हैं। ईवो यद्यपि अधिकांशतः पोप के दान का समर्थक है तथापि वह दूसरे दल से इस दान में सहमत है कि राजा का धार्मिक पदाधीन निर्गति में अवश्य कोई अधिकार है। जबकि पुरी का ह्य मानता है कि दण्ड एक मुद्रा से प्रतिष्ठापन की विधि छोड़ देनी चाहिए तथा ट्रक्टेस का स्पष्टतः रचयिता भी इससे सहमत है कि वसा ही करता चाहिए। बेवम बेटीनो का बेगोरी यह मानता है कि हमें बनाए रखना चाहिए वह चर्च के अग्रज के रूप में राजा की स्थिति के बारे में एक सिद्धांत प्रकटित करता है जिस पर हम वास्तव में विचार कर सकते हैं किन्तु वह भी इससे सहमत है कि प्रतिष्ठापन किसी आध्यात्मिक शक्ति का प्रतिनिधित्व नहीं करता किन्तु उसका सम्बन्ध केवल भौतिक धन सम्पत्ति से है। वास्तव में यह स्पष्ट है कि तौरिक दावे के समर्थक इस बात में अधिकाधिक परिचित होते जा रहे थे कि उच्चतर पादरिया के पत्र के राजनीतिक महत्व पर ही यह दावा निर्भर था और यही बेटीनो के बेगोरी तथा ट्रक्टेस द्वारा भला भानि यत् किया गया है।

संदर्भ

- | | | | |
|----|--|----|---|
| 1 | I o f Chart Ep t la ad H g
m Lib D Late ol t | 11 | Id d p 501 |
| 2 | Id d | 12 | Id d p 50 |
| 3 | J of Ch rt Ep d los ra
n m Lib D Late l | 13 | Cf (l) p 12 |
| 4 | Id d | 14 | G g ry f Cat O th d D
f Impe l |
| 5 | Iosce n Re po L b De
Lit l | 15 | Id d 3 |
| 6 | H gh f Fle y T t t d R g a
P x t t t S d l D g t t 15 | 16 | Id d 4 |
| 7 | Cf L b D Lu ol p 495 | 17 | Id d 5 |
| 8 | Cf G rs P D d tsch
In est t rst t t K g He
h \ | 18 | Id d 7 |
| 9 | T tat d I t t Epi o-
porum Lib D Lt p 498 | 19 | R ge s Liber de A ula t B
cul L b D A l et B cul
Lib D Lt l p 509 |
| 10 | Id d p 499 501 | 20 | Id d 860 |
| | | 21 | Id d 1107 |



पचम अध्याय

पैस्कल द्वितीय तथा हेनरी पचम

अब हम प्रतिष्ठापन विवाद के निश्चय समझने के प्रथम प्रयत्न के निहाय एक स्वरूप पर विचार करना चाहिए जो वास्तव में अपनी निर्भीकता एवं गार्हम के कारण आवश्यकजनक था। क्योंकि पैस्कल द्वितीय द्वारा पद चिह्न अर्थात् विशेषकर गिणपो एवं मठाध्यक्ष के पद का सम्पूर्ण अन्ध राज तिक स्थिति एवं विशयाधिकारों के समपण का प्रस्ताव पोप की ओर से अपने अधिकार में विद्यमान भौतिक सत्ता को सौंप कर चर्च की आध्यात्मिक स्वतंत्रता को प्राप्त करने के निश्चित प्रयत्न का प्रतिनिधित्व करता है।

इन वर्षों के चटिल निह्मस का विवचन करने से पूर्व यह दायना उपयुक्त होगा कि फ्रांस एवं इंग्लैंड में पोप एवं तौकिक सत्ताएं विशेषता की नियुक्ति के प्रश्न पर एक निश्चित समझौते तक पहुँचने में समर्थ हो गईं।

ऐसा प्रतीत होता है कि फ्रांस में पोप द्वारा प्रतिष्ठापन का निषेध धीरे धीरे स्वीकार कर लिया गया तथा सिद्धान्त रूप में निर्वाचन का अधिकार स्वीकृत हो गया यद्यपि यह भी स्पष्ट है कि स्वीकृति या सन्तुष्टि का अधिकार राजा ने नहीं छोड़ा।

इंग्लैंड में एन्सलम न विलियम रूफम की मृत्यु के पश्चात् 1100 ई. में तौकिक प्रतिष्ठापन एवं राजा के प्रति समादर प्रश्न पर एक स्वयं अपनाया उत्तरे समादर प्रदान करने से अस्वीकार कर लिया तथा उन बिना का अभिषेक करना अस्वीकार कर लिया जिन्होंने राजा से मुक्त एवं धर्म-दण्ड द्वारा प्रतिष्ठापन प्राप्त किया था। उस पुन 1103 ई. में एन्ड छोड़ना पड़ा किन्तु उसके केनरी प्रथम से सम्बन्ध कभी भी विच्छिन्न नहीं हुए तथा अन्तत एक समझौता हो गया यद्यपि हम उसके समस्त विवरण के बारे में निश्चित नहीं हो सकते।²

एक वक्तव्य जिसके बारे में हम निस्संदेह पूर्ण विश्वास रख सकते हैं एन्सलम का है पोप पैस्कल को लिख गए एक पत्र में जिसमें वह सूचना देता है कि राजा ने अपने चर्चों के प्रतिष्ठापन के स्वत्व को परित्याग किया है तथा राजा *In personis eligendis nullatenus propria utitur voluntate sed religiosorum se penitus committit consilio* ³

इडमर (Eadmer) 1107 ई की लन्दन की परिषद में हुए सम्मेलन के बारे में दो विवरण देता है हिस्टोरोग्राफा नोवोरुम (Historia Novorum) में वह सूचित करता है कि राजा ने औपचारिक रूप में मुग्ना एव दण्ड द्वारा प्रतिष्ठापन को त्याग दिया है तथा एन्सलम में यह घोषणा किया है कि किसी को भी इस कारण अपने गौरव से वंचित नहीं किया जाएगा कि उसने राजा को समादर प्रदान किया है। अपने एन्सलम के जीवन चरित्र में वह लिखता है—*Res enim ante-cessorum suorum usu relicto nec personas quae in regnum ecclesiarum sumebantur per se elegit nec eas per dationem virgine pastoralis ecclesie quibus praeficiebantur investivit*।⁶

अनाब के बारे में यह धर्मज्ञ स्पेलमैन (Spelman)⁵ द्वारा उद्धृत वायनेण्ड की हस्तलिखित प्रति (Croyland MSS) से पट्ट होता है किन्तु मॉन्सबरी⁶ के विलियम तथा ह्यूज कैंटर (Huge Cantor) द्वारा इसका पुनरावलोकन किया गया है।

एन्सलम तथा हेनरी का संबंध हुए सम्मेलन की शर्तों के बारे में इसके सिवाय कि हेनरी ने मुग्ना एव दण्ड द्वारा प्रतिष्ठापन करने का दावा छोड़ दिया था निश्चिततापूर्वक नहीं कहा जा सकता जबकि जसा एन्सलम के पत्र से प्रतीत होता है राजा ने चुनावों में स्वच्छता हस्तक्षेप से बचना होना स्वीकार कर लिया तथा जसा 1106 ई में एन्सलम को लिखे गए पत्र में विनिश्चित होता है परन्तु द्वितीय रोमनिश्चि से इस सुविधा के अस्वीकार होने की घोषणा करते हुए अनुपस्थिति दे दी कि विनाय राजा के प्रति समादर कर सकते हैं।⁸

हेनरी चतुर्थ की 1106 ई में मृत्यु होने के बाद उसके पुत्र हेनरी पंचम ने जो अभी तक पिता के विच्छिन्न पोप के दल के साथ था शिष्टाचार पर नियुक्तिवादी करने तथा समस्त उनको प्रतिष्ठापन प्रदान करने की प्रथा पुनः प्रारम्भ कर दी। पोप परन्तु द्वितीय ने जो 1099 ई में अरबन द्वितीय का उत्तराधिकारी बना ग्रेगोरी सप्तम तथा अरबन द्वितीय की नीति बनाए रखी तथा समय समय पर अयाजक प्रतिष्ठापन के निषेध को दोहराया। इनमें से इस महान् विवाद का कोई सम्बन्ध नहीं हुआ किन्तु हेनरी के पदारोहण के बाद एक गोष्ठी की व्यवस्था करने के प्रयत्न हुए ताकि इन विषयों पर विचार किया जाए तथा सम्भव हो तो किसी हल को ढूँढा जाय।⁹

हम इन वर्षों में घटित होने वाली घटनाओं अथवा सम्मेलन-वार्ता का विस्तार से अध्ययन नहीं कर सकते किन्तु हमें उनकी कुछ अधिक महत्वपूर्ण अवस्थाओं को देखना चाहिए। अक्टूबर 1106 ई की गुस्ताला (Guastalla) की परिषद में परन्तु द्वितीय ने अयाजक प्रतिष्ठापन के निषेध को दोहराया परन्तु साथ ही हेनरी पंचम के प्रति निषेधों के साथ यह भी निश्चित किया कि वह भी अयाजक ही जमनी आवेगा।¹⁰ परन्तु जसा जीनबट ने अपने इतिवृत्त (आनिकल) में सकेत किया है यह देखकर कि राजा एव जमनी का दृष्टि कोण अनिश्चित है वह फ्रांस की ओर चला गया। हेनरी जमनी में सम्बद्ध प्रतिष्ठापन के विषय में जमनी क्षेत्र के बाहर हर्ष परिषद में औपचारिक विचार पर सहमत नहीं हुआ।¹¹ किन्तु शम्र ही मई 1107 ई में चालोन्स (Chalons) में एक अनौपचारिक बैठक हुई तथा इस बैठक में जिसका पर्याप्त रूप से विस्तृत विवरण एबट जुगर (Abbot Suger) ने प्रस्तुत किया है द्वीर के आचलविशय द्वारा राजकीय दावे का एक बतव्य

प्रस्तुत किया जो कि बहुत उल्लेखनीय है। उसने बनाया कि ग्रेगोरी महाद्व के युग से ही यह साम्राज्य का कानूनी अधिकार रहा है कि चुनाव का निम्न प्रकार अपनाया जाए। औपचारिक चुनाव से पूर्व जिस व्यक्ति का नाम प्रस्तावित करना है उसके बारे में राजा की अनुमति ले ली जाए फिर औपचारिक चुनाव जाता का भाग पादरियो द्वारा निर्वाचन तथा सम्माननीय जन (Honoratiore) की स्वीकृति से हो। अभियेक के बाद बिशप सम्राट के पास जाए जो मृग तथा दण्ड द्वारा उसे पद चिह्न से प्रतिष्ठित करें तथा वह उसके प्रति समार तथा निष्ठा प्रदान कर। किसी भी दूसरी स्थिति में उसको तंगरी दुगों प्राप्ति का स्वामित्व न मिले जो कि राजकीय सत्ता की सम्पत्ति है। उमन बना कि यदि पोप इससे सहमत हो तो साम्राज्य एवं चर्च में शान्ति स्थापित हो जाएगी।¹⁴

हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि जुगर के दगन का प्रत्येक अंश सत्य है किन्तु इसमें सन्देह करने का कोई कारण नहीं है कि सार रूप में यह सत्य है तथा उस स्थिति में इसका बड़ा महत्व है क्योंकि ये प्रस्ताव हेनरी पचम की ओर से समझौते की निष्ठा में वास्तविक प्रगति के सूचक हैं। इस दस्तावेज में दो बातें उल्लेख महत्वपूर्ण हैं पहली तो यह कि राजा नियुक्ति का अधिकार नहीं बरन् चुनाव से पूर्व राय लिए जाये तथा नियेषाधिकार के अधिकार भागता है दूसरा जबकि हेनरी दण्ड एवं मुग्रा से प्रतिष्ठित करने का स्वत्व बनाए रखता है यह अभियेक ने वास्तव में प्रोव नहीं तथा उसका सम्भव निश्चिन्त रूप से धर्माध्यक्षीय पत्र को सामान्य प्रकृति से न होकर केवल पद चिह्न प्रदान करने से है।

जुगर के दगन में प्रतीत होता है कि तत्काल तो राजकीय प्रस्तावों पर गभीर ध्यान नहीं दिया गया। दण्ड पीसाम-जा (Piacenza) के बिशप को पोप के नाम पर यह कहना हुआ बनाता है कि यदि चर्च राजा की राय के बिना बिशप को नहीं चुन सकता तो यह चर्च को दाम बना देने के समान होगा—राजा के द्वारा मुग्रा एवं दण्ड से प्रतिष्ठान दवी अधिकारों का अनिवार्य तथा निष्ठा का समझौदा बिशप की गरिमा के विरुद्ध था। जुगर कहता है कि जर्मनों ने यह दस्तावेज अत्यन्त अक्षिपूर्वक सुना और धमकी दी कि भगड़े का निपटारा यहाँ नहीं अस्तु रोम में तलवारों में होगा।¹⁵

मर् के मन्त में पस्कल ने ट्रोय (Trojes) में एक परिपद् बुलाई तथा वहाँ बिशप के स्वतंत्र चुनाव के बारे में धान्ति प्रकृतित की तथा धार्मिक नियुक्तियों में जनसाधारण के हस्तक्षेप की निष्ठा की।¹⁶ किन्तु उसी समय यह तय किया गया कि हेनरी पचम अगल धप इटली आए तथा सारे प्रश्न पर एक सामान्य सभा में विचार किया जाए।¹⁵ यह व्यवस्था भग हो गी किन्तु पोप एवं हेनरी के बीच दातचित चलती रही तथा डा पाइडर (Dr Peiser) की राय में Tractatus de Investitura ग्रन्थ जिस पर हम पिछले अध्याय में विचार कर आए हैं इसी युग का है तथा राजकीय पत्र द्वारा समझौते की निष्ठा में एक निश्चित प्रगति का प्रतीक है।¹⁶ 1109 ई. में हेनरी ने महत्वपूर्ण बिशपों का एक राज प्रतिनिधिमण्डल पोप को अपने रोम आने के पत्र की घोषणा करने के लिए भेजा पस्कल ने दूतों का अत्यन्त स्वागत किया तथा पडरबान के अण (Anna ls of Paderborn)के अनुसार उनकी विश्वास दिलाया कि वह धमविधि समत एवं धार्मिक अधिकारों का अनिश्चित कोई भाग नहीं करेगा तथा किसी भी प्रकार से राजा के

घ घिकारों को कम करने का कोई भी प्रयत्न नहीं करेगा।¹⁷

1110 ई. के अगस्त में हेनरी पंचम ने एच विगांड सेना केवर स्ट्री को प्रस्थान किया तथा वय के अंत तक वॉ रेरेजो (Arezzo) था पहुँचा तथा वहाँ से ही पस्का से पत्र-व्यवहार करने लगा एचरापेन्ते (Acquapendente) से उसने पुन दूत भेजे जो पोप के प्रतिनिधियों के साथ सुत्री (Sutri) में उसने पाप लौट आए।

इसके बाद उनमें होने वाली समझौते की बातों का प्रमुख विषय को समझाने के लिए एडवार्ड द्वारा उनका अपने आनिर्णय में लिया हुआ सक्षिप्त विवरण उपयोगी होगा। पोप के दूतों ने घोषणा की कि यह राजा का अभियेक करने तथा उसे सभी सम्मान एवं गद्गभाव प्रदान करने को प्रस्तुत है यदि राजा अयाजक प्रतिष्ठापन को निषेध करे चर्च की स्वतंत्रता का वादा करे। उनमें अनेक में पोप ने वादा किया कि चर्च भी सभी रियासतों का उद्दिष्ट चर्चों आदि तथा अपने अधिकांशों में सभी पत्र चिह्नों को समर्पित करने के लिए तयार है। राजा ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया किन्तु उस पर कि यह व्यवस्था *Firma et autentica ratione consilio quoque vel concordia totius ecclesiae ac regni principum assensu* स्थापित की जानी चाहिए, अर्थात् राजा चाहता था कि इस समझौते को सम्पूर्ण चर्च का अनुमोदन तथा स्वीकृति एवं साम्राज्य के सभी राजाओं की सहमति प्राप्त होनी चाहिए। एडवार्ड यह भी कहता है कि राजा को विश्वास नहीं था कि यह प्राप्त हो सकती थी।¹⁸

समझौते की बातचीत एवं बाद की घटनाओं का वर्णन हमारे पास दो रूपों में है। पहला पस्का द्वितीय का एक समयक द्वारा जो कि उनका प्रस्तावों का लिखा गया एक विवरण जो तथा पस्का त्रितीय का रजिस्टर में सम्मिलित कर दिया गया तथा फिर एनाल्स रोमेनी (Annales Romani) में शामिल किया गया दूसरा हेनरी पंचम का सभी ईसाइयों को सम्बोधित एक विश्व-पत्र। इनमें केवल घटनाओं का वर्णन ही नहीं अपितु कुछ अधिक महत्वपूर्ण दस्तावेज भी हैं जिनमें वृद्ध अधिकार पत्र भी सम्मिलित है जिसके लिए प्रयत्न किया गया था।

सबसे पहला महत्वपूर्ण दस्तावेज वे हैं जिनमें हेनरी पंचम तथा पस्का त्रितीय के पारस्परिक वादे हैं। हेनरी पंचम ने वादा किया कि पद चिह्न के बारे में पोप द्वारा समझौते में स्वीकृत कार्यों को बरतने पर वह प्रतिष्ठापन के बारे में सभी स्वार्थों को छोड़ देगा चर्च उन बातों और सम्पत्तियों के विषय में स्वतंत्र रहेगा जो कि राज्य की नहीं थीं तथा वॉ मत पीटर की विरासत और सम्पत्ति को बसे ही बनाए रखेगा जसा कि चार्ल्स लुई हेनरी एवं अन्य सम्राटों ने किया था।¹⁹

पस्का द्वितीय ने पीटर लियोनिस् (Peter Leonis) के द्वारा जो रोम का अध्यक्ष (Prefect of Rome) था यह प्रतिज्ञा की कि यदि राजा दस्तावेज में कहे गए अपने वादे को पूरा करेगा तो पोप राजा के अभियेक के अति सभी उपस्थित विभागों को आदेश देगा कि वे चार्ल्स लुई हेनरी तथा उनके पूर्ववर्तियों के युग में साम्राज्य के अधिकार में विद्यमान पद चिह्नों को राजा और साम्राज्य को लौटा दें। उसमें वादा किया कि वह निश्चित रूप में सत्ता एवं राज्य द्वारा तथा धर्म विद्वेषण का दण्ड के प्रावधान सहित आदेश देगा कि

कोई भी उपस्थित एवं अनुपस्थित बिशप अथवा उनके उत्तराधिकारी उन पद चिह्नों में जमे नगर ढ्यूको एवं काउंटा की रियासतें आति जिन पर साम्राज्य का स्पष्ट अधिकार था ^० अनधिकार पूरा हस्तभेप नहीं करेगा। पोटर लियोनिम ने शपथ ली कि यदि पोप अपनी प्रतिष्ठा पूरी न करेगा तो वह राजा का साथ देगा। ^१

उन पारस्परिक प्रतिज्ञाओं से हमें एक घोषणा की तुलना करनी चाहिए जो कि हेनरी के विश्व पत्र में सम्मिलित है। कांस्टीट्यूशन्स के सम्पादन ने यह सुभाव लिया है कि पस्कल को ये घोषणाएं अभिषेक के दिन जारी करनी थीं। इस दस्तावेज में केवल एक चिह्न को नोटाने की आनप्ति की औपचारिक घोषणा ही नहीं है अपितु उन परिस्थितियों पर एक तत्सम्मत वक्तव्य भी है जिनके कारण पोप ने ऐसा किया। वह घोषणा करता है कि जबकि किसी भी पुरोहित को राज्य के कार्यों तथा राज्य की सभाओं में भाग नहीं लेना चाहिए तथा किसी पीडित व्यक्ति की सहायता करने के अतिरिक्त राज्य के न्यायालय में उपस्थित नहीं होना चाहिए हेनरी के साम्राज्य में बिशप एवं एबट निरन्तर लौकिक कार्यों में व्यस्त रहते हैं क्योंकि उनके द्वारा राजा से नगर रियासतें और दूसरी सम्पत्तियाँ स्वीकार की गई हैं जो राज्य की सेवा में सम्बन्धित हैं। इसके ही कारण वह इस प्रथा का विनाश बताता है कि बिशपों का अभिषेक तब तक न हो जबतक कि वे राजा द्वारा प्रतिष्ठापन प्राप्त न कर लें। यह घम विक्रय का तथा निर्वाचन के बिना बिशप पदों पर नियुक्ति का कारण रहा है तथा एही दोषों के उपचार के लिए ग्रेगोरी सप्तम एवं अरबन तृतीय ने अयाजक प्रतिष्ठापन का निन्दा की थी तथा वह उनके काम का समर्थन करता है। अतः वह माना देता है कि चार्ल्स तृतीय हेनरी तथा राजा के अन्य पूर्वजों का समय में साम्राज्य के अधिकार में विद्यमान सभी पद चिह्नों सौंप दिए जाए और कोई भी बिशप या एबट भविष्य में राजा के किसी विशेष अनुग्रह के बिना उनका दावा न करें तथा पोप की गद्दी पर उसका कोई भी उत्तराधिकारी इस विषय में मझाट या उसके राज्य को न सताए। तब वह आनप्ति करता है कि अपनी बलि तथा अन्य सम्पत्तियाँ सहित जो स्पष्ट साम्राज्य का सम्पत्ति नहीं है राजारोहण के दिन हेनरी द्वारा की गई प्रतिज्ञा के अनुसार सभी चर्च स्वतंत्र हो जाएंगे।

यह स्पष्ट है कि इन पारस्परिक प्रतिज्ञाओं में प्रतिष्ठापन के समय को समाप्त करने का एक ऐसे ढंग का प्रयत्न है जिसे लगभग जातिकारी माना जा सकता है। हम देख सकते हैं कि यह स्वीकार किया गया है कि प्रतिष्ठापन का प्रश्न ऐसी परिस्थितियों के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ था जो किसी सीमा तक दोनों पक्षा की भाग में औचित्य को सिद्ध करती हैं। पोप स्वीकार करता है कि यह सत्य है कि बिशपों के पास बड़ा राजनितिक शक्तियाँ थीं जिनके कारण यह दावा उठा कि बिशपों का अभिषेक राजकीय स्वीकृति तथा प्रतिष्ठापन के बिना नहीं हो सकता तथा उसकी मायता है कि इसके परिणामस्वरूप घम विक्रय का उन्मूलन एवं बहुधा निर्वाचन की स्वतंत्रता का पूरा विनाश हो गया। अनसम्पूर्ण विपत्ति के मून को नष्ट करने के लिए पस्कल प्रस्ताव करता है कि चर्च को पद चिह्नों को त्याग देना चाहिए जबकि इसके बखाने में हेनरी ने प्रतिष्ठापन को त्यागने की प्रतिष्ठा की है। ये प्रस्ताव वास्तव में जातिकारी एवं दूरगामी थे। वास्तव में उनका

अभिप्राय यह नहीं था कि चर्च अपनी सारी सम्पत्ति त्याग देवें वे दशमांश तथा अपनी अतिरिक्त भूमि रख सकते थे या किन्तु यदि इनकी ध्यावहारिक रूप मिल जाता तो चर्च की राजनैतिक स्थिति पूर्णतः परिवर्तित हो जाती किन्तु जर्मनी में विशेषतया परन्तु एक बड़ी सीमा तक सभी यूरोपीय देशों में।

हेनरी पचम का विशय पत्र इस समझौते की बातचीत एक घाट में घटित होने वाली घटनाओं दोनों के ही सम्बन्ध में उनके आचरण के समय में लिखा गया था। अतः उसे हम सबसे प्रथम प्रस्तावों के सम्बन्ध में अपने दृष्टिकोण को दनिया को समझाने का हेनरी का प्रथम समझौता चाहिए। वह अपने आग्री चर्च की सेवा के लिए उरमुक् एव उसकी आयोचित इच्छाओं के अनुरूप कार्य करने वाला बनाते हुए उसे प्रारम्भ करता है। परन्तु न उसे ऐसी आयु समझौते जो उनके साम्राज्य को विस्तृत एवं गरिमा मन्त्रि बनावें किन्तु वास्तव में वह कपट पूर्वक साम्राज्य एव चर्च की मयाय स्थिति को नष्ट करने का प्रयास कर रहा था। वह कहता है कि पक्षान में बिना किसी औपचारिक विचार (Absque omni audientia) के साम्राज्य से किन्हीं और मठाध्यक्षों के उस प्रकार के प्रतिष्ठापन को छीनने का प्रस्ताव किया है जो चर्च के समय में तीनवीं वर्षों से कुछ अधिक ही उसके अधिकार में है। जब राजकीय दूतों ने पूछा कि उस दशा में राजकीय सत्ता का क्या होगा क्योंकि उसके पूर्वक तबभग प्रस्ताव वस्तु चर्च को प्रमान करते रहे हैं परन्तु न उत्तर दिया कि राजा उन सब सम्पत्ति और वस्तुओं को ले ले या बनाए रखे जिनको कि चर्च सुट्टे हेनरी तथा उनके अन्तः पूर्ववर्तियों ने चर्च को प्रमान किया था तथा व यदि दशमांश एव बलि-कर बनें तो उमात्त अनुष्ट रहेंगे। राजकीय दूतों ने उत्तर दिया कि राजा चर्चों के प्रति ऐसा दुर्व्यवहार करने तथा धर्म द्रोह का आरोप प्रतीकार करने को तयार नहीं हैं। पोप ने विश्वास पूर्वक प्रतिना की तथा उसके प्रति निधियों ने उसके लिए शपथ ली कि वह स्वयं (Cum iusticia et auctoritate) चर्च से इन वस्तुओं को लेकर राजा और साम्राज्य को हस्तांतरित कर देगा। तब राजकीय दूतों ने वापस किया कि यदि पोप अपनी प्रतिना पूरी कर लेगा—यद्यपि वे जानते थे कि बसा नहीं किया जा सकता—तो राजा चर्चों के प्रतिष्ठापन के अधिकार को सौंप देगा।²²

सबसे प्रथम यह स्पष्ट है कि हेनरी पचम उनके लिए उरमुक् था कि उसे विशयों एव मठाधीशों को अपनी राजनैतिक स्थिति एव सत्ता से वंचित करने के प्रस्ताव के लिए उत्तरदायी नहीं समझा जाए परन्तु यह पोप ही था जिसकी ओर से यह प्रस्ताव आया था तथा दूसरे वह यह विश्वास दिनाता चाहता था कि उसने कभी नहीं सोचा था कि पोप अपनी प्रतिना पूरी कर लेगा। जसा कि हम देख चुके हैं एकहात्त कहता है कि राजा की स्वीकृति इसी शत पर दी गई थी कि पोप की प्रतिना की पुष्टि सनाहकारों द्वारा हो तथा उस चर्च एव साम्राज्य के राजाओं की सहमति प्राप्त हो तथा यह सम्भव प्रतीत होता है कि यन्ने उन वाक्यांशों का अभिप्राय है जिनको जसा हेनरी सूचित करता है पोप के वादे में दो बार दोहराया गया है नामतः कि ऐसा (cum iusticia et auctoritate) किया जाए। जसा हम देखेंगे कि रोमन एव जर्मन दोनों विशयों एव मठाध्यक्षों

के इसी विरोध को ही हेनरी उस प्रस्तावित समझौते की असफलता उत्पन्न करने वाला बताता है।

अब हम उन वास्तविक घटनाओं के विचार की ओर प्रवृत्त होने हैं जो हेनरी के रोम प्रागमन पर घटी। हेनरी वं विश्व पत्र में जब वह नगर में प्रविष्ट हुआ तो उस पर कपट पूवक आक्रमण का बखाना है किन्तु वह कहता है कि अपने आप को विचरित किए बिना वह सत पीटर के फाटक तक गया तथा वहाँ यह बताने के लिए कि वह ईश्वरीय चर्च को कोई हानि नहीं पहुँचाना चाहता उसने एक बक्तव्य जारी किया। तब उसने माँग की कि पोप अपना बचन पूरा करें जसा उसकी प्रतिज्ञा में निहित है—*cum iusticia et auctoritate* जब पोप ने अपने बचन को लागू करने का प्रयत्न किया तो उसके सामने ही जमन एवं रोमन दिशपा मठाध्यक्षा तथा सभी चर्च पुत्रों ने उसका विरोध किया तथा उसकी घोषणा को धम विनोह कह कर उसकी निन्दा की।²³

दुर्भाग्य से हेनरी का विश्व पत्र वसी विद्वु पर विच्छिन्न है। एकवहाड का बखान जो मद्रपतया किसी स्वाटलण्डवासी डेविड (David the Scot) के द्वारा रचित विवरण पर आधारित है जिसे हेनरी अपने साथ लाया था 4 पोप के प्रस्तावों पर राजाओं के उपखण्ड विरोध का बसा ही बखान करता है जिसके कारण चर्चों के भ्रष्ट होने तथा उसकी धम वृत्ति (beneficia) की हानि होने की सम्भावना थी।⁵

रोमन विवरण में या गया वृत्तांत अधिक विस्तृत है। राजा के रोम में आने तथा पोप द्वारा सत पीटर वं गिर्जा की सीलियों पर उसके स्वागत करने और उसे सम्राट घोषित करने के बखान के बाद सके अनुमार वे सभा चर्च में प्रविष्ट हुए तब पोप ने हेनरी से उसके लिए प्रतिष्ठापन व अधिकार का त्याग एवं अन्य वादे पूरे करने की कहा जबकि यह अपनी ओर से उसकी पूति करी के लिए तयार था जिसके लिए उसने वादा किया था। हेनरी खुदसे उसे तुरत पूरा करने के वजाय अपने दिशपो एवं राजाओं के साथ चर्च के उस भाग को चला गया जो सेक्रेटिरियम (secretarium) के पास था तथा उनके साथ वहाँ विचार करने लगा। अंत में एक दीघ विलम्ब के बाद जमन दिशप लौट आए तथा घोषणा की कि *auctoritate et iustitia* निखित समझौते की पुष्टि नहीं की जा सकती। पोप ने यह कहते हुए उत्तर दिया कि सीजर की वस्तुएँ सीजर की ही लौटानी चाहिए तथा जो भी ईश्वरीय सेवा में सज्जन हैं वे नौकिक विषयो में अपने को सलमन न करें किन्तु वे जसा रोमन विवरण कता है अपनी कपट पूगता एवं दुराग्रह पर अडे रहे।²⁴

पोप पर आरोपित तर्कों का अभिप्राय स्पष्टतया दिशप पद के उन अधिकारों का समपण प्रतीत होना है जो कि इनक आध्यात्मिक पद से सम्बद्ध नहीं थे। अत यह प्रतीत होना है कि उस समझौते का अर्थ जिनका पुष्पीकरण जमन दिशपो ने स्वीकार नहीं किया उनके अनुसार पत्र चिह्नों का समपण था और तब व कहत थे कि उसकी पुष्पि नहीं हो सकती तब उनका अभिप्राय था कि उसके लिए चर्च की सहमति आवश्यक थी एवं वह प्रमाण नहीं की जाएगी। इस प्रकार समझौते की वातचीत टूट गई और इसके बाद की घटनाओं पर हम सभिन्न विचार करेंगे। यह वादविवाद मारे तिन मध्यकाल तक चलता रहा तब पोप के मित्रों ने प्रस्ताव किया कि वह तुरन्त सम्राट का रायामिपेक

करें तथा अग्रे की बातचीत अग्रे सप्ताह तक के लिए स्थगित कर दी जाए। हेनरी के प्रतिनिधि इससे सहमत नहीं हुए तथा घन में पोप और उसके साधियों को बन्दी बना लिया गया। दूसरे दिन रोमवासियों ने जमन सेनाओं पर प्रबल आक्रमण किया तथा तीसरे दिन हेनरी रोम से पोप और कार्डीनल को अपने साथ लेकर लौट गया। पोप को बन्दी बनाकर रखा गया तथा हेनरी ने माँग की कि वह 'धौनचारिक रूप से प्रतिष्ठापन' के राजकीय अधिकार को स्वीकार करे किन्तु साथ ही उसने यह भी घोषणा की कि वह अधिकार जिसका कि वह दावा कर रहा है चर्चों अथवा विवाहों के धार्मिक कर्तव्यों से सम्बद्ध नहीं किन्तु बस पवित्रता से सम्बन्धित है। अन्त पक्ष ने रोमन क्षेत्र के विनाश रोम नगर एवं चर्च के विनाश के कारण निरन्तर उसको किए जा रहे आक्रान्तों से अभियत होकर तथा मुख्य धर्म में पूरा पढ़न की आशा को देखकर यह करने हुए समझा कर दिया कि चर्च की स्तवना के लिए वह यह काम करने को विवश हुआ है जो कि अपनी जीवन रक्षा के लिए ही यह करता है।²⁷

समन्वय की साम्यवादी शक्तों को सम्मिलित करने वाले दस्तावेज रोमन विवरण एवं एक दूसरे राजकीय प्रतिस्पर्धन में हैं। वे शर्तें जिनके अन्तर्गत पोप की ओर से पहनी बार छूट दी गई थी बहुत महत्वपूर्ण हैं। पोप अपने प्रापण-पत्र (Privilegium) द्वारा निम्न व्यवस्थाओं की प्रतिष्ठा करता है। बिना या मठाध्यक्ष का राजा की सहमति से धर्म विषय के बिना स्वतंत्र चुनाव होगा। फिर राजा उसको दंड एवं मुक्त द्वारा प्रतिष्ठित करेगा। बिना अथवा मठाध्यक्ष जिन इस प्रकार स्वतंत्र रूप से प्रतिष्ठित किया गया है उस व्यक्ति द्वारा स्वतंत्र रूप से अभिषिक्त होगा जिसका कि यह अधिकार है। जिसने राजा से प्रतिष्ठापन प्राप्त नहीं किया है ऐसे किसी भी व्यक्ति का अभिषेक नहीं हो सकेगा चाहे उसे पादरियों तथा जनता ने चुन लिया हो। आचरितों एवं बिशपों को उन लोगों का अभिषेक करने में अनुमति है जिनको राजा द्वारा प्रतिष्ठापन प्राप्त है। इस प्रकार राजकीय दाव के सामने यह पूर्ण समझा था किन्तु यह उल्लेखनीय है कि हेनरी पक्ष ने स्वतंत्र निर्वाचन के अधिकार को सिद्धांत रूप में मान लिया था तथा अपने लिए केवल सहमति देने अथवा न देने का अधिकार सुरक्षित रखा। यह एक धौनचारिक मानी जा सकती है किन्तु महत्वपूर्ण नहीं।

सांस्कृतिक घोषणा पत्र में प्रतिष्ठा की शर्तों को दोहराया गया है किन्तु उसमें कुछ महत्वपूर्ण परिवर्धन भी हैं। उनमें कहा गया है कि प्रतिष्ठापन का अधिकार पक्ष के पूर्ववर्तियों द्वारा पुराने मन्दाटा को प्रदान किया गया था तथा इस प्रकार स्थापना अध्यात्मिक प्रलेखों की प्रामाणिकता को स्वीकार किया गया है जिनके अनुसार पोप हर्ज़ियन प्रथम एवं पाप तृतीय द्वारा इन अधिकारों को प्रदान किया गया था। हम पहल ही परेशान कि विद्वानों द्वारा उनका उल्लेख देख चुके हैं।²⁸ तथापि इसके लिए लिया गया कारण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है जो नामतः यह है कि बिशपों एवं मठाध्यक्षों को पवित्रता का प्रदान करने में समर्थ माना गया है कि साम्राज्य को सुरक्षित रखने पर निर्भर है।²⁹ पवित्रता का साम्राज्य के लिए महत्व का उल्लेख उन वक्तव्य से मेल खाता है जिसे हम अभी देख चुके हैं, कि हेनरी पक्ष द्वारा प्रतिष्ठापन अधिकार के दावे में केवल

पद चिह्नो का ही उल्लेख था विशप के आध्यात्मिक पद का नो ।

एकहाड इन घटनाओ का संक्षिप्त वर्णन करता है तथा प्रसन्नतापूर्ण अभिव्यक्ति से समापन करता है कि अत म पृथ्वी पर ईश्वर की गरिमा एवं शक्ति प्राप्त हुई तथा विभाजन का दीघ चोक प्रवाण दूर हो गया³⁰ किंतु उसकी प्रसन्नता अपरिपक्व थी क्योंकि पोप के इस काय का तुरंत ही चर्च के एक विद्वान भाग द्वारा खंडन किया गया तथा कुछ समय म ही पस्कल तृतीय ने अपने द्वारा प्रदान की गई सुविधाओ का निराकरण करने के लिए अपने को विवश पाया ।

संदर्भ

- | | |
|---|---|
| 1 Cf the excellent d scussions of the subject in p Imbert de l Tou de France du IX au XII Sicele 11 1 6 | 13 Id id |
| 2 I owe the ref e e th oughout to F M k wer D Ve fass ng d r Kt che on E gland N te 23 24 pp 19 20 | 14 Ekkeh rd Chronicon 1107 |
| 3 Eadm r H sto a Novorum (p 191) | 15 Id d 1107 |
| 4 Sp lman Concl: p 28 | 16 Cf p 103 |
| 5 Will m of Malmesbury G sta ol i p 493 | 17 An al Pad bo nenses 1110 |
| 6 H go C tor History f F r Bish p of Yo k p 110 | 18 Ekkeha d Ch o on 1111 |
| 7 Eadmer H to a N um p 178 | 19 M G H Legum Sect IV Consti tut ones vol I 83 |
| 8 Id d (p 186) V ta Anselm: 63 | 20 Id 85 |
| 9 इस पर डा यर्सो पादस ने बहुत अच्छा शोध सेव लिया है जिससे मुझे बहुत सहायता मिली है । Der Deutsche Investiturstreit unter Konig Heinrich V Berlin 1883 | 21 Id 86 |
| 10 Segebe t Chron A D 1106 | 22 Id 100 |
| 11 Id id A D 1107 | 23 M G H Legum Sect IV Consti t t nes I I 100 o |
| 12 Suger V ta Lud VI (M G H S S ol xx i p 50 | 24 Ekk h d Chron c n (a) 1110 |
| | 25 Ekkeh d Chr nicon (a) 1111 |
| | 26 Id 99 |
| | 27 Id id |
| | 28 देख भाग 2 अध्याय 3 । |
| | 29 Id 96 P l g m Paschal s II De I c t t r |
| | 30 Ekkcha d Ch nicon (a) 1111 |

षष्ठ अध्याय

पैस्कल द्वितीय के कार्यों एवं प्रस्तावों पर विचार

कुछ समय के लिए तथा दबाव में आकर पैस्कल तृतीय ने सम्राट हेनरी पंचम की भाँवों के घागे ग्राम समपण कर लिया था तथा प्रतिष्ठापन के अविचार को स्वीकार कर लिया था किन्तु यह तारकानिक हाँ था। एक वर्ष के भीतर ही समपण के विच्छेद अचने अपन रोप को इतने प्रबल शक्ति में व्यक्त किया कि पैस्कल तृतीय उसे वापस लाने का स्वयं विनय हो गया।

उसके काय क विषय में समकालीन वाद विवाद पर विचार करना महत्वपूर्ण है क्योंकि उसमें यह संकेत मिलता है कि समझौते का माग वास्तव में नहीं था तथा पद चिह्न के समपण पर उसके प्रस्ताव द्वारा उठाय गये या सुझाए गए विवाद पर विचार करना भी महत्वपूर्ण है।

उग्र पोपवानी दन की मनोदशा का अन्धा परिचय सेगनी के ब्रुनो (Bruno of Segno) द्वारा उस समय में लिखे गये कुछ पत्रों में मिलता है। उनमें एक में जो स्वयं पैस्कल को सम्बोधित है अना उसका प्रति अपन प्रम और निष्ठा की प्रतिपादन करते हुए भी उससे प्रार्थना करता है कि उस ईसाई सजावा प्रम कराया चाहिए तथा वह कपट एवं हिंसा की परिस्तिथियाँ में लिपि गए समझौते की निन्दा करता है। वह पैस्कल द्वारा स्वयं पहले किए गए प्रयाजित प्रतिष्ठापन के निन्धे का अपन समथन में उन्नेख करता है तथा उस पोप की अना से सगन बताता है तथा वह उन मनुष्यों को धमकीही कहकर उनकी निन्दा करता है जो रोम क अच की निष्ठा एवं सिद्धांतों का विरोध करते हैं।

वही दृष्टिकोण और भी प्रबलतर शब्दों में गेडोम के मठाध्यक्ष जियोफी (Geoffrey) के द्वारा पैस्कल को सम्बोधित एक पत्र में व्यक्त किया गया है जिसे हेनरी पंचम को रियायत देने के बाद तथा 1112 ई. की गटरन परिषद् में उसके प्रत्याहार से पूर्व दिया

गया था। वह कहता है कि चर्च बढ़ा पवित्रता एवं स्वतंत्रता पर ही जीवित है किंतु अयाजक प्रतिष्ठापन का प्रति उदारता इन सबको नष्ट कर देती है तथा वह स्पष्ट था। मैं कहता हूँ कि यद्यपि चर्च के धर्मगुरु की चाहें उसका चरित्र दोषयुक्त भी हो तब भी आजा माननी चाहिए किंतु यदि वह धर्मश्रेणी हो जाए तो उसे धर्मगुरु नहीं मानना चाहिए।¹ यह एक अनन्य वक्तव्य है तथा बल-पूर्वक उस सत्य का दृष्टान्त प्रस्तुत करता है कि चर्च के ऐसे प्रसिद्ध अधिकारी थे जिनका इस प्रश्न पर इतने दृढ़ विचार थे कि वे चर्च की स्वतंत्रता तथा पवित्रता के लिए विनाशकारी समझी जान बानी उस व्यवस्था को स्वीकार करने की अपेक्षा स्वयं पोप के विरुद्ध विरोह करने के नियम तयार थे।

यह निस्संदेह बहु प्रचलित भावना थी तथा इसी को सम्मानपूर्वक उपस्थित करने के लिए ही पस्कल द्वितीय बाध्य हुआ जबकि उसने हेनरी पचम से किये गये समझौते को निरस्त कर लिया किंतु यह एक गम्भीर श्रुति होगी यदि हम यह साचें कि मध्यस्थता की प्रवृत्ति जिस पर हमने पाँचवें अध्याय में विचार किया पराजित तथा अनाहित हो गई थी। इसके विपरीत वह पापन की ईवा के दृष्टिकोण में जावित रही तथा यह अधिक उल्लेखनीय है कि वह ऐसी व्यक्तियों के वाक्यों में भी अभिप्रेत होनी लगी जो अयाजक प्रतिष्ठापन का दृढनिश्चयपूर्वक विरोध करने पर बल देने थे।

हम शासक के र्वों की लियोस के आच विंशत मायोसरेनुम (Joscerranus) को सम्भवत 1112 की मौसल एवं पोप द्वारा प्रतिष्ठापन को छूट को घोषित करिक रूप से वापस करके से पूर्व लिखे गए पत्र में स्थिति पर पढ़ने ही विचार कर चुके हैं। वह उस स्वीकार नहीं करता था कि अयाजक प्रतिष्ठापन धर्मश्रेणी है तथा मानता है कि उसकी अनुमति अथवा विरोध चर्च की प्रशासनिक व्यवस्था का अंग है न कि शाश्वत विधि का। सम्भवत पस्कल के कार्यों का प्रबल विरोध का प्रभाव हम ईवों के मन पर पड़ा था वह सच है वास्तव में वह अथ इस मत का समर्थक प्रतीत होता है कि अज्ञा हो यदि अयाजक प्रतिष्ठापन को समाप्त कर दिया जाय किन्तु उसमें यह शत जोर देता है कि यह सभी लिये जाय जबकि बिना धर्म से पूरा हाय यह सम्भव हो सके।²

इसमें अधिकांश उल्लेखनीय दृष्टिकोण इस अर्थ का है जो सम्भवत प्रशासक के तुरंत बाद लिखी गई थी। उत्तर मुक्त एवं दण्ड द्वारा प्रतिष्ठापन के विरुद्ध तर्कों को सशक्त रूप में प्रस्तुत करता है और कहता है कि ये आध्यात्मिक वस्तुओं के प्रतीक हैं तथा राजाओं द्वारा प्रदान नहीं किये जा सकते। दूसरी ओर वह यह स्वीकार करता प्रतीत होता है कि राजा ही पद चिह्नों को प्रदान कर सकता है³ तथा वह सुझाव देता है कि वह राजपण्ड से बना कर सकता है जो देश पर उसके अधिकार का प्रतीक है जिससे कि वह व्यूक्त पद काठार पर और अथ पद चिह्न प्रदान करता है।⁴ यह उल्लेखनीय है कि निश्चय उस वास्तविक रूप को जताना है जिसके अन्तर्गत बाम्स के समझौते द्वारा सम्राट को पद चिह्न प्रदान करना था।⁵

इन रियायतों तथा पस्कल द्वितीय के प्रस्तावों द्वारा उठाए गए प्रश्नों पर सबसे उल्लेखनीय एवं सबसे विस्तृत एवं विचारानुना तुला के प्लेसीडस (Placidus of Nonantula) के एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ में मिल सकता है जो सम्भवत 1111⁶ ई के

अंत में निर्यात किया है क्योंकि वह केवल प्रतिष्ठापन ही नहीं करे सम्पूर्ण चर्चा सम्पत्ति पर विचार करता है। प्रथम दशन में उसका मत सबसे अधिक सीमा तक अनन्य प्रतीत होता है क्योंकि यह इसे पूरा अस्वाकार करता है कि लौकिक सत्ता के दावे के पाठ्य वास्तव में कोई भी आधार है। किन्तु ध्यानपूर्वक परीक्षण से हमारा यह निष्कर्ष सशोषित हो जाता है तथा वह यह मुझाता प्रतीत होता है कि जबकि यह अग्रजक प्रतिष्ठापन की समाप्ति चाहता है तथापि वह इस मामले में उसका एक राजकीय दावे के विपरीत न होकर पोप द्वारा पदचिह्न को सौतेले के प्रस्ताव के विरुद्ध है।

वह वास्तव में दृढ़तापूर्वक पक्षों द्वारा सम्राट को प्रतिष्ठापन का अधिकार सौंपने का सप्टन करता है तथा मांग करता है कि उस यह छूट अस्वीकार कर देनी चाहिए।⁷ वह इसे नहीं मानता कि अधिकार के कारण सम्राट को विशेष अथवा मठाध्यक्षों को नियुक्त करने का कोई अधिकार मिलता है।⁸ वह इस दावे में परिचित है कि पाप हेन्रिकन प्रथम ने अधिचारिक रूप से प्रतिष्ठापन का अधिकार बास महान् को प्रदान किया था तथा वह स्पष्टतः प्रदान की प्रामाणिकता को पूरातया सप्टन करने की स्थिति में नहीं था यद्यपि वह उसका उल्लेख करते हुए प्रायः सहृदय ब्यक्त करता है। अतः वह यह तक करता है कि उसका को अग्र तथा अग्रानिबर अग्र था या उसका सम्बन्ध किन्हीं तात्कालिक परिस्थितियों में था जिनके कारण वह उस समय उपयोगी रहा होगा किन्तु इस समय उपर्युक्त कारण इसे रद्द कर देना चाहिए अथवा इसे पोप हेन्रिकन द्वारा मानवीय दबलताओं एवं प्रति के कारण प्रदान किया गया था क्योंकि आठवीं धर्म सभा (Eighth Synod) में पोप हेन्रिकन ने स्वयं चर्च के चुनावों में लौकिक सत्ताधारियों द्वारा हस्तों की स्पष्टतया निन्दा की है। पोप स्वयं भी जबकि उनको अधिकार प्राप्त है *novas conder leges* उन बातों को नहीं बल सकते जिन्हें ईश्वर उसके प्रतिबंधों अथवा उनके अनुयायी आचार्यों ने स्थापित किया है।⁹ अतः वह स्पष्टतापूर्वक एवं दलपूर्वक अग्रजक प्रतिष्ठापन के विरोध की मांग करता है तथा वह अनेक सुपरिचित अधिनियमों को उद्धृत करता है जो यह व्यवस्था कर रहे हैं कि बिना को धर्म क्षेत्र के पादरी एवं जनता के द्वारा चुना जाए¹⁰ और दूसरे स्थान पर वह यह जोड़ देता है कि विशेष का निर्वाचन पोप और उसके प्रतिनिधियों अथवा आच विशेषों के निष्कर्ष पर आधारित है।¹¹

अतः अब तक यह नया भाँति प्रजात होता है कि प्लेसीडस पूरणया अनन्य था किन्तु अब हम थोड़ा अधिक पर्यवेक्षण करते हैं तो यह विचार सशोषित हो जाता है। यह स्वाकार करता है कि न लोग के दावों में कुछ बल है जो यह प्रतिपादित करते हैं कि यह अधिचारपूर्ण है कि सम्राट अथवा राजा को विशेष के निर्वाचन में किसी भी प्रकार के योगदान से वंचित रखा जाय जबकि जनता को इसकी अनुमति है और वह इसकी पुष्टि करता है कि उसका यह अधिप्राय नहीं है। धर्म-क्षेत्र के अग्र लोगों के समान ही सम्राट अथवा राजाओं का ही निर्वाचन में अपना भाग है अर्थात् विशेषतया उन क्षेत्रों में जिनके वे पुत्र हैं परन्तु स्वामी या अधिपति के रूप में नहीं तथा इस अर्थ में उनको

निर्वाचन का पुष्टि करना चाहिये उनको अपने मौरिक तलवार से उसका रक्षा करनी चाहिए क्योंकि यह उनका उचित कर्तव्य है कि जो आध्यात्मिक तलवार से भयभीत नहो हान उनको भौतिक तलवार के आतक द्वारा विवश करें। यह महत्त्वहानि नहीं है यद्यपि यह वक्तव्य स्पष्टतः सावधानी में बचकर किया गया है किन्तु प्लेमीडस इनमें और भी आग्रह बत जाना है। हम यहां पर चर्च का सम्पत्ति के द्वार में उसके विचारों का विवरण देगे किन्तु अभी समय हम यह देखना चाहिये कि यह निम्नोक्त यह स्वीकार करता है कि इस सम्पत्ति के स्वामित्व के साथ लौकिक सत्ता के प्रति कुछ कर्तव्य भी जुड़े हैं जिन्हें चर्च को पूरा करना चाहिए। वह कर्तव्य है चर्च को नजराना देना चाहिए¹² तथा राजा की और प्रकार की सेवा करनी चाहिए जिनकी प्लेमीडस विशेष रूप से यादगु नहो करता विशेषतया उन दशाब्दा में जबकि चर्च को सम्पत्ति प्रदान करते समय उसके द्वारा कुछ विशेष अधिकार सुरक्षित रख गये हैं।¹³ वह एक स्थान पर स्वीकार करता है कि यदि राजा अपने अधिकारात्गत किसी वस्तु को एक विशेष को देना चाहता है तो उचित रीति से वह उन्ही रूप में प्रतिष्ठापित कर सकता है जैसे कि वह दूसरे मनुष्यों को करता किन्तु उस मु। एवं दण्ड के द्वारा बसा नहो करना चाहिए।¹⁴ एक अन्य स्थान पर वह एक निश्चित प्रस्ताव करता है तथा यह आशा प्रकृत करता है कि उसमें राज्य तथा राजकीय सत्ता (sacerdotium) के वाचक के शासन स्थापित हो सकना है यदि यह व्यवस्था हो जाए कि सद्धान्तिक रूप से विशेष के निर्वाचन प्रतिष्ठा एवं अभिषेक के बाद उन स्वयं या अपने किसी प्रतिनिधि के द्वारा सम्राट के पास उपस्थित होकर चर्च को उसे सौंपी गई सम्पत्ति के द्वार में राजकीय निर्देश (praeceptum) प्राप्त करने चाहिए। सम्राट को तब प्रसन्नतापूर्वक अपने पूर्वजों द्वारा चर्च का प्राप्त वस्तु का उसका प्रदान एवं पुष्टि करनी चाहिए तथा विशेष एवं चर्च के प्रति राजकीय संरक्षण की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।¹

यह स्पष्ट है कि प्लेसाइस तथा Disputatiovel Defensio Iaschalis Papae के लेखक की स्थिति पाप को नातिक समयका की आर से समझीत जा और वास्तविक प्रगति का प्रतिनिधित्व करती है—वास्तव में यह स्पष्ट है कि वह किसी सीमा तक फेरों के विडो (Wido of Ferrara) जैसे मनुष्यों की मान्यताओं के प्रमुख पक्षों के महत्त्व को समझत था।

हम कुछ समय के लिए प्लेसाइस द्वारा चर्च की सम्पत्ति की प्रकृति के सम्पूर्ण निरूपण के द्वार में विचार करने के लिए प्रवृत्त होना चाहिए। यह हमें सभ्य प्रतीत होता है कि मुख्यतया यह पस्कल द्वितीय के पदचिह्नों के समर्थन सम्बन्धी प्रस्ताव इतने दूरगामी थे कि उन पर प्रकाश डालने वाली कोई भी वस्तु जिस हमें पा सकें वह उन महत्त्वपूर्ण होगी।

उस श्रवण की भूमिका में जिसका हम वर्णन कर रहे हैं प्लेमीडस कुछ ऐसे तत्वों के वाचपाशा को उद्धृत करना है जो लौकिक सत्ताधारियों के पक्ष से यह कहते हैं कि क्योंकि चर्च आध्यात्मिक है अतः उसकी को भौतिक सम्पत्ति वास्तविक चर्च भवना के अतिरिक्त नहो है तथा यदि चर्च के पास भौतिक सम्पदा चाहने हैं तो चर्च के कानून से उनको प्राप्त नहो कर सकते। यदि लौकिक शासकों के उपहारों को छान दें तो पादरी के पास देने पर लाने हूँ वरि दशमांश एवं पहली उपज के अतिरिक्त कुछ नहो होना

चाहिए। धर्म सभी सम्पदा का स्वामित्व राजा का है भ्रम जो उसमें विनाश पद या भ्रष्टाचार का पद प्राप्त करना चाहते हैं उनको उससे ही व प्राप्त करने चाहिए। धर्म का जो उसको सम्पत्ति है उस पर से अधिकार समाप्त कर देना चाहिए। यदि पात्री दशमाश पत्नी उपज एव बलि से सतुष्ट हो तो मामला उनका ही हाथा में है किंतु यदि वह उस सम्पत्ति को चाहते हैं जो पढ़न चर्च को प्रदान की गई थी तो वह उस राजा से ही प्राप्त कर सकते हैं।

प्लसीडस इन सभी सिद्धान्तों को सभी सभ्य सैद्धांतिकों के लिए तिरस्करणीय बताकर उनको निन्दा करता है क्योंकि यह पवित्र धारणा है जिसने कि चर्च का केवल माध्यम ही नहीं भौतिक वस्तुएँ भी प्रदान की है तथा धारणा करता है कि विनाश को ईश्वर को समर्पित छोटी एव बड़ी सभी सम्पत्ति धर्म अधिकार में रखनी चाहिए। जो चर्च को प्रदत्त है वह ईसा को प्रदत्त है तथा जो उस लूते हैं वे देवों के दोषी हैं। जो चर्च की सम्पत्ति है वह विनाश का अधिकार में रखनी चाहिए जो कि किसी भौतिक मत्ता द्वारा नहीं समर्पित धर्म क्षेत्र के पादरिधियों एव जनता द्वारा निर्वाचित एव दूसरे विनाशों द्वारा पुष्टीकृत है। चर्च नजरान के भलावा राजा को किसी भी वस्तु का देना नहीं है।¹⁶

य मान्यताएँ धर्म के मुख्य भाग में और अधिक विस्तृत की गई हैं। जो एक बार चर्च को दिया गया वह स्थायी रूप में रखा जा सकता है।¹⁷ चर्च की भौतिक वस्तुओं को माध्यमिक वस्तुओं में उसके दो टुकड़ों में बिना धर्म ही रिया जा सकता है कि जसे कोई भी मनुष्य शरीर के बिना जीवन नहीं रख सकता उसी प्रकार चर्च का भी भौतिक वस्तुओं के बिना साधारण में अस्तित्व नहीं है।¹⁸ वह कहता है कि कुछ लोग यह मानते हैं कि चर्च पूर्ण शाब्दिक धर्म में केवल दशमाश पत्नी उपज एव बलि का ही स्वामी है तथा दण्ड जागीर आदि जसो धर्म सम्पत्ति उसी सीमा तक उमकी है जहाँ तक कि विनाश न उठावा। सच्चाई के हाथा से प्राप्त किया है। प्लसीडस की मान्यता है कि यह मिथ्या है क्योंकि जो चीज एक बार ईश्वर को सौंप दी जाए वह सदा के लिए उसी की सम्पत्ति है।¹⁹ वह पुनः इस तर्क का उल्लेख करता है जबकि चर्च ईश्वर के लिए स्वयं प्रेषित है तथा ईश्वर एव उतक पुष्टि की ही सम्पत्ति है वह वस्तुएँ भी सम्पत्ति गौरवण चर्च का स्वयं में है अतः चर्च का उल्लेख उदाहरण के रूप में सच्चाई की सम्पत्ति है कि जब तक धर्म विनाश के पदारीक्षण के समय उसको उनके प्रदान का नवीकरण न किया जाए तब तक वह उहे नहीं पा सकता तथा इसने यह भी परिणाम निकालना है कि उसने द्वारा ही प्रतिष्ठापन प्रदान किया जा सकता है।²⁰

प्लसीडस इन मान्यताओं का बलपूर्वक खण्डन करता है तथा यह प्रतिपादन करता है कि काउन्सिल के पूर्व चर्च के अधिकारान्तगत स्वयं सम्पत्ति है। न किन्तु उसके समय से चर्च द्वारा प्राप्त सभी महान् सम्पत्ति पर चर्च का स्वयं है क्योंकि वे सभी ईश्वर को समर्पित हैं।²¹ तथा वह अभिवेकवर्ती धार्मिक विनाश द्वारा धर्म-दण्ड को विनाश या भ्रष्टाचार को प्रदान करने के नियम की इसी रूप में व्याख्या करता है कि उद्योग न केवल जनता पर शासन के ही अधिकार की अपितु ईश्वर द्वारा स्वयं चर्च के भौतिक सम्पत्ति

की भी उसकी प्राप्ति हुई है।¹² दूसरा तब भी मैं प्रस्तुत करता हूँ मद्रसपूर्व है और सामान्य यह है कि चर्च की सम्पत्ति निर्माता की सम्पत्ति है तथा पाठकी भावपूर्ण भोजन एवं मरन प्राप्त करने के प्रयोजन के अनिश्चित प्रतिफल जायोग व विद्ये उसका प्रयोग नहीं कर सकता तथा इसलिए यह बात भी नहीं ही जा सकती।¹³

यह सब भाव्य विचार का स्रोत है किन्तु हमें इस बातों को भी ध्यान में रखना चाहिए कि पर हम विचार कर चुके हैं कि जिनके कि प्रतीकता उसने पूर्व-में द्वारा भी की सीधी गई सम्पत्ति के बारे में सम्पत्ति में मुख्य अभिप्रायों को रची-कार करे का प्रस्ताव करता है। हम पर उसका यह प्रभाव पड़ता है कि भारत में उसका प्रयोजन उन सिद्धांतों का संप्रसारण है जो वैश्वता की तीव्रता द्वारा पदचिह्नों के समर्थन के प्रस्तावों के लिये रहे हों।

यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम प्रश्न पर भारत में कोई भी तत्कालीन विवरण हम उपलब्ध नहीं है। 1176¹⁴ से 1177¹⁵ के बीच में मिले गए सद्धर्मसंगम के गैर-दोष (Gethich) में प्रथा के हमें से प्रथा से भारत में बहुत मद्रसपूर्व विवाद उपलब्ध होता है कि तब कुछ मिलाने पर उस पर बाद में विचार करना ही हमें अच्छा प्रतीत होता है। यद्यपि यह सभ्य है कि विचारों द्वारा वे चिह्नों के स्वरूप में लोगों पर संप्रेषण को प्रेरित करे या उसका कारण उसी प्रकार के से जैसे देना द्वितीय के हम इस विषय में पूर्वतया आवश्यक नहीं हो सकते। तथा निती भी तथा में यह विषय इतना बढ़ा और मद्रसपूर्व है कि उसने पूर्व विवरण की साधना करता है।

सामग्री

- | | | | |
|----|---|----|-----------------------|
| 1 | Drum Bishop of egi 1 p101ae | 11 | Id 11 17 |
| 2 | Godfrey Allet of Vend 10 13
ell 41 | 12 | 11 11 111 120 and 118 |
| 3 | 1) putati vel Defensio 1a 131
P pao (11b) 1) 110 v 1 11 1 (15) | 13 | 11 11 11 |
| 4 | द्वितीय भाग अर्थात् 7 | 14 | 11 11 11 |
| 5 | 1) kildue of Nenactul De Hen 10
111 110 111 110 111 111 111
p 566 Preface by Editor | 15 | 11 11 11 |
| 6 | Id 118 | 16 | 11 11 11 11 11 11 |
| 7 | 1) kildue of Nenactul De Hen 10
111 110 111 110 111 111 111
p 566 Preface by Editor | 17 | 11 11 11 7 |
| 8 | Id 118 | 18 | 11 11 11 11 |
| 9 | 1) kildue of Nenactul De Hen 10
111 110 111 110 111 111 111
p 566 Preface by Editor | 19 | 11 11 11 43 |
| 10 | Id 118 | 20 | Id 11 151 |
| | | 21 | 11 11 11 11 |
| | | 22 | 11 11 11 11 |
| | | 23 | 11 11 11 71 |

सप्तम अध्याय

वॉर्स का समझौता

प्रतिष्ठापन के प्रश्न पर समझौते का पहला प्रयत्न अमफल हुआ गया था तथा कुछ वर्षों के लिए ऐसा प्रयास हीन लगा है कि मानो का भा प्रगति नहीं हुई है। मार्च 1112 ई. में नटरन की परिषद् में पक्षक ने उन परिस्थितियों का वर्णन किया जिनके कारण विवाह होकर बट्ट हेनरी पंचम को गियायत दान का विवाह हुआ था तथा उसका स्पष्ट करन हुए कि वह उस धर्म-बहिष्कृत नहीं करेगा उसने यह परिषद् पर छोड़ दिया कि यह किस प्रकार निरस्त की जा सकती है। परिषद् के अंतिम दिन उमन बेगारी सप्तम तथा अरबन द्वितीय की घोषणाओं का परिपुष्टि की तथा परिषद् ने औपचारिक रूप से विज्ञापिका (Prilegium) की निम्न की किन्तु अधिकृत हनमन्त के वे मन्त्र अमन सन्तुष्ट नहीं थे तथा मिनम्बर 1113 ई. में वियन के¹ शासक गुडो (Gudo) ने जो कि बर्न में पोप कैलिक्सटस द्वितीय बना (Calixtus II) विद्या (Verri) में एक परिषद् बनाई जिसने यह घोषणा की कि अगले प्रतिष्ठापन अग्रिम था तथा औपचारिक रूप से हेनरी पंचम का धर्म-बहिष्कृत कर दिया अनन्तर पक्षक को पत्र लिखकर उसने हताशपूर्वक अनुरोध किया कि इन कार्यों की पूर्ति करे तथा सूचना दी कि वमान करने पर वे उसकी आत्मा न पाने वगैरे को बाध्य हों।² स्पष्ट पक्षक ने इस स्वीकार करने के लिए अपने को विवाह पाया तथा गुडो को अपने उत्तर में अपने वियने का परिषद् का कायवाही का संपुष्टि कर दा।³ 1116 ई. में नटरन की परिषद् में पक्षक ने पुन घोषणा की कि हेनरी के प्रत्येक विज्ञापिका अमान हैं तथा उनको धर्म बहिष्कृत कर दिया जो अयाजक प्रतिष्ठापन ग्रहण अथवा प्रमाण करते थे। कार्दोनन कूनो (Cardinal Kuno) ने सूचना दी कि उसने हेनरी पंचम को हगरी लारेन सक्नोनी तथा फ्रांस की एक परिषद् में धर्म-बहिष्कृत कर दिया है।⁴ एन्टो के विवरण से स्पष्ट है कि पोपवाणी दल पुन जमना के विज्ञापिका सर्वोच्च हुआ गया था तथा जमनी में राजनतिक अव्यवस्था पुन अतमति से बने रही थी।⁵

21 जनवरी 1118 ई. का पक्षक द्वितीय का देहावसान हो गया तथा यह स्पष्ट हो गया था कि रोम में हेनरी की 1111 ई. का सत्तता कबल शिक्षादटा थी तथा

उस आधार पर समझौता हाता समभव था। उसने उत्तराधिकार के रूप में जिनमियम जियो (Gelasius II) 24 जनवरी का निर्वाचित हुआ। एङ्गलैंड के अनुयाय पत्र तो हेनरी पंचम ने जमा अनुति लेती किन्तु एङ्गलैंड में यह समझौता कि जिनमियम ने अपने को उसकी संपत्ति में ला दिया है उसने प्रथम के दक्षिण मार्सि (Maurice) का एक नया पौर के रूप में स्थापना कर ला। जिनमियम तथा अन्य दूसरे कार्थेनस कापुआ (Capua) की भाषा तथा 7 अग्रत को हनग पंचम एवं डिग्री पाठ राजा का घम बहिष्कृत कर दिया गया।⁶ बाद के जिनमियम ने मध्यम काल में एक परिषद् बुलाई तथा उसमें घम-बहिष्कृति की धारणा कर ला। एङ्गलैंड मूनना तथा हैलि रागाओं ने वुम्बर्ग (Wurzburg) में एक महा बुतान का स्थापन किया जिनमें स्वर्ग का व्यक्तित्व रूप से स्थापित करने का अनुरोध किया गया अथवा यदि वह जिनमियम हाता स्थापना न कर तो उन पत्रच्युत किया जाए।⁷

29 जनवरी 1119 ई. का जिनमियम जियो का स्थापना हुआ तथा 22 फरवरी को विषय का आचरण गुडो (Guido) जो जंगल में एक हैं पत्रों जिनमें स्वर्ग हेनग को दो गर्भ स्थापना का भवम कट्टर विरोध था कर्ताव्यम जिनमें रूप में पाठ निर्वाचित हुआ।⁸ यह निर्वाचन क्लुनी (Cluny) में हुआ कि जिनमियम की मृत्यु या कार्थेनसों दूसरे रोमन जिनमियों तथा जनसाधारण द्वारा किया गया तथा तत्काल ही राम में विद्यमान कार्थेनस एवं जून में उसकी कट्टर (Tnbur) नामक स्थान पर बुलाई गई परिषद् ने स्वका पुष्टि कर ला।¹⁰ कर्ताव्यम ने बाल अनु में गार्म्म में एक परिषद् बुलाई तथा हेनरी पाठ के साथ किया प्रकार के समझौते का जिनमें प्रश्न करने का विचार किया गया।

एक परिषदियों में 'प्रतिष्ठापन' के प्रश्न पर समझौते करने का दूसरा प्रयास किया गया तथा जमा विनृत विवरण जमा करा दिया गया है। स्वका मंदिरान २५ 'मिद फामीमा पाठिका जाम्बू के जिनमियम (Champaux) का स्वर्ग का जिनमियम (Chalons) का तथा क्लुनी के मंगलाने स्वर्ग दिया गया था। वे स्थापना में स्वर्ग पंचम के पास गए, तथा उसमें जिनमें एवं मंगलिया के प्रतिष्ठापन के अधिकार का जिनमियम का आचरण कर देना दिया किन्तु यद्यपि जाम्बू के जिनमियम ने कहा कि न तो अधिकार के पूर्व न बनाया जिनमें राजा के पास में का धार प्राप्त का है। जिनमें उस समय उठ यह भा विचार जिनमें कि वे निष्ठापन के प्राप्त के साथ का जमा रूप में मजिद मना तथा एक प्रश्न करता है जमा कि जिनमें जिनमें मंगलाने का। स्वर्ग ने जिनमें जिनमें कि उन जिनमें मजिद क्लुनी भा जनी चाहिए तथा उन जिनमें ने जिनमें स्थापित करने का जिनमें करने का जिनमें किया।¹¹ स्वर्ग मंगलाने पर मनमाने का स्थापन प्रारम्भ में समझौते का जिनमें निश्चित का जिनमें तथा जिनमें जिनमें मान ला गई जिन्का पुष्टि कर्ता कर्म्म तथा जिनमें का एक बरक में जिनमें था जा 24 अक्टूबर का मंगलाने में निश्चित का है। जिनमें जिनमें के मंगलाने स्वर्ग का मंगलाने जिनमें प्रतिष्ठापन का अधिकार जिनमें एवं उन जिनमें के जिनमें एवं मंगलाने का स्थापन जिनमें मजिद करता था जा कि जब के पत्रवर उद्य। जिनमें जिनमें के बाद में यदि का जिनमें जिनमें हा था यदि बू

धार्मिक वस्तुओं में सम्बन्धित हो तो धार्मिक निष्कर्षों के द्वारा यह नैतिक हो तो नैतिक निष्कर्षों द्वारा निश्चित होना था। पोप ने भी सम्राट की ही भांति हेनरी एवं उसने समयकों में शक्ति रखने एवं उनकी सत्ता उन्नी शक्तों व शक्तगत जसी सम्राट ने मानी थीं लौटाने की प्रतिज्ञा की।¹² एवं क्षण के लिए ऐसा प्रतीत होने लगा कि समझौता ही गया है किन्तु यह स्पष्ट है कि या तो शयोग किण गए श ले के अभिप्राय के बारे में कोई भ्रम था या विचार करने पर सम्राट का विश्वास हो गया कि वह बहुत अधिक सम्पन्न कर रहा है।

नवीनगटस त्रितीय 18 अक्टूबर को राउस पहुँचा तथा उसने अस्थायी रूप से परिषद् का उद्घाटन किया जिसमें फ्रांस का राजा और मटाध्यक्षी व अतिरिक्त दो सीपहू द्विषण एवं धार्मिकविशेष स्थित थे। व 23 अक्टूबर को माउर्वों के लिए रवाना हो गया तथा हेनरी पंचम ने भी निकट ही गिरि रथापित किया। उनकी बैठने पूर्व ही पोप के दल में हेनरी द्वारा स्वीकार की जाने वाली शक्तवती के बारे में सदेह उत्पन्न हुए थे। इनमें कहा गया था कि हेनरी को सभी शक्तों व सभी प्रतिष्ठापनों को माय देना था किन्तु यह सुझाया गया कि यह शक्तवती द्वयधक है तथा इसकी मायता की आवश्यकता है ताकि इसका आशय लेकर वह शक्तों की सम्पत्ति पर दावा न कर सके भयवा इस प्रकार की सम्पत्ति द्वारा प्रतिष्ठापित करने के अधिकार का दावा न कर सके। यह भी आग्रह किया गया कि पोप की प्रतिज्ञा का अभिप्राय यह समझा जा सकता है कि वह साम्राज्यिक दल के उन सभी बिन्दुओं को मायता देता है जो उन विशेष पदों पर भी घोषित हुए थे जिन पर पहले से ही वधानिक विशेष आसीन थे या जिनकी धर्माधि के अनुसार पदयुक्त किया जा चुका था। शापू का विलियम ब्लून्ती के मटाध्यक्ष आस्टिया के कार्डिनल विशप (Cardinal Bishop of Ostia) वीविये के विशप (Bishop of Viviers) तथा दूसरे पोप के दूत सम्राट के पास भेजे गए तथा उन्होंने समझौते का प्रारूप का अथ पोप व समयकों ने जिस रूप में सम्पन्न था उस प्रकार प्रस्तुत करने का कार्यरम्भ किया। सम्राट ने पहले तो साफ मना कर दिया कि उसने इनमें से किसी भी चीज की प्रतिज्ञा की थी। शापू के विनियम ने घोषणा की कि यह शपथ लेकर कह सकता है कि सम्राट ने इन सब बातों को स्वीकार किया था तथा उसने सम्राट के कथन का यही अभिप्राय सम्पन्न था। अतः जब सम्राट यह स्वीकार करने को विवश हो गया कि यह सत्य है तो उसने शिवायत की कि उसने उनकी राय से जो प्रतिज्ञाएँ की हैं उनका पालन साम्राज्य को गभार हानि पहुँचाए बिना नहीं किया जा सकता। शापू के विलियम ने उत्तर देने हुए उसे विश्वास दिलाया कि पोप साम्राज्य की सत्ता को कम नहीं करना चाहता तथा उसने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि विशप सम्राट की सनिक एवं अथ सवाएँ उसी प्रकार करते रहेंगे जैसे कि वे करते आए हैं।¹³ हेनरी ने तब एक दिन की अवधि माँगी ताकि वह राजाओं से राय ले ले किन्तु जब पोप के दूत दूसरे दिन पहुँचे तो उसने निम्न उस समय तक के लिए फिर निलम्बित करने की प्रार्थना की जबतक कि वह साम्राज्य के राजाओं से सामान्य राय ले सके जिनकी स्वीकृति के बिना वह प्रतिष्ठापन का अधिकार सम्पन्न नहीं कर सकता। शापू के विनियम ने पोप

पूवक समझौते की वार्ता भंग कर दी तथा पोप राग्मस को नौट आया तथा कुछ दिनों बाद 29 अक्टूबर को उसने कुछ आज्ञियाँ घोषित की जिनके लिए वह परिपद् की स्वीकृति चाहता था।

किन्तु परिपद् में तुरन्त इस पर गभीर मतभेद हा गया। पोप के द्वारा प्रस्तावित द्वितीय घोषणा की शब्दावली इस प्रकार थी। *Investituram omnium ecclesiarum et ecclesiasticarum possessionum per manum laicam fieri modis omnibus prohibemus*

किन्तु जनसाधारण की ओर से और यहाँ तक कि कुछ पादरियों की ओर से भी इसका खलना अधिक विरोध किया गया कि सारे दिन बहस चलती रही। यह माना गया कि इन शर्तों के अन्तगत पोप दमास एव दूसरे गिरजे से सम्बन्धित लाभों को समाप्त करना चाहता है जो कि अयाजक वर्ग के पास प्राचीनकाल में थे। इसका विरोध इतना बढ़ था कि दूसरे दिन पोप ने इस घोषणा को दूसरे रूप में प्रस्तुत किया। *Episcopatum et abbatiarum investituram per manum laicam fieri penitus prohibemus Quicumque igitur laicorum deinceps investire presumpserit anathematis ultioni subiaceat Porro qui investitus fuit honore quo investitus est absque ulla recuperationis spe omnimodis careat*

इस रूप में आज्ञा एकमत से स्वीकृत हो गई तथा एक अग्र आज्ञा के द्वारा गिरजाघरों का उन सब सम्पत्तियों पर अधिकार पुष्ट कर दिया गया जो राजाओं एव दूसरे ईसाई लोगों ने उनको प्रदान की थी तथा जो भी उनको छीनने का प्रयत्न करने उन्हें अभिशप्त कर दिया गया।¹⁴

कुछ समय के लिए समझौते का प्रयास विफल हो गया किन्तु यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि हैस्रो के वर्गान से विदित होने वाले विफलता के कारण एव परिस्थितियाँ क्या थीं। शाप्यू के विलियम तथा बलूनी के मठाध्यक्ष ने प्रतिष्ठापन के अधिकार के पूरे सम्पण का प्रस्ताव किया तथा सम्राट को विश्वास दिनाया था कि इससे विशपों या मठाध्यक्षा के राजनतिक दायित्वों में कोई अन्तर नहीं आएगा। हेनरी ने प्रस्ताव को इस रूप में स्वीकार कर लिया कि वह गिरजाघरों से प्रतिष्ठापित करने के अधिकार को समर्पित करता है। पोप के सलाहकारों को इस पर सदेह हुआ कि उसका अभिप्राय यह भी हो सकता है कि चर्च की नौकिक सम्पत्ति एव उसका प्रदान के बारे में सम्राट ने अपना स्वयं मरक्षित रखा है तथा इस वाक्य की व्याख्या की आवश्यकता पर बल दिया। हैस्रो यह नहीं बताता कि शाप्यू के विलियम तथा उसके सहयोगियों ने निश्चित रूप से क्या अर्थ लिएय हेनरी को बताया वह केवल यही कहना है कि हेनरी ने उसे अस्वीकार कर दिया किन्तु हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि व्यवस्था के अन्तगत प्रतिष्ठापित करने के सभी स्वत्वों का यहाँ तक कि लौकिक सम्पदाओं के सम्बन्ध में भी समर्थन था। हेनरी ने इसकी संपुष्टि करना अस्वीकार कर लिया तथा यह तक लिया कि ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्न पर उसे सम्पूर्ण राजाओं की सभा की सम्मति लेना आवश्यक है। यदि घटनाओं का यह विवरण सत्य

है तो यह प्रतीत होगा कि यद्यपि समझौता वार्ता असफल हुई तथापि यह तथ्य भी प्रकाश में आया कि सम्राट लोविक प्रिंस्टोपन एवं धार्मिक प्रतिष्ठापन में विभेद करनेको तयार है वह विभेद जिस पर इस विषय के अन्वयकों ने जसा कि हम देख चुके हैं बन गया था। हैसो का विवेक इसमें भी आग बढ जाता है क्योंकि वह भी यत्नाता है कि पोप के अनुयायियों में गहरा मतभेद था। यह सतथ्य स्पष्ट है कि केलीक्सस को उस ढाँचे को बदलना पडा था जिसमें कि उसने अपनी प्रतिष्ठापन विषयक घोषणा का राष्ट्रों की परिषद में प्रस्ताव किया था। इस प्रस्तावित प्रथम रूप में स्पष्टता उतना सम्बन्ध केवल चर्चों के ही अन्तर्गत प्रतिष्ठापन से नहीं अपितु चर्चों की सम्पत्ति से भी था किन्तु उसके विरुद्ध पादरिया एवं अयाजक वर्ग की भी भावना इतनी प्रबल थी कि उन वापस लेना पडा तथा घोषणा ऐसे रूप में स्वीकार करनी पडी थी कि प्रश्न अनिश्चित ही बना रहा। सम्भवतः हमारा निष्कर्ष ठीक ही है कि पोप के क्षेत्र में भी लौकिक एवं धार्मिक प्रतिष्ठापन में विभेद के महत्व को स्वीकार किया जाने लगा था।

कुछ समय के लिए यद्यपि समझौते का प्रयास विफल हो गया था तथापि विफलता की परिस्थिति इस प्रकार की थी कि जसा हम देख सकते हैं जो उन शर्तों पर समझौते की सम्भावना की ओर संकेत करती थी जो तीन वर्ष बाद वास्तव में वास्तव में स्वीकार कर ली गईं। निसंदेह धर्मोपचारिक रूप से तो वार्ता भंग प्रणत थी क्योंकि केलीक्सस ने न केवल हेनरी एवं विरोधी पोप को घम बहिष्कृत ही किया अपितु हेनरी की प्रजाओं को विष्ठा की शपथ से भी मुक्त कर दिया जबतक कि वह प्रायश्चित्त न करे एवं पक्ष को सतुष्ट न करे।¹⁵ इस प्रकार केलीक्सस ने पुनः उस स्वयं पर बन दिया जो हेनरी चतुर्थ के युग में स्पष्टतया प्रस्तुत नहीं किया गया था किन्तु यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि यह ऐसे सम्राट के विरुद्ध किया गया था जिसने एक विरोधी पोप को स्थापित करके स्वयं पोप पद के सम्बन्ध में वैसे ही अधिकार का दावा किया था।

सोभाय्यवश हम कुछ समकालीन रचनाओं द्वारा केलीक्सस के प्रथम वर्षों में एक पक्षल न्तिथि का पोपकान के अन्तिम वर्षों में मतप्रवाह को जान सकते हैं। हम पहले ही वेनडोम के एडवर्ड यात्री द्वारा परकल न्तिथि को सम्बोधित कट्टु तथा आन्नामक शब्दावली को उद्धृत कर चुके हैं जबकि उसने हेनरी पंचम के सामने आत्मसमर्पण किया था तथा वह 1119 ई. के पूर्व तक अयाजक प्रतिष्ठापन की निंदा कटुतम शर्तों में करता रहा। 1116 ई. में 1118 ई. के बीच उसने रेनांड को जिसने एगस के बिशप चुने जाने का दावा किया था पत्र लिखा जिसमें उसने मवप्रथम पादरी के निर्वाचन के बारे में तथा बाद में अयाजक प्रतिष्ठापन के विषय में विचार प्रकट किए। "यात्री कहता है कि रेनांड का निर्वाचन अनियमित एवं अवैध था उसे सूचना दी गई थी कि रेनांड का निर्वाचन जन साधारण द्वारा अव्यवस्थित रूप में किया गया था जिन्होंने तपश्चान् पादरिया को स्वीकृति देने के लिए भयभीत तथा विवश करने का प्रयत्न किया था। इसके बाद उन मित्रांतो का विवेचन है जिनके आधार पर किसी निर्वाचन को उचित माना जा सकता है। "यात्री कहता है बिशप पद की सम्पूर्ण नियुक्ति निर्वाचन एवं अधिभेद पर निर्भर है क्योंकि अधिभेद से पूर्व आयोगित निर्वाचन होना चाहिए। प्रतिक्रिया का चयन एवं अधिभेद स्वयं

ईसा द्वारा किया गया था। अब यह काय ईसा के पादरियो द्वारा किया जाना चाहिए। चुनाव में पादरी ईसा के प्रतिनिधि हैं तथा अभियेक के समय विशप। दूसरे अर्थात् जन साधारण किसी निोप न्ति को विशप नाने की मांग कर सकते हैं किन्तु न तो उसे चुन सकते हैं न उसका अभियेक कर सकते हैं।¹⁷ ज्याफ्री की स्पष्ट इच्छा है कि किसी भी न्यायोचित नियुक्ति के निर्वाचन की आवश्यकता पर दृढ़ता से बल दिया जाए तथा निर्वाचन का यथाय काय पादरी तक ही सीमित रह। अत्यंत उग्रतापूर्वक वह अयाजक प्रतिष्ठापन का यणन करता है तथा माता है कि मथोलिक सिद्धांत वही था जो प्रगोरी सप्तम ने घोषित किया था यद्यपि वह अयाजक प्रतिष्ठापन के घम विरोधी काय मे एव विजय म विभेन करता है किन्तु वह मानता है कि पहला दूमरे से अधिक शरारत भरा है क्योंकि तैकिक अधिकारी उस अधिकार का दावा इसी कारण करते हैं कि उसके द्वारा वे या तो घमपदो को वेचकर अपना उगाह सकें अथवा विशप को अपने अधीनस्थ की अणी मे ले आए। मुग एव घम न्ण द्वारा प्रतिष्ठापन उसके अनुसार एक सत्कारगत क्रिया थी।¹⁸

एक दूमरे अर्थ मे जो यह सोचा जाता है कि कुछ बाद मे लिखा गया था 'याफ्री अपने पूर्ववधित विचारो को ही अधिकारत दोहराता है तथा दृढ़तापूर्वक यह भी कहता है कि इस विषय मे चर्च के कानूनो को बदलने का अधिकार रोम (पोप) को भी नहीं है।¹⁹ वह स्पष्टतया परकल द्वितीय के काय का उल्लेख करता है तथा यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह शात्र के ईशो द्वारा प्रतिनिधित्व की गई स्थिति का भी खण्डन करना चाहता है।

अब तक 'याफ्री की स्थिति उग्र तथा अनम्य थी किन्तु एक ग्रन्थ मे जिसका रचना काल समवत 1119 ई है। हमे एक नए स्वर एव भिन्न दृष्टिकोण के दग्ग होते हैं। माउजे तथा शाम्स के परिपद् की समझौता वार्ताग्रा से इस ग्रन्थ के सम्बन्ध का निर्धारण प्राप्त नही है क्योंकि कुछ सीमाओं तक उसने सिद्धांत एव प्रस्ताव उनसे वही भागे चले जाते हैं जो सम्भवत बेलीवसटस स्वीकार करने को प्रस्तुत था तथा वह स्पष्टतया सम्राट के विरुद्ध किसी भी कठोर बन्म की निन्दा करता है। अर्थ दो पाठो मे उपलब्ध है²⁰—एक संक्षिप्त रूप जिसमे बेलीवसटस को मुग एव दड द्वारा अयाजक प्रतिष्ठापन रूपी घम विरोध मे दृढ़ता से डटे रहने के लिए प्रेरित किया गया है तथा दूसरा बृहत् रूप जिसमे 'याफ्री यह तक करता है कि एक दूसरे अर्थ मे प्रतिष्ठापन को स्वीकार किया जा सकता है। वह बलपूर्वक वन्ता है कि गिर्जों की सम्पत्ति के विषय मे अयाजक प्रतिष्ठापन के पक्ष मे कोई भी वधानिक या घम विधि-मन्मत अधिकार नहीं है तथा वह यह सिद्ध करना प्रतीत होता है कि यत् तत्काल नती है कि जो वस्तुए चर्च को एक बार दे दी गई हैं पुन प्रदान की जाए किन्तु वह यह स्वीकार करता है कि सभी सम्पत्ति पर अधिकार मानवीय कानूनो के अन्तगत है। दबी कानूनो से मनुष्य राजाओ तथा सम्राटों के अधीन है तथा मानवीय कानूनो को छोडकर अर्थ किसी कानून से चर्च सम्पत्ति को नहीं रख सकता तथा वह सत प्रागम्टीन के द्वारा व्यक्तिगत सपत्ति के स्वरूप के विषय मे वधित उन प्रसिद्ध सूक्तियों को उद्धृत करता है जिनका हमने कई बार उल्लेख किया है।²¹ अत वह मानता है कि इसके विरुद्ध कोई तक नहीं है कि मथोलिक घमविधि के अनुसार निर्वाचन एव अभियेक के

पश्चात् राजा किसी रूप में चर्च की सम्पत्ति क्या न प्रदान करे।²² तथा यह भी तब देता है की इस विषय के द्वारा चर्च और राज्य में शांति पुनः स्थापित हो सकती है। यह बिना सोचे धर्म-बहिष्कार के उपयोग के विरुद्ध चेतावनी से उसे समाप्त करता है जिसका स्पष्टतः आशय इस विषय में सदेह प्रकट करना था कि क्या सम्राट की धर्म-बहिष्कृत करना उस दशा में भी बुद्धिमत्तापूर्ण है जबकि वह चर्च से समझौता करना प्रस्वीकार कर दे तथा वह सत पीटर और सत पाल के यूरॉपिया के पूर्वाग्रहों को अनुमोदित करने के नायक या उल्लेख करता है।³

इस ग्रन्थ द्वारा प्रतिनिहित स्थिति बहुत महत्वपूर्ण है। यह मात्र चर्च के द्वारा अपने पक्षों में प्रतिष्ठापन के विषय में भौतिक सम्पत्ति के लौकिक सत्ता से सम्बन्ध का तथा किसी रूप में भौतिक सम्पत्तियों सहित प्रतिष्ठापन की स्वीकार करने की सम्भावनाओं के विवरण का स्मरण करता है।⁴ तथा मानातुला के प्लसीडस के कुछ सुभाषणों में भी उसकी स्थिति स्पष्ट है किन्तु उसका ऐतिहासिक महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है जबकि इस यात्री द्वारा अपने पहले ग्रन्थों में प्रगीत उद्यम स्थिति का स्मरण करते हैं। जमा हम कह चुके हैं कि हमें इस बात का ज्ञान नहीं है कि माउज तथा राइम में हुए विचारविमर्श में चर्च का ठीक सम्बन्ध क्या था किन्तु निश्चित रूप से यह इस तथ्य को प्रकट करता है कि पोप के दल में भी समझौते की दिशा में एक पक्ष उदित हो गया था तथा इसके द्वारा इसको समझाने में भी सहायता मिलती है कि किस प्रकार बेनिक्सेटम केवल चर्च ही नहीं बल्कि चर्च की सम्पत्ति के बारे में भी प्रयाज्य प्रतिष्ठापन की निम्ना करने अपने प्रस्तावों को वापिस लेने के लिए तथा विधान पत्रों एवं मंडों के प्रतिष्ठापन की अपेक्षापत्रों के प्रति कर्पण के लिए विवश हुआ।

दो और सशक्त ग्रन्थों के एक हस्तलिखित प्रति के अनुसार यात्री द्वारा पोप बेनिक्सेटम को संबोधित वे उसी समय की प्रथम बार से कम 1119 ई. एवं 1122 ई. के बीच की रचनाएँ हैं तथा यह युक्तिमय प्रतीत होता है कि वे उस मध्यस्थवादी स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसे यात्री ने उस समय स्वीकार कर लिया था। इनमें से पहले में वह मानता है कि कभी-कभी चर्च के अधिकारियों को ऐसे विधान भी देनी चाहिए जिसके अन्तर्गत ऐसा नायक किया जाए प्रथम उसका अनुमोदन किया जा सके जो पूर्णतया अनिच्छित न हो तार्किक्स सम्प्रदाय पर आने वाले किसी गम्भीर खतरों को टाला जा सके तथा दृष्टान्तरूप सत पाल द्वारा तिमोथी (Timothy) के शुद्धिकरण (Circumcising) को तथा सतपीटर द्वारा कुछ गैर-यहूदियों (Gentile) को यहुदी जातियों के पालन की अनुमति को प्रस्तुत करता है। इस प्रकार के विधान चर्चों एवं मंडों की प्रथाओं को भी बर्णन करत हैं। यह कहता है कि यह सत्य है कि उनके द्वारा उसकी स्वीकृति नहीं देनी चाहिए जो वास्तव में बुरा है तथा यदि पोप भी ऐसा करे तो वह अपने-वैकीयमाना यथाथा वाली बात होगी किन्तु यह उचित रूप से स्पष्ट होता है कि वह अपने पूर्व प्रथों में वर्णित विधान का अण्डन या कम से कम सशोधन कर रहा है।²⁵

इनमें से दूसरे ग्रन्थ में यात्री चर्च के जीवन के लिए आवश्यक प्रमुख परिस्थितियों का संक्षेप से वर्णन करता है। वह कहता है कि चर्च की विश्वजनीन स्वतंत्र एवं पवित्र होना चाहिए विश्वजनीन इसलिए कि वह न तो खरीना जाए और न बेचा जाए

स्वतंत्रता की वह लौकिक सत्ता के अधिकार में न हो शुद्ध क्योंकि उसे धूसखोरी द्वारा विकृत नहीं बनाया जा सके। जब किसी चर्च को खरीदा या बेचा जाता है तो उसके प्रति आस्था विचलित हो जाती है क्योंकि मनुष्य सोचते हैं कि जिसे ईश्वर ने सभी मूर्तियों से परे बनाया है उसे भी मनुष्यों द्वारा खरीदा जा सकता है। जब चर्च लौकिक सत्ता के अधिकार में होता है तो वह उस स्वतंत्रता के अधिकार पर जोर को खो बैठता है जो ईसा ने अपने रक्त में प्राण पर उसके लिए लिखा है। जब चर्च रिश्तता से दूषित हो जाता है तो उसकी पावनता नष्ट हो जाती है।²⁶ वाम्स ने अपने पुराने ग्रंथों में भी इन वाक्यों का प्रयोग किया है तथा इनका यहाँ कोई विशेष महत्व नहीं है किन्तु यह भी सम्भव है कि वे उन आवश्यक वाक्य वस्तुओं को सन्निहित करने के लिए प्रयोग किए गए हों जो वाम्स के मन में किसी भी समझौते में ध्यान में रखने होंगे तथा वह यह सुझाता प्रतीत होता है कि जब तक मूल विद्वान् सुरगिरा रों दूसरे वाद विषयों पर समझौता किया जा सकता है।

अन्य काईनिन पीटर तियोनिम को सम्बोधित एक ग्रंथ में जिसका काल सभवतः 1122 ई. हो सकता है वाम्स अपने पुराने ग्रन्थों का मार प्रस्तुत करता है अर्थात् विशेषतः अपने दूसरे एवं तीसरे ग्रंथों में वर्णित अयाजक प्रतिष्ठापन की विधि का और यह भी स्वीकार करता है कि जसा उसने चौथे ग्रंथ में कहा है कि धर्मविधि के अनुसूत निवाचन एवं स्वतंत्र अभिप्रेक के वाद भौतिक सम्पत्ति द्वारा अयोजक प्रतिष्ठापन को भी स्वीकार किया जा सकता है।²⁷ यह ध्यान देने की बात है कि इस ग्रंथ में दिया गया नवान् विचार केवल यही है कि निर्वाचन एवं अभिप्रेक दोनों ही स्वतंत्र होने चाहिए तथा अथवा अहंगानन्तर अभिप्रेक स्वतंत्र नहीं है। यह निगाय उचित ही प्रतीत होता है कि इसका वास के समझौते की शर्तों के वाद विचार में सम्बन्ध है।

वेनेडोम के वाम्स की स्थिति में यह परिवर्तन जो कि इन ग्रंथों में उपलब्ध होता है बहुत महत्वपूर्ण है तथा स्पष्टता में यह बताता प्रतीत होता है कि माउरों की समझौता वाता के मग होने पर भी राजा और म एक समझौते की आज्ञा की सम्भावना में वास्तविक प्रगति हुई थी जो कि दोनों सिद्धान्तों को जिनके लिए पोप प्रयत्नशील थे तथा लौकिक सत्ता के उचित स्थान को मायता प्रदान करे। यह धारणा इसी युग के दो ग्रंथों की परीक्षा से पुष्ट होती है—ह्यु गोमेटेलस (Hugo Metellus) के पोप और राजा के सघर्ष विषयक छन्द तथा ह्युनाल्ड (Hunald) के मुग्गा और दण्ड विषयक छन्द में लेखक महत्त्वपूर्ण नहीं थे किन्तु उनका स्पष्टीकरण कम महत्वपूर्ण नहीं है।

ह्यु गोमेटेलस राजा को हम पर वर देते हुए प्रदर्शित करता है कि पूर्ववर्ती पोपों द्वारा राजकीय प्रतिष्ठापन की प्रथा की स्वीकृति दी गई थी तथा इसका अभिप्राय पर चिह्ना के प्रदान से है। राजा पूछता है कि यदि यह इनको धर्म-दण्ड के प्रतिकात्मक प्रदान कर तो क्या हानि हो सकती है? पोप उत्तर देता है कि उसका पूर्वाधिकारिया द्वारा वास्तव में अयाजक प्रतिष्ठापन को महान किया था किन्तु अनिच्छापूर्वक क्योंकि उन राजा के राजा चर्च के उपकारक थे तथा यह मानता है कि मुग्गा एवं दण्ड पादरी के पर के प्रताक थे तथा लौकिक सम्पत्ति के प्रतिष्ठापन को सूचित करने के लिए इनका प्रयोग उचित नहीं है। तब राजा पम्बन तृतीय द्वारा दो गद्द सुविधा को अपने समर्थन में प्रस्तुत करता

है किन्तु पोप उत्तर देता है यह अवधानिक था क्योंकि दबाव में प्रारंभ किया गया था। सब राजा सुभाव होता है कि यदि चर्च अपने पद चिह्नों को लागू करने को तैयार हो प्रतिष्ठापन के अधिकार को छोड़ देगा तो वह भी अपने क्योंकि पुराने काल में चर्च के पास ये "ही थ किन्तु पाप" सबसे प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करता। इस पश्चात्त प्रवचन की समाप्ति दोनों धर्मों के मध्य इस समझौते से होती है कि यह विषय तक एक बुद्धि द्वारा विचारणीय है।²⁸

एक नाज पोप की मांग का बगल करता है कि मुद्रा एक दण्ड धार्मिक कृत्यों के पवित्र चिह्न थे। राजा इस सिद्धांत से सहमत हो जाता है कि धार्मिक वस्तुएं पुरोहित द्वारा ही प्रदान की जानी चाहिए तथा वह बेदल एवं बिहू प्रदान करने के अधिकार का ही दावा करता है। इस बात का निष्कर्ष है कि पोप और सम्राट दोनों ही व्यय लड़ रहे हैं क्योंकि दोनों में से कोई भी दूसरे को हानि नहीं पहुँचाना चाहता है।²⁹

माज की समझौता वार्ता भग हो खरी थी किन्तु भीष्म ही यद् स्पष्ट हो गया कि कोई समझौता ठूठने का प्रयत्न फिर से प्रारंभ करना होगा। 1121 ई. में जब हेनरी ने माज पर अधिकार के लिए प्रस्ताव किया तो मेज के आचरिणों ने जो जमनी में पोप के दान का प्रदान था सेक्सन राजाओं का सहायता के लिए आह्वान किया। किन्तु वास्तविक संधि के प्राप्ति होने के पहले ही दोनों पक्ष के नेता एक दूसरे में समझौते की वार्ता करने लगे तथा हेनरी को यह मानने को राजी कर लिया गया कि भगड़े का निपटारा दोनों और के प्रमुख अधिकारों से हो जाए। यह निश्चित हुआ कि सम्पूर्ण साम्राज्य के राजाओं की एक सभा व सब मंचेल्मान (Michaelmas) नामक स्थान पर इस समझौते का निश्चय करने के लिए हो।³⁰ सेक्सन इतिहासकार इस सभा में लिए गए विचारों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करते हैं सम्राट को पोप के पद के प्राप्ति सम्पन्न करना था तथा उसके वचन के वचन संधि का समझौता राजाओं की राय एवं सहायता से इस प्रकार होना था कि "सबको तथा साम्राज्य की वस्तु उनके पास रहें तथा चर्च की सम्पत्ति चर्च के पास रहे। जो बिशप धर्मविधि के अनुसार निर्वाचित एवं अभिषिक्त हैं वे शर्मा पूर्वक पोप की उपस्थिति में होने वाली सभा तक अपने अपने पदों पर बने रहें। राजाओं ने सम्राट के विरुद्ध चर्च की प्रतिष्ठापन विषयक शिकायतों का निपटारा इस प्रकार करने की आज्ञा दी कि साम्राज्य का गौरव अधुण बना रहे। सम्राट किसी के विरुद्ध यदि अधिकार संधि में न गजने के लिए कसबा करे तो राजा इसके लिए राजी हुए कि स्वयं सम्राट को स्वीकृति एवं अनुमति से वे एकमत होकर यद्यपि अत्यंत आदरपूर्वक एवं सावधानी से उसे बसान करने की चेतावनी देंगे। अगर फिर भी सम्राट ने उनकी राय की अवहेलना की तो वे एक दूसरे से किए समझौते के अनुसार कार्य करेंगे।"³¹

यह विवरण सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विशेषतः राजाओं के इतिहास की प्रस्तुत करता है अर्थात् वे चर्च एवं सम्राट दोनों को ही एक तत्कालीन समझौते के लिए विवश करने की इच्छा थी। एक्वटाइस का वायवाही का सक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है तथा यह महत्वपूर्ण सूचना भी देता है कि इस सभा द्वारा जो कुछ निश्चय हुआ

उमरी सूचना रोम को देने एवं पोप से साम्राज्य परिषद् का सम्मेलन बुलाने का अनुरोध करने के लिए दूता को नियुक्त किया गया।³²

पोप द्वारा दूतों को उत्तर देने में कुछ विन्म्व हुआ किन्तु फरवरी 1122 ई. में उसने हेनरी का ऐसे शर्तों में निष्ठा जो पूणतया शांतिकर तो नहीं थी तथापि समझौते की शिंता में एक नए प्रयत्न के परिचायक थे। कैलीक्स्टस ने हेनरी को न बचन सम्राट कहकर ही किन्तु सजातीय के रूप में सम्बोधित किया तथा उससे चर्च का शांति प्रदान करने का अनुरोध किया तथा उसमें यह विश्वास लिखा गया कि राजा भी साम्राज्य की या उसकी सम्पत्ति है ऐसी किसी भी वस्तु को उन की उसका हिस्सा नहीं है। साथ ही उसमें यह बताया भी गया कि यदि चर्च को उसकी व्यापारित करने प्रदान करने को राजी नहीं होता तो वह धार्मिक एवं बुद्धिमान राजा के द्वारा चर्च के योग्य प्रश्नों की व्यवस्था करेगा तथा उसमें होने वाली हेनरी की हानि का विचार नहीं करता।³³

विशेषा एव राजा का एक नया प्रतिनिधिमंडल हेनरी पंचम द्वारा भेजा गया जिसमें स्पायस का बिशन तथा फुल्डा का मठा प्रभू (Abbot of Fulda) सम्मिलित थे जिसने हेनरी की साम्राज्य एवं चर्च के बीच समझौते और शांति की इच्छा यदि यह साम्राज्य के गौरव को क्षति पहुँचाए बिना प्राप्त की जा सके तब प्रभुत्तर में कैलीक्स्टस ने आश्टिया के कार्डिनल गिगोल्फ को दायज कार्डिनल सहित भेजा म अतः प्रतिनिधि के रूप में इन निर्देशों सहित भेजा कि वे समझौता करने का प्रयास करें तथा उन्होंने हेनरी को विश्वास की एक परिषद् में बैठ करन के लिए आमंत्रित किया जो प्रस्ताव के अनुसार मानिक के जन्मोत्सव (Nativity of Virgin) में ही सम्पन्न होना था।³⁴

परिषद् की बैठक मितम्ब में वाम्स में हुई तथा विचार विमर्श लगभग 1 मास तक चलता रहा। हम भेज के आचरविशेष अन्वष्ट द्वारा पोप कैलीक्स्टस को कुछ समय बाद लिख गए एक पत्र से विदित होता है कि समझौता वार्ता पहले तो बहुत कठिन थी। हेनरी पंचम तो मुग एवं एण द्वारा प्रतिष्ठापन के अधिकार को राजी नहीं हुआ क्योंकि वह उस अपना कुत्रमगत अधिकार मानता था तथा उपस्थित अयाजक वृत्त ने भी राजा के स्वत्व का समर्थन किया। अतः कार्डिनलस स राय देने के बाद जिसे एण्डवट उनका प्रतिभुक्त सहमति करना है यह निश्चित हुआ कि जर्मनी में बिशा का निर्वाचन सम्राट की उपस्थिति में ही तथा हम यह अनुमान कर सकते हैं कि इस समझौते को ध्यान में रखकर हेनरी ने मुग एवं एण से प्रतिष्ठापन के अधिकार को त्यागना स्वीकार कर लिया।³⁵

समझौते की सबसे महत्वपूर्ण व्यवस्थाएँ जो अतः स्वीकृत हुईं ये थीं हेनरी ने मुग एवं एण्डस प्रतिष्ठापन के सभी दावों को समर्थन कर लिया तथा साम्राज्य के सभी चर्चों को स्वतंत्र चुनाव एवं अभियेक का अधिकार प्रदान कर दिया। दूसरी ओर पोप ने हेनरी को यह अधिकार प्रदान किया कि जर्मन साम्राज्य में साम्राज्य के जितने भी बिगो पद एवं मठ ह उनका चुनाव उमरी उपस्थिति में किन्तु हिंसा एवं घम विकर बिना हो तथा बिबाध अतः चुनाव का शक्ति में प्रदान चर्च एवं सम्प्रातीय बिशपों की राय लेकर वृत्त अंतर्गत मनक र पत्र को प्रती स्वीकृत एवं समर्थन दे। निर्वाचन बिना अथवा

मठाधीश उससे पद चिह्न को राजदण्ड सहित प्राप्त करें तथा उसके प्रतिमान में वाञ्छित बधानों का पालन करें। साम्राज्य के दूसरे भागों में विशेष रूप से मठाधीश अपने अधिकारों के एक मास की अवधि में सम्राट द्वारा अधिकारदण्ड से पद चिह्न को प्राप्त करें तथा सभी बधानों का पालन करें। बवल अपवाद उनसे विषय में था जो पूर्णतः रामन चक्र से सम्बन्धित थे।

यदि हम समझने की प्रयत्न करें कि मूल्यांकन करने का प्रयास करें जिसमें की धार्मिक एवं लौकिक सत्ता का पचास वर्षों से चले आ रहा विशेष एवं मठाधीशों की नियुक्ति सम्बन्धी संपत्ति को समाप्त कर लिया तो हम कह सकते हैं कि यह स्पष्ट है कि मुख्यतः यह उस मध्यस्थतावादी प्रवृत्ति की विजय का प्रतीक था जिसने विकास को ठूटने का हमसे प्रयास किया है तथा हमसे दौना दौना में से किसी के भी उपवादी पक्ष की पूर्ण विजय नहीं थी। जब हम समझने का सिद्धांत की विस्तृत व्याख्या करने का प्रयास करें तो हम बहुत सावधान रहना चाहिए तथापि हम सम्भवतः निम्न निष्कर्ष निकाल सकते हैं। सम्राट ने मठा एवं दण्ड से प्रतिष्ठापन का अधिकार को सौंपकर तथा स्वतन्त्र निर्वाचन एवं अधिकार के अधिकार को स्वीकार करके यह स्पष्ट कर दिया कि धार्मिक एवं सत्ता को प्रदान करने का उसे का अधिकार नहीं है। इस विषय में उसने विशेष ध्यान एवं प्रयत्न के अधिकार को मान लिया। दूसरी ओर चक्र ने सामन्त सम्पत्ति तथा सत्ता को विष्णु एवं मठाधीशों को लौकिक सत्ताधीशों के अधिकारों का प्रयोग करते हुए प्रदान करने का न करने के उससे याचकित दाव को स्वीकार कर लिया। इस व्यवस्था द्वारा कि निर्वाचन उसकी उपस्थिति में हो चक्र ने यह स्वीकार किया कि उच्च धार्मिक पदा की नियुक्ति से सम्राट को पूर्णतया वृथका नहीं किया जा सकता जिनमें कि वास्तव में धर्मविधि की व्यवस्था के अनुसार भी अर्थात्क वगैरे का याचकित एवं बधानों स्थान है। विवादग्रस्त निर्वाचनों के निर्धारण की व्यवस्था द्वारा निस्संदेह सम्राट को अधिकारमध्यक्ष एवं सम्प्रातीय विशेषों की राय में निर्दिष्ट होना था किन्तु चक्र ने यह स्वीकार किया कि सम्राट को अपने लिए या महत्वपूर्ण योगदान का अधिकार था। सम्भवतः चक्र द्वारा दी गई सबसे महत्वपूर्ण सुविधा में व्यवस्था में थी कि निर्वाचित विशेष अथवा मठाधीश अपने पद चिह्न को अधिकार से पूर्व सम्राट से प्राप्त कर सकें कि सम्भवतः इसका अधिकार था कि निर्वाचित व्यक्ति के विषय में किसी दुस्तर विरोध की स्थिति में सारे मामले पर पुनर्विचार किया जा सके। दूसरी ओर सम्राट की ओर से महत्वपूर्ण सुविधा यह थी जो जमान साम्राज्य के बाहर के विशेष पदों एवं मठों के बारे में दी गई। यह उन निर्वाचन में किसी भाग का दावा नहीं किया तथा यह व्यवस्था स्वीकार कर ली कि अधिकार के पश्चात् अर्थात् कायवाही के सम्पूर्ण होने के बाद विशेष या मठाध्यक्ष पद चिह्न का लिए प्राधान्य करें तथा निस्संदेह वह सम्राट तथा इतली के विशेष पदों के मध्य सम्बन्धों में बहुत बड़ा परिवर्तन था।

हम साम्राज्य तथा पाप पद के बीच मठा सम्पत्ति के प्रथम पद पर विचारपूर्वक कर सकते हैं किन्तु इस संधि के दौरान दूसरे प्रश्न उठ खड़े हुए तथा दूसरे दावों का प्रयोग जो

कि मध्यकाल में लौकिक सत्ता एवं धार्मिक सत्ता के सम्बन्धों व अधिक परिपूर्ण पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा हमें अब उनके विचारों के लिए उन्मुख होना चाहिए।

संदर्भ

- | | | | |
|----|---------------------------------|----|---|
| 1 | Ma Corcella xxi 51 | 20 | Cf d t r n L b De L te |
| | Ma s C n i l a i 75 | 21 | Cf ol pp 139 142 |
| 3 | Id id 76 | 22 | Geoffr y d V dome L bellus
i p 691 |
| 4 | Ekk eha d Ch n on () 1116 | 3 | Cf p 98 |
| 5 | Id d (a) a 1118 | 24 | Cf p 136 |
| 6 | Id d () 1119 | 25 | Id L bell |
| 7 | Id d () 1119 | 26 | Id L bellus x |
| 8 | Mon m ta Bamb g a pp
348 352 | 27 | Id L bellus vi |
| 9 | Ekk eha d Chr n con (a) 1119 | 28 | H go Metellus Cert men Pap e et
Reg |
| 10 | Id id | 29 | Hu id C ond Anulo t B culo |
| 11 | Hes o-R lat o | 30 | Ekk h d Chr n con (1121) |
| 12 | Id id | 31 | M G H Legem Sect IV Cons
titut nes vol i 106 |
| 13 | Id d | 3 | Ekk h d Chronicon (a) 1121 |
| 14 | Id id | 33 | Cal t II Epistolae 168 (Mign
V 1 163) |
| 15 | Id d | 34 | Mon B mbergens p 383 |
| 16 | पृष्ठ भाग 2 अन्वय 6। | 35 | Id d p 519 |
| 17 | Ge ffr y of Vendome L bellus i | 36 | L gem Sect I Constit tiones
i 107 |
| 18 | Id id | | |
| 19 | Id L bell | | |

तृतीय खण्ड

पोप पद एवं साम्राज्य का राजनतिक सघष

प्रथम अध्याय

ग्रेगोरी सप्तम की स्थिति तथा दावे

इस ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में हमने नवी शताब्दी में धार्मिक एवं लौकिक सत्ता के सम्बन्धों की अपनी दृष्टि से एक युक्ति सगत व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया तथा यह सिद्ध किया कि यह सार रूप में पाचवीं शताब्दी में पोप जिनेसियस प्रथम द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों की स्वीकृति का ही प्रतिनिधित्व करते हैं अर्थात् दोनों सत्ताएँ लिख्य हैं तथा दोनों अपने अपने क्षेत्र में सर्वोच्च हैं तथा अपने निश्चित क्रिया-क्षेत्रों के विषयों में एक दूसरे पर अधिकार का दावा नहीं कर सकना। यह पूणतया सत्य है तथा हमने इसे निस्संकोच स्वीकार करने का प्रयास किया है तथा इसने दिए पर्याप्त दृष्टान्त भी प्रस्तुत किए हैं कि वास्तविक व्यवहार में नवी शताब्दी में दोनों सत्ताओं के क्षेत्र पूणतया पृथक् नहीं थे तथा हम पुनः पुनः प्रत्येक का उन विषयों में हस्तक्षेप करने हैं जो दूसरे के अधिकार क्षेत्र में थे। किन्तु हम यह प्रतीत नहीं होता है कि इसने उस मुद्दे में मनुष्यों के मन के सामान्य निर्णय को धरवा उनमें इस विश्वास की वास्तविकता की किसी भी रूप में प्रभावित किया कि धार्मिक एवं लौकिक सत्ताएं अपने एक दूसरे से सम्बन्धों में पूणतया स्वतंत्र हैं।

मद्यनि यह सत्य है तथा इस पर हमने कुछ बल भी दिया है कि नवी शताब्दी में जिनेसियस के सिद्धांतों की पुनरुक्ति में हम कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन एवं परिवर्धन पाते हैं। जिनेसियस ने कहा है कि पुरोहित का सौंपा गया भार राजा को सौंप गए भार से अधिक है क्योंकि दबो निर्णय के दिन उस राजा की आत्मा के विषय में भी लेखा देना होगा। आरिनियस का जोनास (Jonas of Orleans) पुरोहित के व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बनाता है क्योंकि वह यह देखने के लिए उत्तरदायी है कि राजा अपने पक्ष के दायित्व का निर्वाह करने में भी अपना कर्तव्य का पालन कर रहा है तथा राइम्स का हिंकार (Hincmar of Rheims) कहता है कि बिशप का गौरव राजा से अधिक है क्योंकि बिशप ही राजा का अभिषेक करता है। किन्तु जिलसियन पदावली में मदन मूलभूत

सशोधन ग्यारहवीं शताब्दी के जोनास तथा विशपो ने 829 के रिलेशियो (Relatio) में किया है जहाँ वे कहते हैं पुरोहित तथा राजा के दोनों महान् पद लौकिक नहीं जसा कि जिलेसियस ने कहा है कि-तु विश्वव्यापी चर्च के पक्ष हैं जो कि ईसा का शरीर है। यह सशोधन वहाँ तक सुविचारित एवं सुचिन्तित था हम नहीं कह सकते किन्तु यह क्रम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इसकी विषमता उचित प्रकार से मिलेबिस के ओपटाटस (Optatus of Milevis) की सूक्तियों में की जा सकती है जहाँ कि वह डोनटिस्टो (Donatists) को साम्राज्य के प्रति सम्मान के अभाव के लिए फटकारता है। वह कहता है कि चर्च राज्य अर्थात् रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत है साम्राज्य चर्च के अन्तर्गत नहीं।¹

यह अवधारणा निश्चित रूप में व्यापक महत्त्व का है तथा मध्य युग के सम्पूर्ण राजनतिक एवं चर्च सम्बन्धी सिद्धांतों की प्रतीक है। अपनी दूसरी पुस्तक में हमने टूरनार् के स्टीफन (Stephen of Tournai) के जो बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का प्रसिद्ध धर्म शास्त्री है एक वाक्यांश को उद्धृत किया है जिसमें इस सिद्धान्त को बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। वह कहता है कि एक राज्य में तथा एक राजा के अधीन दो जन-समूह दो जीवन प्रणालियाँ ली सत्तायें हैं यह राज्य चर्च है राजा ईसा मसीह है तथा दो जन समूह चर्च की दो व्यवस्थाएँ हैं अर्थात् पादरी एवं जन साधारण दो जीवन प्रणालियाँ धार्मिक एवं लौकिक के दो सत्ताएँ पुरोहित पद एवं राजपद हैं विधि विधान नवी तथा मानवीय कानून हैं प्रत्येक को उम्का देय प्रदान करो तथा सभी वस्तुओं में सामञ्जस्य बना रहेगा।

राज्य कवन एक है वह है ईसा का चर्च तथा इस राज्यमंडन का ईसा स्वयं राजा है किन्तु वह अपनी सत्ता दो व्यक्तियों को सौंपता है पुरोहित को तथा राजा को प्रत्येक एक को नहीं। स्टीफन के मन में अपने अपने क्षेत्र में एक पर दूसरे की सत्ता का कोई प्रश्न नहीं है न ही वह एक की तलना में दूसरे की प्राथमिकता का कोई प्रश्न ही उठाता है। तथापि यह प्रतीत होता है कि जब राज्य की एक चर्च कक्षा में कल्पना की गई तो इस प्रश्न को पूरी तरह से टानना संभव नहीं है। कुछ भी हो नवी शताब्दी में भी ग्यारहवीं शताब्दी के जोनास तथा ग्रेगोरी के हिक्मार ने किसी सीमा तक उस वास्तविक स्वरूप की पूर्व कल्पना की जो यह प्रश्न वास्तव में प्रह्ला करने वाला था। जोनास जसा कि हम देख चुके हैं पुरोहित के व्यक्तित्व को उद्घोषित करता है क्योंकि उनका दायित्व यह देखना है कि राजा अपना कर्त्तव्यपालन कर रहा है तथा हिक्मार बिशप के गौरव को सम्राट के गौरव में बदलकर बताता है क्योंकि बिशप राजा का उसके पक्ष पर अभिप्रेक करता है। इन दो वाक्यांशों में ही हम पीप तथा चर्च के उन दावों का प्रथम अंकुर देख सकते हैं जिनकी हम अब परीक्षा करनी है।

एक पुस्तक के पहले खण्ड में हमने मनेरा में लौकिक सत्ता की तुलना में धार्मिक सत्ता की उद्घोषिता की अवधारणा के तथा लौकिक सत्ता के निर्धारण में उसकी कुछ सत्ता आवश्यक है इस धारणा के कुछ उद्घाटनों को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। संभवतः सत्रम महत्त्वपूर्ण वाक्य रोडोल्फस ग्लेबर (Rodolphus Glaber) का है जो बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लिखने हुए बताया है कि कोई भी तब तक सम्राट स्वीकार नहीं

किया जा सकता जगतक पाप उसके चरित्र का उपयुक्त स्वरूप न कर तथा वह उसमें साम्राज्य के प्रतीकों को प्राप्त न कर ले।⁵ कुछ समय बाद हम पाते हैं कि सशासनवादी पोप तथा उसके मित्र उन वाक्यों का प्रयोग कर रहे थे जिनका अर्थ यह तो निर्धारित करना कठिन है किन्तु जो कम से कम बहुत महत्वपूरा है। पोप लियो नवम⁶ ने नुस्तुनुतिया के अधिधर्मपक्ष को प्रचारण धर्मपक्ष को संबोधित एक पत्र में जिसमें उसने रोम के धर्मपीठ का सभी चर्चों पर अधिकार का दावा किया है यह भी कहा है कि रोम के धर्मपीठ का साम्राज्य भौतिक भी है तथा स्वर्गिक भी रोम के धर्मपीठ का राजकीय िराहिय है तथा वह "मकी पुष्टि का सट्टान" के दान के प्रमाण में करता है। दुभास्यवश वह उस अर्थ की स्पष्ट व्याख्या नहीं करता जिसमें उसने इस वाक्य में सम्बद्ध किया है। प्रथम पुस्तक में हमने उन तर्कों को प्रस्तुत किया है जिनके आधार पर हम आश्वस्त हुए हैं कि मूल रूप में तथा नवीं शताब्दी में जिस राजनीतिक सत्ता का उल्लेख है उससे अभिप्राय क्वन रेवेन्ना के बिशप प्रदेश तथा स्टला में अथवा "जटान क्षेत्रों के वार में पाप के दावे से था। क्या पोप लियो नवम ने इस दान पत्र के वाक्यों का इस अर्थ में अथवा अधिक साम्राज्य अर्थ में ग्रहण किया था यह स्पष्ट नहीं है।

कुछ वर्षों के बाद पुनः हम पाते हैं कि पीटर डेमियन जसा कि हम देख चुके हैं इस वाक्यों का प्रयोग करता है जिनका कि अभिप्राय निश्चित करना कठिन है। वास्तव में वह अतः स्पष्टता से स्वरूप करता है कि राजकाय सत्ता की स्वयं शक्ति से अधिकार प्राप्त हुए हैं तथा वह अत्यंत आश्चर्यजनक राजा एवं पुरोहित के कार्यों की प्रकृति में विभेद करता है तथा जो वह आतलवारी की चर्चा करता है तो उनमें से एक पर राजा का और दूसरी पर पुरोहित का अधिकार बताता है तथा कुछ समय पश्चात् प्रचलित धर्म सिद्धान्त का प्रतिपादन नहीं करता कि दोनों पर ही वास्तव में पुरोहित का अधिकार है।⁶ दूसरी ओर हेनरी पंचम को लिखे गए एक पत्र में विरोधी पोप कडेनियस के विरुद्ध रोमन धर्मपीठ की सहायता की माँग करते हुए बोलता है कि राजा का सभी सम्मान होना चाहिए जबकि वह गृष्टिकृता की आत्मा मानता है किन्तु जब वह दबी आदेशों का उल्लंघन करता है तो प्रजा द्वारा उसकी अवमानना विधिसम्मत है। दूसरे स्थान पर वह पोप का राजाघरा का राजा तथा सम्राट का राजा कहता है जो कि गौरव और सम्मान में सभी प्राणियों से उच्चतर है एवं अथ स्वान पर बोलता है कि रोम के चर्च की स्थापना ईसा द्वारा बनाता है जिसने पीटर को पाप्यिक एवं स्वर्गिक साम्राज्य के कानून गीप तथा इसका पुनरावृत्ति वह दूसरे अर्थ में करता है जहाँ वह ईसा द्वारा पीटर को स्वर्ग एवं पृथ्वी दोनों के कानून सौंपता हुआ बताता है।⁷ इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में हम इन वाक्यों पर पहले ही विचार कर आये हैं तृतीय पुस्तक में इनमें से कुछ की वारहवां शताब्दी के धर्म विधियों द्वारा व्याख्या का भी हमने बखान किया है⁸ तथा हम केवल इसी बात को दोहरा सकते हैं कि यह कहना अत्यंत कठिन है कि पीटर डेमियन का अर्थ क्या अभिप्राय था।

इस युग के सर्वाधिक प्रख्यात सुधारवादी पादरियों में से अर्थ के द्वारा ऐत वाक्यों का प्रयोग किया गया है जो इस कारण ध्यान देने योग्य हैं क्योंकि वे धार्मिक सत्ता के उत्तरकारी दावा का सर्वाधिक इंगित करते हुए प्रतीत होते हैं। कार्डिनल हम्बर्ट दोनों

भवस्यासो के वाय क्षेत्रों में विभेद करता है। पादरी लौकिक विषय में उसी प्रकार हस्तक्षेप नहीं कर सकता जिस प्रकार अमाजक वृन्द धार्मिक में मला में हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। यद्यपि एक अर्थ स्वयं पर वह कहता है कि यदि हम पादरी एवं राजा के पौरुष की यथार्थ रूप में तुलना कर तो हम कह सकते हैं कि पौरुहित्य आत्मा के तुल्य है तथा राज्य शरीर के तुल्य क्योंकि वे दोनों एक दूसरे में प्रेम करते हैं तथा दोनों को एक दूसरे की आवश्यकता है। जिस प्रकार आत्मा शरीर की तुलना में महान् है तथा शरीर पर नियंत्रण रखती है उसी प्रकार पौरुहित्य का सम्बन्ध राज्य से है क्योंकि सभी वस्तुओं का इसी प्रकार ठीक रखा जा सकता है इसलिए आत्मा की तरह पुरोहित भी मनुष्यों को भी वाय करने चाहिए उन विषय में चेनादनी देना है जिस प्रकार राजा को पुरोहित की आज्ञा माननी चाहिए वस ही जनसाधारण का राजा की आज्ञा माननी चाहिए पुरोहित को उनका शिक्षा देनी चाहिए तथा राजा को उन पर शासन करना चाहिए।⁹

हम नहीं सोचते कि यह ठीक ठीक कहना सम्भव है कि पीटर डेमियन तथा हम्बट और दूसरे सुधारवादी चर्च के सन्तों का इस प्रकार का वाक्या स क्या अभिप्राय था हम यम भी सदेह है कि उनका वास्तव में इनसे को सुनिश्चित अर्थ था। तथापि इनकी महत्त्वहीन तथा उपेक्षणीय नहीं समझा जा सकता इनका महत्त्व का वाग व लिए किसी नवीन परिस्थिति की आवश्यकता थी सम्भवतः हमका करना चाहिए कि एक नवान परिस्थिति तथा एक कृतसंस्था स्वभाव को।

इस पुस्तक के पिछले खण्ड में हमारे द्वारा विवेचन मात्र परिवर्तन के साथ साथ नई परिस्थितियाँ विकसित हुई थी। इनकी तृतीय के अद्ययमान तक यह स्पष्ट है कि चर्च के सुधारवादी दल को मुख्यतया राजकीय सत्ता का सामान्य तथा सम्पूर्ण समर्थन प्राप्त था किन्तु उसकी मृत्यु के साथ इसमें परिवर्तन आ गया। इनकी चतुर्थ की अवयस्कता के काल में सम्राट की सत्ता का घोर दुरुपयोग हुआ तथा जब इनकी चतुर्थ ने स्वयं शासन सम्भाला तो इसकी केवल पुष्टि (पुष्टि मात्र) ही हुई।

हम यहाँ इनकी के व्यक्तिगत चरित्र के विरुद्ध लगाए गए आरोपों की सत्यता पर विचार नहीं करना है—उसके राजनितिक एवं धार्मिक शत्रुओं के दबनव्यों को हम सावधानी से ग्रहण करना चाहिए। किन्तु यह निर्विवाद है कि व्यक्तिगत आचरण एवं चर्च से सम्बन्धित कृत्या के द्वारा उसने अग्रसत्ता के गम्भार कारणों को जन्म दिया। यहाँ केवल उस महान् सोझापवाद का उल्लेख करना पर्याप्त होगा जो तब फला जब 1069 ई. में इनकी ने अपनी पत्नी को तलाक देने की इच्छा सावजनिक रूप से व्यक्त की। मन्त्र का प्रायविशय सीमफ्रिड के पोप एलेक्जेंडर द्वितीय को लिख गए एक पत्र में उस रोप का बयान करता है जो इस समाचार के कारण फला।¹⁰ उसी प्रायविशय के दूसरे पत्र में हम उस समय पारिया से सम्बन्धित अपराधों से हेनरा के सम्बन्ध का प्रच्छा उदाहरण पाते हैं। एलेक्जेंडर द्वितीय ने धर्म विप्रत्येक कारण के प्राधान्य पर सीमफ्रिड को वासटस निवारित विशय का अभिप्रेरक करने का निषेध कर दिया था तथा सीमफ्रिड सूचित करता है कि इनकी उस पर इस कारण बहुत क्रुद्ध था तथा उसे भय था कि यदि पोप

ने उसे राजकीय श्रेष्ठ से नहीं बचाया तो हेनरी उसके विरुद्ध भी कार्यवाही करेगा ।¹² वास्तव में यदि हम हेनरी चतुर्थ के ग्रेगोरी सप्तम को 1073 ई. में स्वयं लिखित पत्र के दस्तावेजों को स्वीकार कर लें तो यह स्पष्ट प्रतीत होगा कि वह यतिगत एवं धार्मिक दोनों प्रकार के मभीर दोषों से अनभिन्न या अथवा अभिन्न रूप में चित्रित कराना उस स्वीकार्य था ।¹

जब 1073 ई. में हिंडेब्राड ग्रेगोरी सप्तम के रूप में पाप निर्वाचित हुआ तो चर्च के सुधारवादी दल एवं साम्राज्य के तथा फ्रांस के भी राज्याधिकारियों के मध्य मतभेद बहुत बढ़ चुके थे तथा यद्यपि यह सत्य है कि काफी समय तक हिंडेब्राड ने पोप पद की नीतियों के निर्धारण में महत्वपूर्ण योगदान किया था यह कहना भी सत्य है कि उसकी नीति पोप पर उसने अभिप्रेत होने के बाद से स्पष्ट एवं अधिक दृढ़ हो गई । सुन्नी की परिपक्वता के समय से पोप ने स्थिरतापूर्वक सुधार की नीति अपनाई थी विशेषतः दो प्रश्नों के विषय में—एक तो वह जिसके साथ यहाँ हमारा प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है पादरियों का विवाह तथा दूसरा चर्च के पदों का श्रेय या विनय अर्पण का विषय । अतः यह मुख्यतः उन पादरियों के विरुद्ध जो कि धर्म विनय के अपराधी थे कठोर कार्यवाही के रूप में अभिप्रेत किया जाता रहा किन्तु ग्रेगोरी सप्तम के पत्नारोहण काल से पोप ने अपने धार्मिकता का लक्ष्य लौकिक सत्ताधारियों को बनाया जो उसने निम्नानुसार मुख्यतः इस प्रकार की परिस्थितियों के लिए उत्तरदायी थे ।

कभी-कभी यह भी माना गया है अथवा सुभाव किया गया है कि यह लौकिक रूप में लौकिक सत्ता के ऊपर धार्मिक सत्ता की प्रभुता को बनाए रखने के निश्चित एवं सुविचारित उद्देश्य के कारण था हमें इसमें सन्देह है कि इसका कोई वायोजित आधार है जिस पर यह निगम आधारित हो तथा हमारे विचार में इतिहासकार के लिए अधिक बहिष्कारपूर्ण यह होगा कि वह पाप की नवान नीति के वास्तविक विवास के निरीक्षण तक अपने का सीमित रहे । यद्यपि यह सत्य है कि नयी नीति का विकास द्रुत गति से हुआ तथा वास्तव में पदारोहण के प्रथम वर्ष में ही ग्रेगोरी सप्तम ने यह प्रदर्शित कर दिया कि वह पोप पर के द्वारा कभी भी दावा की गयी प्रयोग की गई प्रत्येक शक्ति का उपयोग सुधार के लिए करने को कटिबद्ध था ।

नई नीति का यदि हम इसे यह सत्ता प्राप्त कर सकते हैं सबसे प्रथम फ्रांसीसी राजतंत्र के सम्बन्ध में ही निश्चित हुआ तब 1076 ई. तक हेनरी चतुर्थ के साथ पूरा विच्छेद नहीं हुआ था । अतः हमें ग्रेगोरी सप्तम के पाप पद के धारम्भिक दवा में फ्रांस से उसके सम्बन्धों के निरीक्षण से अव्ययन धारम्भ करना चाहिए ।

एक विद्वाने अन्वेषण में हम उस कठोर कार्यवाही का वर्णन कर चुके हैं जो पोप लियो नवम ने फ्रांसीसी चर्च में धर्म विनय के विरुद्ध की थी ।¹³ जब हिंडेब्राड पोप बना तो उसने इस दोष को फ्रांस में प्रचलित पाया तथा उसके निम्नलिखित कथनानुसार स्वयं राजा फिलिप प्रथम ही इस दोष का मूल कारण था । अपने पत्नारोहण के वर्ष 1073 ई. में ग्रेगोरी सप्तम ने शालो के विनय को एक पत्र लिखा जिसमें उसने फिलिप को अपने काल के सभी राजाओं में से ही सबसे अधिक या तथा चर्चों की स्वतन्त्रता का सबसे बड़ा विनाशक

तथा सबसे अधिक रक्ति घम विजय का विशेषतः दोषी बताकर निन्दा की गयी। वह स्पष्टतः उसका अपराध उस पर आरोपित करता है क्योंकि वह फ्रेंच राज्य को रोमन चर्च के प्रति निष्ठा एवं वक्तव्य करने में इतिहास की तीव्रता है। वह राजा की निन्दा करने मात्र तक ही सीमित न रह कर उसे स्पष्ट शब्दों में घमभी देता है कि यदि फिलिप न अपने गलत तरीके से सुधार नहीं किया तो वह राज्य का सामान्य घम बहिष्कार कर देगा तथा इस प्रकार भासासी जनता को दिवश कर देगा¹⁴ कि वह राजा क प्रति अपना पालन को समाप्त कर दे।

हम वास्तव में एक नई नीति के याश्चयजनक प्रमाण उपलब्ध होने हैं कि रोमन धर्मपीठ अब एक पोप के अधीन है जो अपने अधिकार में विद्यमान सभी साधनाओं को अपनाकर चर्च की परिस्थितियों में सुधार लाने को वृत्तनिश्चय है। इस पत्र में प्रकट नीति और सत्त्व भागामी दलों में और विवक्षित हो गए। सितम्बर 1074 ई में ग्रेगोरी सप्तम ने राइम्स में जो व बोडय के आरविशपो शत्रु के विजय तथा फ्रांस के अन्य विशयों को पत्र लिखकर राजा की दुष्टता को रोक सवने की असाधनता के लिए उनको पत्रकारा और उनको अपना दी कि एकमत होकर उसका प्रतिवाच करें तथा उसके समस्त उसक कार्यों की दुष्टता की निन्दा करें। यदि वह उनकी बात पर ध्यान न दे तो उसे चेतावनी दे दें कि वह पादरी की तलवार से नहीं बच सकेगा तथा वे रोम का अपना पालन करने हुए अपने को उसकी अपना पालन तथा धार्मिक सभा से पृथक कर लें तथा सारे फ्रांस में दबी उपामना के सावजनिक कार्यों को निषिद्ध कर दे और अत में फिर भी यदि फिलिप परचात्ताप न करे तो उसने अपना निश्चय प्रकट किया कि वह उसे फ्रांस के राजव से वचित करने के लिए अपनी शक्ति भर कोई उपाय उठा नहीं रखेगा।¹⁵

उसी वर्ष के नवम्बर में ग्रेगोरी ने पोपू के सामन्त (Poitou) विलियम को लिखा तथा उसे फिलिप से मिनकर उसके अघाधो के विवेकतया फ्रांस में इटली के अध्यापारियों को लूटने के सम्बन्ध में उसके आचरण के विषय में प्रतिवाद करने को बना और उसे निर्देश दिया कि यद्यपि इस समय वह उसके परचात्ताप को रबीकार करने के लिए प्रस्तुत है किन्तु यदि उसने अपने बुरे तौर-तरीकों को नहीं सुधारा तो उसको तथा उसकी आज्ञा का पालन करने वाल सभी को वह घम बहिष्कृत कर देगा। पुन उसी वर्ष 1074 ई के दिसम्बर में उसने राइम्स के आचविशप मेनेमस (Manasses) को उसी विषय में पत्र लिखकर राजा के नए एवं अमृतपूर्व अपराध की कि उसने इटली एवं दूसरे देशों के अध्यापारियों को लूटा है निन्दा की तथा उसे चेतावनी दी कि यदि वह ऐसे अपराध करता रहा तो वह पोप और रोमन चर्च को सदैव बट्टर शत्रु के रूप में पाएगा। फरवरी 1075 ई में रोम की परिषद् में उसने आदेश दिया कि जबतक फिलिप अपने सशोधित व्यवहार के बारे में पोप के दूतों को जमानत नहीं देता जो कि फ्रांस को भेजे जाने वाले वे वह घम बहिष्कृत रहेगा।¹⁶

ग्रेगोरी सप्तम के इस पत्र की शब्दावली में लौकिक सत्ताओं के प्रति पोप के एक नए दृष्टिकोण घम विजय के अपराधी नवल पादरियों के प्रति ही नहीं किन्तु यदि उसके लिए उत्तरदायी हो तो लौकिक सत्ताधारियों से भी निपटने और राजाओं को घम-बहिष्कृत

एक पद-युक्त करने के पीछे के अधिकार के आरोपण के दशन होन है। बहुत बाद तक इन दावों का तयसगत स्पष्टीकरण ग्रेगोरी के द्वारा नहीं किया गया किन्तु यह उल्लेखनीय है कि 1074 ई. में एंग्लोन का राजा मर्सी को जिम्मेदार एक पत्र में यह पत्र पर बल देता है कि ईसा ने पीटर को चुनिया के समत राज्यों का राजा बनाया था तथा एक प्रत्येक मजिल पर 1075 ई. की शरीक पनी है तथा जिनम पीप की सत्ता की प्रकृति का बारे में सार रूपेण एक बात है हम म मिद्धांत का प्रबल समयन पात है कि पीप शासकों को पद-युक्त क सकता है तथा कर शासकों की प्रजाधो को उनके प्रति राजभक्ति म मूल कर सकता है।¹⁷ वास्तव में मसम भी को ससे नही कि कच निरन्तर ही राजाधो पर भी अपने प्राध्यामिक अधिकार का वमा ही दावा करना आया था जसा साधारण मनुष्यो पर चिल्ल यत् शवपारणा कि हमने अन्तगत राजाधो को पच्छुन करने का अधिकार भी आता है पूगावया भिन्न थी। हमारी प्रथम पुस्तक में हमने कुछ वेत्ताओ को उल्लेख किया है जो यह मिद्ध कर्त है कि यह परिष्पना अपरिचित नहीं थी तथा कम में कम कभी कभी नवी शताब्दी में स्वीकार भी की जाती री थी किन्तु ग्रेगोरी सप्तम की अत्यन्त शक्यावनी निश्चित रूप में एक नवीन विरवास एवं नई नीति की परिचायक प्रतीत होती है।¹⁸

यदि नई नीति तबसे पन्ने पीप एवं फ्रांसीसी राजतन्त्र के सम्बन्धों में दिव्याई दो तो उसका विकास साम्राज्य के सम्बन्धों के विषय में हुआ। हम प्रायः ग्रेगोरी सप्तम एवं हेनरी चतुर्थ के बीच महान सघष के विस्तृत इतिहास को प्रस्तुत करने का दावा नहीं करत किन्तु हमें उसकी शिशा का उस सीमा तक अनुसरण करना चाहिए जहाँ तक कि वह सघष के आचारभूत मिद्धान्तों को समझने के लिए अनिवार्य हो। हम 1069 ई. में अपनी पत्नी को तलाक देने के हेनरी चतुर्थ के प्रस्ताव तथा घम-एत विषय में उसके सपक से उन्नत धाकी गम्भीर लोकनिष्ठा का पन्ने उल्लेख कर चुके हैं। जब 1073 ई. में सिडेनर एंड का पीप पद पर अभिषेक हुआ तब तक हेनरी चतुर्थ पक्षिगत रूप में एक स्पष्ट शान्ति में घम बहिष्कृत नहीं हुआ था किन्तु उसने घम-बहिष्कृत लोगों के सम्पर्क से अपने को पृथक करने को अस्वीकार कर लिया था उमकी भवहेनना की इसलिये वह अप्रत्यक्षत कच के नियेधाधीन था। तथापि यह प्यान देने योग्य है कि हिन्देगण ने यह सावधानी बरती कि हेनरी चतुर्थ के स्पष्ट वा फौर् कारण न दे तथा ऐसा प्रतीत होता है कि उनके वास्तविक अभिषेक से पूर्व उनके राय निग जाने के दाव को धीकार कर लिया।¹⁹

पीप की गद्दा पर पदारोहण के समय हेनरी के प्रति ग्रेगोरी का दृष्टिकोण तारत क तथा ग्राहक को जिम्मेदार पत्र में भनीभांति प्रकट होता है। वह उसे विश्वास दिनाता है कि हेनरी का हित उमसे अधिक को नहीं चाहता तथा उसे उनी प्रसन्नता होगी यदि हेनरी पापपानन में उमकी राय एवं प्रत्याज्ञा का ध्यान रख किन्तु वह स्पष्टतया यह भी कहता है कि किसी भी शक्ति के प्रति सम्मान की भावना उसे उनका पाप करने से श्चर से जो शृणा करत थे विमूल नती कर सकती।²⁰ पुन यूना के निर्वाचित विषय एसनम की 1073 ई. के सितम्बर में लिये गए पत्र में वह उगे तबतक हेनरी के प्रतिष्ठापन प्राप्त करने का निषेध करता है जयतक कि उसने घम-बहिष्कृत लोगों के साथ सहभागिता के

लिए ईश्वर के प्रति प्रायश्चित्त न कर लिया हो तथा पोप से शांति न कर ली हो।²¹

ग्रेगोरी का सत्तागोचर हेनरी शतक के विरुद्ध सेक्सनो के महान् विद्रोह के भडक उठन के साथ ही साथ हुआ। उस घाय की तीसरी पुस्तक में हमने जननिक विचारों के विकास के इतिहास के सम्बन्ध में उसका महत्व प्रदर्शित किया है। हम यहाँ पहले कही हुई बात की पुनर्जागरण कर सकते हैं हम परिस्थितियों का विस्तृत विवेचन कर सकते हैं कि जर्मनी की राजनतिक परिस्थितियों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है क्योंकि निस्सन्देह पोप की स्थिति के विकास में उनका बहुत बड़ा योगदान था। निस्सन्देह चाहे वह आशिक रूप में ही रहा हो किन्तु के भय ने ही उसे अपनी विनम्रता में तथा पश्चात्ताप-पूर्वक क्षयने की 1073 ई. के उस पत्र द्वारा अभिप्रेत करने की विवश किया जिसे हम पहले उद्धृत कर चुके हैं। वह घायन नम्रता में यह स्वीकार करता है कि उसने सत्ता का दुरुपयोग किया है तथा वह धर्म विषय का अपराधी है अपने ग्रेगोरी में मन्त्रणा देने की प्रार्थना की तथा आज्ञापालन की प्रतिज्ञा की।²² एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पत्र में जो निम्न 1073 ई. में मेग्डेग के आन्वेषण तथा दूसरे सेक्सन राजाओं को जो हेनरी के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे किया गया था हेनरी तथा उसकी प्रजागा के बीच ग्रेगोरी के हस्तक्षेप का सर्वप्रथम में स्पष्ट रूप में उल्लेख है। वह उनमें अत्यन्त ही सघप तथा परिणामस्वरूप होने वाली जर्मनी की प्रजागा पर शोक प्रकट करना है तथा स्थापना पुनः शांति स्थापित करने के लिए वास्तविक रूप में अभिप्रेत है किन्तु यह उल्लेखनीय है कि उसने प्रारम्भ से ही उनका तथा राजा के प्रति मन्त्रणा का मन्त्रणा की विधि अंगीकार की है। वह उनसे कहता है कि उसने राजा से प्रार्थना की है तथा चेतावनी दी है कि पीटर तथा पाल नामक प्रतिनिधियों के नाम पर वह तबतक सघप से विरत रहे जबतक कि वह सघप के कारण को जानने के लिए दूता को भेजकर शांति स्थापित नहीं कर देता है तथा वह उसी शांति को धर्म की पानन करने के लिए उनको भी प्रोत्साहित करता है वह उनका विश्वास दिलाता है कि वह धर्म को स्थापित करने का प्रयास करेगा तथा किसी भी शक्ति के भय या आदर में उपर उठकर धर्मोपनीय सत्ता का सम्भरण उम पक्ष को देगा जिसके साथ आयाय हुआ है तथा जिसकी हानि हुई है।²³ उस पत्र का स्वर शिष्ट किन्तु अधिकारपूर्ण है।

यह प्रतीत होगा कि हेनरी ने चर्च से कोई समझौता नहीं किया था किन्तु जून 1074 ई. में हेनरी चतुर्थ की माता साम्राज्ञी एग्नेस को ग्रेगोरी द्वारा लिख गये एक पत्र से यह स्पष्ट होगा है कि इस समय तक हेनरी को चर्च की सन्न्यासिता में पुनः स्वीकार कर लिया गया था तथा उस प्रकार जसा ग्रेगोरी करता है उसके साम्राज्य का एक बड़ा भारी खतरा टन चुका था क्योंकि हेनरी जबतक उस धर्म सहभागिता से बहिष्कृत था ग्रेगोरी उससे भेंट नहीं कर सकता था तथा प्रजागा से उसके सम्बन्ध अत्यन्त कठिन थे।²⁴ दिसम्बर 1074 ई. में हेनरी को लिख गये उसके एक पत्र में हमारे पास एक वयान है जो कि मित्रतापूर्ण है परन्तु साथ ही कठोर भी जिसमें वह उसे चेतावनी देता है कि वह धर्म या धर्म के अपन धर्म को तभी पर देना ही सम्भव है जबतक कि वह ईसा के चर्च की सुरक्षा एवं पुनर्जागरण के लिए अपने अधिकारों का उपयोग करे।²⁵ उसी समय के एक दूसरे पत्र में हम ग्रेगोरी की हेनरी के प्रति जब उसे उसके पश्चात्ताप तथा मुबारक का पूरा

शाश्वत बन गया था भावनाओं की अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। वह हेनरी के प्रति अविरत स्नेह की अभिव्यक्ति करता है तथा उस पर खेद प्रकट करता है कि मनुष्य उनमें पूरे के पीछे खड़े रहे हैं तथा उससे अनुरोध करना है कि उसकी स्वयं की सहायता के साथ ही समाधि तक एक सेना के साथ जाने एवं पूर्वीय संस्थाओं की सहायता करने की है तथा यदि ईश्वर की कृपा से वह बसा कर सका तो चर्च को हेनरी के सरकार में छोड़ देने का इंतजाम है ताकि वह माता की प्रति उसका सम्मान करे तथा उसके गौरव की सुरक्षा करे। वह इस प्रार्थना से समाप्त करता है कि ईश्वर उसे सभी पापों से मुक्त करे तथा उसके प्रायश्चित्त के अनुरूप जीवन-यापन की उसे प्रार्थना है तथा उसका शाश्वत जीवन की ओर लाए।¹⁹

अनस्ट्रुट (Unstrut) में हेनरी की सेवकों पर विजय के उपलक्ष्य में लिखे गए पत्र में व प्रसन्नता व्यक्त करता है कि दबो निर्णय ने उसे सेवकों पर जो धन्यवादपूर्वक उम्मीदें प्रति रोध कर रहे थे यह विजय प्रदान की है साथ ही वह उस पर खे भी प्रकट करता है कि इतना अधिक ईसाई रक्त बहा है तथा उसे विश्वास दिलाता है कि वह उनके प्रायश्चित्त चर्च को खोलने तथा ऐसे व्यक्तियों के रूप में उसका स्वागत करने को तयार है जो एक ही साथ चर्च का स्वामी तथा पुत्र है यदि वह अपनी स्वयं की मुक्ति का विचार करने तथा ईश्वर को सम्मान एवं गौरव प्रदान करने को तयार हो।²⁰

जिन्तु जनवरी 1076 ई. में हम देखते हैं कि ग्रेगोरी एवं हेनरी के बीच सम्बन्धों में गम्भीर तनाव आ गया था। इसी मास की आठवीं तारीख को उसने पुनः धर्म-बहिष्कृत लोगों से उसे पृथक रहने का उपदेश दिया तथा फर्मो एवं स्पॉलेटो (Fermo and Spoleto) के विभिन्न पदों वाले व्यक्तियों को प्रदान करने के लिए उसकी शिक्षाओं की जिनको ग्रेगोरी पहचानता भी नहीं था।²¹ कुछ सप्ताहों के बाद अन्तिम बिस्पोट हुम्बर्ट तथा ग्रेगोरी सप्तम एवं हेनरी चतुर्थ एक दूसरे के विरुद्ध खुली उड़ाई को तत्पर हो गए। इन परिस्थितियों का विवरण हर्षी-ड के लेख में ग्रेगोरी सप्तम एवं फर्मो ने दिया है। लेख के अनुसार पोप के दूत जर्मनी में आए तथा हेनरी को उस पर लगाए गए आरोपों का उत्तर देने के लिए लेंट (Lent) के दूसरे सप्ताह में रोम में होने वाली परिषद् में उपस्थित होने को निर्धारित किया तथा घोषणा की कि यदि वह बसा नहीं करेगा तो चर्च निर्णय द्वारा उसे चर्च से निवान दिया जाएगा। हेनरी उस घोषणा से बहुत विचलित हो गया तथा उसने दूतों को तुरंत ही धृष्टतापूर्वक बिदा करके अपने साम्राज्य के सभी विभागों तथा मठाध्यक्षों की परिषद् सत्रों में (Septuaginta) दूसरे बिस्पोट की धर्म-नाशक स्थान पर बुलाया जहाँ वे ग्रेगोरी की परामर्श पर विचार कर सकें क्योंकि यह उसकी एक साम्राज्य की सुरक्षा के लिए आवश्यक हो गया था। ग्रेगोरी ने 1 अगस्त 1076 को जर्मनी के अन्तर्लुधो को लिखे गए पत्र में हेनरी चतुर्थ से सम्बन्धों का एक विस्तृत विवरण प्रस्तुत करके यह बताया है कि उसने हेनरी को चेतावनी दते हुए लिखा है कि यदि वह अपने को धर्म-बहिष्कृत लोगों के सम्पर्क में प्रलग नहीं रखता तो उसे चर्च में पृथक मान लिया जाएगा तथा भ्रष्टता के कारण कदा हेनरी ने जर्मनी के बिस्पोटों के कई विभागों को इसके लिए पुनर्जा लिया है कि वे पोप की गद्दी का भ्रान्त पानन छोड़ दें।²

परिषद् निश्चित दिन हुई तथा उसकी बायबाही का सबसे अन्तर्गत ज्ञान उन पत्रों पर

विचार करने से होगा जो कि स्वयं बिशपों एवं हेनरी चतुर्थ ने नियमों की घोषणा करते हुए लिखे थे। हम बिशपों के पत्रों में वर्णित सभी बिषयों पर विचार नहीं कर सकते किन्तु उनमें सबसे महत्वपूर्ण निम्न है। इन पत्रों में उनके द्वारा आरोप लगाया गया कि उसने (ग्रेगोरी ने) सभी चर्चों में उपस्थित खड़ा कर दिया है जनता को बिशपों एवं पादरियों के विरुद्ध कर दिया है तथा बिशपों की नियुक्ति को स्वीकार करने अथवा अस्वीकार करने का अधिकार हथिया लिया है तथा किसी भी व्यक्ति को जिसके अपराध के प्रति उनका ध्यान आकर्षित किया गया हो बांधन या मुक्त करने के अधिकार का भी उन्हें निषेध कर दिया है। उनका द्वारा सुभाव किया गया कि पोप पर उसका निर्वाचन अनियमित है तथा पोप निकोलस तीसरे के घोषणा पत्र के विरुद्ध विरुद्ध है। उन पर किसी स्त्री से अपवादपूर्ण सम्बन्ध एवं उसे धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करने की छूट देने का आरोप लगाया गया। अतः उन्होंने निश्चय किया कि वे उस पोप के रूप में मान्यता नहीं देते।³⁰

हेनरी ने ग्रेगोरी के लिखे गए पत्र में कहा कि पहले उसने उन बिशपों पर आक्रमण किया है जो उसके मित्र हैं और इसके बाद स्वयं उस पर (हेनरी पर) आक्रमण के लिए तयार हो गया है तथा उसकी आत्मा और साम्राज्य को छीनने की धमकी दे रहा है। परिणामस्वरूप उसने साम्राज्य के सभी प्रमुख लोगों को एक सभा बुलाई है और उनके द्वारा यह निश्चय किया गया है कि ग्रेगोरी को पोप नहीं स्वीकार किया जाए। हेनरी ने उनसे निराशा की पुष्टि कर दी है तथा ग्रेगोरी के पोप-पद पर दावे को अस्वीकार कर दिया है तथा उसे आदेश देता है कि उस रोम नगर के घमपीठ को छोड़ दे जिसका कि वह ईश्वरीय प्रदान द्वारा तथा रोमन जनता की शपथपूर्ण सहमति द्वारा साम्राज्यिक प्रतिनिधि है।³¹ रोमन जनता को सम्बोधित अपने पत्र में हेनरी ने अपने पत्र का उल्लेख किया है तथा उनका ग्रेगोरी के विरुद्ध विरोध करने एवं उसे पोप पद से उतारने के लिए आह्वान किया है ताकि हेनरी द्वारा सभी बिशपों एवं रोमन नागरिकों की सहमति से नया पोप नियुक्त किया जा सके जो चर्च के घावों को भर सके।³²

सम्भवतः यह उल्लेखनीय है कि विचारों का पत्र मुख्यतः धार्मिक शिक्षायुक्त तथा ग्रेगोरी के चुनाव की तथाकथित अनियमितताओं पर बल देता है जबकि हेनरी का मुख्यतः पोप द्वारा उसे घम बहिष्कृत करने की धमकी तथा उसे पदच्युत करने का आरोपित घमकी का बलान करता है। हम नहीं कह सकते हैं कि क्या उसका यह धमिप्रयुक्त घम बहिष्कृत करने की धमकी में छिपा था केवल मात्र जिसका बलान लेम्बर्ट ने किया है अथवा ग्रेगोरी का कोई इस प्रकार का बक्तव्य था जहाँ कि हेनरी के पत्र में उसके शब्दों से विनिश्चित होना है (Scilicet ut suis verbis utar)। हेनरी ने स्पष्टतया आरोप लगाया है कि ग्रेगोरी ने उसे पदच्युत करने की धमकी दी थी। यह इस प्रश्न की विषय-वस्तु के बाहर की बात है कि इस प्रश्न पर विचार किया जाए कि कहीं तक बिशपों की यह मान्यता तकसगत थी या नहीं कि ग्रेगोरी उन पर नए अधिकारों का दावा कर रहा है। निस्सन्देह यह सत्य है कि पोप उत्तरी चर्च की दशाओं को सुधारण के प्रयत्नों में अपना गतिविधि को एक नयी सीमा तक बढ़ाने या किन्तु सद्भावपूर्ण रूप में यह स्थिति नवीन वृद्धि की परिचायक थी यह दूसरी बात है।

हमारा सम्बन्ध यहाँ त्रैविक एवं धार्मिक सत्ता के सम्बन्धों से है तथा जब पोम्प की परिपद् की वापवाही से हट कर रोम में फरवरी में हुई प्रगोरी की परिपद् की ओर अपना ध्यान केन्द्रित करना है। इस परिपद् में सन पीटर को सम्बोधित एक स्तुति की पदावली का प्रयोग करके प्रगोरी ने गर्भीरता से हेनरी को घम बहिष्कार कर दिया उसे पानी व इटली के सम्राट पर से पदच्युत कर दिया तथा सभी प्रजाजनो को उनकी निष्ठा की शपथ से मुक्त कर दिया। "मने यह मन आघारों पर किया कि हेनरी ने ईश्वर की आज्ञा मानने से प्रस्वीकार कर दिया है उन लोगों में सम्मिलित हो गया है जो घम बहिष्कृत हैं तथा उमने चर्च के विना का प्रथम किया है उसने इन अधिभार का दावा सन पीटर के नाम पर किया जिसे क्या ने स्वयं और धरती पर बांधने या मुक्ति की शक्ति सौंप दी है।"³²

अनंत समय एक सत्ता मुद्र हो गया तथा यूरोप की सबसे महात्वा शक्ति सत्ता रोम की धार्मिक सत्ता के विरुद्ध हो गई। यह हम उन प्रोत्सों की परीक्षा करती है जिनमें हेनरी तथा प्रगोरी ने अपने कार्यों का अभिव्यक्ति किया है। सबसे पहला महत्वपूर्ण घटना जिस पर हमें विचार करना चाहिए प्रगोरी को 27 मार्च 1076 को निष्ठा गया हेनरी का पत्र है जो उसने सम्भवतः फरवरी में रोम की परिपद् द्वारा अपने घम बहिष्कृत एवं पदच्युति के बारे में सुनकर लिखा था। वही पत्र में उदा पोप के रूप में नहीं किन्तु मुंडे सायु हिन्द्रेण्ड के रूप में सम्बोधित करता है तथा वह उस पर चर्च की सभी धार्मिक चिन्त व्यक्तियों को उतार करे तथा विचारों से अलग गुनाम की शक्ति व्यक्तिकार करने का आरोप करता है वह कहता है कि उमा धर्मपूजक न सबको सहन किया किन्तु हिन्द्रेण्ड ने "सबको नम्रता की वापसता समझ दिया" तथा अन्त में राजकीय सत्ता पर आक्रमण किया है जो "मे ईश्वर द्वारा प्रदत्त है तथा उमने उसे धीनने की घमकी दी है मानो हेनरी को राजगद्दी उतारी न दी हो। पवित्र धर्माचार्यों को परम्परा ने यह सिखाया है कि शक्ति राजा का दाव चर्च के द्वारा होता है तथा उसे आचम के धार्मिक विचारों भी प्रथम अपराध के कारण पदच्युत नहीं किया जा सकता। इसलिए वह तथा सभी विचार धारा देते हैं कि हिन्द्रेण्ड पोप की गति से उनसे तथा दूसरे के लिए जगह खाली करे।"³³ यह पत्र दो महत्वपूर्ण दावे या सिद्धान्त प्रस्तुत करता है। पहला हेनरी की निष्पत्ति ईश्वर द्वारा हुई है और वह केवल ईश्वरीय आशय के अधीन है तथा यदि वह घम आशय करे तभी उसे पदच्युत किया जा सकता है दूसरा यह कि राजा और विचारों को पोप का आशय करने एवं उसे पदच्युत करने का अधिकार है। किन्तु यह अधिवागान अस्पष्ट रूप में ही प्रस्तुत किया गया है तथा इन दावों के आधार एवं परिस्थितियों को स्पष्टतया नहीं बताया गया है।

हेनरी की स्थिति एक दूसरे तौर पर अधिक सावधानी से प्रस्तुत की गई है जो वास्तव में विटसनटाइड (Whitsuntd) पर होने वाली परिपद् के लिए विजया को सम्बोधित निमंत्रण समझा जाता है। इसमें वह कुछ सावधानी से दोनों सत्ताओं राजकीय तथा धार्मिक के विभिन्न सिद्धांतों का वर्णन करता है जिन्हें समा में अपने चर्च में दो तलवारों के रूप में स्थापित किया और वह इनके पृथक्-पृथक् कार्यों का वर्णन करता है। धार्मिक

सत्ता को ईश्वर के पश्चात् राजा के प्रति आनापालन प्राप्त करना है तथा राजकीय सत्ता को ईसा के शत्रुओं को जीनना ³⁵ तथा चर्च के आगमन मनुष्यों को धार्मिक सत्ता की आनापालन के लिए विवश करता है। हिंड्रान् इस व्यवस्था को नष्ट करने का प्रयत्न कर रहा था तथा बसा करते हुए वास्तव में दोनों शताब्दों की स्थिति एवं शक्ति को नष्ट कर रहा था। प्रासंगिक रूप से वह इसे भी अस्वीकार कर देता है कि ईश्वर ने हिंड्रेण्ड को धार्मिक सत्ता सौंपी है।³⁵

हिंड्रेण्ड ने अपनी स्थिति को तत्पूरा शर्तों में भेटस के बिशप हरमन को अगस्त 1076 ई. में भेजे गए एक पत्र में व्यक्त किया। प्रमुख रूप से वह उन लोगों व तर्कों को सम्बोधित कर रहा है जो यह मानते थे कि एक राजा को धर्म बहिष्कृत करना उचित नहीं है। वह अनेक अधिष्ठान का एक ऐतिहासिक दृष्टांश को प्रस्तुत करके सिद्ध करता है कि यह विधि सम्मत था तथा बसा पहन किया भी गया है वरुं तक देता है कि यह धारणा कि कोई भी व्यक्ति धार्मिक अधिकार क्षेत्र से मुक्त हो सकता है वास्तविक दृष्टि से भूलतापूर्ण है क्योंकि इसका अभिप्राय होगा कि वह चर्च में बाहर है तथा ईसा से परे है। राजा को धर्म-बहिष्कृत करना प्रायोजित सिद्ध करने के लिए वह पोप इव टियास अभिकथित द्वारा फ्रांस के अंतिम मेरोविंजियन (Merovingian) राजा की अभिकथित पद-युक्ति का दृष्टान्त देता है तथा ग्रेगोरी महामु के पत्र के शब्दों को प्रस्तुत करता है जिसमें उसने अपना निरायन मानने वाले राजाओं को न केवल धर्म बहिष्कार अपितु पाप हानि की भी धमकी दी थी। सम्भवतः जब वह कहता है कि पोप का धर्मासन जो ईश्वर द्वारा प्रस्तुत सत्ता के कारण धार्मिक मामला का निणय करता है लाकिक विषयो में भी बशो न निणय करे तो उसका यही अभिप्राय है। कुछ लोग मानते हैं कि राजकीय गौरव बिशप के गौरव से बढ़कर है वह उसका विरोध करने हुए कहता है कि साथ इससे ठीक विपरीत है तथा यह इसकी उत्पत्ति से ही स्पष्ट है राजत्व का मूल मनुष्य का अधिकार है जबकि बिशप का पाप ईश्वर निमित्त है। अतः वह हेनरी को पाप मुक्त करने का प्रत्येक व्यक्ति को बढोरता से निषेध करता है क्योंकि यह पोप के निणय के लिए छोटा दिया जाना चाहिए।³⁶

उमनी के थडानुओं को सम्बोधित तीन सितम्बर के पत्र में ग्रेगोरी ने अपनी स्थिति तथा दावा किए गए अधिकारों को कुछ महत्वपूर्ण परिवर्धनों सहित प्रस्तुत किया। उसने हेनरी को धर्म बहिष्कृत करने वाला घोषणा की और उनको निर्देशित किया जो कि उस काय को करने के आधारा के बारे में एक बक्तव्य चाहते थे तथा उनको यह समझाने का प्रयत्न किया कि हेनरी का धर्म बहिष्कार ही नहीं हुआ है अपितु उभ पञ्च्युत भी कर लिया गया है तथा सभी यक्तियों को उनकी निष्ठा की अपयस मुक्त कर लिया गया है। वह चाहता है यदि वह (हेनरी) पश्चात्ताप करे तो विशेषतया उसके पिता व माता के कारण उस पर दया की जाए किन्तु हेनरी को यह जान देना चाहिए कि चर्च उसके हाथों का शिकोता नहीं किन्तु उमने ऊपर स्थापित है। यदि वह पश्चात्ताप नहीं करेगा तो दूसरा राजा चुना जाएगा जो ग्रेगोरी के आदेश का पालन करने की प्रतिज्ञा करेगा तथा ईसाई धर्म और सम्पूर्ण साम्राज्य के हित में जो जो काय आवश्यक प्रतीत हो करेगा।

यह धारणा है कि जिसे वे चुनें उस शक्ति तथा उसके चरित्र के बारे में वे उसे सूचना दें ताकि वे उनके चरित्र की गहरी नई समझना की पुष्टि कर सकें कि पवित्र धर्मियों ने पहले भी किया है। अन्ततः यह साम्राज्यी एग्नेस को भी गर्व किमी शायद का उद्गम करता है तथा यदि उन्होंने उसके पत्र को सघाट पद से हटाने का निश्चय कर लिया हो तो साम्राज्यी से घोर स्वयं (पोप) से उनके उत्तराधिकारी के रूप में चुन गए व्यक्तियों के बारे में राय देने का आदेश देता है।³⁷

यदि हम इन प्रश्नों में विद्यमान सिद्धांतों एवं दावों को सक्षिप्त करने का प्रयत्न करें तो हम प्रतीत होंगे कि ग्रेगोरी द्वारा राजा के ऊपर की आध्यात्मिक-क्षेत्राधिकार प्रयत्न करने के दावे से उत्पन्न एक प्रणाली का रूप में सघप उत्पन्न हुआ। हेनरी को धर्मिक-वित्त धार्मिक धरणाओं का स्फुटारण देने के लिए रोम धान की धाना ही खुले सघप का सात्वतिक कारण थी। ग्रेगोरी की मूलभूत एवं प्रथम मायता यह थी कि राजा भी चर्च की धार्मिक गर्हा का पात्र है तथा यदि आवश्यकता हो तो उसे भी धर्म-बन्धित किया जा सकता है। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या ग्रेगोरी ने हेनरी को प्रौढारिक रूप से पदच्युत करने की धमकी दी थी किन्तु हेनरी ने समझा कि उगने बसा किया है चाहे स्पष्ट रूप से हो या अस्पष्ट रूप से। इसीलिए उसने विरोध में दावा किया कि उसे तथा विधायी को पोप का योग्य करने के लिए बठने का अधिकार है तथा इस दावे के अनुसार काम करी हुए उनके द्वारा धर्म में ग्रेगोरी को पदच्युत करने की घोषणा की गई। ग्रेगोरी ने इसका उत्तर हेनरी को धर्म की धृष्ट तथा ईश्वर तथा स्वयं चर्च के विरोधी के रूप में प्रौढारिक रूप से पदच्युत करके लिया तथा विभिन्न तर्कों एवं दृष्टांतों से अपने दावों का औचित्य सिद्ध किया। हेनरी ने इसका उत्तर दो प्रकार से किया पहला तो इस दावे के रूप में कि राजा केवल ईश्वर के निर्णय के अधीन है तथा उसे अघम के अनिर्दिष्ट धर्म किसी कारण से पदच्युत नहीं किया जा सकता तथा दूसरे उसने अपने समर्थन में दोनों सत्ताओं की विभिन्नता एवं स्वतंत्रता की गलेसियन परम्परा को उद्धृत किया। यह ध्यान देना चाहिए कि मेन्ड के विषय हरमन को लिखे गए पत्र में ग्रेगोरी ने स्पष्ट रूप से इसे धम्बीकार नहीं किया किन्तु राजा पर धार्मिक सत्ता के दावे की पुष्टि की तथा सम्भवतया यह माना कि उसके अन्तगत पदच्युत करने का अधिकार भी सम्मिलित है उसने स्पष्ट किन्तु महदपूर्ण शर्तों में यह मायता प्रस्तुत की कि पवित्र पोप यदि धार्मिक मामलों का निणय कर सकता है तो वह नैतिक वस्तुओं का भी निणय कर सकता है। वास्तविक परिस्थिति के विशेष सन्दर्भ में उसने उस व्यक्ति के बारे में विचार करने एवं स्वीकृति प्रदान करने का भी दावा किया जिसे जमान जनता हेनरी के स्थान पर चुने।

इस प्रकार महान् सघप की यह प्रथम सीढ़ी थी तथा दोनों दलों द्वारा प्रस्तुत किए गए दावों का यह स्वरूप था। अब हमें ऐतिहासिक परिस्थिति के विकास तथा प्रस्तुत किए गए सिद्धांतों के उत्तरवादीन विकास का सक्षिप्त विवेचन करना चाहिए।

ऐसा प्रतीत हुआ होगा कि ग्रेगोरी ने सघप में हेनरी जमनी एवं यहाँ तक जमान विधायी का भी समर्थन प्राप्त कर सका था किन्तु थोड़े ही समय में स्पष्ट हो गया कि

यह सत्य नहीं था। प्रसन्न की 1075 ई. की विजय ने सेक्सनो के विरोह को दबा कर जमनी में हेनरी की सर्वोच्चता स्थापित कर दी किन्तु 1076 ई. में एक नया तथा पापक विद्रोह खड़ा हो गया तथा थोड़े समय में राजनतिक स्थिति पूणनया बन्न गई।

सेक्सनो और सुभाबियनों (Suabians) ने खुदा विरोह कर दिया और हेनरी तूफान के आग सिर मुकाने को बाध्य हो गया। इतिहासकारों में घटाओं के बारे में मतभेद है किन्तु वे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अनेक प्रश्नों पर एकमत हैं। हेनरी ग्रेगोरी को आरमसमपण करने के लिए बाध्य हुआ तथा राजाओं ने निश्चय किया कि यदि वह एक वर्ष में पाप मुक्त नहीं होता है तो वह सम्राट नहीं रहेगा उन्होंने पोप की जमनी आने का निमन्त्रण दिया ताकि सवय समाप्त किया जा सके।⁸ हेनरी द्वारा ग्रेगोरी सप्तम तथा जमन राजाओं को निचे पत्रों में उसके समपण की घोषणा अतः स्पष्ट शब्दों में अभिव्यक्त है।⁹

हेनरी ने विरोही राजाओं की शर्तों को स्वीकार कर लिया तथा वह स्पायस को लौट गया किन्तु अपने धर्म-व्यतिकार की घण्टी से पूर्व पाप मुक्त होने का महत्त्व को देखते हुए उसने ग्रेगोरी के सम्मुख उपस्थित होने तथा अपने को पाप मुक्त करने के लिए इटली जाने का निश्चय कर लिया। ग्रेगोरी उसी समय रोम से जमनी जाने को रवाना हो चुका था और हेनरी जब आया तब वह केनोसा पहुँच चुका था। हम केनोसा के दरवाजे पर हेनरी के नये पर खड़े रहने का क्या का बखान करने की आवश्यकता नहीं है किन्तु उसकी पाप मुक्ति की शर्तें बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। ग्रेगोरी सप्तम के पत्रों में हेनरी के द्वारा 28 जनवरी 1077 ई. को का गई तथाकथित प्रतिज्ञाओं का विवरण मिलता है। इसमें हेनरी ने प्रतिज्ञा की कि जमन साम्राज्य के आचरित्रों को विगना तथा अन्य राजाओं द्वारा उसके विरुद्ध की गई शिकायतों के बारे में या तो पोप के निणय के अनुसार जवाब देगा या उसकी राय से पोप द्वारा निश्चित की गई शर्तों के अन्तर्गत शांति स्थापित करेगा जबतक कि वह या पोप किसी भी निश्चित बाधा (certum impedimentum) से अवरुद्ध न हो जाय। नेम्बट द्वारा पाप मुक्ति की शर्तों के विवरण का बहुत घटना ऐतिहासिक मूल्य है किन्तु हेनरी के कुछ शत्रुओं के विरोध के उद्धार स्वरूप यह महत्त्वपूर्ण है। उसमें हेनरी को यह प्रतिज्ञा करता हुआ बनाया गया कि वह पोप द्वारा निश्चित किए गए समय एवं स्थान पर जमन राजाओं की एक परिषद् में उपस्थित होगा तथा वहाँ आने के लिए लगाए आरोपों का उत्तर देगा वहाँ पर पोप का आयाधान का कार्य करेगा तथा उसके निणय के अनुसार हेनरी यदि अपने पर लगाए गए आरोपों से मुक्त हो जाता है तो राजा नहीं बनाए रखेगा अथवा यदि वह सिद्ध हो जाते हैं तो पदत्याग देगा तथा धार्मिक कार्यों के अनुसार राजकीय गरिमा के अयोग्य घोषित कर दिया जाएगा। उसने प्रतिज्ञा की कि यदि उसे राजा बनाए रखा गया तो वह पोप का अनुयायी तथा आजापालक बना रहेगा तथा उसके साम्राज्य में बहुत समय से विद्यमान धार्मिक नियमों के विपरीत कुप्रथाओं के सुधार में साहसपूर्वक सहायता करेगा। यदि हेनरी इन प्रतिज्ञाओं को पूरा न करे तो पाप मुक्ति अवध हो जाएगी तथा राजा का दूसरा सम्राट चुनने का अधिकार होगा।¹⁰

यह स्पष्ट है कि नम्रट का विवरण न केवल अधिष्ठित विस्तृत है किन्तु अधिष्ठित साक्षात् रूप में अधिष्ठित नहीं है किन्तु वास्तविकता इसमें बहुत भिन्न नहीं है क्योंकि पत्रिका में विद्यमान प्रमाणों के अनुसार भी हारी ने पीपल के निर्णय के सम्मुख समपन करने के लिये उसकी मंत्रणा का अनुसरण करने की प्रतिज्ञा ली थी। हम ग्रेगोरी द्वारा हनरी के समक्ष की घोषणा करने वाले नमन राजाघ्रा को भेज गए पत्र में विद्यमान परिस्थिति के विवरण तथा इस तथ्य की कि उसके द्वारा वह घम-बहिष्कार के दण्ड से मुक्त कर लिया गया है सुचना करनी चाहिए।⁴¹

वेनोसा में हनरी का आत्मसमर्पण प्रत्याग्रहाने सम्पूर्ण था किन्तु सारी परिस्थिति और भी अधिष्ठित जटिल हो गई। श्लो १ सन् 1080 ई. में हनरी को घम बहिष्कृत करने की घोषणा में स्पष्टतया कहा है कि उसने नाना म हनरी को पाप मुक्त ता कर दिया था किन्तु उस उमका साम्राज्य पुनः प्रदान नहीं किया था और उसके तथा विरोधी विरोधों एवं राजाघ्रा के मध्य शान्ति या जाय स्थापित करने की कोशिश उसका वाय प्रतीत था। इसी विरोधों तथा राजाघ्रा ने य मुनारर कि हनी ग्रेगोरी से की गई प्रतिज्ञा का पालन नही कर रहा है उसमें निरास होकर रूढ़ों के बिना उसमें परामर्श किए अपना सम्राट चुन लिया है (sine consilio vobis testibus elegerunt sibi Rodulfum ducem in regnum)⁴²

इस पुनः स्पष्टतया एक अधिष्ठित पत्र में १०८१ एवं १०८४ के बीच लिखा गया है⁴³ सुस्पष्ट रूप से उनकी पुनरावृत्ति करना है।

इस प्रकार यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि नमन राजाघ्रा का वाय जिन्होंने मात्र 1077 में फोरकहम (Forkham) में श्लो १ का चुनाव किया पीपल की राय के लिया गया था तथा शंभ्र है यह स्पष्ट है कि जर्मनी पृथक्ता विभाजित था तथा एडवार्ड के निर्वाचन की राय केवल एक वग ने ही स्वीकार किया था। उसी वर्ष (1077) में के शक्त में हम पाते हैं कि ग्रेगोरी ने जर्मनी में एडवार्ड को सम्वाहित एक पत्र लिखा जिसमें यह कहा है कि जर्मनी सम्राट ने रोम के घमपीठ से सहाय-याचना की है तथा वह जर्मनी जाना चाँहता है ताकि उनका समुचित सम्भार का निपटा है तथा जो पक्ष होना में म बाधाचित प्रतीत है। जर्मनी सम्भार करे। यदि दोना सम्राट म म की भी उस आवश्यक सम्भार प्रदान न करे ता वह घम-बहिष्कृत किया जा यह ग्रेगोरी महानुभाव का उद्घृत करता है जिनमें कहा गया है कि जो राजा प्रतिष्ठित धर्मालय के निर्माण काम कर उनका गरिमा सनाए कर दी जाय तथा मटल के हरमन का लिस गए पत्र में प्रयुक्त है। जो ग्रेगोरियस है कि यदि पीटर की घमपीठ धार्मिक मामला में निराल्य कर लता है ता पापिलेस को जैविक मामलों में जो और भी अधिष्ठित निर्णय करने में समर्थ है। वह उक्त निर्णयों जिन्होंने हुए उपसंगत करते हैं कि नमन जिम्मा राजा से वा प्रतिज्ञा का है कि यह 'यासोधि' को दण्ड को भी अधिष्ठित नहीं करेगा।⁴⁴

धर्मोपदेश के इसी तागत के अध्या प्रतिष्ठितियों को निम्न पत्र में भी उक्त सिद्धांतों का प्रतिज्ञा है किन्तु अधिष्ठित विस्तृत है। उनको दोना सम्राट ने म जर्मनी में

पोप के लिए सुरक्षित यात्रा की माँग करना है क्योंकि वह उन दोनों के मध्य विवाद का निराकरण जमन पत्रियों एवं ईश्वर भीह अमानत वग की राय से करना चाहता है तथा पाप किस पक्ष के समर्थन में है इसकी घोषणा करना चाहता है। वे जानते हैं कि चर्च के गभीर विषयों का निर्णय पोप की गद्दी का दायित्व है तथा यह मामला इतना भारी तथा खतरनाक है कि पाप वृत्तनी उपस्था करना तो समस्त चर्च दाखल क्षतिग्रस्त हो जाएगा। इसलिए दोनों मन्त्रालयों से को भी यदि उत्तरे नश्य या उनकी प्रयोजन सिद्धि में बाधा है तो उनको चाहिए कि वे उनके राज्य से वचन कर दें तथा उनके समयों को चर्च की सगति से बहिष्कृत कर दें तथा जो राज्य में ग्रेगोरी की आज्ञा पालन करें उसको पुष्टि के लिए तथा पादरियों एवं अयाजक दोनों को निष्ठापूर्वक उमकी सेवा करने का निदेश देने के लिए पादरियों तथा अयाजक वग की एक सभा अह्वान करें।⁴⁵

ग्रेगोरी सप्तम की पत्रिका में एक प्रवेश है जो 1078 ई. की घटनाओं का विवरण प्रदान करता है। फरवरी 27 से 3 म. च. तक रोम की परिषद् की पुनर्स्थापना कायवाही में पत्राचार है कि यह निर्णय किया गया कि जर्मनी में ग्रीक मतों के कारण उत्पन्न हुए चर्च के खतरे के कारण सभी धार्मिक प्रकृतियों को चर्चे के पादरियों या अयाजक आने प्रतिनिधि एवं परिषद् के लिए भ्रमों को दूर किया जाए ताकि उनकी मदद से या तो शांति स्थापित हो सके या पता जाना जा सके कि पाप विपक्ष की ओर है तथा उसे पोप सत्ता की शोषणता दी जाए।⁴⁶ ग्रेगोरी का एक पत्र जो जर्मनी के सभी कोटि के प्रकृतियों को सम्बोधित है परिषद् के निर्णय का घोषणा करता है तथा सबने शांति के लिए प्रयत्न करने का अनुदेश करता है।⁴⁷ 1 जुलाई को ग्रेगोरी ने पुनः सभी जमन पत्रियों एवं अयाजकों को जर्मनी में उसका दूता की उपाधि में हेनरी एवं रुडोल्फ के बीच निर्णय के लिए जाने वाली परिषद् के विषय में लिखा।⁴⁸

फरवरी 1079 में हेनरी तथा रुडोल्फ दोनों के दूत रोम की एक परिषद् में उपस्थित हुए तथा पत्रिका में उनके द्वारा अपने स्वामियों की ओर से की गई प्रतिज्ञाएं अंकित हैं। हेनरी के दूतों ने शायद ही कि वादावित कारण बयान न हो तो स्वर्गारोहण दिवस (Ascension Day) के पूनर्हाय पाप के दूता का जर्मनी में जानने के लिए आगे तथा जर्मनी न्याय तथा उनके निर्णय के अनुसार सभी बाबा में आज्ञा पालन करेगा। रुडोल्फ के दूतों ने शपथ ली कि यदि पोप के आदेशानुसार जर्मनी में परिषद् की बैठक हुई तो वह स्वयं उपस्थित होगा या उसका प्रिन्स तथा अन्य विश्वसनीय व्यक्ति उपस्थित होगा और वह राजत्व के बारे में रोमन चर्च का निर्णय स्वीकार करने को तैयार रहेगा वह परिषद् की बैठक के मांग में कोई बाधा उत्पन्न नहीं करेगा तथा पाप के प्रतिनिधियों का उपस्थिति के लिए जो भी सम्भव हो करेगा।⁴⁹

अतः परिषद् में जर्मनी में प्रतिनिधि भ्रमण का निर्णय लिया जो कि पादरियों एवं अयाजकों का एक संयुक्त सभा बुलाएँगे जो या तो शांति स्थापित करेगी या उन लोगों को बहिष्कृत या सघपक कारण हैं धार्मिक विधि के आधार पर निर्णय करेगी तथा घोषणा की कि कोई भी व्यक्ति जो प्रतिनिधियों के कार्य में बाधा देगा अथवा जब शांति वातावरण नहीं हो युद्ध करेगा घम अन्विष्ट कर दिया जाएगा।⁵⁰

ग्रेगोरी ने सुभाषिया के हडोफ को सम्बोधित उसी मास के एक पत्र में इसी लिए का उल्लेख किया है। वह उसे विश्वास दिलाता है कि यद्यपि हेनरी चतुर्थ के दून उससे घपन पक्ष का समर्थन करने के लिए निरंतर आग्रह करते रहे हैं किन्तु उसने हृदय निश्चय किया है कि वह केवल मायोचित का भवेपण तथा उसका ही समर्थन करेगा। एक दूसरे पत्र में हडोल्फ तथा उसके पक्ष के विधायी एवं राजाओं को वह उनका घम की सत्यता एवं घपनी स्वतंत्रता के लिए डटे रहने का आह्वान करता है किन्तु उन विधानों की जानकारी के लिए उनका ध्यान घपने प्रतिनिधियों एवं पत्रों की ओर आकृष्ट करता है जो जमन साम्राज्य में शांति स्थापित करने के लिए रोम की परिपद के द्वारा लिए गए थे।⁵¹ यह दूसरा पत्र ग्रेगोरी की निष्पक्षता के दावे से आसानो से मेल नहीं खाता।⁵² उसी वर्ष अक्टूबर के प्रारम्भ में लिखे गए दो पत्र ग्रेगोरी की स्थिति को भलाभाती स्पष्ट करते प्रतीत होते हैं। एक जमनी में उसने दूनो को लिखा गया है तथा उसमें कहा गया है कि उसे शिकायतें मिली हैं कि वे उसके निगाह का पालन नहीं कर रहे हैं और यद्यपि वह उन शिकायतों को सत्य नहीं समझता तथापि वह उन्हें अत्यंत सावधानी बरतन की चेतावनी देता है ताकि वे किसी प्रकार इस सहायका भवस्य प्रदान न करें कि वे एक दल के पक्ष में अधिक भुके हैं क्योंकि उसने याय को छोड़कर किसी अन्य पक्ष का अवनम्बन न करने का निश्चय किया है। यह महत्वपूर्ण है कि उसने उनका किसी आचरिण या बिशप पर जिस पर अयाजक प्रतिष्ठापन प्राप्त करने का आरोप हो को निषेध देने का प्रबल निषेध किया है तथा कहा है कि वस्तुतः उसे सूचित करें यदि राजा (हेनरी) ने साम्राज्य में पुनः शांति स्थापनाय किसी सम्मेलन को बुलाना का उनके साथ कोई समझौता किया हो।⁵³ दूसरा पत्र जमनी के उदात्तों को सम्बोधित है। वह कहता है कि उसने सुना है कि यह शिकायत है कि वह नौकिय आकाशगमिना (Seculari levitate) के पक्ष में आचरण कर रहा है किन्तु वह उनकी विश्वास दिलाता है कि उससे अधिक किसी की भी हानि नहीं हुई है। तबभग सभी जनसाधारण हेनरी चतुर्थ के पक्ष में हैं तथा उस पर अशिष्टता एवं उसके प्रति घम (Hostility) हीनता का आरोप लगा रहे हैं। उसने अभी तक इस दबाव का प्रतिरोध किया है तथा जहाँ तक समानता एवं न्याय की भाँति है वह किसी भी पक्ष की ओर नहीं मुक्त है। यदि उसके प्रतिनिधियों ने वगा किया है तो उसका उसे खत है किन्तु उन्होंने भी उग्र दावय या घास में आकर बसा किया होगा।⁵⁴

मार्च 1080 ई. में ग्रेगोरी सप्तम एवं हेनरी चतुर्थ के बीच में पूरा मतभेद हो गया तथा ग्रेगोरी ने पुनः हेनरी को घम-बहिष्कृत एवं पन्थुत करके हडोल्फ को राजा स्वीकार कर लिया। ग्रेगोरी ने यह घोषणा रोम की एक परिपद में की जिसमें उसने कनोसा से लेकर अत्र तक की घटनाओं तथा घपने काय का सक्षिप्त विवरण दिया है। उसने घोषणा की कि यद्यपि उसने कनोसा में हेनरी को पापमुक्त कर दिया था तथापि उसने उस राजत्व पुनः प्रदान नहीं किया था तथा याय करने एवं उसमें तथा उसके विरुद्ध विरोध करने वालों के बीच शांति स्थापित करने को कृत निश्चय था। हडोल्फ का निर्वाचन उसकी राय के बिना किया गया था किन्तु उसने हेनरी की प्राथना को स्वीकार नहीं किया

था कि हडोफ के विरुद्ध उसकी सहायता करे। ग्रगोरस दोनों राजाओं ने उससे 'पाप करने को कहा तथा उसने घोषणा की थी कि जमनी में एक सभा हो जो या तो यह निश्चय कर कि पाप किम पप की ओर है अथवा शांति स्थापित कर दे क्योंकि वह जानता था कि जा पक्ष दावी होगा वह सभा को रोकने का प्रयत्न करेगा उसने जो यह प्रयत्न करे उसे भी घम बहिष्कृत कर दिया था। हेनरी तथा उसके समर्थकों ने सभा को रोक दिया है ग्रगोर ईश्वर एक पवित्र कुमारी का पाप एक बहूया पर विश्वास करके वह उसे तथा उनको घम बहिष्कृत करता है ईश्वर तथा परिपद् के नाम पर हेनरी को जमनी एवं इटली के सम्राट पद में पदयुक्त करता है सभी ईसाई लोगों को उसकी आज्ञा मानन से निषेध करना है तथा उनको आज्ञापालन की उस शपथ के बंधन से मुक्त करता है जो उन्होंने ली है अथवा भविष्य में लेने वाले हैं। उसने गम्भीरता पूर्वक हडोफ को जमन साम्राज्य का शासक बनाया जिस पर जमना ने उसे चुना है तथा उन सबको जो निष्ठापूर्वक उसकी आज्ञापालन करें पापों से मुक्ति तथा इस लोक और परनाक में परिपद् की ओर से आशावात् प्रदान किए। ग्रगोर ने उसने परिपद् के सदस्यों को इस प्रकार काम करने के लिए आह्वान किया जिससे सारा विश्व यह जान सके कि उनके पास स्वर्ग में बाधने या मुक्त करने की शक्ति है इस तरह वे राज्य प्रदेश तथा मनुष्यों की दूसरी सम्पत्तियां मनुष्यों के गुण के अनुसार प्रदान अथवा ग्रहण कर सकें हैं। दुनिया के सम्राट एवं राजा जान लें कि उनकी शक्ति कितनी महान है तथा चर्च की आज्ञा का उल्लंघन करने से भयभीत हो।⁶⁵

इस वक्तव्य में निहित सिद्धांतों पर ध्यान देना बहुत महत्वपूर्ण है। पहला तो ग्रेगोरी का दावा कि जिस सभा को अपने तथा हडोफ के बीच विवाद को सौंपने की उसने प्रतिज्ञा की थी उसमें बाधा उत्पन्न करने पर उसे हेनरी को घम-बहिष्कृत करने तथा पदयुक्त करने का अधिकार है। दूसरे वह जमन साम्राज्य पर हडोफ को नियुक्ति प्रदान करने का स्वतंत्रता के अधिकार का दावा करता है लेकिन यह दृष्ट्य है कि वह यह कहने की सावधानी बरतता है कि जमना ने उसे चुना है। तीसरे वह रोम की परिपद् को हम काम में अपने साथ सम्मिलित करता है। चौथे वह परिपद् से अनुरोध करता है कि उनको स्पष्ट कर देना चाहिए कि उनको मनुष्यों की योग्यता के अनुसार राजनीतिक सत्ता प्रदान करने या छीन लन का अधिकार है। ये दावे ग्रेगोरी के द्वारा 1076 ई. में किए गए दावा से कहीं अधिक बलवत् हैं। तब उसने हेनरी को चर्च के विरुद्ध एवं निश्चित एवं सुविचारित विचारों के कारण पाप का पाप करने एवं उसे पदयुक्त करने की धृष्टता के कारण घम बहिष्कृत किया था ग्रगोर उसने हेनरी को जमनी के राजनीतिक मामला में निर्धारण में पाप की सत्ता को स्वीकार न करने के कारण पदयुक्त किया था। किन्तु यह ध्यान में रखना चाहिए कि जसा हम इस बुक हैं ग्रेगोरी यह स्मरण दिलाने की सावधानी रखता है कि दोनों पक्षा ने उससे उनके बीच निराप करने की प्रार्थना की है तथा उसके निर्णय को स्वीकार करने की शपथ ली है। तथापि ग्रेगोरी की घोषणा के अन्तिम वाक्यांश एक विस्तृत एवं व्यापक शब्दावली में इस दावे को प्रस्तुत करता है कि चर्च को राजनीतिक सत्ता प्रदान करने अथवा छीनने का अधिकार है।

फ्रेगोरी के काय के तुरन्त बाद हनरी की कायवाही प्रारम्भ हो गई उसने त्रिभुवन में एक परिपद् बुलाई जिसने द्वा डेब्राण्ड को पाप की गद्दी से पण्डित करने की घोषणा की। उन्होंने अपने काय का भौतिक रूप फ्रांसेस में सिद्ध किया कि उसका निर्वाचन बल प्रयोग से पों निकोलस के आदेश पत्र का उल्लंघन करते हुए हुआ था। उसमें सम्राट की सहमति की भी आवश्यकता थी तथा साथ ही यह भी आरोप लगाया कि उसने चर्च का सम्पूर्ण व्यवस्था एवं साम्राज्य की शक्ति का भंग किया था। तब उन्होंने देवशा के आचरिणार ग्युवट को पोप चुना।⁵⁶

फरवरी 1081 में रोम का एक परिपद्, म फ्रेगोरी ने हनरी तथा उसके समर्थकों के घम-बहिष्कार का पुनः नवीनीकरण कर दिया तथा माघ में उसने मट्ट में विशेष हमल की सम्बाधित एक-दूसरे पत्र में अपने कार्यों का विस्तारपूर्ण औचित्य प्रस्तुत किया। इस पत्र में उसने अगस्त 1076 के पत्र में वर्णित अनेक आचारों को दोहराया है किन्तु इस पत्र में सिद्धांतों का अधिक वर्णन तथा निष्कर्षों की अति स्पष्ट अभिव्यक्ति की गई है। यह इस तक के अन्त में प्रारम्भ करता है कि रोम के घमोन्नी रोमनामी को घम-बहिष्कार करने तथा उनकी प्रजा को उन पर निर्भरता की शर्त से मुक्त करने का अधिकार प्राप्त है क्योंकि वह घम प्रथो एवं घमर्च का ही सत्ता के विरसीन है। वह ईसा द्वारा स्वयं तथा पृथ्वी दोनों स्थानों पर सन पीटर को बंधने एवं मृत्यु करन का अधिकार देने वाले गणना को तथा फ्रेगोरी महान एवं अत्यन्त लेखकों के अनेक उदाहरणों को उद्धृत करता है तथा यह प्रकृत है कि जिसे स्वयं को खोलन एवं बन्द करन का अधिकार है वह पृथ्वी पर नियंत्रण भी न कर सके यह बड़ी उक्त मंगत है। सभी परिपद् सत्ताएँ जो मनुष्य निर्मित हैं उन सत्ता के अधीन हैं जिसे स्वयं ईश्वर ने बनाया है। उन सत्ता में जिन्हें प्रायः उद्धृत किया जाता है वह लोचन सत्ता के अथवा एवं पापपूर्ण जन्म का उल्लंघन करता है सम्राट तथा राजाओं का जन्म उन मनुष्यों से हुआ है जो अतिमान मृत्युसोप विश्वासपात तथा हत्या में तथा ज्ञान के निदेश में अन्त सन-गण्य लोगों के स्वामी बनने की अतर्हीय तथा अंधी तानसा करने हैं।⁵⁷ इसमें की सत्ता की किया जा सकता है कि ईसा के पुरोहित सभी निष्ठावानों के स्वामी तथा आचार्य हैं। यह कामटेटाइन की निष्ठा का उदाहरण प्रस्तुत करता है जो ना म की परिपद् में तुल्यम विषय से भी यह बतते हुए कि वह उनका विगत की उक्त मंगत नीचे बना था परन्तु उनको देवता यताते हुए उसका कर्ण था कि वह उनके विचार के अधीन नहीं किन्तु उनके निम्नो के अधीन है। वह जिलेमियस के शब्दों को भी उद्धृत करता है जिनमें यह घोषणा की गई है कि फ्रांसीस का भार अधिक है क्योंकि अतिम नियंत्रण के नि उनको ईश्वर के सम्मुख राजा का भी लेखा देना होगा। उ अधिकारों के प्रत्यक्ष विभिन्न पोपों ने राजाओं तथा सम्राटों को पुराने समय में घम-बहिष्कार अथवा पण्डित किया था तथा वह विशय तथा पोप इन्फोरे ट प्रथम तथा सम्राट ट्राकालिस की पद-धरि तथा पोप जकारियास प्रथम द्वारा अन्तिम मरोनिगियन सम्राट की पण्डित तथा मत अन्त में द्वारा विद्योनेसियन के घम-बहिष्कार का उल्लेख करता है। अन्त में यह अनुपाय करना है कि किसी भी अर्थ ईसाई को राजा मान लेना अर्थात् है अज्ञान्य इसक कि किसी क्रूर राजकुल को स्वीकार किया

जाए। बहुत धोड़े राजा ऐसे हुए हैं जो वास्तव में धार्मिक थे जबकि सेंट पीटर ने अपने उत्तराधिकारियों को अविच्छिन्न पवित्रता प्रदान की है। जिनको चर्च राजा या सम्राट का पद सोचे उन्हें विनीत होना चाहिए उनको ईश्वर के प्रति सम्मान रखना चाहिए तथा न्याय करना चाहिए।⁵⁸

ग्रेगोरी सप्तम तथा हेनरी चतुर्थ के बीच अंतिम विवाद हुआ ही था तथा ग्रेगोरी न ह्यूफ को औपचारिक रूप से सम्राट माना ही था कि अक्टूबर 1080 ई. में गट्टर के युद्ध में लगे घावा के कारण हडोल्फ का मृत्यु होना से एक नई स्थिति उत्पन्न हो गई। इस परिस्थिति के बारे में ग्रेगोरी का दृष्टिकोण 1071 ई. में पामाऊ के बिशप आल्तमान (Altamann) को लिखे गए एक पत्र में स्पष्टतया उल्लिखित है। अपने दावों तथा मांगों को कम करने के बजाय वह उनको अर्थात् स्पष्टतया यत्न करता है तथा उनको और भी अधिक बढ़ा देता है। वह बिशपों से कहता है कि हडोल्फ की मृत्यु के पश्चात् उस पर निष्ठा रखने वाले नगभग सभी लोगों ने हेनरी को स्वीकार करने की उससे प्रार्थना की जो कि उससे पक्ष में अनेक सुविधाएँ देने को राजा था। उन्होंने आग्रह किया कि लगभग सभी गट्टरवासी उमर पक्ष में हैं तथा यदि हेनरी पप्ली पर आक्रमण करे तो ग्रेगोरी को जमनी से विशेष सहायता का आशा नही करना चाहिए। ग्रेगोरी ने इन आशंकाओं तथा परामर्शों का निस्तकोच अस्वीकार कर दिया। स्पष्टतया उनके मन में इसके अतिरिक्त कोई विचार नहीं था कि ह्यूफ के स्थान पर दूसरा राजा चुना जाय तथा तात्कालिक क्षतरे का विचार करने के बजाय वह इसके बारे में अर्थात् व्यग्र था कि निर्वाचित पक्ति योग्य हो। वह आग्रहपूर्वक कहता है कि हडोल्फ के उत्तराधिकारी के निर्वाचन में अनावश्यक शीघ्रता नहीं की जाए यह अधिक अच्छा है कि योग्य या अक्षम पक्ति का चुनने की अपना निर्वाचन में कुछ देरी ही हो जाए। चर्च किसी एक पक्ति का स्वीकार न करेगा जो कि उसने प्रति आणाकारी तथा उपयोगी न हो। तत्पश्चात् वह निश्चित तथा महत्त्वपूर्ण शब्दों में उस शपथ का निरूपित करता है जिसकी निर्वाचित राजा से वह अपेक्षा करेगा। उसे शपथ देनी होगी कि वह सेंट पीटर तथा उससे प्रतिनिधित्व प्राप्त ग्रेगोरी के प्रति निष्ठावान रहेगा तथा पोप जो भी उसकी आज्ञा देगा सच्ची आज्ञाकारिता के नाम पर वह निष्ठा पूर्वक उसका पालन करेगा। वह पोप से चर्चों की अवस्था के बारे में सम्राट का सटेटानन द्वारा चर्चों को दी गयी भूमि तथा राजस्व के सम्बन्ध में दूसरा के द्वारा पाप को गद्दी को सौंप गए चर्चों एवं उनका सम्बन्ध के बारे में इस प्रकार समझौता करेगा कि वह अग्रदूत तथा अपना आत्मा के विनाश के भय से बचता मुक्त रहे। पहली बार जब वह पोप से भेंट करे तो वह सेंट पीटर एवं पोप का सैनिक बन जाए। ग्रेगोरी अत्य विस्तार की बातों को बिशपों के द्वारा तय करने को छोड़कर आज्ञापालन एवं निष्ठा की पूर्ण औपनिषिक्त प्रतिज्ञा पर बल देता है।⁵⁹

यह वाक्य ग्रेगोरी द्वारा कम से कम अन्ततः साम्राज्य के बारे में अब तक किए गए दावों से अधिक विस्तृत दावा के परिचायक है क्योंकि उनके द्वारा अपेक्षित शपथ के अंतिम भाग का अभिप्राय सम्भवतः यही माना जा सकता है कि राजा अपने का रोमन धर्मपीठ का सामन्त मानता है। और यदि यह अतिरिक्त भी हो कि उनका पना गुनिश्चित अर्थ

प्रसिद्धत भय या तो भी सम्पूर्ण सपथ राजा पालन के चरम दावे की परिचायक है।

जर्मनी में दोनो ए तो की बार्ना शीघ्र ही टूट गई तथा हनरी व विरोधियो ने साल्म के हर्मन (Hermann of Salin) को राजा चुना और वह 26 दिसम्बर 1081 ई को अभिषिक्त हुआ। इस समय से मई 1085 ई म ग्रेगोरी सप्तम की मृत्यु व समय तक ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण हम यहाँ नहीं दोगे क्योंकि इन वर्षों क नाटकीय तथा महान घटनाओं म परिपूर्ण होने पर भी साम्राज्य तथा पोप के सम्बन्धों के बारे में कोई नया सिद्धान्त प्रकाश म नहीं आया।

इस प्रकार हमने ग्रेगोरी सप्तम व चौकि एव धार्मिक सत्ता के सम्बन्धों क बारे में दावों के स्वरूप एव सिद्धान्तों पर जने के ऐतिहासिक घटनाओं एव उनक प्रथम ही शांति म स्थित होने हैं विचार किया किन्तु हम उनक वास्तविक एव स्थायी महत्व का मूल्यांकन अधिक पूर्णता से कर सकें इसके लिए अब हम तत्कालीन एव बाद के वर्षों के साहित्य म उनकी संशोचना तथा धारणा का परीक्षण करना चाहिए।

सन्दर्भ

- | | |
|---|--|
| 1 Cf Vol I pp 148 d 255 | 23 Greg y VII R gstrum i 39 |
| 2 St ph n of To na S mma p 198 | 4 Id d 85 |
| 3 Cf p 9 | 5 Id d 30 |
| 4 Leo IX Ep 100 13 | 6 Id d 31 |
| 5 Cf Vol pp 88 89 | 27 Id d 7 |
| 6 P t Dam n Ep Bk III 6 | 8 Id d i 10 |
| 7 Id Op c 23 1 | 29 Lambet A n l 1076 (M G H S S l 5 p 241) |
| 8 Cf pp 45-48 d l pp 206 209 | 30 M G H Leg n Sect IV C n t tute l i 58 |
| 9 Humbert Ad c S m c 9 M G H L b De L t l i | 31 Id d 60 |
| 10 Segf d f M i tz M B mb g n a p 65 | 32 Id id 61 |
| 11 Id id p 69 | 33 G g y VII Reg i 10 () |
| 12 Greg R g t m 9 () | 34 M G H Leg m Sect IV C t ol 6 |
| 13 ३२ ३३ २ ३३ २ ३ ३ | 35 Id d 63 |
| 14 G g VII Reg trum 35 | 36 Gc gory VII Reg i |
| 15 Id d 5 | 37 Id d R g 3 |
| 16 Id d 18 | 38 B rithold An l s a 1076 |
| 17 Id d i 63 | 39 M B mbe g pp 110 111 |
| 18 Cf ol pp 282 287 | 40 Gr g ry VII R g trum i 12 a |
| 19 Lambet f H r s f Id A i () 1073 | 41 Greg ry VII Reg trum 1.2 |
| 20 G g ry VII Regist 9 | 42 Id d 14 cf p 01 |
| 21 Id d 21 | 43 Id d 51 |
| 22 देवें भाग 2 अध्याय 2। | 44 Id d i 24 |
| | 45 Id d i 23 |

- 46 Id id v 14 a
 47 Id v 15
 48 Id 1
 49 Id id vi 17 a
 50 Id Epistolae Collectae 25
 51 Gregory VII Epistolae Collectae 26
 52 Mr Z Brooke of Caius College
 Cambridge tells me that he has some
 doubts about the date of this letter
 53 Gregory VII Epistolae Collectae
 31
 54 Gregory VII Epistolae Collectae
 vii 3
 55 Gregory VII Epistolae Collectae
 vi 14 a
 56 M G H Legum Sect IV Consti-
 tutioes vol 1 No 70
 57 For a full discussion of the signifi-
 cance of the phrase of vol 1 pp
 94-98
 58 Gregory VII Registrum ii 21
 59 Gregory VII Registrum ii 26
-

द्वितीय अध्याय

ग्रेगोरी सप्तम के कार्यों एवं दावों का विवेचन-1

हम विद्यने अध्यायो मे यह बताना चुके हैं कि ग्रेगोरी सप्तम के पदारीहण से पूर्व भी मुघारवादी दल के पादरियों के नेत्रों मे प्रायः ऐसे नवतन्त्रों का पूरण भाव नहीं है जो इस परिवर्तन की ओर सचेत बरत हो कि चर्च प्रथमा पोप के पास एवं ऐसी सत्ता थी जो कुछ प्रथो मे सभी लौकिक सत्ताओं से सर्वोच्च थी किन्तु यह कहना बठिन है कि यथाथ रूप मे इन लेखकों द्वारा इन शब्दों को क्या निश्चित अर्थ प्रदान किया गया है। ग्रेगोरी सप्तम के पदारी एत यह सब बताना जसा हम देख चुके हैं उसने न केवल साम्राज्य सिद्धांतों को ध्वस्त ही किया अपितु उनको निश्चित एवं सुस्पष्ट दावों मे परिणत किया या संभवत यह कहना अधिक उचित होगा कि उसने कुछ ऐसे कार्य किए या करने की प्रवृत्ति दी जिनमे कुछ साम्राज्य सिद्धांत अन्तर्निहित से थे तथा जिनके द्वारा अनुकरण करने वाले कुछ साम्राज्य सिद्धांतों एवं नीतियों के बारे मे आशिक रूप से अभिन हो गए। तथापि हमें यह भी मानना चाहिए कि ग्रेगोरी के मस्तिष्क मे भावे एक तात्किक रूप से विकसित तथा सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था के रूप मे ये न हम यह मानना चाहिए कि वे व्यक्ति भी जो उसके दृष्ट तथा अविच्छिन्न समर्थक थे वास्तव मे उसके सिद्धांतों का सभी प्रथो मे पूरण तथा अनुकरण करते थे। हम न तो तेरहवीं तथा चौदहवीं शताब्दी के उग्रवादी पोपपक्षीय सिद्धांतों को और न तेरहवीं शताब्दी की तत्कालीन विचार प्रणाली को ग्यारहवीं शताब्दी मे बढन का गलती करनी चाहिए। अतः अब हम ग्रेगोरी सप्तम के कार्यों तथा दावों की समकालीन आलोचना या समर्थन का प्रस्ताविक रूप मे अध्ययन करना चाहिए तथा यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि धार्मिक एवं लौकिक सत्ता के सम्बन्धों के विषय मे क्या परिवर्तन सप्तम के पौराणिक विवसित हुई थीं।

इसके प्रारम्भिक अवस्था का अन्तर्गत सार्वभौम उपलब्ध होता है किन्तु सीमाय से वास्तविक के विद्यालय के प्रधान अधिकारी बर्नार्ड तथा आनिक्ल के नेत्रों किन्हीं बर्नार्ड तथा अदलदल के बीच हुए पत्राचार मे यह सुरक्षित है। यह पत्राचार 1076 ई. का माना जाता है तथा सके नेत्रों यद्यपि उस समय भी ग्रेगोरी के समर्थक थे, तथापि

इसमें उनका स्वर अपने उत्तरकालीन लेखों से जिनका हम अभी उल्लेख करेंगे वहाँ मिल्न है। भदलबट तथा बर्नाड ने बर्नाड को ग्रेगोरी सप्तम द्वारा कुछ व्यक्तियों को घम बहिष्कृत करने के स्वरूप के औचित्य के बारे में सम्मति देने को लिखा है जिन व्यक्तियों को वे *publicos et contumaces apostolicae sedis prescriptores* कहते हैं जिसका सम्भवतः अर्थ है जिन्होंने 1076 ई. की वाक्स की परिपद्म भाग लिया है साथ ही वे घम विधायी तथा घम-बहिष्कृत व्यक्तियों द्वारा किए गए सत्कारों के बारे में भी उसकी राय पूछने हैं। हम बर्नाड के उत्तर का दिस्तृत विवेचन नहीं कर सकते किन्तु उसमें हमारे काम के कई महत्त्वपूर्ण सूत्र उपलब्ध होते हैं।

बर्नाड पहले यह कहता है कि पोप का पद सर्वोच्च है तथा उसकी सर्वोच्चता उस पर बैठने वाले व्यक्ति की योग्यता एवं अनुस्यूता पर निर्भर नहीं है यद्यपि रोम का धर्माध्यक्ष सर्वोच्च पद है तथापि पोप ने कब-कब अपनी प्रजाओं को प्रबोधन की अनुमति दे रखी थी क्योंकि वे विधि के शासन के अधीन तथा शास्त्रानुसार रहना चाहते थे। वह यह नहीं कहता कि ग्रेगोरी की कार्य प्रणाली अनियमित है किन्तु उसका विषय विवेचन यह सुझाता है कि इसमें उसे थोड़ा सदेह था। वह ग्रेगोरी के पोप पद के कार्यकाल के बारे में इस आपत्ति पर भी विचार करता है कि उसने इस शपथ से अपने का वाँध लिया था कि वह सम्राट की सौजन्य के बिना उस पद को स्वीकार नहीं करेगा। बर्नाड इस बंधन का सम्मान नहीं करता किन्तु यह कहता है कि यह सम्मान भी हो तो भी रोमन चर्च को स्वतंत्र चुनौती के अपने अधिकार से अधिक नहीं किया जा सकता।

बर्नाड तथा भदलबट बर्नाड को प्रेषित अपने उत्तर में उसका मन स्वीकार कर लेते हैं कि पोप की प्रजाएँ उसे प्रबोधित कर सकती हैं जसा पीटर को पापन किया था तत्पश्चात् वे वाक्स और रोम की परिपद्मों की महत्त्वपूर्ण कार्यवाही का विवरण देते हैं जिसका हम पहले उल्लेख कर चुके हैं। वे वाक्स की कार्यवाही की कठोरतम घटना में निन्दा करते हैं किन्तु यह उल्लेखनीय है कि वे इस प्रश्न के बारे में स्पष्ट नहीं है कि क्या पोप विधिबद्ध सम्राट चर्च की परिपद्मों के निष्पायी हैं अथवा नहीं। व वास्तव में अनेक ग्राम-एवम् व्यक्तियों को मरता को उद्धृत करते हैं जिसमें यह सिद्ध होता है कि रोम का पोप किसी व निष्पायी नहीं है विशेषतः रोम की घमराशा की कार्यवाही का उल्लेख करते हैं जिसने पोप स्याकस (Symachus) के विरुद्ध लगाए गए आरोपों का विचार करने से अस्वीकार कर दिया था तथा उसके ईश्वरीय नियम के लिए छोड़ दिया था किन्तु वे अग्रिम के मामले को अग्रिम मानते प्रतीत होते हैं और वे इस पर बल देते हैं कि ग्रेगोरी सप्तम ने बारम्बार इस बात से सहमति प्रकट की थी कि रोम में अथवा अन्य किसी स्थान पर एक परिपद्म हो जो उसकी नियुक्ति तथा आचरण की परिस्थितियों पर विचार करे तथा यदि वह पद-त्याग के योग्य सिद्ध हो तो वह पोप की गद्दी से उतर जाएगा यह विदित नहीं होता कि उनके द्वारा यह वक्तव्य किस आधार पर किया गया था। उसकी पुष्टि करने वाला कार्य भी अन्य प्रमाण नहीं है। हमारे लिए इसका महत्त्व इस तथ्य में है कि जो व्यक्ति ग्रेगोरी के समकक्ष थे उन्होंने ऐसा कहा था। तत्पश्चात् 1076 ई. में रोम की परिपद्मों की कार्यवाही का विशेषतः हनरी चतुर्थ के घम-बहिष्कार तथा पन्थ्युन

का बर्तान करते हैं तथा यह मानते हैं कि इस धर्म बहिष्कार को धार्मिक रूप में लागू करने में कोई सशय नहीं हो सकता है क्योंकि उसे धर्म के बरताने की ही गई थी तथा उसके विरुद्ध कायदाही स्थापित की गई था।³ इन लक्षणाओं के बाद की सम्मतियों पर हम आगे विचार करेंगे।

दूसरी रचनाएँ जिन पर हम अब विचार करेंगे सभी 1080 ई. में हेनरी के दूसरी बार धर्म बहिष्कार एवं पदच्युति के बाद के काल की तथा उसी वर्ष में ब्रिक्सेन की धर्म सभा तथा हेनरी तथा उसके साथियों द्वारा विरोधी पोप के रूप में ग्युस्ट के निर्वाचन के बाद की हैं। सम्भवतः हमके छोड़े हुए समय का निर्माण गये दो घायों पर विचार करना सुविधाजनक होगा जो कि दोनों पक्षों के उत्तरवादी प्रतिनिधियों सातवाग के घाच विभाग गेवहाट तथा ट्रीयर के धर्म के मतों को अभिव्यक्त करती हैं।

गेवहाट एवं ट्रीयर उदार किन्तु हेनरी से मध्यम ग्रेगोरी सप्तम के बहुरतम अनुयायियों में से था तथा उसने मेन्ड के विभाग हमन को सम्बोधित एक पत्र भ्रमवा लेख में कुछ उन विचारों को रखा है जो उसे सबसे महत्त्वपूर्ण प्रतीत हुए। वह सघष का मूल मुख्यतः चर्च के उस नियम के उल्लंघन में देखता है जो निष्ठावान व्यक्तियों को निर्देश देता है कि उन लोगों को सगनि त्यागनी चाहिए जो धर्म बहिष्कृत हैं विशेषतः उनकी जो रोम द्वारा धर्म बहिष्कृत किए गए हैं।⁴ और इसके लिए उन लोगों की चुट्टि को भी उत्तरदायी बताता है जो कि यह स्वीकार नहीं करते कि धर्म बहिष्कार का दण्ड चाहे मनुष्य उसे प्रायपूर्ण माने भ्रमवा प्रायपूर्ण जब तक सक्षम प्राधिकारी द्वारा समाप्त नहीं किया जाए बाध्यकारी था⁵ और इसका उल्लेख वह विशेषतः 1080 ई. में रोमन परिषद् द्वारा घोषित धर्म बहिष्कार के सधर्म में करता है।⁶ तत्पश्चात् वह जून 1080 ई. में ब्रिक्सेन की धर्मसभा द्वारा ग्रेगोरी सप्तम की पदच्युति तथा विरोधी पोप की नियुक्ति की चर्चा करता है तथा यह मानता है कि यह काय इजिल तथा प्ररितियों के इस सिद्धांत के खिलाफ है कि पोप किसी मनुष्य के निष्ठाधीन नहीं है।⁷ फिर वह उन लोगों के तर्कों का विवेचन करता है जो यह कहते हैं कि वे हेनरी के प्रति निष्ठा की शपथ का उल्लंघन नहीं कर सकते तथा आप्रहं प्रवक्त कहता है कि यह स्पष्ट है कि जो शपथ गलती से ली गई हो या जिसमें कोई बड़ी भारी गलती निहित हो उसका पालन नहीं करना चाहिए।⁸ गेवहाट तदनन्तर हेनरी के समथर पादरिया के विषय में विचार करता है तथा प्रश्न करता है कि क्या यह पादरी के पद के अनुकूल आचरण है कि वे अपनी सम्मति एवं सहायता से एक ईसाई राजा की सहायता मनुष्यों को ईसाई विधान का उल्लंघन करने के लिए विवश करने को श्रद्धावानों को पीछा देने को ईश्वर के मन्दिरों पर राजा करने तथा सत पीटर के सेबको की हत्या द्वारा धर्म-स्थाना को दूषित करने के लिए कर। वे कहते हैं कि वे सत पीटर के भक्त हैं किन्तु वे यह उचित है कि वे सत पीटर के धर्मसत के अधिकारों पर सगिण धात्रमण करें कि उसने राजा एवं धनेक विवशा की गहणा करते हुए एवं भ्रमपूर्ण तथा प्रायपूर्ण दण्डना की घोषणा की थी। वे उनसे यह विचार करने का आप्रहं करता है कि चाहे पोप का काय धनावधक रूप से बढोर हो तो भी मच्छक विवशों के लिए उचित यही था कि वे धार्मिक प्रक्रिया-तगत ही को उपाय करने के लिए राजा को राजी करते

परन्तु इस प्रकार के साधनों से नहीं जो हत्या एवं विनाश के द्वारा चर्च के कानूनों को भंग करें।

धन में वह अनुरोध करता है कि उनके लिए पोप के कार्य की कठोरता एवं उसकी अप्रमत्तता की शिक्षाएँ करते हुए अपने कार्य का औचित्य सिद्ध करने का प्रयत्न भी निरर्थक है क्योंकि वे स्वयं ही समस्त अशांति के कारण थे। उनका वाग्म्य का कार्य ही (1076 ई.) जिसमें उन्होंने प्रगोरी की पद-युक्ति का दण्ड घोषित किया था इस पूरे संकट का मूल कारण था। पोप ने तब उनके विरुद्ध किसी घम-बहिष्कार की घोषणा नहीं की थी अपितु उनके द्वारा ही उनके प्रति आना-पालन को समाप्त किया गया था।⁹ गेब्रहार्ट के निराश्रय के अनुसार यही अशांति मूल रूप में प्रारम्भ हुई तथा इसका कोई भी औचित्य नहीं था।¹⁰

ये तर्क हमारे लिए विशेषतः रोचक है क्योंकि ये गेब्रहार्ट के मत को व्यक्त करते हैं— तथा यह मन में ऐसी उत्पत्ति का प्रतीक होता है जो प्रेगोरी सप्तम के प्रत्येक कार्य का प्रत्यक्ष साक्ष्य में समर्थन करने को तैयार नहीं है—कि सत्य उतना प्रेगोरी के आतिकारी नवाचारों के कारण उत्पन्न नहीं हुआ जितना कि पोप का निराश्रय एवं उसे पद-युक्त करने में हेनरी तथा उसके समर्थक विशेषों के प्रयत्नों के रूप में अधिक आतिकारी कार्यों के कारण। इस प्रकार के प्रयत्न एवं उनके परिणामों को दसते हुए गेब्रहार्ट इस अंतर्गत नहीं मान सकता था कि उन शक्तियों को जो मनुष्या की हेनरी के आना-पालन के लिए बाध्य करती थी अवैधानिक मानना चाहिए तथा उनकी औपचारिक रूप से समाप्त किया जाना चाहिए।

यदि हम सातवें ब्रह्म के गेब्रहार्ट के लेख में प्रेगोरी सप्तम के समय में समय-मत्त का एक प्रतिनिधिक चित्र उपलब्ध है तो हम हेनरी चतुर्थ के अनुपसमर्थकों की स्थिति के सम्बन्ध में एक गणकन वक्त्र या ट्रीपर के बनरिख के एक पत्र में मिलता है जो समर्थक अक्टूबर 1080 ई. तथा अगस्त 1081 ई. के बीच बरडन के विषय विमोडोरिक के नाम लिखा गया था। यह ध्यान रखने योग्य है कि यह पत्र एक गंभीर व्यक्ति द्वारा लिखा गया है जो अभी भी प्रेगोरी को पोप स्वीकार करता था तथा जिसने उसके पक्ष का समर्थन करने के कारण बहुत हानि उठाई थी।¹¹ बरडन का विमोडोरिक उनमें से था जिनकी स्थिति प्रायः अस्थिर रही थी। वह कभी प्रेगोरी के पक्ष में होता था कभी हेनरी के पक्ष में।

बनरिख अपने पत्र का प्रारम्भ प्रेगोरी के उच्च चरित्र तथा योग्यताओं को मनाते हुए करता है और यद्यपि वह उस पर लगाए गए हिंसा तथा महत्त्वाकांक्षा के आरोपों का भी कुछ विस्तार से वर्णन करता है वह इन आरोपों की सरदारी के बारे में स्वयं कुछ भी नहीं कहता क्योंकि उनका उस अव्यक्त ज्ञान नहीं था।¹² तथापि वह उसके द्वारा अत्यन्त अर्थात् पादरिषों की शान्ति के विरुद्ध किए गए उपायों की उद्देश्यकारिता का बड़ी निन्दा करता है वह उस पर असाध्य बर्षा को पा रिया के विरुद्ध उक्ताने तथा इस प्रकार चर्च की सम्पूर्ण व्यवस्था को भंग करने का आरोप लगाता है।¹³ किन्तु यह केवल प्रस्तावना मात्र है।

फिर वह प्रेगोरी द्वारा हेनरी को पदच्युत करने तथा हटोफ की नियुक्ति को अनुमोदित

करने के काम पर इमान देता है तथा मानता है कि यह कार्य पूरातया प्रवधानिक था। वह कहता है कि लीविंग मनुष्यों के राजा के प्रति विरोध म कोई नई बात नहीं थी किन्तु यह पूरातया न नव अथवा नया है कि राजा को अपने पूर्वजों की स्त्री से उतारने की भाषा देने का काम स्वयं करे तथा यदि वह तुरंत भाषापानन न करे तो उसे घम बहिष्कृत कर दे।¹⁴ वह ग्रेगोरी को स्मरण दिलाता है कि राजा मम का अधिष्ठापण एब्बा दुई पायस के विरुद्ध विचार के कारण दायत किया गया था वह व्यवस्थाकरण का ग्रेगोरी ममन् के अधिष्ठापण तथा गिड्डा के सा अध्यात्म प्रदर्शन करता है कि मने मनुष्यों की अपने शास्त्रों के प्रति आश्चर्य तथा उनकी भाषा के पालन का उपस्थित किया है तथा अपने को संगठ की भाषाभाषा के पालन के लिए अपने अग्रहमन होने पर भी बाध्य बताया है। त पश्चात् वह घम बहिष्ठापण प्रश्न के लीविंग का विवेचना करता है तथा अपने तर्कों को धर्मशास्त्रों के अंतर्गत सिद्धांतों से समर्थित करने का प्रयत्न करता है कि अध्यात्मपूरा कारणों से कि एक एक घम-अधिष्ठापण का कार्य वास्तविक प्रभाव नहीं होता।¹⁵ यह दास्तव में प्रत्यक्ष रूप में साजबजब का मवा ट बने व बर्गिन इस सिद्धांत का नी मण्डन नहीं करना कि घम बहिष्ठापण निरालय तत्त्व का माय लोग जब तक कि ममम पदाधिकारी उसे निरस्त न करे किन्तु वह स्पष्टतः पोप के निर्णय के प्रभाव को नियमित करता था ता है। त पश्चात् वह हेनरी की प्रज्ञाओं को गिड्डा की शपथ से मुक्त करने के ग्रेगोरी के दाव के विरुद्ध बहुत ही दृढ़ता से आक्षेप करता है तथा स्पष्टतया अ वीकार कर देता है कि पोप को एसी कोई सत्ता प्राप्त है न दे व मम भी कि हेनरी एक अध्यात्म तथा क्रूर राजा था। वह प्रयुक्त म गुन गिड्डा के श्लोक तथा अध्यात्म शासकों के चरित्र पर ममानक आलोचन करता है किन्तु मने स्पष्टतया तत्त्व गिड्डा तथा अध्यात्मों के द्वारा प्रतिष्ठित किया था परन्तु वे पोप के कृपा प्राप्त थे।¹⁶ म अध्यात्मों द्वारा गिड्डा के प्रतिष्ठापन के प्रश्न पर भी विचार करता है किन्तु इस पर म विद्यते अध्यात्म म विवेचन कर चुके हैं। वह प्रार्थना के रूप में पोप के पद के निर्वाचन की संप्रति करने के मम्राट के अधिष्ठापण का उद्देश भी ग्रेगोरी महान् का उदाहरण देते हुए करता है।¹⁷

वह ग्रेगोरीय को कि दनरिख हेनरी तथा मने ममधकों द्वारा ग्रेगोरी को पोप पन् से मन्मुत करने का अधिष्ठापण सिद्ध नहीं करता यद्यपि वह इसके विरोध सफाई देता है न ही वह प्रत्यक्षतः इसका समर्थन करता है कि तप को हेनरी को घम बहिष्कृत करने का कोई अधिकार नहीं था किन्तु वह इसको अस्वाकार करता है कि पोप का घम-अधिष्ठापण अनिवायत बधानिक था तथा वह ममम रूप से ग्रेगोरी द्वारा हेनरी को गद्व्युत करने एवं उसको प्रजा को उसके प्रति राजभक्ति की शपथ में मस्त करने के अधिकार का मण्डन करता है।

गेबहार्ट तथा वेनरिख ने म पोप म कुछ प्रधान सिद्धांतों के उदाहरणों का बतान के विरोध पर्याप्त हैं जो मम अध्यात्म के मून मने तथा मसा प्राय ऐसे सपथों म होना है प्रत्येक दन दूसरे के पक्ष का उत्तर देने की शपथ अध्यात्म पदा के प्रतिष्ठापन म अधिक ममम होता है दूसरे के द्वारा किये गये अध्यात्म की अध्यात्म अधिष्ठापण ही है बजाय इसके कि अपने द्वारा किये गये कार्य का समर्थन किया जग्ये। म अध्यात्म हेनरी द्वारा ग्रेगोरी की

प्रतिम पत्रयुक्ति तथा विरोधी पोप के निर्वाचन के तुरन्त बाद के समय के हैं किन्तु अधिकांश मुरशिन् पुत्रकार्यों तथा तैल कुछ वर्षों के बाद लिखे गये थे।

उनमें से पहले जिन पर हम विचार करेंगे सम्भवतः 1084 ई. में लिखा गया था जब हेनरी चतुर्थ ने रोम पर कब्जा कर लिया था। वह किमा पीटर क्रसस (Peter Crassus) की रचना है जो राजा के रोमन कानून का अध्यापक रहा होगा कम से कम देखकर वातुनी कानून का अच्छा प्रदर्शन करता है तथा अपनी स्थिति ऐसे शक्ति के रूप में प्रदर्शित करता है जो कि खाना चाहता हो कि हेनरी का पत्र वातुनी पर आधारित है एवं यदि ग्रेगोरी सप्तम रोमन कानून की सत्ता को मानने में अस्वीकार कर दे तो वह हेनरी को एक अर्थ भेजने का प्रस्ताव करता है जिनमें जमा बन् कहता है कि ग्रेगोरी सप्तम ने दोषी कानूनी व्यवस्थाओं अर्थात् नाग्निक तथा धार्मिक कानूनों को चर्च के उपयोग के लिये सग्रहीत किया था।¹⁸

वह मानता है कि सम्राट ने ही चर्च को शान्ति प्रदान की है तथा ग्रेगोरी ने शांति को भंग किया है¹⁹ तथा वह हेनरी को राय देता है कि एक सना मुनाए जिसमें ग्रेगोरी का उपस्थित होन के लिये बुलाया जाये।²⁰ वह ग्रेगोरी पर राजा की ओर का आरोप लगाता है तथा जो आयाधीश के रूप में उभरता हो उनसे उस पत्र के विशेषाधिकारों से वंचित करने तथा उस दंड के नियम लौकिक सत्ता को सौंप देने की शर्तों पर करता है।²¹ यह हेनरी को घम बहिष्कृत करने तथा उसके राजत्व के विरुद्ध पडस्य करने के ग्रेगोरी के कार्यों को वातुनी के विरुद्ध बताना है तथा सेक्सना ने आग्रह पूर्वक कहा है कि हेनरी ने राज्य अनुवर्षिक उत्तराधिकार के कारण पाया है तथा यदि किसी साधारण व्यक्ति को उसका पूर्वज की सम्पत्ति के स्वामित्व से वंचित करना असंभव नहीं है तो एक राजा के राज्य धारण पर आपत्ति उठाना जो कि उसने उत्तराधिकार में पाया था न्याया नुसूल नहीं माना जा सकता। अतः वह राजा पूर्वक कहता है कि जो तो वे जो ग्रेगोरी ही हेनरी के राज्याधिकार का निराकरण करने के लिए बठने का दावा करने के अधिकारी हैं जोकि उनमें अपने पिता में प्राप्त किया है तथा तथा नियुक्ति प्राप्त पाया है। राज्य के अन्तर्गत अनुवर्षिक अधिकार की यह भावना ध्यात देने योग्य है राजनैतिक सिद्धांत के एक उत्तरकालीन विद्वान के पूर्वानुमान के रूप में रोचक है किन्तु यह पर्याप्त रूप में स्पष्ट है कि रोम वातुनी से जमा उठना ही कम सम्बन्ध है जिना प्रारम्भिक मध्य युग के परम्परागत सिद्धांतों में वह मनुष्यों को सिद्धांतों की अपेक्षा करने तथा ज्यों अधिकारों के अंतर्गत राजाओं को देय सम्मान तथा आदर प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित करने की इच्छा पर बल देता है तथा महसूसना जो हेनरी ने राज्य के आग धातमसमपण करने तथा उससे जमा का भीख मांगने की भाव दखर अपने वक्तव्य को समाप्त करता है।²²

यह ग्रन्थ रोमन कानून के विशेष ज्ञान का प्रतिनिधित्व करने के आडम्बर के बावजूद नकों के रूप में किसी भी महत्त्वपूर्ण अर्थ में युक्त नहीं है। हमने पिछली पुस्तक में बारहवीं शताब्दी में बोलोग्ना (Bologna) के वकीलों के राजनीतिक सिद्धांतों का विवरण पसन्द किया है। तथा उनमें अर्थ तथा पीटर क्रसस की व्याख्यात्मक हटव्यमिता में कोई

सम्बन्ध स्थापित कर पाना कठिन ही होगा ।

हमें हेनरी के अधिक कट्टर समर्थकों की स्थिति के बारे में एक अधिक गम्भीर कथन एक अनामक ग्रन्थ में उपाय होना है जो भी उमी का उरी रचना सम्बन्धी जाती है । हमें हम तबसगत कारण मिलते हैं जो कि कुछ सीमा तक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित हैं ।

वह भूतभूत प्रश्न जिसकी ओर चेतना प्रवृत्त होता है पोप-पद हेतु निर्वाचन के निर्धारण में सम्राट के अधिकार का स्थान है । वह रोम के पक्ष के अथवा सब पक्षों पर प्राधान्य में प्रारम्भ करता है तथा एक इतिहासिक प्रतिमय कथन भी सम्मिलित है कि रोम सबका नियंत्रण करता है किन्तु सिद्धांत पोप के उस निर्वाचन के मामले में जो कि अथवा पूरा है तथा साम्राज्यिक गरिमा के प्रतिष्ठान है या फिर विवादास्पद निर्वाचन के मामले में उसका कोई नियंत्रणकर्ता नहीं है ।²⁵ फिर वह अनेक ऐसे मामलों प्रस्तुत करता है जिनमें जसा कि वह मानता है गैर-प्रतिष्ठापित न सिद्ध सम्राट न नियंत्रण किया कि कौन-सा पक्ष सगल पोप माना जाय । यह उदाहरण 377 ई. में दमस्त प्रथम के निर्वाचन से लेकर 963 ई. व 964 ई. में छोटे प्रथम के बाद तक में दिए गए हैं । उनमें अपनी परिणामना को यह कहकर समाप्त करता है कि छोटे के हस्तक्षेप के बाद रोम की सैन्य व जनता ने शपथ ली कि वे उसकी या उसके पुत्र की सम्पत्ति के अन्तर्गत भविष्य में किसी पोप का निर्वाचन नहीं करेगा । वह तत्पश्चात् बयान करता है कि सम्राट हेनरी तृतीय ने कुछ पोपों को पद-मुक्त करके यही नियम बनाया तथा उसने अन्तर्गत को बाध किया जो उस समय उपवादरी था कि वह यह शपथ ले कि उसकी स्वीकृति के बिना *Nunquam se de Papatu Intromissurum* वह पोप निकोलास तृतीय तथा उसकी परिषद् की पोप के निर्वाचन के बारे में अज्ञानता से अज्ञानता का बयान करता है । सम्राट का उदाहरण करता है तथा कहता है कि इस अज्ञानता के कारण जो सभी रोमन पार्षदों एवं जनता की स्वीकृति से की गई थी यह व्यवस्था कर ली गई कि पोप के निर्वाचन में जो कोई उपद्रव सहा करेगा या हेनरी अथवा उसके पुत्र की सहमति बिना पोप बना दिया जाएगा उसे पोप नहीं समझना चाहिए किन्तु शतान और घम त्यागी समझना चाहिए । वह विशेषतः यह कहता है कि फ्रैन्कोन ने इसका शपथ ली तथा अज्ञानता को अनुमोदित किया था ।²⁶

इस प्रकार विगत के बारे में विचार करने तथा पोप की नियुक्ति के बारे में सम्राट के कुछ अधिकारों के दावे के ऐतिहासिक दृष्टांत को प्रस्तुत करके लेखक अपने पक्ष में युग की परिस्थिति का विवरण प्रस्तुत करता है । वह आरोप लगाता है कि हिंडेब्रान्ड ने पोप का पद एक रोमन सामन्त चिंचियस (Chinchius) तथा उसके द्वारा बनाए गए दल की सहायता में प्राप्त किया था । हेनरी ने पोप-पद के इस अधिकार का विरोध करने के लिए तथा उसे पोप की गद्दी से उतारने का आदेश देकर हुए दूता को भेजा था किन्तु उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ और अंत में केवल कुछ पक्षधर तथा दूत-संसद तथा अन्यजनों के बाद हेनरी रोम पर कब्जा करने में समर्थ हुआ तथा अपने प्राचीन परम्परा के अनुसार कर्मेण का पोप-पद पर स्थापन किया तथा उस अधिकारिक दूता ।

वह यह बताता है उसपर करता है कि रोमन सम्राटों ने कुछ व्यक्तियों को पोप के ग्रगोरी से बतकर स्वीकार नहीं किया था कुछ को पण्डित किया था कुछ को स्वयं नियुक्त किया था तथा ग्रगोरी को नियुक्त करने की आज्ञा दी थी।²⁷

हम इस लेख में तर्कों की दो शरणियों को जो असमान मूल्य की हैं देख सकते हैं। हिल्डेब्राण्ड के विवाचन के बारे में वह जो बातें कहता है वे साम्राज्यिक दृष्टि की दृष्टि से अधिक कुछ भी नहीं हैं। दूसरी ओर पोप के निर्वाचन में सम्राट के स्थान के प्रश्न का विवेचन भनीभाति किया गया है तथा साम्राज्यिक दावों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उचित बोध प्रकट करता है।

विडो के जो बातें में ओसनाबुर्ग (Osnaburg) का विषय बना एक ग्रगोरी के दुर्भाग्य से केवल कुछ अंग ही प्राप्त होने हैं। लगभग 1118 ई. के आसपास यह सफल किया गया प्रयोग हुआ है तथा यह मूल रूप में रेवल्ड कंगूट के विरोधी-पोप के रूप में निर्वाचन के समय में किया गया है।⁸ वह इन आधारों पर इसका समय करता है, प्रथम राजा का पोप के निर्वाचन में स्वयं स्थान और दूसरा ग्रगोरी सप्तम की पण्डित्य का पावसगत होना। वह यह मानता है कि चर्च को सुविधा परम्परा से किसी भी पोप के पण्डित्य से पूर्व सम्राट की राय लेनी चाहिए। वास्तव में विडो स्वीकार करता है कि प्रारम्भिक अवस्थाओं में इस प्रकार का कोर्त् पर नरा नहीं थी किन्तु कान्स्टेन्टाइन के धर्म परिवर्तन तथा चर्च के समृद्ध होने के साथ साथ जब पोप का पद मनुष्यों की महत्वाकांक्षाओं का केंद्र बन गया तथा उत्तराधिकार के प्रश्न पर भेद्यारी तथा हिंसक भंग होने लगे तो यह आवश्यक पाया गया कि रोम के राजा हस्तगत करें ताकि विवाचन नियमित तथा धार्मिक नियमों के अनुकूल हो सके। तब से यह प्रथा हो गई कि जब एक पाप का निर्वाचन होता था तो उसका अभिषेक तब तक नहीं होता था जब तक कि राजा को उसकी सूचना नहीं दी जाती तथा वह समय समुचित नहीं होता कि यह निर्वाचन विधिवत् हुआ है तथा जब तक कि वह अभिषेक के बारे में अपनी अनुमति नहीं दे देता।⁹ फिर वह अपनी मायता को सिद्ध करने के लिए अनेक दृष्टान्त प्रस्तुत करता है तथा यह प्रदर्शित करता है कि राजा का निर्वाचन में स्थान सत्त स्वीकृत हुआ है तथा कभी भी उसकी निन्दा नहीं हुई है।³⁰

विडो यह कहने की सावधानी रखता है कि इसका अर्थ यह नहीं कि राजा को कोर्त् स्वीकारारी अधिकार इस मामले में प्राप्त है कबल पादरियों एवं जनता की सहमति से ही उसे पोप को नियुक्त कराने का अधिकार है वह किसी ऐसे व्यक्ति की नियुक्ति नहीं कर सकता जिसे के बारे में कोर्त् सिद्धान्तगत विरोध हो तथा वह किसी ऐसे अधिकार का दावा नहीं कर सकता जो सिद्धान्तों के अनुसार पोप के अधिकार में है। इस प्रकार विडो शास्त्रीय नियम की व्याख्या करता है कि अयाजकों को धार्मिक वस्तुओं के निपटारे का कोई अधिकार नहीं है। तथापि वह कहता है कि राजा वास्तव में अयाजक नहीं है क्योंकि अभिषेक किए जाने के कारण उसका भी पुरोहित के पद में योगदान है।³¹

विडो के ग्रगोरी का दूसरा उद्धरण रोमन राजाओं के धर्म-बहिष्करण का वर्णन करता है। वह बलपूर्वक कहता है कि हिल्डेब्राण्ड से पूर्व किसी पोप ने राजा को धर्म बहिष्कृत

नहीं किया है चाहे वह चर्च व विवाद किसी गंभीर प्रपराध का दोषी ही क्या न रहा हो। इसका कारण यह नहीं था कि उनको मनुष्या व समथन को लोने का भय था अतः यह था कि वे सत्तों के आदेश का ध्यान रखत थे कि सभी कार्य आदिमक उन्नति व विवेक ही होने चाहिए। वह कहता है कि हिंस्ट्राण्ड तथा हनरी चतुर्थ व सपथ का परिणाम गृह युद्ध में भी अतिव्यक्तनीय है अतः यह हनरी को घम बहिष्कृत करने के बाय को अग्रगण्य तथा अग्रमग्न मानता है।³² वह यह भी सिद्ध करने का प्रयत्न करता है कि सत्त अग्रगण्य का सम्राट विद्योत्सव के विच्छेद वम वास्तव में धम बहिष्कार का मामला नहीं था।³³

तीसरा उद्धरण हनरी की प्रजापति को निष्ठा का शपथ से मुक्त करने से सम्बन्ध रखता है। विद्वे मानता है कि चार्ल्स हनरी का घम-बहिष्कार अग्रमग्न था तथा उचित व्यक्ति द्वारा घोषित भी हो तो भी उसकी प्रजापति का शपथ से मुक्त करने के दावे का कोई औचित्य नहीं है। उन्होंने यह शपथ ली है वे अपने को मिथ्या शपथ व लोपा बनाए बिना उसकी तोड़ नहीं सकते तथा वह अति जा मनुष्या को अग्रमग्न करने की स्वीकृति एवं आदेश देता है मिथ्या शपथ का दोषी है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हनरी की प्रजापति को शपथ से मुक्त करने का कारण हिंस्ट्राण्ड के ईश्वरीय कानून का तथा चर्च की व्यवस्था का उन्मूलन किया है शांति के विनाश का कारण बना है पदमग्न तथा पूट को उक्ताया है तथा चर्च और साम्राज्य पर अग्रगण्य विपत्तियों को घोषित किया है।³⁴ अतः वह निष्कर्ष निकालता है कि यह घोषित ही था कि हिंस्ट्राण्ड को पन्थुन किया गया क्योंकि उसने घोष पद की सत्ता का दुरुपयोग किया है आदिमक सत्ता एवं राजसत्ता का एक दूसरे का विरोधी बना दिया है क्योंकि जब चर्च व दो अग्रगण्य एक दूसरे से सपथ म रता हो तो शरीर या आत्मा किसी का भी कायाण नहीं हो सकता।³⁵

ये अग्र विशेषतया दूसरा व तीसरा बहुत स्पष्टतया उन व्यक्तियों के मुख्य सिद्धांतों को प्रकट करते हैं जो 1080 ई. के अंतिम मतभेद के पश्चात् हनरी चतुर्थ के समर्थक थे। इन तर्कों की प्रमुख शक्ति निश्चित रूप से घोष-पन्थ एवं साम्राज्य के ऐतिहासिक सम्बन्धों के आश्रय में तथा उन अनेक व दान्ता में है जिनमें वह यह सिद्ध करने का प्रयत्न करता है कि घोष व निर्वाचन में राय देने का तथा विवादास्पद विषयों में हस्तक्षेप का अधिकार राजा को रहा है। तथापि अग्रगण्य व बिने द्वारा ट्रोगर के वेनरिच की इस भावना को दोहराया जाना भी कम महत्व का नहीं है कि चा राजा को घम-बहिष्कृत करना घोष के अधिकार में था परन्तु शपथ सायं उसका पन्थुन करने या उसकी प्रजा को निष्ठा की शपथ से मुक्त कराने का कोई अधिकार नहीं है।

अब हम अग्रगणी सप्तम के समर्थकों के तर्कों की ओर भी ध्यान देना चाहिये तथा कुछ प्रश्नों पर विचार करना चाहिए जो लगभग उसी समय में लिखे गए थे जिस समय कि वे अग्रगण्य पर अग्र विचार कर रहे थे।

इनमें से सबसे प्रथम जिसका हम विवरण करेंगे सम्भवतः उसी बर्नार्ड का लिखा हुआ है जो कास्टेस के हस्त में अग्रगण्य का तथा 1076 ई. के मध्य के प्रारम्भ में लिखे कुछ पत्रों का हम पढ़ने विवरण कर आए हैं। वह पन्थ जिसमें अग्रगण्य सम्बन्ध है 1085 ई०

म लिखा गया था और यदि यह वास्तव में उस चक्र की ही रचना है तो हम कह सकते हैं कि उस बीच उसका विषय स्पष्ट तथा स्पष्ट हुआ गया था। यह मुहूर्तया धार्मिक लेखकों के विषय क्रम से जमाए गए वाक्य समूहों का एक सग्रह है जो लेखक का विषय के पक्ष की स्थिति का समयन करते हैं।

माल्जबग के गवह्राट जय लेखक स्पष्टतः यह अनुभव करते थे कि सारे सधप का मूल कारण तथा प्रयोगी सप्तम की स्थिति का मूल माधार धर्म-बहिष्कार के सिद्धांतों तथा उनके परिणामों में देखना चाहिए अतः वह इस कठोर धार्मिक सिद्धांत से प्रारम्भ करता है कि 'साई' योगों को धर्म बहिष्कृत व्यक्तियों से कोई व्यवहार नहीं रखना चाहिए तथा यदि वह ऐसा करे तो उसे धर्म बहिष्कार का दण्ड भुगतने को तयार रहना चाहिए।³⁶ वह 'स कठिनार्थ' से परिचित है कि धर्म बहिष्कार अर्थात् पूरा हो सकता है किन्तु यह मानता है कि जय सन यह निरस्त न हो जाए उसका आदर करना चाहिए।³⁷ इस प्रकार पृष्ठभूमि के विवेचन के पश्चात् वह प्रथम मुख्य विषय का अवतारणा करता है जो है इतरी का धर्म बहिष्कार तथा प्रयोगी सप्तम की पद-युति। वह सबसे प्रथम मत अग्रस्तौन का नाम मत क्रॉसोटोम (St Chryostom) का तथाकथित प्रथम क कुछ वाक्य उद्धृत करता है जो यह लिखता है प्रतीत होने है कि राजा का विरोध करना धार्मिक नहीं था।³⁸ किन्तु इसके बाद वह लेखकों का एक उद्धरण प्रस्तुत करके यह दिखलाता है कि कोई भी पौर की धार्मिक मत्ता में मुक्त नहीं था तथा बहुत बड़ा सख्या में ऐसे मामले गिनाता है जिनमें जरी उनकी मायता है राजा और सम्राट धर्म बहिष्कृत तथा पद-युति किए गए हैं।³⁹ तत्पश्चात् वह प्रयोगी सप्तम की पद-युति का वर्णन करता है तथा मानता है कि पाप किसी मनुष्य के निर्णय के अधीन नहीं था किन्तु यदि वह अपराध हाना भी ता भी प्रयोगी का दोषा ठहराना एवं दण्डित करना जिना किसी आवश्यक धर्म विहित दण्ड से किया गया था।⁴⁰ कुछ आगे चलकर वह निष्ठा की शपथ की पवित्रता की विवेचना करता है तथा तर्क देता है कि जो भी व्यक्ति किसी स्वामी का प्रति निष्ठा की शपथ देने है कथोलिक कानून का अंगत हो जाते हैं। किसी स्वामी की उतरी दुष्टता में भी सेवा करना निष्ठा नहीं है किन्तु शपथ का प्रति निष्ठाहीनता है। एक धर्म बहिष्कृत व्यक्ति अथवा ऐसे व्यक्तियों से संपर्क रखने वालों की आनापानन शपथ भंग में उदा अपराध है। किसी ऐसी शपथ का पालन नहीं करना चाहिए जो किसी क देश की मुखा या चक्र का कानूनो का विरहीन हो किन्तु व्यक्ति को ईश्वर का अनिश्चित क्रिया के भी प्रति भक्ति की शपथ नहीं देनी चाहिए न ईश्वर के विरुद्ध शपथ का पालन करना चाहिए।⁴¹ वह इसको सम्राट आटा तथा बेनवेंटम के एडलजोसस (Adelgisus of Beneventum) की एक कथा के उदाहरण में पुष्ट करता है तथा सत अम्बरास के अनेक उद्धरणों से इसका औचित्य सिद्ध करता है।

चाहे इस प्रथम में कोई नवानता न हो तथापि यह स्पष्टतापूर्वक तथा समुचित नाम के साथ पौर के समयका के विषयों को दोहराता है तथा विरोधी पौर म्यूट के विरुद्ध एक प्रबल भयना से समाप्त करना है।

उस समय का सबसे महत्त्वपूर्ण राजनीतिक ग्रंथ लौटनबाख (Lautenbach) के

मेनेगो-ड (Manegold) का ग्रन्थ एड गेबेहाडम (Ad Gebehardum) है। इस पुस्तक के पिछले खण्ड में राजनीतिक सत्ता के स्वरूप के बारे में उसके सिद्धांतों का हम विस्तृत विवचन कर आए हैं।⁴⁴ इस लिए यहाँ हमारा सम्बन्ध केवल धार्मिक एवं लौकिक सत्ताओं के सम्बन्धों तथा ग्रेगोरी सप्तम एवं हेनरी चतुर्थ के वास्तविक सघष के वर्णन से ही है। मेनेगो-ड के ग्रन्थ का हम ट्रीयर के वनेरिच की आलोचना के प्रत्युत्तर में ग्रेगोरी की नीतियों का तत्कालीन समय तथा भौचित्य सिद्ध करने का उद्देश्य कह सकते हैं तथा अपने विषय के विकास में वह उसी क्रम की अपेक्षा है जो कि वनेरिच ने अगोकार किया है।⁴⁵

वह वनेरिच द्वारा उगाए गए या सूचित किए गए ग्रेगोरी के चरित्र के प्रति आक्षेपों का उत्तर देने हुए प्रारम्भ करता है⁴⁶ तथा उसकी चर्चा सुधार की नीति का ससयन करता है। इसमें वह विशेषतः धर्म विषय तथा जिसे वह गिशापो का अधिवाहित व्यभिचार कहता है वे प्रचलन पर देता है तथा वह इस विषय में दोषी पादरियों की सेवाओं को प्रस्वीकार करने के लिए अपने जन साधारण के आशाह्न के काय का भौचित्य सिद्ध करता है।⁴⁷ तत्पश्चात् वह मध्य सघष के प्रारम्भ होने का वास्तविक परिपद की कायवाही का जिम्मा हेनरी को धर्म-बहिष्कृत एवं पन्थुत किया गया था वर्णन करता है।⁴⁸ इसके बाद उसके ग्रन्थ का सबसे विशिष्ट एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग आता है—एक निरंकुश शासन को पदच्युत करने के प्रजाजनो के अधिकार का तथा प्रजाओं की निष्ठा की शपथ से मुक्त करने के पोप के अधिकार के सहाय्य का विवचन।⁴⁹ वह वनेरिच के सम्मेलन का वर्णन करता है कि पोप पन्थुत के चुनाव में सम्राट की स्वीकृति की आवश्यकता है⁴⁸ तथा वह प्रजाजन प्रतिष्ठापन के विषय का समयन करता है।⁴⁹

हम मेनेगो-ड द्वारा प्रतिष्ठापन के प्रश्न के विवचन का अध्ययन करने पर आए हैं।⁵⁰ तथा यहाँ उनके द्वारा ग्रेगोरी के चरित्र के समयन से हमारा कोई प्रयोजन नहीं है किन्तु हम ग्रेगोरी और हेनरी के सघष के प्रारम्भ के उसके द्वारा दिए गए विवरण का तथा हेनरी के धर्म-बहिष्कार तथा उसकी पन्थुत के भौचित्य का कुछ अधिवासी सावधानी से अध्ययन करता है। मेनेगो-ड द्वारा वास्तव तथा रोम की परिपदों की कायवाही का विवरण मुख्यतः बर्नार्ड के विवरण तथा ग्रेगोरी के पत्रों से लिया गया प्रतीत होता है। वह ग्रेगोरी को हेनरी से उसके विभिन्न अपराधों के विरुद्ध कई वर्षों तक विरोध करता हुआ तथा अन्त में देतावनी देता हुआ प्रदर्शन करता है कि यदि उसने अपने कार्यों के प्रति पश्चात्ताप नहीं किया तो वह उस धर्म-बहिष्कृत कर देगा। हेनरी ने अपने दुष्कर्मों को स्वीकार करने के स्थान पर वास्तव में गिशापो तथा राजाओं को एकत्रित किया तथा उनकी राय एवं परामर्श से ग्रेगोरी की पन्थुत की घोषणा कर दी तथा दूतों द्वारा रोम परियद को इसकी सूचना दे दी। इस कारण अन्त में ग्रेगोरी और रोम की परिपद को हेनरी के धर्म-बहिष्कार तथा निष्ठापन में पन्थुत की घोषणा करनी पड़ी।⁵¹ इस प्रकार काय की परिस्थितियों एवं कारणों का विवचन करने के पश्चात् मेनेगो-ड अपने ऐतिहासिक दृष्टान्त प्रस्तुत करता है। वह आरोप लगाता है कि ग्रेगोरी महान् ने सम्राट मारिस की पदच्युति तथा मृदुलता का सहमति दी थी सम्राट कार्लोटाइस को पोप फेनक्स द्वारा धर्म-बहिष्कृत किया गया था पायस जुई को गिशापो ने तपस्या करने को विवश किया था

पोप स्टीफेन के अधिकार से वित्पेरिक (Chilperic) को पदच्युत करके पिप्पिन (Pippin) को फ्रैंक लोगों का राजा चुना गया था तथा पार निर्रोस ने सम्राट लोथेयर (Lothair) को उसकी उपपत्नी वाल्ड्राडा (Waldrada) के कारण घम बहिष्कृत कर लिया था। (हमारा यहाँ इसके बवत-यो की एतिहासिक सत्यता से मतनव नहीं है)।⁵² फिर वह अनेक उपाहरण देता है जिनमें राजाओं को उनकी ही प्रजाधा न पदच्युत कर दिया था तत्पश्चात् राजत्व के स्वरूप के बारे में विवाद है जिसका विस्तृत विवेचन हम पिछली पुस्तक में कर चुके हैं जिसमें वह यह सिद्ध करता है कि राजा अपनी सत्ता को उस सम्झौते या सहमति के कारण धारण करता है जिसमें उसने कानून और न्याय को बनाए रखने की प्रतिज्ञा की है तथा जाता न आना पालन की प्रतिज्ञा की है और वह तक बता है कि हेनरी के द्वारा किए गए अपराध उसकी पदच्युति का पर्याप्त रूप से औचित्य सिद्ध करते हैं।⁵³

एक स्थान पर हमारा सम्बन्ध इस प्रश्न से नहीं है जिस पर हम पिछली पुस्तक में विचार कर चुके हैं किन्तु मनेगोड द्वारा पोप के कार्यों के वर्णन में है तथा हम इसीलिए ध्यान रखना चाहिए कि वह तुरन्त मुख्य तर्क की ओर लौट आता है अर्थात् हेनरी चतुर्थ एवं उसके समयकों द्वारा पवित्र पोप पर तथा चर्च की एकता के विरुद्ध अभ्यन किया गया था अतः यह मायोचिन था कि उसे धार्मिक निष्ठा एवं नीतिक्रम बना देना के द्वारा बाध्य किया जाए।⁵⁴ यह स्पष्ट है कि वह त्रेगोरी सप्तम के कार्य को मुख्यतः वाम्म से हेनरी तथा उसके समयकों के कार्य की दृष्टि में उचित ठहाराता है तथा साथ ही वह इस विषय में भी अनिश्चित है कि यह कार्य—अर्थात् हेनरी को घम-बहिष्कृत करना तथा पदच्युति पोप के अधिकार में था। त्रेगोरी द्वारा हेनरी का प्रजा को निष्ठा की शपथ से मुक्त करने का समयन वह जसा कि हम पिछली पुस्तक में कह आए हैं यह कहकर करता है कि यह इस सावजनिक एवं अधिकार मुक्त घोषणा से अधिक कुछ भी नहीं है कि अन्य पहले से ही प्रामाण्य थी।

मुत्रों के विषय धोनीजो के ग्रन्थ जिसका नाम एड एमाकम (Ad Amicum) है कि सातवीं तथा आठवीं पुस्तक में त्रेगोरी सप्तम के पोप पद के कार्यकाय का महत्त्वपूर्ण विवरण मिलता है किन्तु वह पूरी तरह से विश्वसनीय नहीं है। वह त्रेगोरी का एक कट्टर समयक था यद्यपि उसने कथनों का प्रायः सावधानी से अभ्यन करना चाहिए तथापि उसने अपने युग की घटनाओं में पर्याप्त रूप से भाग लिया है तथा विशेषतः लम्बाई के पैटेरिया (Pataria) तथा मिलन के चर्च के मामलों के बारे में बहुत सी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ सुरक्षित रखी हैं। उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए 1076 ई. में वाम्म की परिपद द्वारा त्रेगोरी सप्तम की पदच्युति तथा उसी वर्ष में रोम की परिपद द्वारा हेनरी के घम-बहिष्कार तथा पदच्युति के वर्णन में कोई विशेष तबीनता नहीं है तथा जसा हम पहले देखते आए हैं वह त्रेगोरी के न्याय की बहुत अधिक उचित सिद्ध करता है। वह कहता है कि त्रेगोरी को पवित्र पोप पद से च्युत करने के राजा के प्रयत्नों के कारण उसको घम-बहिष्कृत करना न्यायसंगत था तथा वह यह दिखान के लिए अनेक दृष्टांतों को उद्धृत करता है कि पुराने काल में पोपों ने राजाओं को घम-बहिष्कृत एवं पदच्युत

भी किया है।⁵⁶ व० व० सशक्त शा० म 1077⁵ म फारस नामक स्थान पर जमान राजकुमारों को सडोलक के निर्वाचन के लिए उत्तरदायी ठहराता है तथा इम इतिहास की बहुत सी घटनाओं का कारण बताता है।⁵⁷

एक छान प्रथम जो मुकाबला बिगार एसनम के नाम से प्रसिद्ध है तथा जिसे उसने सभ्यता 1085 ई० म प्रोगोरी सप्तम की मृत्यु के कुछ समय बाद लिखा है विरोधी पोप ग्युबट के विरुद्ध गहरा आघात है तथा यह समय का एक बड़ी सीमा तक कारण इनरी के प्रथम विजय तथा चर्च की स्वतंत्रता का नष्ट करने के उमक प्रयत्नों को बताता है।⁵⁸

उस बर्तानु द्वारा लिख गए प्रथम प्रथम सराजिन है जिन्होंने 1076⁵ म बनाने म पत्राचार की हम पहले ही चर्चा कर आए हैं।⁵⁹ इनम से एक प्रथम जो सभ्यता 1086

म प्रोगोरी सप्तम की मृत्यु के बाद लिखा गया था व गोरदार रूप म तीन युवा के बारे म चर्चा करता है। प्रथम निष्ठावाना को घम बहिष्कृत पत्निया का सम्पत्तियाग करना चाहिए और विधायन विरोधी पाप ग्युबट तथा उसका अनुयायियों का द्वितीय कि राजा प्रथम मनुष्यों की भाँति चर्च की गता व ही प्रधीन हैं और उनका घम बहिष्कार किया जा सकता है तृतीय प्रोगोरी ने मनुष्यों को शपथ म व लिए प्रेरित नहीं किया किन्तु उसी सत्ता से जिससे उसने उनके शासकों को घम बहिष्कृत एवं पदच्युत किया था मनुष्यों को आजापालन की शपथ से भी मुक्त कर दिया।⁶⁰ व० एक प्रथम म जिसका सामग्य प्रतिबिम्बित है इन्ही विषयों पर बहुत महत्वपूर्ण ढंग से विवेचन करता है तथा सबसे पहले यह तक दना है कि यदि सा पाटर के उत्तराधिकारियों को जमा व बता चुका है बाँधन एवं मुक्त करने का अधिकार है और स प्रकार यदि चर्च के पाठियों को भी पदच्युत करने का अधिकार है तो नैतिक राजाओं का पदच्युत करने का अधिकार तो उत्तम कहा अधिक है जिनकी गरिमा मनुष्य वृत्त है और वृत्त प्रोगोरी मनुष्य के बहुधा उद्घृष्ट सलाहों के कारण से इसकी पुष्टि करता है तथा कई बहुधा चर्चित दाहरण देता है दूसरे यह कि यदि उनको शासकों को पदच्युत करने का अधिकार था तो स्वयं उनको प्रजाओं को भक्ति एवं आजापालन की शपथ से मुक्त करने का भी अधिकार था तीसरे यह कि इसी शपथ प्रथम शासकों के लिए तथा तक वास्तव म ली जाती है जब तक कि वे पद पर हों तथा यदि उनको अपानिक रूप से पदच्युत किया गया हो तो किसी भा प्रकार से उनकी बाध्यता नही है और इस प्रकार म चर्च न केवल उनके दुबल मान्यता का शान म रख कर मनुष्यों का औपचारिक रूप से शपथ मुक्त किया है जो कि इन मामलों म जब तक विशेषतया उसका उद्देश न कर दिया गया हो यह जान न सके कि क्या हुआ है।⁶¹

उस युग का सबसे महत्वपूर्ण प्रथम करारा के विषय विषयों द्वारा 1086 ई० म प्रोगोरी सप्तम की मृत्यु के बाद किन्तु उसका उत्तराधिकारियों के निर्वाचन से पूर्व लिखा गया प्रथम है। व० विरोधी पाप ग्युबट (क्वैमेण्ट) के अनुरोध पर लिखा गया है तथा उसका उद्देश्य यह सुझाना ही सत्ता है कि चूँकि अब प्रोगोरी सप्तम की मृत्यु हो गई है अतः उसका अनुयायियों को भी क्वैमेण्ट की स्वीकार करना सभ्य है। इस प्रथम के बारे म विचित्रता उसके प्रथम भाग म प्रोगोरी सप्तम का सशक्त एवं स्पष्ट समर्थन है, वास्तव म उसका पक्ष

को प्रस्तुत करने वाला यह सबसे प्रभावशाली वचनव्य है—जो सार एव प्रस्तुतीकरण की सशक्तता के कारण उसके बख के दूसरे भाग में अधिक प्रभावशाली है जिसमें हारी चतुथ एव उसके समर्थको द्वारा ग्रगोरी के विरुद्ध लगाए गए आरोप है।

ग्रय के प्रथम भाग का प्रारम्भ विडो हिंन्नेत्र का उच्च चरित्र तथा शक्ति तथा उसके नियमित एव सिद्धान्तानुसूत्र पोष-पद पर निवचन में करता है ⁶⁴ फिर वह हनरी चतुथ के यत्नितगत दोषा तथा उसके द्वारा घम विषय के व्यवहार का तथा ग्रगोरी द्वारा उसके मन एव चरित्र को उच्छेदना का प्रयत्नो का गभीर विवरण देता है। हनरा न परन्तु कोई ध्यान नहीं किया तथा ग्रगोरी द्वारा कठोर वक्तव्य उठाने की घमका देने पर वह जमनी के उम्बाडों के विरोधा को एक साथ बुलाकर उसी निम्न करने की आशा देता है। वेवा तभी ग्रगोरी एव रोम के विशप हनरी को पूणतया परवात्ताय रहित पाकर उसे घम बहिष्कृत एव पञ्च्युत करत है ⁶⁵ तत्रश्चात् विडो घर्माचार्यों के अनक वचन-समूहो को उद्धृत करत है कि वचन है कि वचन की सत्ता राजाया तथा सम्राटा पर भी है तथा अनक उदाहरण देता है जिनमें राजायो तथा सम्राटा को घम बहिष्कृत एव पद-युक्त किया गया है ⁶⁶ वह मुसाबिया के ह्योफ का उमकी निष्ठा की शत्रु के वावजूद राजा के विरुद्ध खना करने के कारण ग्रगोरी पर हुए आरोपों का विवरण प्रस्तुत करता है किन्तु वह तक देता है कि पहन तो ग्रगोरी न सदा यह माना है कि उसने ह्योफ को स्वयं नियुक्त नहीं किया दूसरे यह कि हनरी की याय सगा यह युनि हो चुकी थी और इसलिए ह्योफ उमका भक्ति के दावे में मुक्त था और यदि ग्रगोरी ने ह्योफ के निवाचन की पुष्टि कर दी तो वह को गनन काय नहीं कर रहा था। ⁶⁷ वह ग्रगोरी पर लगाए गए इस आरोप का उत्तर कि उसने जमना को हनरी के विरुद्ध युद्ध करने को उकसाया है—स तक द्वारा देता है कि वह केवल घर्माचार्यों के नियम के अनुरूप ही काय कर रहा था कि दुष्ट लोगो पर क्रमण करना तथा उनका दवाना उचित है यह सतो के लिए उचित हो सकता है कि वे अपना उचाव न कर किन्तु याय को बनाये रखना एक पूणतया भिन्न विषय है ⁶⁸ अब ग्रगोरी ने जमनो को हेतरी के प्रति निष्ठा को अपय स मुक्त किया तो वह केवल यह याय कर रहा था कि वह शपथ अवध हो चुकी है। यह भी आरोप लगाया गया है कि ग्रगोरी ने अयाजका को घम विषया एव विवाहित पादरियो पर आक्रमण एव उनमें दुःखकारण करने के लिए उकसाया कि तु विडो उत्तर देता है कि उसने सदा उनके आचरण का निम्न करत हुए भी उनके साथ ही हिंसा पर दुःख प्रकट किया है तथा घमाचर्यों के विभिन्न वाक्य समूहों का उद्धृत करके वह ग्रगोरी द्वारा निष्ठावानों को उनसे सहाय प्राप्त करने के निषेध का औचित्य सिद्ध करता है ⁶⁹ वह घनेक अधिकारियों को उद्धृत करके ग्रगोरी द्वारा आक्रमण प्रतिष्ठापन के निषेध को उचित ठहराता है ⁷⁰ तथा सनेम उन लोगों का भी प्रस्तुत करता है जो यह मानते थे कि गूबट (बनेमेश तृतीय) का निर्वाचन अवध है ⁷¹ वह अपने ग्रय के प्रथम भाग का समापन हनरा द्वारा रोम पर अधिकार के सक्षिप्त वर्णन नगर की रक्षा के लिए उमका सामना करने को नारमनो का आगमन तथा नगर का लूटना और ग्रगोरी के अन्तिम निष्क्रमण एव मृत्यु से करता है। ⁷² तसा हम पहन कह चुके हैं हिंन्नेत्र का यह

समयन सुविचारित है एवं प्रभावशाली ढंग में अभिव्यक्त किया गया है।

अपने ग्रन्थ के दूसरे भाग में विडो प्रगोरी ने विरुद्ध लगाए गए प्रमुख आरोपों तथा उसकी पदस्थिति एवं ग्यूबट के घोष के रूप में निर्वाचन का उचित टहराने वाले तर्कों को प्रस्तुत करता है। सबसे प्रथम वह यह तर्क देता है कि निरोचन तृतीय के विधान के विपरीत प्रगोरी राजकीय सहमति के बिना निर्वाचित हुआ था तथा वह उन सन्धि विवादन्तियों का भी उपासक करता है कि उसने निर्वाचन रिश्तों के द्वारा करवाया था।⁷¹ दूसरे वह यह तर्क देता है कि यदि प्रगोरी अध्यात्मिक रूप से निर्वाचित भी हो तो भी उसने अपनी सत्ता के दुरुपयोग के कारण अपनी गरिमा खो दी थी। उसने धर्माचार्यों के सभी निदेशों के विपरीत युद्ध छेड़ा था, हड़ताल को गद्दी पर बैठाने तथा जमनों को उनकी हठनरी के प्रति निष्ठा की शपथ में मुक्त करने के कारण वह हत्या एवं घण्टी भंग का कारण रहा था। उसने धर्माचार्यों के सिद्धांतों के विरुद्ध यह सिद्धांत भी कि मतभेद उपस्थित करने वाले तथा धर्म बहिष्कृत व्यक्तियों के संस्कार प्रवर्ध हैं। उसने धर्माचार्यों के हठनरी तथा धर्म व्यक्तियों को धर्म-बहिष्कृत किया था तथा उनमें धर्मव्यय विधि विधान के स्वरूप का ध्यान नहीं रखा था।⁷² तीसरे वह यह तर्क देता है कि यदि प्रगोरी के विरुद्ध लगाए गए आरोपों तथा इन निष्कर्षों को कि उसने अपनी सत्ता का स्वरूप खो दिया था, वेदा भी कर दी जाए तथा ग्यूबट का पहला निर्वाचन अनियमित था, यह भी स्वीकार कर लिया जाए तो भी धर्म प्रगोरी का मुख्य ही तुर्गो थी। इसका बोझ कारण नहीं था कि ग्यूबट को प्रथम घोष स्वीकार नहीं किया जाए तथा वह इसके अनेक समरूप उत्साहरण प्रस्तुत करता है जो धर्म धर्म पद्धति को उचित सिद्ध करते हैं।⁷³ हम विडो द्वारा प्रतिष्ठापन के प्रश्न के विवेचन का पहले ही कारण कर चुके हैं⁷⁴ तथा यहाँ केवल यही कहा जा सकता है कि विडो प्रतिष्ठापन के जो तर्क निर्वाचन का सम्बन्ध केवल धर्म पद की लौकिक सम्पदाओं का मानना है। वह अपने ग्रन्थ का समापन यह कह कर करता है कि दो तर्क हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि प्रगोरी निष्ठा के योग्य है। पहला यह कि उसने हड़ताल को राजा बनवाया और इस प्रकार अनेक मनुष्यों की हत्या तथा अनेक जमनों के शपथ भंग का कारण बना। दूसरा यह कि वह धर्म में पूरा डालने का अपराधी था क्योंकि उसने धर्म बहिष्कृत तथा धर्मोपेक्षा पुरोहितों में संस्कार करवाने को जनता से मना कर लिया तथा उनका मन्त्रों को मान्यता दान से अस्वीकार कर दिया।⁷⁵

कुछ वर्षों के बाद एक ग्रन्थ जिसे जॉर्ज शीपक था *De Unitate Ecclesiae Conser-
vanda* लिखा गया तथा उसकी परीक्षा करके हम इस अध्याय को समाप्त करते हैं।
जसा कि पाठ्य में विभिन्न सन्धियों से सिद्ध होता है यह प्रथम 1090 ई. तथा 1093 ई.
के बीच लिखा गया किन्तु उसका सख्त अनिश्चित है। इसमें बहुत सी ऐसी महत्वपूर्ण
बातें हैं जिनका विवेचन हम यहाँ नहीं कर सकते। विष्णुपत 1086 ई. से लेकर 1092
ई. तक जमनों की राजनीतिक तथा धार्मिक दशाओं का वर्णन। हम मुख्यतः लेखक द्वारा
प्रगोरी सत्ता के दावों की कि उस नामा और सम्राटों को धर्म बहिष्कृत करने तथा
पदच्युत करने का अधिकार था तथा उस उत्पन्न होने वाले लौकिक एवं धार्मिक सत्ताओं
के सम्बन्धों के बारे में सम्पूर्ण प्रश्न के विवेचन तक ही अपनी को सीमित रखना होगा।

यह निरीक्षण करना अत्यन्त रोचक है कि पहली बार राजाओं के घम बहिष्कार तथा पदभ्रंश तथा कथित दृष्टान्तों के बारे में हमें यहाँ आनोचनात्मक ऐतिहासिक विवाद उपलब्ध होता है। वह सब प्रथम शक्तिमत् गोविंजियन राजा चित्रपेरिक की तथा कथित पदभ्रंश तथा पिप्पिन पोप उखारियास तथा पोप स्टीफेन द्वारा पिप्पिन की फ्रोंको के राजा के रूप में नियुक्ति पर विचार करता है। वह वास्तव में इसे अस्वीकार नहीं करता कि पोपो ने उनका भाग लिया था किन्तु वह यह मानता है कि उन्होंने केवल अपनी सहमति एवं सत्ता उस कार्य को प्रदान की थी जो फ्रोंक राजाओं की सामान्य सहमति एवं सत्ता से किया गया था। अतः वह इस बात को उद्धृत पूर्वक कहता है कि ग्रेगोरी ने सारे मामले को यह कह कर कि पोप ने ही केवल मात्र अपनी सत्ता से चित्रपेरिक को पदभ्रंश किया तथा फ्रोंको को निष्ठा की शपथ से मुक्त किया था गलत रूप में प्रस्तुत किया है।⁷⁶ तदनन्तर लेखक ग्रेगोरी द्वारा उद्धृत घम बहिष्कार के मामलों को लेता है वह वास्तव में इसे अस्वीकार नहीं करता कि सत अम्ब्रोस ने थियोडोसियस को घम मनास बाहर कर दिया था किन्तु वह आग्रह पूर्वक कहता है जब सत अम्ब्रोस ने थियोडोसियस को इस प्रकार बहिष्कृत किया तब उसने उसकी राजनीतिक सत्ता या भिन्नता में हस्तक्षेप करने का प्रयास नहीं किया तथा उसने और पोपो ने सम्राट बेनेडिक्टिनियन तथा उसकी माना जस्टिना तथा दूसरे विषयों के विषय में भी वसा नहीं किया।⁷⁷ दूसरी ओर वह पोप इन्नोसेंट प्रथम द्वारा सम्राट अर्कॉडियस के तथाकथित घम बहिष्कार की सच्चाई में भी सन्देह करता है तथा तब देता है कि ऐतिहासिक लेखों में इसका कोई बयान नहीं मिलता तथा इसका कोण पर्याप्त कारण नहीं मिलता कि वसा क्यों किया गया होगा तथा जसा कि उसके कानूनों से विदित होता है।⁷⁸ अर्कॉडियस एवं चर्च के सम्बन्ध मित्रतापूर्ण थे।

इन तथाकथित ऐतिहासिक दृष्टान्तों की आनोचनात्मक परीक्षा रोचक एवं प्रभावशाली है क्योंकि निस्सन्देह उनमें ही अन्वेषण की स्थिति में एक दबल सूत्र पकड़ लिया किन्तु इस प्राय में केवल यही महत्त्वपूर्ण नहीं है। वास्तव में इसका सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष दोनों शक्तियों के विभिन्न कृत्यों का तथा उनके समान दबो सत्ता में सिद्धांत का सुविचारित बयान और विवेचन है। वह पोप जिनेसियस प्रथम के देखा से कुछ महत्त्वपूर्ण वाक्यसमूहों को उद्धृत करता है ताकि वह यह सिद्ध कर सके कि इश्वर ने ही स्वयं दाना सत्ताओं अर्थात् लौकिक एवं धार्मिक को दनिया का शासन करने की आना दी थी तथा ईसा ने ही दोनों को एक दूसरे से पृथक् किया था। लौकिक सत्ता का कार्य बुरों को दंड देना तथा अच्छों को पुरस्कार देना है। यह स्पष्ट है कि इश्वर ने यह आदेश नहीं दिया कि सभी अपराधों का दण्ड चर्च के अध्यक्ष द्वारा ही दिया जाए इनमें से अनेक का निराकरण लौकिक सत्ता द्वारा किया जाना चाहिए। पुरोहितों के पास केवल एक तलवार है वह आध्यात्मिक है। वह यह भी आग्रह करता है कि पुराने जमाने में प्रायः ऐसा रहा है कि राजा एवं सम्राट घमद्रोहियों के मित्र एवं संरक्षक रहे हैं किन्तु उस दशा में भी विजयों एवं पोपो ने उनसे आदरपूर्ण एवं शान्तिपूर्ण शान्ति में सम्बोधित किया है ताकि वे चर्च में शान्ति बनाय रख सकें तथा इसके दृष्टान्त-स्वरूप वह पोप जिनेसियस तथा एनेस्टसियस के पत्रों में अनेक वाक्यों को उद्धृत करता है। यह सभी भी इन पोपो के विचारों में नहीं आया कि उनको सम्राटों की

पदस्थान करने का प्रयत्न करना चाहिए इसके बजाय उन्होंने उनको ईश्वर के पाप पर छोड़ दिया।⁷⁹ उदात्त श्रेणियों के एक परवर्ती स्वच्छ मन्म पर पुन विचार करता है तथा जोना साक्षात्की प्रयत्नता एवं स्वतंत्र विचार के सिद्धांत को पुन पुष्टि करता हुआ यह तब जाता है कि सिन्डेराणा तथा उसके विरोधों ने वास्तव में दबी व्यवस्था को उभूतित किया तथा एक ऐसी सत्ता के प्रपहार का प्रयत्न किया जो उनकी उदात्त राजा की थी।⁸⁰

एक प्रकार का प्रथम स्तर से उदात्त मन्म-वपूण है कि यह प्रयोग मन्म के दावों के मन्म-वपूण प्रश्न को अपनी शक्ति स्पष्टता में उठाना है जिना कि प्रती तब कभी भी नहीं किया गया था। वह वास्तव में इनके शक्ति मन्म-वपूण एक प्रत्यक्ष विकसित स्वरूपा का उदात्त नहीं करता जो प्रगोरी के उदात्त के कथनों में उपलब्ध है⁸¹ किन्तु वह प्रगोरी के सम्पूर्ण दावों का जो महान समभता है वह उन उदात्त वपूणक प्रकट करता है तथा यह मानता है कि दोनों सत्ताओं के बीच का प्रति में दोनों का विनाश ही हो सकता है। मने पिछले स्वच्छ मन्म श्रेण का विभीषीमा तब प्रगोरी महान की इस परम्परा के प्रयोग का उदात्त सीमा तब उदात्तरण मानता है कि राजकीय सत्ता इस श्रेण में ईश्वर उदात्त तथा दबी की उमका विभीषी रूप में भी विरोध श्रेणियों में उदात्त तथा प्रभाव था⁸² किन्तु इसका मन्म सिद्धान्त से उमका उदात्त मानना का धम नाना जाना चाहिए जिसके अनुसार सिन्डेराणा के दावों ने उदात्त वपूण सत्ताओं के ईश्वर श्रेणियों के निर्धारित विभेद को समाप्त कर दिया था।

अतः मन्म उस शतावदी पर ध्यान दे सकते हैं किम्व अन्तगत तब न विरोधी पोप ग्रेगरी के निर्वाचन के प्रश्न तथा कम से कम प्रगोरी मन्म की मृत्यु के पश्चात् उसके पोप रूप में स्वीकार किये जान कनाब का वपूण किया है। वह हेनरी को इस इच्छा में रोम आना द्वारा प्रोत्साहित करता है कि या तो प्रगोरी में समभौता कर ल या यदि वह सम्भव न हो मने ता हमारे पाप का निवारण कर दें। जब प्रगोरी ने उसमें तब तक मितना स्वीकार कर दिया जब तक कि वह उमका हाथा में साक्षात् को न सौंप दे तो उम विरोध श्रेणियों वपूण प्रयोग करना पड़ा। जब उसी शहर पर कब्जा कर लिया तो रोम के चर्च ने ग्रेगरी को पोप बन लिया तथा उसने हेनरी का ग्रेगरी के रूप में अभियेक कर दिया।⁸³ निम्न मन्म तथ्य को दिया जाता है कि ग्रेगरी का हेनरी तथा उसके पक्ष के विशेषता नून 1080 ई. में विवसाय में ही पाए चुन लिया था स्पष्टतया वह उसके पोप पद पर जाने को रोमन चर्च द्वारा 1084 ई. में उमके स्वागत श्रेणियों निर्वाचन पर आधारित करना चाहता है। तथापि एक बात के सम्बन्ध में वह सुझाव देता है कि चाहे मूद निर्वाचन में कुछ अनियमितता भी रही हो तो भी यह मन्म पर्याप्त कारण नहीं है कि प्रगोरी का मृत्यु के बन्धी उमके पोप न चुना जाए तथा उन मामलों का उदाहरण देना है जहाँ पोप का निर्वाचन अनियमित रहा है किन्तु वास्तव में चर्च ने उनको मायता नहीं प्रयत्न स्वीकार कर लिया।⁸⁴ किन्तु वास्तव में वपूण बहुत कुछ श्रेणियों के विभेद में मितता जनता है।⁸

यदि अतः हम श्रेणियों के विचार श्रेणियों में मन्म के मन्म मन्म को मन्म करने का प्रयत्न करें ता हम इन विचार श्रेणियों के विचार मन्म मन्म स्वीकृति करने की

प्रावश्यकता को स्वीकार करेगा। उन लेखकों में हम धार्मिक एवं लौकिक सत्ताओं की पृथक् पृथक् शक्तियों के बारे में व्यवस्थित निष्ठात उपनयन ही होती हैं। हम उनको उन सिद्धांतों के साथ जोड़ने का प्रयत्न भी नहीं करते हैं जो मनुष्य के विचारों में तक सगत रूप से सम्बद्ध प्रतीत हो। वास्तव में यह सभी के अथवा उनमें सभी के विषय में कहा जा सकता है कि वे हम क्षण की तात्कालिक स्थिति के बारे में जिन व्यग्र हृदयों से उतने दोनों सत्ताओं के सम्बन्धों के विषय में किसी सामान्य सिद्धांत के बारे में नहीं।

एक पक्ष में तात्कालिक रूप में दो प्रश्न विद्यमान हैं—जर्मन सम्राट तथा चर्च के बिशपों द्वारा पोप का नियुक्त या पदच्युत करने के अधिकार या सत्ता का प्रश्न तथा पोप द्वारा राजा की धर्म बहिष्कृत एवं पदच्युत करने के अधिकार का प्रश्न। ऐनरी चतुर्थ के समय यह मानत था कि पोप राजा या सम्राट की सत्तों से विना निर्वाचित नहीं हो सकता तथा निस्सन्देह हम मायता के समय में उनके द्वारा बहुत अधिक मात्रा में ऐतिहासिक प्रमाण उपस्थित किए गए तथा उनमें से कुछ यथा मानते थे कि ग्रेगोरी सप्तम ने यह सत्तों को भी प्राप्त नहीं था। उनमें से कुछ यथा मानते थे कि कुछ परिस्थितियों में पोप का न्याय करना तथा उसे पदच्युत करना कथानिक था तथा यह भी उनकी मान्यता थी कि ग्रेगोरी सप्तम का आचरण हम प्रकार का था जो गरीबों काय तथा उनके द्वारा उनकी पदच्युति के अधिकार को सिद्ध करना था।

ग्रेगोरी के समयको न सिद्धांत पोप के निर्वाचन में राय लिए जानने के सम्राट के अधिकार के प्रश्न का विवेचन ही नहीं किया। यद्यपि मनमोहन ने इसका खण्डन किया है। हम देख चुके हैं कि संभवत उनके मन में इसके बारे में कुछ सारांश था कि क्या पोप का वायव्य कर सकता है किन्तु सामान्यतः उन्होंने इस मायता का खण्डन किया।

निष्कर्षण का एक सचप का उत्पन्न अन्तर्गत था।—सधारणी स्वायत्तता तथा हेनरी द्वारा उनके सम्बन्ध में मायता है।—केवल मनमोहन द्वारा ही परन्तु ग्रेगोरी के पक्ष का समर्थन करते हुए फेररा के विद्वानों द्वारा भी हमें यथा बत पूवक प्रस्तुत किया गया है। गैर 1076 ई. की महान् तथा क्रान्तिकारों घटनाओं के विषय में उन्नीसवीं शताब्दी है कि ग्रेगोरी के समयको की यह मायता है उसने हेनरी को तभी धर्म बहिष्कृत एवं पदच्युत किया जबकि उसने पोप को पदच्युत किया। यह वस्तु उन्नीसवीं शताब्दी में सारजबग का गवर्नर इस प्रश्न को बहुत बत पूवक प्रस्तुत करना है तथा आग्रह करता है कि हेनरी एवं उसके अनुयायी विश्व ही इस सार उन्नीसवीं शताब्दी के भूत कारण थे। इसमें केवल मेनेगो तथा बोनीजो ने ही न कहा है किन्तु फेररा के विद्वानों भी यही माना है। प्रतीयमानत यह कहना सही है कि जहां तक उन लेखकों का प्रश्न है ग्रेगोरी के समयको इसके बारे में मन में स्पष्ट नहीं थे कि क्या उसका वायव्य पूरणया बुद्धिमत्तापूरा था। गवर्नर स्वामार करता प्रतीत होता है कि इस प्रति वडोर कहा जा सकता है और वना पक्ष तो उसकी वायव्य प्रणाली के बारे में स्पष्ट नहीं था किन्तु वे हमारे में पूरातया स्पष्ट है कि उसका वायव्य पूरा सगत था।

वे यह निश्चित रूप में घोषित करने हैं कि कार्डिनाल्स तक कि राजा भी चर्च एवं पोप के धार्मिक अधिकार-क्षेत्र में मुक्त नहीं है तथा वे उनके लिए अधिक तथाकथित

दृष्टांत प्रस्तुत करते हैं। वे अत्यंत स्पष्ट शब्दों में यह तर्क प्रस्तुत नहीं करते कि धर्म बहिष्कार करने के अधिकार में पशुच्युत करने का अधिकार अनिवार्य रूप से निहित था किन्तु धर्म विषय तथाकथित शांति पर आधारित मानते प्रतीत होते हैं विशेषतः पोप जर्जरियाम द्वारा प्रतिष्ठित मर्रोविजियन सम्राट चिनपेरिक को पशुच्युत करने के अधिकारित्व काय पर। यह सम्भव है कि हम इन मतों के मूल आधार के निकट वर्ना के ग्रन्थ *Liber Canonum contra Henricum Quartum* के धर्म तर्क द्वारा पहुँच सकें कि एक धर्म बहिष्कार अर्थात् प्रति की शक्ति निष्ठा की शपथ माय नहीं हो सकती। वास्तव में यह स्पष्ट है कि सामान्यतः स्वीकृत यह सिद्धांत भी कि निष्ठावान् व्यक्तियों को धर्म बहिष्कार नहीं से बचो व्यवहार नहीं रखना चाहिए धर्म बहिष्कार राजा की स्थिति को पट्टन कर्त्तव्य बना देता है।

हनरी चतुर्थ के समय में इन मायाओं का उत्तर अनेक प्रकार से दिया। पहल बर्नार्ड ने यह माना कि धर्म बहिष्कार का दण्ड अनिवार्य रूप से शपथ सगत नहीं था तथा एक शपथ पूरा करने धर्म में अर्थ था। दूसरे इस धारणा को और भी प्रायः न गए तथा अधिकाधिक मामलों की परीक्षा की। घामनादण के विद्वेष ने यद्यपि यह नहीं कहा कि पोपों को राजा को धर्म-बहिष्कार करने का अधिकार नहीं है किन्तु वह हमें अस्वीकार करता है कि वसा पहले कभी किया गया है तथा यह किमी मनुष्य के धर्म के कारण नहीं अर्थात् इसलिए कि उद्धान तथा या कि इसमें मनुष्य की आत्मोन्नति नहीं होगी तथा गभीर दाय उत्पन्न हो जायेंगे। डी यूनीटेट (D Unitate) का लेखक यद्यपि उसे अस्वीकार नहीं करता कि सन अम्बरोस द्वारा थियोडोसियस को चर्च की धर्म सम्रा से बहिष्कार कर दिया गया था किन्तु वह पर्याप्त ऐतिहासिक तीक्ष्ण बुद्धि से सवत्थ्य की परीक्षा करता है कि पोप एनोसेण्ट द्वारा सम्राट अर्कोडियस को धर्म बहिष्कार किया गया। वास्तव में धर्म बहिष्कार में पशुच्युति के अधिकार को निहित मानने वाली शान्ति के विरुद्ध तर्क उठाने समय में विद्यमान अधिकाधिक दृष्टान्तों के विरुद्ध की जाने वाली धारणा समझ में आया है। वेनेरिक यह कहता है कि यदि मान भी लिया जाए कि हनरी बना ही था जमा ग्रेगोरी न उन पर आरोप लगाया है तो भी पोप को उसकी प्रजा को निष्ठा की शपथ से मुक्त करने का कोई अधिकार नहीं था तथा यह बात पहले नहीं मुनी गयी कि पोप एक राजा को अपने पूर्वजों की शपथ से उतरने की शपथ दे। अश्वनादण के विद्वेष की शान्ति है कि हनरी का धर्म बहिष्कार शान्तिगत रूप से बर्नार्ड भी ही तो भी इसमें ग्रेगोरी को हनरी की प्रजा को शपथ से मुक्त करने का अधिकार प्राप्त नहीं होता। डी यूनीटेट का लेखक इस विषय पर विचार पोप द्वारा चिनपेरिक की अधिकारित्व पशुच्युति की आवश्यकता से धारणा करते हुए तथा महत्त्वपूर्ण उदाहरण देकर धर्म तर्क पर धन देने हुए करता है कि एक सम्राट चर्च में पशुच्युत कर दिया जाए इस को धर्मका पर्याप्त कारण नहीं माना गया था कि उनकी राजनीतिक शक्ति पर भी प्राप्त हुए किया जाए।

ज्या हमें यह पत्र है कि अभी धर्म में हम उन प्रयोगों के स्वरूप की शान्तिगत रूप से धारणा मिलती है कि हमें इस महान् शपथ में न दिया था। उक्त के दृष्टिकोण से है

विवादास्पद प्रश्न वास्तव में दोनों सत्ताओं की स्वतंत्रता का प्रश्न था। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वह बहुत जोर देकर तथा अन्तःपिट के साथ ईसा द्वारा स्वयं दोनों सत्ताओं की विभिन्नता के जिनेशियन सिद्धान्त को दोहराता है तथा बलपूर्वक कहता है कि इस प्रकार के दोष एवं अपराध हो सकते हैं जिनका कि निरापेक्ष चर्च नहीं कर सकता क्योंकि चर्च के पास एक ही अर्थात् आत्मा की ही तलवार है। तथापि यह ध्यान रखना चाहिए कि वह ग्रेगोरी के समयको की इस भाष्यता का उत्तर नहीं दे सका कि सर्वप्रथम प्राथमिक रूप से हेनरी तथा उसके विषयों के द्वारा रोम के धर्मपीठ की स्वतंत्रता में अतः सम्पूर्ण चर्च की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करने से उत्पन्न हुआ।

अतः यह उल्लेखनीय है कि ग्रेगोरी 7 पक्ष का प्रतिपादन करने वाले किसी भी लेखक ने यह दावा नहीं किया कि चर्च या रोम के पोप को नैतिक विषयों में सामान्य अधिकार प्राप्त है। पसाऊ के बिशप अन्तर्मान को ग्रेगोरी सप्तम द्वारा लिखे गए पत्र में प्रयुक्त कुछ वाक्यांशों के तथा 1080 ई० में रोम की परिषद् में उसकी घोषणा के भी अनुरूप इनमें कुछ नहीं है।⁸⁶

संदर्भ

- | | |
|---|---|
| 1 B r n Id D o m a t i o n Schism a t
co um p II (p 29) | 23 Id d 7 8 |
| 2 Id d Ep III (p 50) | 24 Cf ol Part I c 7 |
| 3 Id d (p 52) | 25 D t a c u u s d m d e d s c r d a P a p a e
et R g i s (p 456) |
| 4 Gebaha d Sal sburgens s Arch epi
c pi Ep stola d Herr m n m
Mette sem Ep s opum | 26 Id (458) |
| 5 Id d 9-11 | 27 Id |
| 6 Id id 15 16 | 28 W d o O n a b r g e s s L b e r d e C o n
o v e r s H i d e b a n d i et H e n r i c i
(p 462) |
| 7 Id id 17 23 | 29 Id d (p 463) |
| 8 Id id 31 | 30 Id d pp 464-466 |
| 9 Id id 32 | 31 Id d (p 466) |
| 10 Id id d | 32 Id d (p 467) |
| 11 Id d 34-36 | 33 Id id p 468 |
| 12 W e c h o f T e r Epist I 1 9 | 34 Id d (p 469) |
| 13 Id d 1 3 | 35 Id d (p 470) |
| 14 Id d 3 | 36 Cf p 212 |
| 15 Id id 4 | 37 L b e C a n o n u m c o t r a H n c u m
Q u a r t a m v |
| 16 Cf pp 81 82 | 38 Id x |
| 17 Id d 8 | 39 Id Cf vol p 122 |
| 18 P e t C D e f n s o H
R e g s 1 | 40 Id xx xxv |
| 19 Id d 3 | 41 Id xv xx x |
| 20 Id d 4 | 4 Id x |
| 21 Id d 7 | 43 Cf ol 1 pp 160-169 |
| 22. Id id, 4 | |

- 44 M g id Ad Gebehard m l 14
 45 Id id 15-23 67 77
 46 Id id 25-28
 47 Id id 29-43 47-49
 48 Id id 57 58
 49 Id id 30-66
 50 Cf pp 86-90
 51 Id id 25-28
 52 Id id 29
 53 Id id 29 30
 54 Id d 31-41
 55 Id id 47-49 Cf ol pp 163
 166
 56 B i o Ad Amicum (p 608)
 57 Id id v i (p 611)
 58 A l m s L c e s s Libe C tra
 W bertum (p 52)
 59 See p 212
 60 Bernald Ap l geticæ Rat ones
 Lib ll pp 95-99 Cf L b
 vi a d
 61 Be ld I bell s xi De Solu
 ti n jurame torum
 62. W d f F rara De Scimate H l
 d brand l 1 2
 63 Id id 1 3
 64 Id id 1 4-6
 65 Id id 1 7
 66 Id id 18 15 16
 67 Id id 9 10-14 17 18
 68 Id id 1 19
 69 Id id 1 0
 70 Id id 1 20
 71 Id id ll (pp 551 553).
 72 Id id i (pp 554-563)
 73 Id id i (p 563)
 74 भाग 2 अध्याय 3
 75 Id id (p 566)
 76 De U tate Ecclesiæ e Co serva d
 2
 77 Id i 8
 78 Id i 9
 79 Id i 3
 80 Id s. 15
 81 Cf pp 201 209
 82 Cf v l p 120
 83 Id 7
 84 Id 21
 85 Cf p 41
 86 Cf pp 201 208
-

तृतीय अध्याय

ग्रेगोरी सप्तम के कार्यों तथा दावो का विवेचन (2)

हम ग्रेगोरी सप्तम के देहावसान के पश्चात् ऐतिहासिक घटनाओं की परम्परा का विस्तार पूर्वक अनमरण नहीं करना चाहते। हम उनके पोप पद से कायकाल के विषय में यथा करन को इसलिए विवश हो गए थे क्योंकि उसका राजनीतिक सत्ता के दावे का विकास उस युग की वास्तविक परिस्थितियों से बहुत अधिक जुड़ा हुआ था। ग्रेगोरी का देहावसान 25 मई 1085 ई. को सानेरनो में हुआ तथा अगस्त 24 मई को मोन्टेकेसीनो (Monte Casino) का मठाधीश डेसीरियस (Desiderius) उसने स्थान पर विक्रम तृतीय के रूप में चुना गया। यह सुभावर्षिणा गया है कि वह हेनरी चतुर्थ से किसी प्रकार का सम्बन्ध करने को उत्सुक था।¹ हम सम सदेह है कि इसके लिए पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध हैं किन्तु यह अनसनीय है कि जब उसने अगस्त 1087 ई. में बेनवेन्टम (Benventum) की परिषद् में विरोधी पोप ग्युवर्ट का तथा किसी भी विषय या मठाधीश जिम्मे लौकिक सत्ता से प्रतिष्ठापन प्राप्त किया हो और उन सभी सम्राटों राजाओं और ग्युवर्टों का जिन्होंने प्रतिष्ठापन देने की घृष्टता को ही हेनरी चतुर्थ का कोई प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं है तथा उपरोक्त पत्र-युक्त करन का भा कोई वगन नहीं है। विक्रम के चार जो भी मध्यस्थतावादी श्रुतियाँ अथवा अभिप्राय रहे हो उनका कोई परिणाम निकालने से पूर्व ही सितम्बर 1087 ई. में उनका देहावसान हो गया।

पुनः पर्याप्त समय के उपरान्त उसके उत्तराधिकारी का निर्णय हुआ। मार्च 1088 ई. तक ओस्टिया (Ostia) का बिनाप भागो अगस्त तृतीय के रूप में निर्वाचन एवं अभिविक्त नहीं हुआ। वह क्लूनी के मठ का मिश्रु तथा एक फ्रान्सीसी था जिसे ग्रेगोरी सप्तम द्वारा रोम वाकर कार्डिनल पद पर नियुक्त किया गया था तथा वह उसका सबसे बड़े समर्थक रहा था। अपनी नीति सम्बन्धी पदवी धारणा में ही वह सम्पूर्ण रूप से ग्रेगोरी सप्तम की नीति को ही बनाए रखने को इतन्निश्चय प्रतीत हुआ। उसने निर्वाचन के एक दिन बाद

ही 13 मार्च 1888 ई. को उसने जर्मनी के पोप समर्थक विभागों एवं अन्य व्यक्तियों को पत्र लिखा उसने अपने निर्वाचन की घोषणा की तथा उन्हें विश्वास दिलाया कि उसकी इच्छा सभी बातों में प्रेषों। क पद चिह्न पर चाने की है जिसको के रोरा सिद्धांत करता था उसकी सिद्धांत जिसे वह समर्थन देता था उसका समर्थन जिसको वह अनुमति देता था उसको अनुमति तथा इस प्रकार सभी विभागों में वर था ही सोचना था जैसे प्रेषों की सोचना था। अतः उसने उनको पौरुषपूर्वक ईश्वर के युद्ध में उनके योद्धा के समान दृढ़ता से डट जाने को प्रोत्साहित किया।² अप्रैल 1084 ई. में उसने कास्टेल के गगनाट को जर्मनी में अपना प्रतिनिधि नियुक्त करते हुए पत्र लिखा तथा उस सूत्रित किया कि धर्म बहिष्कार के प्रश्न पर अपने सहयोगियों से विचार विनिमय से वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि पहले विरोधी पोप तथा हेनरी चतुर्थ धर्म बहिष्कृत ही रहें।³ उसी वर्ष मितम्बर में उसने लौकिक प्रतिष्ठापन के निषेध का पुनर्नवीकरण कर दिया।⁴

जर्मनी की राजनीतिक परिस्थितियाँ फिर बदल गईं। 1088 ई. में थूरिंगिया का हेर्मान (Herman of Thuringia) मर गया तथा सिद्धासन का कोई भी दावेदार गद्दी पर नहीं बैठा था तथा जनता का मन शांतिमय विचारों की ओर उन्मुख हुआ। 1089 ई. में पोप के पक्ष के राजा एकत्रित होकर हेनरी के पक्ष गए तथा यह प्रस्तावित किया कि यदि वह विरोधी पोप ग्युबर्ट का समर्थन त्याग दे तो वे उसकी अधीनता स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। बर्नाड ने हेनरी को अपने शक्तिशाली में व्यक्तिगत रूप से इसे स्वीकार करने को उन्मुख प्रदर्शित किया है किन्तु ग्युबर्ट के समर्थक विभागों द्वारा उस पक्ष से विमुख कर दिया गया। सम्भोज्ञा वार्ता 1091 ई. में पुनः प्रारम्भ की गई किन्तु पुनः विफल हो गई।⁵ अक्टूबर समाप्त हो चुका था तथा 1093 ई. में कोनाड जिसे एकसला शपथ में 1087 ई. में अभिषिक्त किया गया था अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर बैठा तथा जर्मनी एवं सम्बाई की सम्पूर्ण राजनीतिक परिस्थिति बदल गई। कई बड़े बड़े सम्बाई नगरों ने बर्नाड के अनुसार मिलन क्रमोना, रीडो तथा पियासजा हेनरी के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा बनाया। मिलन के छात्रविशेष ने कोनाड का अभियेक किया तथा दो वर्षों के बाद 1095 ई. में उसने क्रमोना में अक्टूबर तिथि के प्रति निष्ठा की शपथ ली जिसने कि उसका रोमन चर्च के पुत्र के रूप में अभिनन्दन किया। अक्टूबर ने साम्राज्य तथा राजसूत्र प्राप्त के लिए उसकी सहायता करने का वचन दिया किन्तु सदब रोमन चर्च तथा लौकिक प्रतिष्ठापन के निषेध के अधिकार को सुरक्षित रखा।⁶

अक्टूबर अक्षय के सर्वोच्च शिखर पर था। सम्बाई से वह प्राप्त की गया तथा कैटरमोण्ट की परिपद में जो नवम्बर 1095 ई. में हुई उसने धर्मयुद्ध की घोषणा की लौकिक प्रतिष्ठापन के निषेध का पुनर्नवीकरण किया तथा फ्रांस के राजा फिलिप को अपनी पत्नी का परिग्रह करने एवं अभिचार करने के आरोप में धर्म बहिष्कृत कर दिया।⁷ 1099 ई. में जब उसकी मृत्यु हुई तो पोप का पक्ष जर्मनी एवं इटली दोनों स्थानों पर पुनः प्रबल हो गया था।

उसी वर्ष 13 अगस्त को फ्लैन्ड्रिज का निर्वाचन हुआ तथा 18 जनवरी 1100 ई. को कास्टेल के गेबहाट को जिसे अभी भी जर्मनी में पोप का प्रतिनिधि

बनाए रखा गया था निखने हुए उमन विश्वास लाया कि यह अफवाह कि वह हेनरी चतुर्थ तथा उसका अनुयायी को कोर्रुप्शन देने वाला है भूरी है।¹⁰ सितम्बर 1100 ई. में रवन्ना के ग्यूवट की जो कि विरोधी पोप था मृगु 10th तथा हेनरी चतुर्थ एवं पोप में समझौते की श्राव प्रगति आई किन्तु उसका कोई परिणाम नहीं निकला तथा जनवरी 1102 ई. में हम पस्कल तृतीय को पचण्डस के काउण्ट का हेनरी पर तथा जो उसका प्रत्येक प्रकार से समर्थन करते हैं उन पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए और उन्हें यह विश्वास दिलाते हुए पात है कि श्वर की दसग बन्द कर खण्ड को भी नवा नहीं है।¹¹ मार्च 1102 ई. में रोम की परिषद् में पस्कल नवमारी चतुर्थ के घम बहिष्कार का पुनर्नवीकरण किया। उसने इतना स लौकिक प्रतिष्ठापन के निषेध का प्रतिज्ञान किया जसा कि हम ए सलम तथा गनन के हेनरी प्रथम से उसका पत्र व्यवहार में पाते हैं।¹² तथा एक पत्र में उमन पापियों द्वारा अयाजको को सम्मान प्रदान करने का निषेध किया।¹³ 1104 ई. में उसने बवेरिया तथा स्वालिया के कथोनिक्म में पुनः आग्रहपूर्वक कहा कि हेनरी चतुर्थ घम बहिष्कृत था।

1104 ई. के उत्तरार्द्ध तथा 1105 ई. के पूर्वार्द्ध में हेनरी चतुर्थ के विरुद्ध एक नया विद्रोह फूट पड़ा। उसका अग्रज पुत्र बोनाड की 1100 ई. में मृत्यु हो गई थी किन्तु अब उसका छोटे पुत्र हेनरी ने उसका विरुद्ध एक अधिक खतरनाक विद्रोह को सगठित किया। पस्कल से उसने अपने पिता के प्रति निष्ठा की शपथ से अपने को मुक्त करने का अनुरोध किया। पस्कल ने उस आर्थात्वाद देकर उस शत पर शपथ में मुक्त कर दिया कि वह चर्च से व्यवहार में पाप का आश्रय देने की प्रतिज्ञा करे।¹⁴ मई में हेनरी ने नाडहौसेन (Nordhausen) में एक परिषद् बुलाई जिसमें रोम के प्रति पूर्ण सम्मान की घोषणा की किन्तु जसा एक्टाड के विवरण से स्पष्ट है काँ निश्चिन्त प्रतिज्ञा नहीं की गई।¹⁵ उसी वर्ष नवम्बर में पस्कल ने मेज़ के आचविश्व को लिखे गए पत्र में पुनः नई परिस्थितियाँ के सदर्भ में अपने द्वारा समर्थित सिद्धान्तों को दाहराया। उसने यह कहने की सावधानी रखी कि उसकी इच्छा है कि राजा उन सभी अधिकारों का उपभोग करे जो न्यायसंगत रूप से उसके हैं तथा सको अन्धाकार दिया कि उसकी किमा भी प्रकार में इन्हें कम करने की इच्छा है किन्तु दूसरा ओर चर्च में अपना स्वतन्त्रता का उपभोग करने को स्वतन्त्र माना चाहिए। उमने चर्च के रखने के रूप में राजा के स्वतन्त्रता को तथा चर्च से परिष्कार प्राप्त करने के उसके अधिकार का मायता दी किन्तु मृगु एक दण्ड अर्थात् प्रतिष्ठापन में उसके किसी भी प्रकार के सम्बन्ध को स्वीकार नहीं किया तथा उस शत पर शांति स्थापित करने के लिए अपनी अग्रता अर्थात् का कि राजा और पादरी एक दूसरे के अधिकारों को मायता दें।¹⁶

31 दिसम्बर 1105 ई. का हेनरी चतुर्थ उसका पुत्र तथा लौकिक एवं धार्मिक राजाओं द्वारा राज्य एवं साम्राज्य से त्यागपत्र देने को विवश कर दिया गया। परन्तु अगले वर्ष ही उसने अपने त्याग का खण्डन किया तथा उस पर्याप्त समर्थन भी मिला किन्तु 7 अगस्त को उसका मृगु हो गई। हम 1122 ई. में वास्तु के समझौते में पोप पद एवं साम्राज्य के सम्बन्ध पर हम खण्ड के पहले भाग में विचार कर चुके हैं तथा उसे

दोहराने को यहाँ कोई आवश्यकता नहीं है।

पिप्लन अध्याय में हमने विचार के प्रमुख उदाहरणों को निश्चिन्त करने का प्रयास किया था जो कि ग्रेगोरी सप्तम तथा हेनरी चतुर्थ के महाद्वय संपन्न व कारण तत्काल उदय हुए थे। अब हम इन विवाद के उत्तरकालीन विकास का उन युग में विचार करना है जो इस समय में घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध हैं और साथ ही ग्रेगोरी के मृत्योपरांत वर्षों के इतिहास में भी जिनका हम अभी संपन्न में बहान कर चुके हैं। निस्सन्देह इन तत्त्वों तथा पहलुओं के लक्षों के बीच कोई स्पष्ट विभाजक रेखा खींचना असम्भव है किन्तु हम सोचते हैं कि इनमें कुछ अंतर अवश्य है। अतः तक जिस सार्वभौमिकता का हम विचार कर चुके हैं वह 1076 ई. में 1093 ई. तक का है जिस पर अब हम विचार करेंगे वह 1097 ई. से सन् 1125 ई. तक का है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उस काल में भी संपन्न अत्यन्त तीव्र था साम्राज्य तथा पाप-पद में जबतक हेनरी चतुर्थ जीवित था कोई सम्झौता नहीं हो सका था तथा 1106 ई. में उसने मृत्यु के व भी कुछ लोगों की तुलनात्मक शक्ति के बाद संपन्न पुनर्प्राप्त किया। तथापि हमारे विचार से यह कि नाश्चित होगा कि इन प्रथाओं के स्वरूप में कुछ अंतर है या आवश्यक नहीं कि दोनों पक्षों में से किसी के द्वारा या कोई कमी हो—जिस पर अभी हम विचार करना पड़ेगा—किन्तु यह संपन्न वास्तविक परिस्थिति के बारे में ही नहीं बल्कि सामान्य सिद्धांतों के बारे में भी है—या जो कि कभी कभी विवादकर्ता अत्यन्त ही स्थिति का आग्रह करते हैं—वनी—जो उनमें दूसरे पक्ष की मान्यताओं के महत्त्व को स्वीकार करने तथा उसका मान्यता करने का भी प्रयत्न किया जा सकता है।

अन्य में संपन्न रचना जिस पर हम विचार कर रहे हैं वह लिबेलस कन्ट्रा इन्वैसोरस एट सिमोन्याकोस कोट्रा इन्वैसोरस एट सिमोन्याकोस (Libellus contra Invasores et Symoniacos) है जिसका समय 1097 ई. से पूर्व नहीं है। व. ग्रेगोरी सप्तम का उसके सब प्रथम 1098 ई. में उत्पन्न ही प्रथम एवं अन्तर्गत समयक था। हम प्रतीक्षापन विचार के सम्बन्ध में उसकी संपन्न रचना का पटन ही उत्पन्न कर चुके हैं। इस समय हम लौकिक एवं धार्मिक सत्ता के स्वरूप एवं उनके पारस्परिक सम्बन्धों को प्रदर्शित करने के लिए लिबेलस कोट्रा इन्वैसोरस की स्थिति का वर्णन करेंगे।

अपने प्रथम की भूमिका में मुख्य विषयों को अवधारणा करने के पश्चात् यह कहता है कि उसका उद्देश्य राजकीय सत्ता के गौरव का कम करना नहीं है बल्कि उनका भी बसा ही स्थान है अर्थात् धार्मिक सत्ता का। पुरोहित शक्तों की तलवार का उपयोग करता है जबकि राजा के हाथ में भौतिक तलवार है। दोनों का एक दूसरे की आवश्यकता है तथा दोनों में से किसी को भी दूसरे के कार्य में अस्वयं नहीं करना चाहिए।¹⁶ यद्यपि उन्मत्तनीय है विज्ञानयुग में मान्यता कि चर्च कबल एक ही तलवार का उपयोग करता है तथा लौकिक सत्ता के विशिष्ट स्थान की निस्सन्देह स्वीकृति। 1087 ई. में अपने द्वारा प्रस्तुत इस विधानों के अन्तर्गत लिबेलस कन्ट्रा इन्वैसोरस प्रामाणिक मतों का उद्धृत किया है जो लौकिक सत्ता की दृष्टि से अत्यन्त तथा ईश्वरीय धर्म के अधिकारी के रूप में उसके कार्यों का समर्थन करते हैं।¹⁷

तथापि ग्रग के तीसरे भाग में ड्यूसडेडिट ने जो भाष्यता प्रकृत की है उसकी इससे सगति बढाना अत्यन्त कठिन है। वह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अर्थात् पादरी के लौकिक यायालय के कायभेद से मुक्ति पर विचार कर रहा है। हमने एक दूसरे खण्ड में इस प्रश्न के शास्त्रीय विवाद पर विचार किया है।¹⁸ यहाँ हमारा प्रयोजन केवल उन कुछ निरीक्षणों से है जो कि इस विषय पर धार्मिक एवं लौकिक कानूनों के संघर्ष के बारे में ड्यूसडेडिट ने व्यक्त किए हैं। वह मानता है कि विवाद की रीति में लौकिक कानून परित्याग्य है तथा घोषित करता है कि धार्मिक सत्ता (Sacredotium) को कानून निर्माण में प्राथमिकता प्राप्त है क्योंकि ईश्वर ने राजाशा के द्वारा पादरियों को कानून प्रदान नहीं किए अपितु पादरियों द्वारा राजाशा को कानून प्रदान किए हैं तथा वह इसके दृष्टांत मूसा तथा अरिंन एवं प्ररिंनो से उद्धृत करता है। वह कहता है कि धार्मिक सत्ता राजकीय सत्ता से अलग है क्योंकि उसे ईश्वर ने बनाया जबकि राजकीय सत्ता का मनुष्या ने ईश्वर की स्वीकृति से न कि उसके सत्कार से बनाया है तथा वह सौल (Saul) की नियुक्ति की परिस्थितियों को उद्धृत करके इस सिद्धान्त की पुष्टि करता है।¹⁹ हम तीसरे खण्ड में इस खण्ड के अन्तिम भाग का उसी प्रकार के ग्रग वाक्यांशों से सम्बन्ध का अध्ययन कर प्राण हैं अतः हम उस दोहरान की कोई आवश्यकता नहीं है।²⁰

तथापि हम यह ध्यान रखना चाहिए कि सम्पूर्ण वाक्यांश एक दूसरे ही प्रश्न को उठाता है—अर्थात् इस प्रश्न की कि क्या धार्मिक एवं लौकिक कानूनों में विरोध होने पर सभी राजाशा में लौकिक कानून प्राथम्य होगा।¹ शास्त्रीय साहित्य में जहाँ तक इस प्रश्न का विमर्श किया गया है उस पर हम एक ग्रग खण्ड में विचार कर चुके हैं अतः हम इसके सामान्य महत्त्व पर पुनः विचार नहीं करेंगे। ड्यूसडेडिट की स्थिति के ग्रग के विषय में हम क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं? जसा कि हम अभी देख चुके हैं ड्यूसडेडिट अपने ग्रग में स्पष्टतया लौकिक तथा धार्मिक प्रत्येक सत्ता के विशिष्ट स्थान एवं महत्त्व को स्वीकार करता है तथा सिद्धान्तों के संग्रह (Collectio Canonum) में उसने उन अधिकारियों का मत प्रस्तुत किया है जो कि वे मानते हैं कि लौकिक सत्ता का उन्मत्त तथा अधिकार देवी है। क्या हम यह मान सकते हैं कि अन्तिम वाक्यांश द्वारा वह इन सिद्धान्तों का खण्डन करना चाहता है और यह सिद्ध करना चाहता है कि लौकिक सत्ता का कोई विश्व स्वरूप नहीं है तथा धार्मिक सत्ता को उसके अन्तर्गत में भी तथा उसके वास्तविक कार्यों के विषय में भी उसकी अग्रहेतना का अन्तिम अधिकार प्राप्त है। यह हमें पूर्णतया अक्षमात्रनीय प्रनात होता है तथा हम यह सुभाव देंगे कि इस प्रकार के मध्ययुगीन लेखकों के पृथक पृथक वाक्यांशों की शक्या करते समय अन्तिम सावधानी बरतने की आवश्यकता का यह एक अच्छा उदाहरण है। ड्यूसडेडिट का अन्त्य स्थलों की भाँति यहाँ भी प्रयोजन धार्मिक सत्ता एवं उसके कानूनों की पूर्ण स्वतंत्रता का प्रतिपादन है² तथा वह इस पर बल देता है कि लौकिक सत्ता की तुलना में उसे एक प्रकार की प्राथमिकता प्राप्त है किन्तु इसका अर्थ यह कहना नहीं है कि धार्मिक कानून लौकिक कानूनों के क्षेत्रांतगत भी उनका अतिक्रमण कर सकता है।

जनवरी 1103³ में पोप पस्कल तृतीय ने फेब्रुअरी के काउण्ट को नीज के पादरियों

पर जिन्हें उसने हनरी चतुर्थ से सम्बंधों के कारण घम बहिष्कृत किया था पात्रमण करने के लिए प्रेरित करते हुए पत्र लिखा तथा नेम्बरो⁵ के विरुद्ध उसने जारनार उग्र की सराहना की। सीज के पादरियों की प्रेरणा से गेम्बलो (Gembloux) के एक निष्ठु सीजबट ने सीज के चर्च के नाम से सभी शुभ-सम्पत्तियों का व्यक्तियों को सम्बाधित करते हुए एक पत्र लिखा जिसमें पोप के इस पत्र का विरोध किया।⁶

सीजबट का पत्र अधिकांशतः किसी भी नए सिद्धान्त का प्रतिनिधित्व नहीं करता किंतु वह उन व्यक्तियों की स्थिति को भ्रष्टीय बनाने का प्रयत्न करता है जिन्होंने हनरी चतुर्थ के प्रति निष्ठा का पाग करना अस्वीकार कर दिया था और वह विवादित प्रश्नों के सद्धान्तिक पक्ष पर ही नियम अभिव्यक्त नहीं करता किन्तु समय के वास्तविक परिणामों के स्पष्ट बोध की भी अभिव्यक्ति करता है। वास्तव में पोप इस रचना को विशेष महत्व प्रदान करता है। सीजबट इस संदेह को तोरता है कि क्या राजा को घम बहिष्कृत किया जा सकता है वह कहता है कि मामला अभी भी व्याधीन है किन्तु वह इसका विचार में विश्वस्त है कि चाहे राजा का अधिकार हो कदापि नहीं उसके प्रति निष्ठा की अपेक्षा अधःपतनीय है तथा वह बट्ट अभियोग लगाता है कि पोप द्वारा सीज की जनता को इसी कारण घम बहिष्कृत माना गया कि वे उस विशप के अनुयायी हैं जो हनरी के प्रति निष्ठा की शपथ का सम्मान कर रहा है,⁷ वह प्रतिपादन करता है कि राजा चाहे कितना ही बुरा हो उसकी आज्ञा पालनीय है चाहे हनरी बसा ही हो जसा कि उसके अनुयायी न बताया है तो भी ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि उसके विरुद्ध अस्त्र प्रयोग करना चाहिए तथा उसने बतलाने का प्रयत्न किया कि वे शपथ जिनकी आज्ञा पालना करने की शपथ न मनुष्यों को आज्ञा दी थी ईसाई भी नहीं थे। पोप को इस उदाहरण का अनुकरण करना चाहिए तथा चाहे राज्य कितना ही बड़ा पावी हो उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए ताकि मनुष्य शांतिपूर्वक एवं स्थिर जीवन बिता सकें उसे उसका विरुद्ध यत्न करने मनुष्यों को शानि एवं स्थिरता का उपभोग करने में बाधा नहीं डालनी चाहिए।⁸

पुनः सीजबट ने गम्भीर संदेह व्यक्त करता है कि हनरी को व्यापोजित कारणों से घम बहिष्कृत किया गया है व पोप के उसके प्रति दृष्टि कोण में अतिसंगत भावना के अभाव में है तथा पोप को प्रगोरी महात्मा की चनाबनी का स्मरण दिनाता है कि जो व्यक्ति अकारण ही तथा स्वेच्छया बाधने व मुक्त करने की आज्ञा का उपयोग करता है वह उससे वंचित हो जाता है। घम बहिष्कार के अन्तर्गत पूर्ण दण्ड को ईश्वर स्वयं समाप्त कर सकता है।⁹ वह पक्षों को यह स्मरण दिनाता है कि पोप सिन्डेस्टर में लेकर सिन्डेस्टर तक किन अनुचित उपायों का अवनमन लेकर बहुधा मनुष्य पापपूर्ण तक पहुँच कर उदास भी या दिनाता है कि प्रायः सम्राटों का ही यह काय रहा है कि वे इसका प्रतिकार कर तथा क्रूर पोपों की निन्दा एवं उनकी पराजय कर। पोपों को गम्भीर तथा प्रकट दोषों के कारण भ्रष्टना एवं सशोधन के लिए उसी प्रकार प्रस्तुत रहना चाहिए जस कि पीटर ने पाप के समक्ष या समक्ष कर दिया था। जो भ्रष्टना एवं सशोधन के लिए अपने को प्रस्तुत नहीं करता है वह भ्रष्ट विशप है।¹⁰ ये मापदण्डों का पूर्ण प्रकट

की गई है तथा यह उल्लेखनीय है कि ये एस पक्ति के द्वारा पत्त की गई है जो पस्कल द्वितीय को पान मानता है तथा रोमन धर्मासन व सर्वोच्च स्थान एवं सत्ता को स्वीकार करता है।⁹

तथापि उसके ग्रन्थ का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष पोप द्वारा बल प्रयोग के आग्रह की नीति का सशक्त विरोध है। व पस्कल द्वितीय के पत्र-डसक का उल्लेख का सम्बोधित पत्र का शान्त को उद्धृत करता है जिसमें उसने कम्बर्ग पर आक्रमण करने के लिए दी गई उसकी आज्ञा व पानन की प्रार्थना की है तथा उगमे तीज व घम में फट डाने वाले पादरी तथा हेनरी व सभी समझा पर आक्रमण करने का अनुरोध किया है। सोजवट अपना मय प्रकट करता है कि पोप कम्बर्ग के विनाश का दावा व प्रयत्न पर न रहा है जिसमें दायी एवं निरपराध यक्तिया की एक ही साथ हत्या हुआ है यदि पस्कल स्वयं यह स्वीकार नहीं करता तो उसे कभी विश्वास नहीं आता कि एसी यातो को पोप व धर्मासन की सत्ता से किया गया है। व दूषक व मार्टिन व आचरण में उनका विरोध दिखलाता है जिसमें ब्रिगप इटेचियस (Itachius) ने पत्र व्यवहार कर दिया था क्योंकि वह घमद्रोह व लिए प्रिस्कीयान (Priscillian) की हत्या का आरोप था।¹⁰ म म मार्टिन का यह उ लेख तथा उसका द्वारा घम महिया व वध की निंदा व त रोचक है। आशिक रूप से इसका कारण यह हो सकता है तीज व ब्रिगप वजा के भी यही विचार बताए जाते हैं उसने भी घम रोहिया व विस्तारिता के प्रयोग की निंदा की है।¹¹ वास्तव में हम यह नही मानना चाहिए कि सोजवट के निष्कर्ष बताते हैं कि हम उसकी मायताग्राम निहित मानते हैं सम्भवतः उनका एक सामान्य सिद्धांत प्रस्तुत करने का विचार नहीं था किन्तु वास्तव में पाप व मनुष्याओं की स्विया व प्रत्येक कारण के रूप में वह अपनी व दूसरों की वास्तविक प्रतिक्रिया का बहाना कर रहा है। किन्तु यह एक बात के अध्याय में मून प्रश्न पर जाना है कि पोप को अपनी ही प्रजाप्रा व विस्तारित तलवार खींचने का अधिकार कहाँ से प्राप्त हुआ। इतिहास की त्वर का मन्दिर बनाने योग्य इनालिन नही समझा गया था कि वह एक रक्षण करन वाला मनुष्य था अत्र उच्च पादरी (पोप) पवित्रों के पवित्र स्थान (रोमन चर्च) में ईसा व रक्त का अर्पण आप को तथा दूमरा को समर्पित करने के लिए रक्त रक्षित वस्त्रा में कस प्रवेश व सवगा ? ग्रेगोरी महान् स त्वर हि-डेब्राण् तक किसी पोप ने आध्यात्मिक तलवार से भिन्न दूमरी तलवार का उपयोग नही किया था और न ही युद्ध की तलवार का प्रयोग सम्राट के विरुद्ध किया था।¹²

सोजवट के तर्कों में अनेक तर्कीय नही हैं किन्तु उसके पत्र में हम नम्ब सघष तथा परिणामस्वरूप रक्षण एवं विनाश के प्रति उसकी अनी दुर्भय की भावना की अनुभूति प्रतीत होती है।

संगमग उसी समय जबकि सोजवट ने शुभ सक्तपा वाले सभी यक्तियों को सम्बोधित अपना पत्र लिखा था पयूरी के ह्य ज न राजकीय सत्ता एवं पौरोहित्य की गरिमा पर एक ग्रन्थ रचने व हेनरी प्रथम को समर्पित किया।¹³ उम यथाथ कारण को दूँ सकना संभव नहीं प्रतीत होता जिसने इस सम्पण का निश्चित किया। निस्सन्देह इसका भी प्रतिष्ठापन व प्रश्न पर मवप से प्रज्ञा नहीं है कि तु यज्ञा प् प्र र मका बहान करता है तथापि

यह रचना अभी तक बचाने के लिए एक प्रयोग की तुलना में एक औपचारिक राजनीतिक इतिहास के रूप में अधिक प्रतीत होती है।

लेखक प्रयोग की भूमिका में अपना उद्देश्य बताता है। उसका प्रयोजन राजकीय एवं धार्मिक अधिकारियों के सम्बन्धों के विषय में भयंकर समय का कोई समाधान करना उन व्यक्तियों की गतियों का संशोधन करना जो बिना सत्ता के एक दूसरे के विरुद्ध मानते हैं और यह प्रतिपादन करते हैं कि राजकीय सत्ता ईश्वर द्वारा नहीं मनुष्य द्वारा स्थापित है—यह सम्मति उसके अनुसार व्यापक रूप से प्रति प्रचलित है।

अब वह थोड़ी सत्ता द्वारा मनुष्य को लौकिक सत्ता के उन्मूलन के विषय में 1080 ई० में लिखे गए पत्र के विधिवत् सन्मूलन से प्रारम्भ करता है³⁴ तथा तब देता है कि उसमें अभिव्यक्त मान्यताएँ पूर्णतया असत्य हैं। वह अपने न केवल सत्ता के इन सत्ता में ही सिद्ध करता है कि ईश्वर का अनिच्छित कोई शक्ति नहीं तथा जो भी शक्तियाँ हैं वे ईश्वर द्वारा प्राप्त हैं। वरन् सत्ता में मनुष्यों के तथा शरीर के ऊपर मस्तिष्क के शासन के हटाने में भी इस सिद्ध करना है तथा वह प्रतिपादित करता है कि ईश्वर ने धरती एवं स्वर्ग दोनों ही स्थानों पर सत्ता का एक प्रयोग बनायी है।³⁵ दो सत्ताएँ हैं अर्थात् राजकीय एवं धार्मिक जिनके द्वारा चर्च का वर्तमान जीवन नियंत्रित होता है व दोनों पावन हैं तथा उनका एक दूसरे के विरुद्ध नहीं करना चाहिए।³⁶

तथापि इस प्रयोग का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष दोनों सत्ताओं के पारस्परिक सम्बन्धों की तुलनात्मक स्थितियों का तथा प्रयोग की दूसरे पक्ष के अधिकारियों पर अधिकार के विवरणों में है। वह प्रारम्भ में ही उनकी सापेक्ष स्थितियों का बचाने ईश्वर के अन्तर्गत पिता व पुत्र के सम्बन्धों की तुलना की शब्दावली में प्रस्तुत करता है। वह कहता है कि राजा अपने राज्य के शरीर में पिता के प्रतिरूप को धारण करता है तथा बिशप ईसा के प्रतिरूप को। अतः न इस तुलना में वास्तव में क्या समझा जा स्पष्ट नहीं है यह कल्पना की जा सकती है कि यह चतुर्थ शताब्दी के एम्ब्रोसियस्टर (Ambrosiaster) अथवा आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के कैथलफस (Cathulfus) की शब्दावली की सांख्यिक संस्कृति है। जसा हम अभी देखें कि यह घनानामा एलबोरेसेन्सिस (Tractatus Eboracenses) में प्रयुक्त कुछ शब्दावली के समानान्तर हैं। सम्पूर्ण वाक्यांश का अर्थ तो स्पष्ट नहीं है किन्तु हाँ उसमें अपने निष्पन्न पद्यों में निश्चितता पूर्वक निकाल लेता है। सभी साम्राज्य के बिशप राजा के अधीन हैं। जैसे ईसा (Son) ईश्वर (Father) के अधीन स्वभाव से नहीं किन्तु प्रवस्थागत (Ordre) है जिसमें की सम्पूर्ण साम्राज्य की एक ही उन्नति मानी जा सकती है। इसका उदाहरण स्वरूप वरूणा (Moses) की स्थिति का हटाने देता है जो कि बिना राष्ट्र में राजा की प्रतिरूपिता या जबकि धारण पुरोहिता की। उन्ने साम्राज्य में पुरोहितों के सम्राट के अधीन होना व सिद्धांत का बचाने आमुस में पहले से ही देखा था तथा एक बार के अध्याय में व पुनः उमी का बचाने करता है।³⁷

अतः राजा एवं पुरोहित के सम्बन्धों का यह एक पक्ष है किन्तु दूसरा एक दूसरा पक्ष भी है। अर्थात् जब वह बिशप द्वारा सम्राट के विरुद्ध हथियार उठाने का विरोध करना

है। हाँ ज यह भी कहता है कि बिशप अपने पत्र के गौरव में राजा की तुलना में कहीं बढ़चढ़ कर है जम कि धार्मिक पत्र केवल मात्र लौकिक विषयों में नहीं अधिक स्पष्ट है इसलिए धर्म विचारों को दोषी पाया जाए तो उस पर अभियोग लौकिक न्यायालय में नहीं सामान्य घमसभा में चलाया जाए।³⁸ यदि राजा को बिशप पर अधिकार प्राप्त है तो बिशप को भी राजा पर अधिकार है। राजा पर घम के अनुशासन का अधिकार है उस बिशप की प्रशिक्षणा पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि उनका मनुष्य के लिए स्वयं खोलन एवं बच करन का अधिकार है और इसलिए यदि आवश्यकता है तो वह राजाओं को भी घम बहिष्करण कर सकता है तथा हाँ ज इस प्रकार वह घम बहिष्कारों के अनुरूप प्रस्तुत करता है।³⁹ यह स्पष्ट है कि वे इनकी अनुभूति के उन समयका में सहमति नहीं जा पाए द्वारा समझाया या राजाओं का घम बहिष्कृत करन के अधिकार पर स्पष्ट करते हैं अथवा उस अस्वीकार करते हैं वह बहुत स्पष्टता से यह भिन्न करता है कि बिशप या पोप समस्त लौकिक शासकों पर धार्मिक सत्ता में सम्पन्न हैं ठीक वैसे ही जम कि उनको भी बिशपों पर लौकिक अधिकार प्राप्त है।

तथापि वह न केवल सामान्य शासकों में ही लौकिक शासकों पर धार्मिक शासकों की सत्ता के सिद्धांत को प्रस्तुत करता है वह यह भी स्पष्ट कर देता है कि जमक मत में उस सत्ता का प्रकृति एवं सीमाएँ क्या थीं। बिशपों का राजा पर धार्मिक अधिकार प्राप्त है किन्तु इन अधिकारों का दुरुपयोग हो सकता है तथा घम-बहिष्कारों के अधिकार में प्रजाओं को निराशा का शपथ से मुक्त करने का अधिकार निहित नहीं है—अर्थात् बिशपों का राजा को पत्र-पुनः करन का कोई अधिकार नहीं है। कभी कभी ऐसा हुआ है कि बिशपों ने अपने सत्ता का प्रयोग वास्तविक परिस्थितियों की धारण समीक्षा करने नहीं अपितु भावनाओं व वशीभूत होकर किया है तथा इस प्रकार घम बहिष्कारों का दुरुपयोग केवल कानून का सत्ता के प्रति घृणा को ही जम देता है। कुछ बिशपों ने राजा की प्रजाओं का निष्ठा की शपथ में मुक्त करन प्रारम्भ कर दिया है किन्तु यह भ्रष्टता है तथा स्वयं के विरुद्ध अपमान का कार्य है जिसके नाम पर उनको शपथ दिया गया है। यह सत्य है कि कुछ शर्तों धारण हो सकती हैं जिनका पालन नहीं करना चाहिए किन्तु यह स्पष्ट है कि हाँ ज इनमें किसी मनुष्य द्वारा एक शासक के प्रति ली गई निष्ठा की शपथ को सम्मिलित नहीं करता चाहे वह शासक घम बहिष्कृत हो क्या न हो।⁴⁰

यदि आज इस मामले में स्पष्ट है कि बिशपों की सत्ता राजा को पत्र-पुनः करन तक विस्तृत नहीं वह हम पर भी बत देता है कि चाहे वह कितना भी दूर एवं धारणों क्या न हो। उस उमके विरुद्ध हथियार नहीं उठाने चाहिए।⁴¹ बिशपों का कार्य राजा एवं जनता के बीच मध्यस्थ होना राजाओं एवं राजकुमारों का उनका जनता के प्रति शोध दूर करना तथा दोनों के कल्याण के लिए रात और दिन प्रायत्न करना है।⁴² अतः बिशपों को राजाओं पर भी धार्मिक सत्ता प्राप्त है किन्तु यह सत्ता धार्मिक मामलों तक ही सीमित है तथा केवल धार्मिक दण्ड द्वारा ही क्रियाविधि की जानी चाहिए। दूसरी ओर जसा कि हम हमें बुरा है सभी बिशपों राजा के शपथ में उमक अर्पित हैं किन्तु वे लौकिक न्यायन्याय के अधीन नहीं यदि उन पर कोई अभियोग लगाया गया है, तो उन पर विचार एक

सामाजिक धर्म सभा में किया जाना चाहिए।

अपने ग्रन्थ के दूसरे भाग में ह्यूज विशय प। पर नियति का प्रश्न उठाता है तथा उस पक्ष का जिस वह नीतिगत सत्ता का उचित स्थान बनाता है समझ करता है किन्तु उस विषय का पूरा ही विवेचन किया जा चुका है।⁴³ दो विषय जिनका अभी हमने उल्लेख नहीं किया है वरुण हैं। प्रथम तो उसने द्वारा म मान्यता की निम्न है कि पाप की कोश प्रताड़ना नहीं कर सकता तथा वह यह बनाता है कि मन पीटर की श्रुति करने पर सतपात्र न भ सता की थी।⁴⁴ तीसरे उमरे द्वारा पोप का नियति में विशेषणया विद्यालयपर निर्वाचना के मामला में सभ्य ट क स्थान का विरुद्ध वरण है तथा वह पोप निकोलस तीसरे के घोषणा क पक्ष में आग्र करता है।⁴⁵

पन्युरी के ह्यूज की स्थिति यह वरुण तथा रोचक है वह है शास्त्र के कार्यों तथा जिह वह उसके सिद्धान्त का कि बटन स्वयंता से तथा बनपूर्वक आलोचना करता है किन्तु वह धार्मिक प के गौरव तथा उसका राजाघा पर भी सत्ता का समर्थन करने में भी स्पष्ट है।

यहीं पर उस ग्रन्थ के अलक की विविध मायताओं पर विचार करना सर्वोत्तम होगा जिसका शीघ्र ट्रुवटस द्वोरमत्तम है।⁴⁶ वास्तव में यह कहना कठिन है कि हम उसका क्या महत्व प्रदान करना चाहिए किन्तु यह मानना तब मगत होगा कि पन्युरी के ह्यूज के बुद्ध वाक्य समूहों में तथा उनका बुद्ध मायताओं में महत्त्वपूर्ण तथा अन्वनीय समानता है। हम अभी स्पष्ट हैं कि ह्यूज के ता है कि राजा ईश्वर की प्रतिमूर्ति है तथा विशय ईसा की तथा मलिए यह ठीक है कि विशय सम्राट का साम्राज्य में उसका अधीन रहे। जसा में कह चुके हैं कि यह ठीक निधारण करना समभव नहीं प्रतीत होता कि ह्यूज का वाक्यशास्त्रों को क्या स्पष्ट में प्रदान करता था तथा कि तब तक नहीं शताब्दियों के अन्तर्गत तथा चौथी शताब्दी के एम्ब्रानियेस्टर का शासन का मारिचिक सम्मरण है।⁴⁷ का वाक्य समूहों में हम राजा तथा विशयो की मापदा स्थिति एवं सत्ता के धरण का तुलना करतीं चाहिए जो ट्रुवटम द्वोरमत्तम सस का चौथे अक्ष के अलक द्वारा किया गया। यह स्पष्ट प्रतीत होगा कि यह अलक तथा गलड का राजाघा के बीच प्रतिष्ठापन विवाद के काल की रचना है।

सर्वो मायता है कि राजा एवं पुरोहित दोनों ही ईश्वर द्वारा अभिषिक्त हैं किन्तु पुरोहित का माननाय स्वभाव का प्रतिनिधि है जिसके कारण वह पिता (ईश्वर) से निकट है जबकि राजा का स्वभाव अलग है कि वह ईश्वर का पुत्र है पुरोहित मरणासन्न ईसा का प्रतिनिधि है तथा अपने आपको ईश्वर की प्रतिनिधि रूप में मर्मित करना है राजा यश तथा सम्मान से अभिषिक्त होने वाला तथा अपने स्वर्गीय सिद्धांत स सभी शताब्दी एवं अधिकारों का उपर शासन करने वाला का प्रतिनिधित्व करता है। मन्देश वाह्व देवदूत (Angel of Annunciation) ने मरी से कहा ईश्वर उस उसका पिता डविड का सिद्धांत प्रदान करेगा उसके पिता आरोन का नही क्योंकि ईश्वर ने डेविड का पुरोहित पर ही सत्ता प्रदान की है। अतः यह स्पष्ट मगत है कि राजा को पुरोहित पर भी अधिकार एवं सत्ता प्राप्त हो।⁴⁸

लेखक यह प्रतिपादित करता है कि मूसा और जोगुआ तथा इजरायल के पांच राजा इसी प्रकार पुरोहितों से श्रेष्ठ थे⁴⁰ तथा वह इस मन को पुनः जोरता है कि राजकीय मत्त पुरोहितों की सत्ता से अधिक बन्नी है क्योंकि वह ईसा के जन्म का प्रतिनिधि है जो उसकी मानवता से श्रेष्ठतर है अतः उचित ही है कि राजा पुरोहितों पर शासन कर तथा वह उनको पद स्थापित करे।⁵⁰ एक प्रकार से राजा का अभिप्रेत वसा ही है जम कि पुरोहित का दूसरे प्रकार से यह अधिक बढ़ा है क्योंकि पुरोहित का अभिप्रेत आरोन या प्रेतों के अनुकरण पर है जबकि राजा का अभिप्रेत ईसा के अनुसरण पर है जिसे ईश्वर ने उसका अनुयायिना से ऊपर अभिप्रेत किया है।⁵¹ इस प्रकार सम्राट से उच्चतर है तथा उसका शासन करता है तथा लेखक प्रेगोरी महान् के पत्र में कुछ वाक्यांश उद्धृत करता है जो सम्राट के प्रति उमने आजापालन तथा सम्मान को प्रदर्शित करते हैं।⁵

दूसरे वाक्य समूहों में वह दावा करता है कि राजा को चाबियाँ (Keys) का अधिकार है यद्यपि उसका क्या वास्तविक अभिप्रेत था यह कहना बहुत कठिन है।⁵² तथा वह चर्च की परिपत्ति को दुनाने तथा उनकी अधिष्ठाता करने वाला प्रधान अधिकारी है।⁵³ वह प्रतिपादित करता है कि राजा को साधारण जनता में से एक नहीं मानना चाहिए क्योंकि वह ईश्वर का ईसा (Lords Christ) है।⁵⁵ तथा दूसरे स्थान पर वह निश्चिन्ता है कि उस अपराधों को क्षमा करने तथा क्षीम-याग (Man) में रोटी तथा मदिरा को हवि समर्पित करने का अधिकार है जसा वास्तव में वह अपने अभिप्रेत के प्रति करता भी है।⁵⁶

एन मत्र वातां के वात यन् एक तुच्छ वात प्रतीत होनी है कि राजा बिशप को उसके पद के दण्ड से प्रतिष्ठापित करने के अधिकार का दावा करे तथा वास्तव में यह उल्लेख है कि वह इसको बिशप रूप में स्पष्ट करने का प्रयत्न करता है कि वसा कान समय बिशप को उसका पद या धार्मिक अधिकार प्रदान नहीं करता अतः किन्तु कवन लौकिक सम्पदा एवं चर्च की सरक्षता तथा ईश्वर के बन्नों को शासन करने की सत्ता प्रदान करता है।⁵⁷

ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दियों में ये मान्यताएँ पर्याप्त रूप से विस्मयजनक हैं किन्तु लेखक के दृष्टिकोण को सम्पूर्णतया समझने के लिए हम राजा एवं बिशप के सम्बन्धों के इन मिश्रणों के अनिश्चित तीसरे और पाँचवें दृष्टिकोण में विचार लिए गए पोप की सत्ता और स्थिति के उत्पन्ननीय विवरण का भी अध्ययन करना होगा। रोम की धार्मिक सत्ता के इतिहास का वर्णन हम पुस्तक के क्षेत्र में नहीं आता यहाँ उस विषय का विवेचन हम केवल इसीलिए करेंगे कि इन उपयुक्त ग्रन्थों के सम्पूर्ण मत्त्व का निगम करने में समर्थ हो सकें।

तृतीय दृष्टिकोण में लेखक सम्भवतः 1096 ई. के लगभग पाप द्वारा राजन मत्त तथा दूसरे आचबिशप पर लियोस के आचबिशप का एक प्रकार का धर्माधिपत्य स्वीकार कर लेने के कारण उत्पन्न विवाद में रूचि है। राजन के आचबिशप विनिषय का इस सत्ता को मान्यता देने में अग्रहेलना तथा रोमन पोप पद की अग्रमानना के कारण गम्भीर भ्रमना की गई। दृष्टिकोण का उल्लेख उस प्रयुक्त में जो तक देना है वह दूरगामी है। सब प्रथम वह कहता है कि आचबिशप तथा दूसरे बिशप रोमन पोप की गद्दी के प्रति उतने

ही प्राप्तापावन व भागी है जितना कि दूसरे प्ररित पाटर के प्रति ये क्योंकि वे न केवल प्ररिता व अनुवायी हैं अरिंत व उनक प्रतिनिधि भी हैं।⁵⁸ दूसरे यह यह तक दता है कि प्राच्यविशय भी पाटर का प्रतिनिधि है तथा रमा न रानन एव मुक्त करने की जो सत्ता पीटर को दी थी वह उमक पाम भी है। रानु राजन व प्राच्यविशय तथा रोमन पोप-पम व बीच बहपन का का प्रमन हा नहीं उठता तथा दोनों में म को र्मी किसी का याय नहीं कर सकता। विशय का याय ईश्वर के अनरित को भी नहीं कर सकता।⁵⁹ ये मायनाए अपन स्वरूप म अयन्य कगेर हैं किन्तु उमक इनम भी प्राय बर जाता है।

यह म प्रमन का विवेचन करता है कि क्या राजन के प्राच्यविशय मे नियोजन के प्राच्यविशय की सत्ता मानन की अपेक्षा यायोचित है तथा उमकी मायता है कि इसका को र्मी प्रोचिय नहीं है। यह मभाव देता है कि रोम व समथक यह कह सकत है कि उम रोम का प्राप्ता का पावन करना चाणिए, क्योंकि य घोषणा की गई है कि रोमन चच सभी चचों की जननी तथा म्यामी है। व स्वीकार करता है कि रोम व विगर्षों तथा उनके अन्वयियों द्वारा यह घोषणा की गई है किन्तु व प्रतिपात्त करता है कि यह रमा या उमक प्ररिता नरा नहीं किया गया है। यदि को र्मी चच सभी चचों की जननी हो सकती है तो व अक्षम का चच है। वास्तविकता तो यह है कि रोम को सभी चचों म उपर रमा या उसके प्ररितों की सत्ता द्वारा नहीं किन्तु मनुष्यों की सत्ता नरा बनाया गया है तथा उमका कारण सम्राट के नगर की गरिमा तथा सत्ता है। रोम की स्थिति न्याय मगत सत्ता पर आधारित नहीं वरन् पनधिकार चष्टा पर आधारित है यद्यपि उमका उदय विमे से बचन की अक्षमकता व कारण हूया है। मून रूप में चच का शासन परोहितों की परिपद् नरा मचानित होता था कवल पूर पदन की प्रायका स ही यह नियम बनाया गया है कि एक पुरोहित को अय व उपर रमा जाए तथा वह मभूग चच की रम मान के लिए उत्तरायी हो।⁶⁰

पाचवें दृक में जो कि खीहरम के अनुसार चौथे की भांति हा इन्टर क प्रतिष्ठापन व विशालकाय का है अयन्य कगेर मया में पोप पर पुन आक्रमण करता है। उमक तक दता है कि पोप अनक ऐसी प्राप्ताए रता है जमी रमा भी नहीं देता था। उन्हरणाथ पोप द्वारा विगर्षों का रोम म अनक बार उपस्थिति व त्रिण विदग करन म उन पर असह्य नार डाल दिया गया है। वह निवापत करता है कि विगागण्ड पोप के अधिकारियों के सोम को सन्पष्ट करन क त्रिए चच की सम्पत्ति को बचन व त्रिए विवग हो गए। व प्रतिपात्त करता है कि यदि पोप उम कारण विगर्षों को धम-अन्वित करता है कि उपर बलिष्ठ एन मामनों में व उमकी प्राप्तापावन न। वरथ थ तो वह धम-अन्वितार अक्षम है तथा उसका को र्मी प्रभाव नहीं है।⁶¹ यह पोप नरा अनक मनों का पाणियों क अधिकार-नेत्र मे मुक्त करने के काय की नगर भमता करता है तथा यह प्रतिपात्त करता है कि एमी मुक्ति को माचता नहा मिलनी चाणिए, क्योंकि वह ईश्वर क प्राप्ता क विरुद्ध है तथा पोप को उम वलन का को र्मी अधिकार नहीं है।⁶² यह पोप द्वारा चच व शासन म राजाओं क अधिकार को नष्ट करने क प्रयत्नों की निन्दा करता है कि यह पोप जिलेमिय द्वारा स्थापित सिद्धांत का अक्षम है कि नसाग यदी उम अन्विय

चर्च से ही है दो सत्ताधारियों से शासित है—पुरोसि न तथा राजा । चर्च की राजकीय सत्ता से उसका स्पष्ट अभिप्राय प्रतिष्ठापन का अधिकार है तथा वह पुन इस बात पर बच देता है कि राजा एक साधारण नागरिक नहीं है ।⁶³

यह कहना अत्यन्त बठिन है कि इन अति प्रसाधारण मान्यताओं को हम क्या महत्त्व प्रदान करें तथा किस प्रकार यह निर्धारण करें कि कहाँ तक ये कुछ क्षेत्रों में पामी जाने वाली सामान्य विचार प्रणाली का प्रतिनिधित्व करती हैं या केवल व्यक्तिगत सम्मतिप्राप्त मात्र हैं । पुरोसि के हृत् के कुछ शब्दों से इनकी समानता स्पष्ट है तथा इन धारणाओं का अन्तिम साहित्यिक स्रोत एक ही हो सकता है किन्तु ह्यूज इन वाक्य-समूहों का प्रयोग करते समय उनकी गत व्याख्या न होने देने की सावधानी भी बरतता है तथा धार्मिक पक्ष के उच्चतर गौरव पर बल देता है इन दृष्टियों का लेखक अपने तब की राजकीय प्रतिष्ठापन के अधिकार या लौकिक सत्ता की निष्पत्ता को प्रतिपादित करने के लिए आवश्यकता से कहीं अधिक दूर तक ले जाता है ।

उसके अन्य कार्योद्देशता डिफेंसिवो इम्पोरियलिम (Orthodoxa Defensio Imperialis) में जो सम्भवतः 1111 ई में लिखा गया है अभिव्यक्त केटीनो के प्रगोरी के दृष्टिकोण का हम पहले ही विस्तृत अध्ययन कर चुके हैं जिसमें लौकिक सत्ता के विरुद्ध विरोध की भावना तथा राजा या सम्राट द्वारा बिशप के प्रतिष्ठापन के अधिकार का प्रयोग का प्रतिपादन किया गया है ।⁶⁴ तथापि यह कुछ महत्वपूर्ण दावों का प्रयोग करता है जिन पर हमको ध्यान देना चाहिए । एक स्थान पर यह कहता है कि ईश्वर ने ही चर्च में राजाओं तथा उच्च अधिकारियों को स्थापित किया है जिनके लिए सत्ता प्रापना करने का उपदेश प्रतीति में किया है तथा हमें राजा की चर्च का अध्ययन मानना चाहिए । यह अस्मत्त नहीं कि चर्च के अधिकारी सम्राट द्वारा मुक्त एवं दण्ड से प्रतिष्ठापित किए जाएँ क्योंकि यदि राजा चर्च का अध्यक्ष है तो उसे उसके पक्ष में या अधिकारियों को नियुक्त करने से वंचित नहीं किया जा सकता ।⁶⁵ लौकिक शासक के लिए चर्च के अध्यक्ष की उपाधि उपयोग करना विचित्र एवं अस्वाभाविक है तथा यह जानना बठिन है कि प्रगोरी उसे क्या सुनिश्चित महत्त्व प्रदान करता है । सम्भवतः राजाओं एवं सम्राटों के अभिषेक पर उसके द्वारा नियमित बल से शक्य सम्बन्ध जोड़ा जा सकता है⁶⁶ किन्तु प्रगोरी स्वयं यह सम्बन्ध नहीं जोड़ता ।

नोनानतुला का प्लेसिडस (Placidus of Nonantula) अपने अन्य 'लीबर दे होनरे एक्लेसिया' (Liber de Honore Ecclesiae) में जो सम्भवतः 1112 ई में लिखा गया प्रमुखतया प्रतिष्ठापन के प्रश्न तथा चर्च की सम्पत्ता की पवित्र प्रकृति का बरण करता है तथा इस विषय पर उसके ग्रन्थ की परीक्षा हम पहले ही कुछ विस्तार से कर चुके हैं ।⁶⁷ तथापि हमारे अन्य विषय अर्थात् धार्मिक एवं लौकिक सत्ताओं के सम्बन्धों के सिद्धान्तों के विषय में इस ग्रन्थ का बड़ा महत्त्व है क्योंकि इसमें पहली बार उस ग्रन्थ में कान्स्टेन्टाइन के दान की व्याख्या का उदाहरण पाते हैं जिस ग्रन्थ में उसे बाद में समझा गया । जसा हमने दिसलाने का प्रयास किया है यह स्पष्ट है कि मूल रूप में उसका सम्बन्ध पौन द्वारा पूर्वी ईसाई चर्च में बिशप पर पूर्वी सम्राटों की

सत्ता के तथा इटली में उन सम्पदाओं के जो ग्राटवी शताब्दी में भी उनके (पूर्वी साम्राज्यों के) अधिकार में थी उत्तराधिकार के दावे में थी।⁶⁸

प्लसीडस दान का अर्थ यह समझना है कि कास्टेलान ने पोप सिवेस्टर को पश्चिम में उसकी सम्पूर्ण सत्ता सौंप दी। यहाँ तक प्लसीडस की स्थिति पूर्णतया स्पष्ट प्रतीत होती है कि तुम सबके भाग उसकी व्याख्या प्राप्त नहीं है। वह कहता है क्योंकि कास्टेलान द्वारा प्रकृत (पीटर) के प्रति सम्मान प्रदान किया गया था तथा पश्चिमी साम्राज्य पीटर के उत्तराधिकारी के लिए छोड़ दिया गया था अतः ईश्वर ने उसे सम्पूर्ण रोमन साम्राज्य का अधिकार दिया है क्योंकि पोप सिवेस्टर ने यद्यपि उसे कास्टेलान ने प्रदान कर दिया था तो भी ईसा का अनुकरण किया तथा राजमुकुट को अपने सिर पर रख कर हानि में देने दी तथा उसके लिए अभिप्राय प्रकट की कि कास्टेलान चर्च की निरर्थक सवाब के लिए साम्राज्य का भार समझे रहे।⁶⁹ इससे प्लसीडस का वाक्य विकृत रूप में कहा जा सकता है। सम्भवतः उसका अभिप्राय यह हो सकता है कि सिवेस्टर ने पश्चिम में राजनीतिक सत्ता स्वीकार करना नहीं चाहा अथवा यह भी हो सकता है कि स्वयं व्यक्तिक रूप से उसे स्वीकार करने के बजाय उसने चर्च के प्रति निधिया सेवक के रूप में कास्टेलान को प्रयोग करने की दिया। बाद वाली सम्भावना का बोध सम्भवतः उसके सार्वभौमिक होने से होता है क्योंकि वह पोप सिवेस्टर के वाक्य का चर्च द्वारा द्रव्य पद तथा अर्थ लौकिक सम्पदाओं पर धारण अधिकार के दृष्टांत स्वरूप उपयोग करता है। यह दर्शाया हुआ है कि उस विषय का उद्देश्य प्लसीडस ने केवल उपयोगवश किया है किंतु इसका विवेचन हम अभी तक करेंगे जबकि हम साम्यवाद के हानोरियस का वर्णन करेंगे।

इस पुस्तक के प्रारम्भिक भाग में हम बार्डोम के एडवोकेटों का अपने धार्मिक अर्थों में प्रतिष्ठापन के प्रश्न पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विकास का अध्ययन कर चुके हैं।⁷⁰ इनमें से एक में जो सम्भवतः 1119 ई. में लिखा गया था एक पर्याप्त महत्त्व वाला वाक्य है जो कि हमारे वर्तमान विषय की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है।⁷¹ यह अर्थ प्रतिष्ठापन विवाद के अन्तिम वर्षों में लिखा गया था जबकि 'योफी' अर्थों में दृढ़ता पूर्वक मुदा एक दण्ड से प्रतिष्ठापन की सूत्र का विरोध कर रहा था यद्यपि वह यह मानने को तैयार था कि साम्राट विषय को उसका पद की लौकिक सम्पत्ति प्रदान कर सकता है। स वाक्य में 'योफी' घोषणा करता है कि दबी कानूनों के अन्तर्गत ही राजा व साम्राट हम पर शासन करते हैं तथा उसी कानून के अन्तर्गत ही वे हमारे आदर एवं सम्मान के पात्र हैं तथा उसका स्पष्टतया यह अभिप्राय पादरी एवं भ्राजक दोनों से ही प्रतीत होता है। वह उन बड़ी हानियों का उल्लेख करता है जो तब होती हैं जबकि राज सत्ता एवं धार्मिक सत्ता एक दूसरे के विच्छिन्न हो जाती हैं। ईसा की अभिप्राय यो कि धार्मिक एवं लौकिक दोनों प्रकार की तलवारों का प्रयोग उसके चर्च की सुरक्षा के लिए होना चाहिए। अतः यह सबसे महत्त्वपूर्ण है कि वह धर्म बहिष्कार की शक्ति के बुद्धि र्हित उपयोग के अन्तर्गत की धीरे धीरे धारण धारण करता है तथा कहता है

कि यह बहुत महिम्न है कि किसी ऐसे व्यक्ति को घम-बहिष्कृत करना बुद्धिमत्तापूर्ण होगा जिसके अनेक अनुयायी हो जिनमें इस प्रकार के कठोर वाय के प्रयोग से अन्धार्थ के स्थान पर अधिक अर्थकीर्ति हो।⁷¹

यह स्पष्ट है कि ज्योफ्री को लौकिक सत्ता के निम्न उदय के बारे में कोई सदेह नहीं था तथा घम बहिष्कार के अनियमित उपयोग की बुद्धिमत्ता के विषय में एक ऐसे व्यक्ति के सदेह जो पोप की गद्दी का हठ समर्थक रहा है अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

इस पुस्तक के उस भाग में जिस अन्तिम ग्रन्थ का हम विवेचन करेंगे वह है सुम्मा ग्लोरिया (Summa Glorea) जो ग्रामसवग के होनोरियस⁷² द्वारा लिखा गया था। यह ग्रन्थ सम्भवतः वास्तु के समझौते के बहुत अधिक समय बाद नहीं लिखा गया तथा पोपवानी परम्परा के एक कट्टर समर्थक के दृष्टिकोण को व्यक्त करता है किन्तु होनोरियस 1076 ई. से 1122 ई. तक के संघर्ष की परिस्थितियों के निरूपण के लिए उतना यत्न नहीं जितना दोनो महान सत्ताओं के उत्पन्न तथा स्वरूप के विश्लेषण एवं तुलना का प्रयत्न में सतत है। उसकी स्थिति बली विचित्र है क्योंकि उसके सिद्धान्त लगभग कई विषयों में अत्यन्त उग्र हैं जबकि उसके वायव्यार्थिक निष्कर्ष किसी सीमा तक मध्यस्थतावादी तथा उदारतापूर्ण हैं।

वह अपने ग्रन्थ का आदि व अन्त धार्मिक सत्ता की उत्कृष्ट गरिमा के प्रबल समर्थन से भरता है तथा उसको अनेक प्रकार से प्रदर्शित करता है। वह अबल (Abel) को पुरोहित के पद का तथा केन (Cain) को राजकीय पद का प्रतीक मानता है शम (Shem) का जो प्रथम ययाय पुरोहित है वह पूर्वाचार्य परम्परा के अनुसार मेल्चीजेडेक (Melchi Jedek) से तादात्म्य स्थापित करता है जबकि रोमन साम्राज्य जाफेठ (Jophet) का उत्तराधिकारी है तथा वह इसी प्रकार की दो सत्ताएँ आइजक तथा इश्मायल (Issac and Ishmael) तथा जेकब व इसाउ (Jacob and Esau) को मानता है। जैसे किसान उपयाजक (Deacon) के अधीन हैं सिपाही पान्त्री के अधीन हैं राजकुमार बिशप के अधीन हैं उसी प्रकार राजा पोप के अधीन हैं।⁷³ तथापि उसका यह प्रत्युत्तर दिया जाता है कि राजा एक साधारण व्यक्ति नहीं क्योंकि पुरोहिता के तन से उसका अभिवेक होता है किन्तु वह इस तक की धृष्ट्यापूर्वक अवहेलना करता है और कृता है कि इसे सभी व्यक्ति स्वीकार करते हैं कि राजा का पद धार्मिक नहीं है किन्तु वह एक साधारण व्यक्ति है जो किसी भी पादरी से सम्बद्ध कार्य को नहीं कर सकता और वह एक शास्त्रीय अन्तर भी प्रदर्शित करता है कि राजा का अभिवेक केवल तन से होता है जबकि पुरोहित का अभिवेक पवित्र लिपेप से होता है तथा यह भी बतनाता है कि राजा का अभिवेक दूसरे राजा द्वारा न होकर पुरोहितों द्वारा होना है।⁷⁴

इस प्रकार होनोरियस का दृष्टिकोण स्पष्ट है कि पुरोहित का गौरव राजकीय गौरव में उच्च है। किन्तु वह इसमें भी आग बढ जाता है तथा लौकिक सत्ता के उत्पन्न एवं स्वरूप के विषय में एक सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है जो हमारे विचार में पूर्णतया नवीन ही नहीं सामान्य परम्पराओं से भी भिन्न है। जसा हम अनेक बार दिखला चुके हैं धर्माचार्यों का सामान्य सिद्धान्त यह था कि लौकिक सत्ता ईश्वर के द्वारा स्थापित है।

पाँचवीं शताब्दी में जिनेगियस ने यह प्रतिपादित किया था कि ईसा ने स्वयं इन दोनों सत्ताओं को बनाया तथा प्रथम किया है जो कि मसार का शासन बनाने वाली है नवी शताब्दी से इस सिद्धांत में यह परिवर्तन आ गया कि ईसा न धर्म बन म यह दो सत्ताओं बनायी है।⁷⁵ होनोरियस एक प्रथम विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। वह पहले यह सिद्ध करता है कि मूसा से सम्पूर्ण के समय तक इजरायेली पर राजाओं का न होकर पुरोहितों तथा पगम्बरों का शासन था वह मेमुएल ही था जिमने राजपुत्र को स्थापित किया पुरोहित तथा पगम्बर ही राजाओं का निर्वाचन तथा अभिषेक करते रहे तथा निर्वाचन के बाद पुरोहित इजरायल पर राज्य करने लगे।⁷⁶ जब मसाचा राजा तथा पुरोहित ईसा आया तो उसने अपने चर्च को कातून प्रदान किए तथा उसने चर्च पर शासन करने के लिए धार्मिक सत्ता की स्थापना की न कि राज-सत्ता की तथा धार्मिक सत्ता का अधिकार उसने पीटर को प्रदान किया जिसने यह अधिकार अपने उत्तराधिकारियों को दे दिया। इस प्रकार ईसा के समय में उक्त सिन्वेस्टर के समय तक चर्च का शासन केवल पुरोहिता के हाथों रहा।⁷⁷

वास्तव में यह एक दूरगामी तथा मूलभूत धारणा है एक ऐसी धारणा जो पारम्परिक धार्मिक सिद्धांतों से मेल नहीं खाती। इस धर्म के बाद कान्स्टेन्टाइन के दान का प्रयोग एक व्याख्या दी गयी है जिसका जहाँ तक हम जानते हैं कोई प्राचीन प्रतिरूप उपलब्ध नहीं होता। होनोरियस कहता है कि धर्म वह समय आ गया जब कि ईश्वर ने भ्रष्टाचार के युग को शांति के युग में तथा मूर्तिपूजका के विपरीतपुण्य साम्राज्य का ईसाईयों के शासन में बदल दिया। कान्स्टेन्टाइन का सिन्वेस्टर न जो चर्च के पुरोहितों का राजा था धर्म परिवर्तन किया था उसने साम्राज्य का मुकुट रोमन पोप के मस्तक पर रख दिया तथा घोषणा की कि कोई भी उसकी महमति के बिना रोमन साम्राज्य को नहीं पा सकता। तथापि सिन्वेस्टर ने अनुभव किया कि जो पुरोहित के विरुद्ध विचार करते हैं उनको ईश्वर के शस्त्रों की तलवार में ही शांत नहीं किया जा सकता है परन्तु लौकिक तलवार से तथा उसी कान्स्टेन्टाइन को ईश्वर के कार्य में सहयोग के रूप में सम्मिलित कर लिया जो मूर्तिपूजकों यूनानियों तथा धर्मद्रोहियों के विरुद्ध चर्च का संरक्षक बना उसे दुष्कर्म करने वालों को दण्डित करने के लिए तलवार प्रदान की तथा कहाँ से उत्कृष्ट के लिए उस पर साम्राज्य का राजमुकुट रखा गया। इन उस समय में यह परम्परा बनी कि लौकिक राज्य के लिए चर्च को राजा तथा व्यापारीय चाहिए। तथापि केवल लौकिक राज्य ही राजाओं के अधिकार में है तथा कान्स्टेन्टाइन ने बिशपों के कार्यों का निष्पत्ति करने में भाग लेना आवश्यक कर लिया। इस प्रकार जैसे शरीर की तुलना में धारणा का गौरव अधिक होना है लौकिक की तुलना में धार्मिक का उसी प्रकार धार्मिक सत्ता का गौरव राजकीय सत्ता से कहीं अधिक है जिमको वह स्थापित करती है तथा आज्ञा देती है।⁷⁸

वास्तव में होनोरियस का स्थिति नवान एक विस्मयजनक है। कान्स्टेन्टाइन के दान की ऐसी व्याख्या जहाँ तक हमें विदित है पहले नहीं की गई। जसा हम देख चुके हैं प्लेसीडस ने दान का अर्थ यह लिया है कि कान्स्टेन्टाइन ने अपने साम्राज्य का परिषदी

भाग पोप को हस्तांतरित कर दिया तथा उसका भय यह भी हो सकता है कि सिल्वेस्टर ने चर्च के सेक्टर के रूप में उसका शासन चलाते के लिए उम कान्स्टेन्टाइन को प्रदान कर दिया किन्तु हानोरियस दान की 'याख्या सम्पूर्ण राजनीतिक सत्ता के पोप को समग्र हस्तांतरण से करता है तथा यह प्रतिपादित करता प्रतीत होता है कि इस समय से लेकर उस प्रकार की सम्पूर्ण सत्ता वास्तव में लौकिक शासकों द्वारा धार्मिक सत्ता से ही प्राप्त की गई। किन्तु यही कथा ममाप्त नहीं हो जाती क्योंकि हानोरियस का यह अभिप्राय प्रतीत होता है कि कान्स्टेन्टाइन का कार्य केवल सामान्य दली व्यवस्था की स्वीकृति मात्र है वह प्रतिपादित करता है कि ईसा ने दो सत्ताओं को चर्च का शासक नियुक्त नहीं किया है किन्तु केवल धार्मिक सत्ता को ही बनाया है तथा दली व्यवस्था के अंतर्गत ही वास्तव में सभी सत्ताएँ निहित हैं। अतः यह प्रतीत होगा कि कम से कम हानोरियस कुछ उत्तर कालीन चर्चकों द्वारा प्रतिपादित उस सिद्धांत का सुभाव कर रहा है कि सम्पूर्ण सत्ता चाहे वह धार्मिक हो अथवा लौकिक चर्च एवं उसके अध्यक्ष पोप में निहित है तथा सभी लौकिक शासक जिस सत्ता को धारण करते हैं वह उनको धार्मिक सत्ता द्वारा प्रदान की गई है।⁷⁹ यह कभी क्या मध्यकाल में स्वीकृत सामान्य सिद्धान्त बन पाया इस पर हम बाद में विचार करेंगे किन्तु निश्चय ही यह सत्य है कि यह इसकी सवप्रथम अभिव्यक्ति है। वास्तव में यह भी कहा जा सकता है कि इसे ग्रेगोरी सप्तम ने प्रस्तुत किया था किन्तु चाहे यह सिद्ध किया जा सके कि यह उसके दावों में निहित है⁸⁰ यह निश्चित है कि उसका स्पष्ट अभिप्राय उसमें नहीं है।

सम्भवतः ली धारणा से हमें हानोरियस की घोषणा को सम्बद्ध करना होगा कि सम्राट का निर्वाचन पोप द्वारा राजाओं की सहमति तथा जनता की स्वीकृति से होना चाहिए। वास्तव में अत्यन्त वह दावा करता है कि वे लौकिक राजा नहीं बल्कि बिशप वास्तविक निर्वाचक थे किन्तु हानोरियस के तर्क का प्रधान बल उसकी इस भावना में प्रतीत होता है कि नियुक्ति का अधिकार पोप तथा आध्यात्मिक राजाओं में निहित है तथा वह यह प्रतिपादित करते हुए समापन करता है कि राजकीय सत्ता अध्यात्मिक रूप से धार्मिक सत्ता के अधीन है तथा इसका कारण यह है कि धार्मिक सत्ता ने ही राजकीय सत्ता को स्थापित किया है।⁸¹

इन दूरगामी प्रभाववाली धारणाओं की तुलना में यह सापेक्ष रूप में तुच्छ विषय प्रतीत होता है कि हानोरियस यह भी मानता है कि पोप का निर्वाचन कार्डिनलों द्वारा रोम के बिशपों तथा पादरियों की सहमति से तथा जनता के अनुमोदन से होना चाहिए। वह सम्राट को सहमति या स्वीकृति का उल्लेख नहीं करता और वह यह भी जानता है कि प्रत्येक नगर के बिशप का निर्वाचन बिशप क्षेत्रों के पादरियों द्वारा जनता के अनुमोदन से होना चाहिए एवं उसको मुक्त एवं दण्ड में प्रतिष्ठापित पोप द्वारा किया जाना चाहिए।⁸

तथापि अब हम ध्यान रखना चाहेंगे कि धार्मिक एवं लौकिक सत्ता के सम्बन्धों में हानोरियस के सिद्धांतों का एक अग्र पक्ष भी है जो वास्तव में औपचारिक रूप से हमारे द्वारा अभी निरूपित सिद्धांतों से अलग नहीं किन्तु इस पर आधारित कुछ निष्कर्षों को

सशोषित करने की दृष्टि से पर्याप्त रूप से महत्वपूर्ण है।

वह सुस्पष्ट रूप से मानता है कि एक अयाजक के रूप में राजा दबी विषयों में धार्मिक अध्याय अर्थात् चर्च के अध्याय पोप के अधीन है। इसी प्रकार पोप एक सभी पादरी नीतिक मामलों में राजा के अधीन हैं एवं वह यह भी मानता है कि प्राचीन विधान में भी यही गण्य था। राजा की नियुक्ति पुर्न अथवा पण्डित करने से दबी कानून से सम्बन्धित विषयों में उनकी आजा का पालन करते थे किन्तु पण्डित एवं पुरोहित भी सभी लौकिक मामलों में राजाओं की आज्ञा का पालन करते थे।⁸³

दूसरे कुछ वाक्यांशों में यह लौकिक सत्ता के उच्च तथा स्वरूप के सिद्धांतों का कुछ विस्तार में एक निश्चितता पूर्वक विवेचन करता है। वह स्पेइक तथा पूर्वाचार्यों की परम्परा का अनुकरण करता है कि मूल रूप में ईश्वर ने अपने मनुष्य को अपने सव मनुष्यों पर अधिपति नहीं बनाया किन्तु मनुष्यों के पापों तथा बुद्धिहीन आचरण के कारण ही ईश्वर ने कुछ लोगों को दूसरों पर अधिपति के सम्पन्न किया ताकि मनुष्य वास्तविक मानवीय जीवन व्यतीत करने के लिए भय द्वारा नियंत्रित किए जा सकें। चर्च के शासन के लिए सत्ता में दो तत्वों की आवश्यकता है धार्मिक जो कि धार्मिक सत्ता के हाथों में है तथा भौतिक जो कि राजनीतिक सत्ता के हाथों में है जिससे वह उनको दण्ड देता है जो दण्डता में रहते हैं।⁸⁴ इस प्रकार लौकिक सत्ता स्वयं ईश्वर की सत्ता है तथा लौकिक विषयों में उसका आज्ञा पालन केवल जनता ही नहीं पादरियों द्वारा भी किया जाना चाहिए। प्राचीन काल के ईसाई लौकिक विषयों में मूल पूजक राजाओं की आज्ञा का पालन करते थे जबकि धार्मिक विषयों में वे केवल ईश्वर के अनुयायी थे क्योंकि केवल ईश्वर ही नहीं बुर शासकों का भी आज्ञा पालन करना चाहिए। सत पाल एवं सत पीटर ने सीधे सा ही शिक्षा दी है कि लौकिक सत्ता ईश्वर द्वारा आश्रित है।⁸⁵ अतः यह प्रतीत होगा कि होनोरियस का मत था कि चाहे राजा रोमन धर्म-पीठ पर के विरुद्ध किन्तु भी करे अथवा धर्म के धर्म अथवा धर्म में पूरे डालने में सक्षम भी हो तो निष्ठावाना को यद्यपि उससे सभी सम्पत्तियों को वापस लेना चाहिए तथापि धर्मपूर्वक उन्हे सहन करना चाहिए।⁸⁶

यदि अब हम इन शर्तों में जिनकी इस अध्याय में हमने परीक्षा की है कहे गए तथा 'याह्या' किए गए सिद्धांतों के सामान्य स्वरूप को मक्षिप्त करने का प्रयास करें तो हम पायेंगे कि यह सन्धि है कि कर्तव्य तक इन तत्वों के समक्ष सम्पूर्ण विषय की तत्कालत धारणा थी और जब कि उनमें स्पष्ट और दरगामी मतभेद भी हैं यह भी निश्चित है कि कुछ स्थलों पर उनमें पर्याप्त सम्मति है।

सब प्रथम उनको इसमें शर्त देनी थी कि लौकिक सत्ता एक दिव्य सत्ता है जसी कि धार्मिक सत्ता है। ह्य मडेडिट तथा होनोरियस सुस्पष्ट रूप में इस पर बात देते हैं यद्यपि वे इसका मूल उच्च पापों के कारण मानते हैं। इसलिये जब पपूरी के ह्य तथा वेटीनो के ग्रेगोरी ने धर्म के सत्ता पर बात की तथा जब ह्य ने लौकिक शासन के उदय के बारे में 'हिस्टोरिया' के वाक्यों के उस अधिप्राय का जसा वह सम्मति था निराकरण किया वे वास्तव में उस सिद्धांत से भिन्न किमी सिद्धान्त का प्रतिपादन नहीं कर रहे थे कि

क्य सप्रेडिट तथा होनोरियस सत्ता मानते ।

पुन जसा हम देख चुके हैं अधूमने बन्न उगुन या कि य० समझा जाए कि यह निसि ग्य है कि प्रत्येक सत्ता का अपना उचित क्षेत्र है निम्न दूसरी सत्ता को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए पोपा तथा होनोरियस सुस्पष्ट रूप से सत्ता पर बल देते हैं कि सभी पाप्टरी तथा होनोरियस इनम विशेष रूप से पोप को भी सम्मिलित करता है लौकिक विषयो म लौकिक सत्ता व अधीन हैं ।

उनम महान सघष द्वारा उठाए गए कुछ भावहारिक प्रश्नों के प्रति जगभर एक-सी ही प्रवृत्ति भी देखी जा सकती है यदि गेम्बलाउ व सीनर को राजा को घम बहिष्कृत करने के विषय म सदेह था तथा उसन यह सुझाया कि हनरा चतुय का घम-बहिष्कार अनायपूर्ण था तो पत्रूरी का ह्य भा यद्यपि वह पोप का नीतियो का प्रबल आलोचक था यह स्पष्ट कर दना है कि विनाय राजा को घम-बहिष्कृत कर मरना है जबकि ज्योफी जो यद्यपि पोप के मन का प्रबल समर्थक था सम्भवतः राजाओं के घम-बहिष्कार की न्याय संगतता पर नहीं किन्तु निश्चित रूप से दुद्धिमत्ता पर सतह व्यक्त करता है । पुन जब कि मोजब्र पत्रूरी का ह्य तथा केटीना का प्रगोरी सत्ता मान्यता का प्रबल खण्डन करते हैं कि पोप राजा का पञ्चुन कर सकता है अथवा उनकी प्रजा को निष्ठा स मुक्त कर सकता है होनोरियस य यह अभिप्राय प्रतीत होता है कि निष्ठावान व्यक्तिया को घमनेही तथा घम म पूर डालन वाल राजा व सम्भक्त सत्ता चर्चना चाहिए परन्तु उसकी राजनातिक सत्ता को घम पूर्वक स्वीकार करना चाहिए ।

अन यह कहा जा सकता है कि हम इन सबको म लौकिक सत्ता का दबी उत्पत्ति क सम्बन्ध म एक वास्तविक सम्मति पाते हैं तथा अतः पुन व भावहारिक प्रश्ना पर उनक विचारण म निकटता की प्रवृत्ति पत है । हमन इस पुनक के प्रारम्भिक खण्ड म उन विभिन्न स्थितियो का खोजन का प्रयास किया जिनम कि प्रतिष्ठापन ये प्रश्न पर अतिम रूप से समझीना हो सका और कुछ पोप के पक्ष कलखका व बारे म यह कहना सत्य होगा कि व प्रारम्भिक रूप म चर्च का धार्मिक स्वतंत्रता के समयन म लीन थे तथा उनको यह प्रतिपादन करने की इच्छा न्ता था कि चर्च या पाप को लौकिक सत्ता के ऊपर कोई सामान्य प्रभुत्व का अधिकार है ।

दूसरी ओर यह कहा जा सकता है कि कुछ खण्ड म हम दोनों सत्ताओं के सम्बन्ध का सिद्धान्त का अनिश्चित विकास खोज सकते हैं । पत्रूरी के ह्य न सत्ता पर बल दिया कि ईश्वर की जो पिता है राजा प्रतिमूर्ति है तथा विनाय ईसा की ओर इसीलिए साम्राज्य के सभी विशय ठीक ही राजा क अधीन थ जिस प्रकार कि ईसा पिता ईश्वर के अधीन है प्रवृत्ति म नहीं अपितु 'मात्रेस से तथा Universitas regna को ad unum principium म बतना जा सकता है ।

द्वन्द्वसत्ता सत्तासत्ता क सत्ताक न जसा कि हम देख चुके हैं वही प्रकार के वाक्यों का प्रयोग किया है किन्तु विषय का और भाग बनाया है तथा वह यह मानता प्रतीत होता है कि राजकीय सत्ता अतः प्रवृत्ति की दृष्टि स पुरोहित का सत्ता से अधिक बनी है तथा राजा जो कि माधारण अयात्रक न्ता व धार्मिक मामला म भी महान सत्ता म सम्मन्

है। बेटाना व ग्रेगोरी न कहा है कि राजा चर्च का अध्यक्ष था तथा इसीलिए यह उचित था कि बिशप राजा से मुदा एव दण्ड द्वारा प्रतिष्ठापन प्राप्त कर तथाकि वह चर्च का अध्यक्ष था अतः उसे चर्च के समस्या के पद या पुरोहिता की मृष्टि से वंचित नहीं रखा जा सकता। वास्तव में इन वाक्या की व्याख्या सुगम नहीं है किन्तु हम सम्भव बहुत अधिक गलती पर नहीं होंगे यदि हम इनकी धार्मिक दावा के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में लें। तथापि हम यह ध्यान रखना चाहिए कि वही पत्रों का तब जो साग्रहपूर्वक यह प्रतिपादित करता था बिशप अपने पद की गरिमा में राजा से उतना ही अछूट है जितना कि दिव्य में अपनी पवित्रता में नैतिक मामला में अछूट है तथा वही नैतिक मायालय के लिए अशुभ नहीं। तथापि तब तथा सीब्रिट यही लिखता है कि किस प्रकार अनेक बार सच्चाता ने ही पाप पत्र की प्रवृत्तियों भरी परिस्थितियों को सुधारा है तथा वे यह मानना अस्वीकार कर देते हैं कि पाप मानवीय पाप से परे है तथा यह प्रतिपादित करते हैं कि उन भस्मना एव तब का स्वीकार करना चाहिए।

यदि इन चर्चों को नैतिक सत्ता के समझना की स्थिति व उच्चतम पहलू का प्रतिनिधित्व करने वाला माना जाए तो फ्लोरोस तथा हानोरियस पोपवाला दन की स्थिति में एक नए विकास का प्रतिनिधित्व करते हैं। हम उनके द्वारा कास्टिंगन व दान व विचारण तथा व्याख्या का विवेचन कर चुके हैं किन्तु चर्च व मूल्यपूर्ण हो हानोरियस व द्वारा प्रतिपादित नैतिक सत्ता व धार्मिक सत्ता के अशुभ होने के सिद्धान्तों की तुलना में उसका महत्व बहुत धारा है। हानोरियस की मान्यता बहुत रोचक है तथा उसका उल्लेख करने का प्रवृत्ति हम बाद में भी मिलेगा यहाँ हम केवल उतना ही कह सकते हैं कि यदि इसका कोई सम्बन्ध ही ड्राण्ड के कुछ दावों से हो तथा यह तक दिया जा सके कि ये उन दावा में अन्तर्निहित है ता यही स्पष्टतया समझना चाहिए कि उसका कोई समानता उस साक्ष्य में नहीं मिलती जिसका विवेचन हम इन दो अध्यायों में कर रहे हैं।

सन्दर्भ

- | | |
|--|--|
| 1 Cl H k Arch ge h ht D t
hl d ol p 852 | 10 Sg be t f G riblo Le d cen
m Ep tol d p h l m
P p m |
| 2 J ff M c t B mbe g
p 503 | 11 Jaffe W tte ba h Reg t 5868
5908 5928 5956 5960 |
| 3 M C l x p 715 | 12 Id J 5909 |
| 4 Id d v p 723 C ll m M l
fit n 8 | 13 A l H Id s 1105 |
| 5 B Id Chr con 1089 1091 | 14 Ekk h d Ch n 1105 |
| 6 Id d 1095 | 15 J ff M m t M g t p
379 |
| 7 M C l p 815 ff | 16 D d d t L bell contr n o-
e et ym P l i g e |
| 8 B Id Ch 1095 | |
| 9 Jaff W tte b h Reg t 5817 | |

- 17 Cf vol 1 p 147
 18 Cf v 1 : pp 233 235
 19 Deused t Libell s contra Invaso-
 res et Symon cos 1 12
 0 Cf v 1 11 p 99
 21 Cf vol 11 pp 80 and 227 233
 22 उसने इसका दंडना से खर्चन किया है कि पोग
 के पुनार पर साम्राज्य की पण्डि बाछिन है
 पृ 92-93 ।
 23 Cf the admirable k of A C uche
 La Querelle des In e t ture d s
 les doce s d L g et de Cambra
 Paris 1890
 4 S gebe t of Gemblo Leod cen
 um Ep stola ad us Paschal m
 Papam 7
 5 Id id 6
 6 Id id 9
 7 Id id 11
 28 Id d 8
 9 Id id 1 4 10 13
 30 Id id 4
 31 An lm G ta Ep copor n Le di
 cens m 6 64
 3 Id id 10
 33 Cf Ed t in Lab d Lat 1
 34 Cf p 04
 35 H gh f Flu y Tract t s de Re
 g a Potestate et Sa Jxtal D gn 1a
 11 11
 36 Id d 1
 37 Id d Prolog e f 1 4
 38 Id id 1 10
 39 Id id 1 7
 40 Id id 1 12
 41 Id id 1 4
 4 Id d 1 10
 43 Cf p 102.
 44 Id d 1 4
 45 Id d 11 3 4 5
 46 पच के गूण विवरण के लिए देख—H Bo
 hmer Kirche and Staat in
 England and in der Normandie
 एचके मुने बहुत सहायता मिली है ।
 47 Cf Vol 1 pp 149 215
 48 Tra tatus Eboracense iv (p 665)
 49 Id id (p 666)
 50 Id id (p 667)
 51 Id id (p 669)
 5 Id id (p 670)
 53 Id id (p 672)
 54 Id id (p 675)
 55 Id id (p 679)
 56 Id id (p 678)
 57 Id d (p 667-668)
 58 Id d 1 (p 656)
 59 Id d (p 657)
 60 Id d (p 659)
 61 Id v (p 680)
 62 Id id (p 681)
 63 Id id (p 684)
 64 देख खण्ड 3 तथा इस खण्ड में भाग 2
 अध्याय 3 ।
 65 Grego y of Catino Oribodoxa Dev
 fens o Imperialis 2.
 66 Id d 6
 67 भाग 2 अध्याय 6 ।
 68 देखे खण्ड 1 ।
 69 Plac dus of Nonantula Liber de
 Honore Eccl si 57
 70 देखे भाग 2 अध्याय 7 ।
 71 लगता है य पचास बाद म जाया होगा
 Cf Lab De Lat 1 : p 678
 72 Geoggrey About of Vendome
 Libellus iv., Augustodunen
 sis का यही लक्षण प्रतीत होता है ।
 73 Hono ius Augustodunens s Summa
 Glona 1
 74 Id id 9
 75 देख खण्ड 1 ।
 76 Id d 18-14
 77 Id id 15
 78 Id id 16 17 18
 79 Cf Gierk Politcal Theon of
 th Middle Ag s p 11 and Note
 9 t 0
 80 Cf specu lly pp 200-209
 81 H orius Summa Glo ia 21
 8 Id id 19
 83 Id id 9
 84 Id d 26
 85 Id d 24
 86 Id id 7

चतुर्थ अध्याय

पोप-पद की सामन्ती सत्ता का विकास

हम सन्धेप से ग्रेगोरी सप्तम की नाति व हमरे पक्ष का विचार करना चाहिए यह उसका सतत प्रयत्न प्रचीत होना है कि पोप व विभिन्न दशा एक प्राचीन पर सामन्ती प्रभुत्व के दाव का सिद्ध कर सके । वास्तव में हम नही कह सकते कि हम नाति के ग्रेगोरी के पोप पद के कायकाल से पूर्व कोई उठाहरण नही थे वस्तुतः यह गण्य है कि उसके विकास व कुत्र सबम में त्वपूर्ण बदम उसके ठीक पूर्वाधिकारियों द्वारा उठाया गए थे किन्तु यह माना जा सकता है कि तब भी द्वादशवाण्ड न ही इस नाति को प्रगति किया था ।

एत विषय का काम स काम एक सरेत सि-वेस्टर तीय व पोप पद जितना प्राचीन है । यह एक पत्र में विद्यमान है जिसमें कहा गया है कि हगरी के राजा स्टीफन न अपने धर्मपति पोप की निर्णय व लिए समर्पित कर दिया है ।¹ यद्यपि इस पत्र की प्रामाणिकता पर कुछ प्राचीनता न गण्य है तथापि ग्रन्थ ने इसका समर्थन किया है । यद्यपि यह स्पष्ट है कि चाहे विभिन्न राजों पर पाप के सामन्ती प्रभुत्व का स्थापना की नीति प्राचीन काल से ही विद्यमान है तथापि ग्रेगोरी सप्तम के ठीक पहले के पूर्वाधिकारियों के काल से ही यह महत्वपूर्ण हो गई है । यह काल तकसगत प्रतीत होगा कि यह नीति एक ऐसी व्यवस्था को संगठित करने के प्रयास का प्रतिनिधित्व करती है जिसके द्वारा साम्राज्य तथा रोम नगर को ही साथ सम्भव में पोप के पद की राजनातिक स्वतंत्रता प्रप्तु ए इली ज मर द्वारा ही तथा तेरन्दी प्रतापियों के हनि म म् हम इम हीति व म् वपूर्ण परिणाम देने का धरहर उपनय होगा ।

इस नीति का प्रथम एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण विवास पाप एवं दनिए इन्वी के नारमना व बीच सामन्ती ग बंधा की स्थापना में पाया जाता है । कार्डिनल ड्यूसडेडिट न अपने ग्रन्थ वत्रिप्यो कनेनम (Collectio Canonum) नामक ग्रन्थ में राबट गुमका (Robert Guiscard) द्वारा 1059 में पोप निकोलास तीय के प्रति की गति का निष्ठा की निष्ठा को सुरक्षा रखता है । वत्र यन्ने के ईश्वर तथा सत पीटर की कृपा में एगुनिया तथा कलब्रिया (Apulia and Calabria) का प्रभु घोषित करना

है तथा उनकी सहायता से सिसला का "यूक" होने वाला बनाता है तथा उस दान की पुष्टि एवं उसके लिए द्य निष्ठा को मायना दते हुए "ह सत पीटर पोप निकोलस तथा उसके उत्तराधिकारियों को वार्षिक नजराना देने की प्रतिज्ञा करता है। वह प्रतिज्ञा करता है कि वह पवित्र रोमन चर्च के प्रति निष्ठावान बना रहेगा तथा पोप निकोलस तथा रोमन चर्च की निष्ठा को छाँटकर किमी के प्रति निष्ठा की शपथ नहीं लेगा।² ड्यूसडेडिट उस निष्ठा का शपथ को भी उद्धृत करता है जो कि कापुत्रा के राजा रिचर्ड द्वारा तथा कापुत्रा के राजा जोर्जेनस (Jordanus) द्वारा पोप एलेक्जेंडर तृतीय के प्रति की गई थी।³

इस नाति के विकास का महत्त्वपूर्ण बात यह है कि पोप एलेक्जेंडर तृतीय ने विजेता विलियम को लिखा तथा घोषणा की कि "ईसा" धर्म के अग्रणीकरण करने के काल से ही अग्रजा राज्य पोप के धर्मासन के संरक्षण में (Sub apostolorum Principe manu et tutela) रहा है तथा पोप का गद्दी को एक वार्षिक रकम अर्पण करता है जिसका एक भाग पोप को मिलता था तथा एक भाग सत मेरी के चर्च को जिस स्कॉला एंग्लोरम (Schola Anglorum) कहा जाता था।⁴ तथापि सामन्ती प्रभुत्व के इस आवेग का विलियम द्वारा जोरदार खण्डन किया गया उसने इस आधार पर निष्ठा रखने से अस्वीकार कर दिया कि उमने वसा करने की प्रतिज्ञा नहीं की थी तथा उसके पूर्वाधिकारियों ने कभी ऐसा नहीं किया था परन्तु उसने प्रतिज्ञा की कि धन दिया जाएगा।⁵

अतः यह स्पष्ट है कि अंगोरी सप्तम के पोप का गद्दी पर पदारोहण के पूर्व पोप की गद्दी के सामन्ती प्रभुत्व के विस्तार की नीति सुविकसित थी किन्तु यह भी स्पष्ट है कि अपने पोप पद के कायकाल में उसने इस विस्तार का कोश भी अवसर नहीं खोया। वह सबसे प्रथम दक्षिण इटली में नारमना के साथ उस सम्बन्ध को बनाए रखने में सावधान रहा। कापुत्रा के रिचर्ड द्वारा सितम्बर 1073 ई. में अंगोरी सप्तम के प्रति ली गई निष्ठा की शपथ में महत्त्वपूर्ण व्यवस्था है। रिचर्ड अपने को ईश्वर तथा सत पीटर की दृष्टि से कापुत्रा का सामन्त घोषित करता है तथा प्रतिज्ञा करता है कि वह पवित्र रोमन चर्च तथा विश्वव्यापक पोप अंगोरी के प्रति निष्ठावान रहेगा। वह प्रतिज्ञा करता है कि वह उसके तथा रोमन चर्च के राजविह्वो को प्राप्त करने तथा सुरक्षित रखने तथा सत पीटर की सम्पत्ति को सभी मनुष्यों से बचाने में सहायता करेगा तथा रोमन पोप पद की सुरक्षा एवं सम्मान को बनाए रखने में अंगोरी की मदद करेगा। वह अंगोरी तथा उसके उत्तराधिकारियों द्वारा अनुमोचित होने पर राजा हनरी के प्रति निष्ठा की शपथ लेने का विन्तु सन्त रोमन चर्च के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखेगा। पोप की गद्दी रिक्त होने की दशा में सर्वश्रेष्ठ कार्डिनलो रोमन पादरियों एवं जनता के प्रबोधनानुसार पोप के निर्वाचन में सहायता देगा।⁶ राबर्ट ग्लूतहाड द्वारा जून 1080 ई. में अंगोरी सप्तम के प्रति ली गई शपथ भी व्यावहारिक रूप से बरी है।⁷ यह उल्लेखनीय है कि इन शपथों में जबकि नारमना में जर्मन राजा के प्रति निष्ठा की शपथ लेने की अपनी सहमति तो व्यक्त की किन्तु वे पोप की स्वीकृति से वसा करने को तयार हैं तथा रोमन चर्च के प्रति अपनी निष्ठा को भी सुरक्षित रखते हैं। ये वाक्यांश पूरण एवं अधिप्रभु (Overlord) के प्रति

कतल्या का सुरक्षित रणत हुए प्रभु (Lord) के प्रति भी गन् शपथ व समान है। धन यह कहा जा सकता है कि प्रगोरी नारमना व साथ पोप की गद्दी व सम्बन्धों का वास्तविक बणन करता है जब 1076 व एक पत्र म यह क्ता ह कि वे ईश्वर के बाँ केदन सन पीटर को ही अपना स्वामी तथा सम्राट बनाना चाहते हैं।⁸

1073 ई तथा 1077 ई म प्रगोरी सप्लम द्वारा लिख गए पत्रा म स्पेन पर भी बसा हा गावा प्रदर्शित किया गया। पहला स्पेन व कुछ भागों को अरबों (Saracens) से वापस लान व लिए प्रस्तावित प्रयत्नों व विषय म लिखा गया ह तथा ग्रेगोरी दावा करता ह कि स्पेन व साम्राज्य पर प्राचीन काल से ही सन पीटर का स्वामित्व था तथा अरब भी यद्यपि मूर्ति पूजकों ने उस पर अधिकार कर रखा ह वह किसी मरणवर्मा मनुष्य व स्वामित्व म न होकर पाप की गनी के स्वामित्व म ह अतः उसने उसे वाउन् इकुलुस डे रोसियो (Count Evulus de Rocio) को प्रदान कर दिया ह जो इस भूमि को मूर्तिपूजकों से मुक्त करना चाहता ह तथा यह जिस भूमि म उनको हटा देगा वह सत पीटर की सत्ता म उसके अधिकार म रगा।⁹ 1077 ई का पत्र भी इसी दाव को अहराना ह कि स्पेन प्राचीन सविधाना व अनुसार सत पीटर तथा रामन चच व अधीन ह।¹⁰

दूसरा दावा जो अत्यन्त उत्साह पूर्ण प्रगोरी सप्लम द्वारा किया गया था यह था कि प्रगोरी का साम्राज्य रोमन पाप व स्वामित्व म ह। अक्टूबर 1074 ई म प्रगोरी व राजा सोलामन का लिख गए पत्र म इस दाव क समर्थन म यह तब दिए पहला यह कि राजा स्टीफन द्वारा सभी अधिकारों एवं शक्तियों सहित साम्राज्य को सत पीटर का भोग देन का अभिप्रेत काय दूसरा य कि सम्राट हेनरी तृतीय ने प्रगोरी के राजा पर अपनी विजय व बाँ लान तथा मुक्त को सत पीटर की समाधि पर भेज दिया था तथा इस प्रकार उसके स्वामि व के अधिकार का मान्यता दी थी। उसने जमनी के राजा से एक अधीन सामन्त के रूप म रा व स्वीकार करने के लिए सोलामन की भत्सना की तथा धमकी दी कि वह उस पुन लो दगा र्ग वह स्वीकार नहीं करेगा कि उसका राज्य रोमन पोप-व के अधीन ह जमने राजा व अधीन नहीं।¹¹ अगले वर्ष ने पत्रो म प्रगोरी न प्रगोरी व राजसिंहासन पर गुसा (Geusa) के दाव का भी आधार पर समर्थन किया कि जमने राजा स एक सामन्त व रूप म उस ग्थन करके सोलामन ने अपना अधिकार वाँ र्ग ह। यहाँ प्रगोरी का काय अधिक उत्प्रेक्षनीय ह क्योंकि अतम प्रगोरी पर जमने साम्राज्य के सामन्ती प्रभुत्व क दावों से संघर्ष निम्नित था।

1075 ई म रूसिया व राजा डेमेट्रियस (Demetrius) का लिखे गए एक पत्र म प्रगोरी सप्लम कहता ह कि डेमेट्रियस का पुत्र रोम आया था तथा अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक प्राधना की थी कि वह उस राज्य को सत पीटर के अनुदान रूप पोप के हाथों से प्राप्त कर सके। ग्रेगोरी ने यह समझकर कि यह अनुरोध डेमेट्रियस की सलमनि से किया गया ह उसकी अनुमति दे दी तथा सत पीटर के नाम पर यह साम्राज्य उसके पुत्र को प्रदान कर दिया तथा यह प्रतिज्ञा भी की कि सभी पापसंगत मामलों म वह उस पवित्र धर्मसिंह का समर्थन प्रदान करेगा।¹² उसी वर्ष क एक दूसरे पत्र म प्रगोरी ने इनो

(Danes) व राजा स्वयन (Sweyn) का मिला कि रोमन पोप व कानून सम्राट के वादना से अधिक दूर तक फले हैं तथा जहाँ तक ग्रागस्टस का शासन था वहीं तक ईसा का भी शासन था। स्वयन ने पाप एलवजण्डर त्रितीय का संरक्षण माँगा था तथा गगोरी जानना चाहता है कि क्या अब भी उसका वही इच्छा है।¹³ 1077 ई के कॉर्सिकना (Corsicans) को सम्बोधित एक पत्र में वह उनका बतलाता है कि उनका शीघ्र बधानिक रूप से रामन चक्र के अतिरिक्त किसी भी दूसरी सत्ता के अधिकार में नहीं है जो यह मानने में अस्वाकार नरत है व देवदो व दोषी है तथा उसे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि व सत पीटर के अधिकारों को मायता देने को प्रस्तुत हैं तथा वह उनके मन्त्रि सहायता भजने को तयार है।¹⁴ 1079 ई में वेज़लिन (Wezeln) को लिखे गए एक पत्र में वह उनका चतावनी देता है कि वह उसके विरुद्ध विचार न उठाये जिससे पोप पद की सत्ता द्वारा डालमशिया (Dalmatia) में राजा बनाया गया है तथा उस यह बतलाता है कि वह इस राजा के विरुद्ध भी कार्य करेगा रोमन पोप के विरुद्ध होगा।¹⁵ ड्यूसडडिट ने निष्ठा को उस शपथ को सुरक्षित रखा है जो कि डालमशिया के साम्राज्य को प्राप्त करने के बाद डेमिट्रियस ने ग्रेगोरी में तम व प्रतिना थी। वह स्वीकार करता है कि उसका राजत्व का प्रतिष्ठापन पोप के अधिकारों व अतः स्वयं स्वयं दण्ड एवं मुकुट द्वारा हुआ है तथा समन्ती कृतव्या की सुनिश्चित शासकनी में आनापालन तथा निष्ठा की तथा नियमित रूप से वार्षिक व प्रदान की प्रतिना करता है।¹⁶ एक पत्र में गगोरी ने यहाँ तक दावा किया है कि चार्ल्स महान ने सत पीटर को सबसनी का प्राप्त प्रदान किया था तथा सबसनी व अधिकार में इसका लिखित प्रमाण है।¹⁷ अतः ग्रेगोरी के रजिस्टर में 1081 ई में प्रोवेन्स (Provence) के काउंट बर्ट्रण्ड (B rtrand) को एक घोषणा है कि वह अपनी सारी वश परम्परागत गरिमा को ईश्वर सत पीटर सत पाप गगोरी तथा उसके उत्तराधिकारियों को समर्पित करता है।¹⁸

रोमन पोप पद की सामंती सत्ता का विस्तार करने की इस अत्यन्त विकसित नीति को चुनना गगोरी सप्तम द्वारा पमाऊ के आदेशों को सम्बोधित 1081 में एक पत्र के पत्र से करना आवश्यक होगा तथा हमारा यह साधना अत्युक्तिमत्त नहीं होगा कि यह पत्र जमान साम्राज्य पर भी पोप पत्र के सामन्ती प्रभुत्व के विस्तार की नाति की अभिज्ञा का साधक है।

संदर्भ

- | | |
|---------------------------------|--|
| 1 Syl este II Ep | 5 Willam the C que or Ep stic (G eg VII) |
| 2 De ded t Coll ct C o um i 156 | 6 G s ry i Reg i 21 (a) |
| 3 Id id 159 | 7 Id d ii 1 () |
| 4 Alexandre II Ep 139 | 8 Id d i 15 |

- 9 Id id i, 7
 10 Id id i 13
 11 Id id i 63
 12 Id id i 74
 13 Id id i 75
 14 Id id v 1

- 15 Id id vi 21
 16 D usded t Coll ct o Can n m
 150
 17 Id id i 23
 18 Id id 35
-

चतुर्थ खण्ड

चच एव साम्राज्य 1122 ई० से 1177 ई० तक

प्रथम अध्याय

फ्रेडरिक प्रथम तथा पोप-पद

वाम्स के समझौते ने साम्राज्य तथा चच के बीच तीस वर्षों से अधिक समय तक शांति बनाए रखी तथा जब एक नया सघष प्रारम्भ हुआ तो उसकी परिस्थितियाँ और कारण भिन्न थे। यह कहना अधिक कठिन है कि इस शान्ति की प्रवृत्ति कसी थी कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जो यह मानते हैं कि इस काल में पोप पद की साम्राज्य पर विजय हो गई थी किन्तु यह बहुत सदिग्ध है कि इस मत का गभीर समर्थन किया जा सकता है। सत्य यह प्रतीत होता है कि मनुष्य हादिक रूप से सघष से ऊब चुके थे तथा किसी भी पक्ष में उसे पुनः सुलगाने की बहुत छोटी इच्छा रह गई थी। निस्सन्देह यह तक करना बहुत आसान है कि वाम्स के समझौते ने मामले को अंतिम रूप से निश्चित नहीं किया तथा वास्तव में यह भी सत्य है कि बिशप पत्रों या मठों की नियुक्तियों के प्रश्न पर कोई पूरा या अंतिम समझौता नहीं हुआ था किन्तु यथायत समग्र रूप से इस समझौते का कोई गभीर खण्डन नहीं हुआ तथा जो परिवर्तन आए वे धीरे धीरे तथा बिना किसी गभीर सघष के आए।

बन गेम का एक उत्कृष्ट प्रबंध बहुत स्पष्टता पूर्वक समझौते की शर्तों के प्रयोग एवं यास्या के सम्बन्ध में विभेदा की सीमाओं तथा विस्तार को प्रस्तुत करता है।¹ एक और तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि समझौते के सम्पादन के एक ही वर्ष के अन्दर उसकी शर्तों का एक सस्करण विद्यमान था जो कि सम्राट का भत्ता को बहुत अधिक बढ़ा देता था—यह उमे विवादास्पद निर्वाचन की दशा में अधिधर्माध्यक्ष तथा सम्प्रातीय बिशपों की सम्मति तथा नियम के बिना अपनी बुद्धि से ही मामले के निरणय का अधिकार प्रदान करता था।² वाम्स के बाद 1122 या 1123 ई० में हेनरी पंचम ने सत पाल के मठ के विवादास्पद निर्वाचन में अपने न्यायालय से यह निरणय प्राप्त किया कि विवाद के कारण यह उम की इच्छा पर ही निर्भर है कि वह चाहे जिसे नियुक्त करे।³ यह प्रतीत होगा कि यही वह परम्परा थी जिसकी धोर फ्राइजिंग (Freising) के भ्रोटो ने गेष्टा फ्रीडेरिकी (Gesta Friderici) में एक स्थान पर सकेत किया है जिस पर हम बाद में

विचार करेंगे कि तबु ऐसा प्रतीत नहीं होता कि हेनरी पंचम के तत्काल उत्तराधिकारी लोथियर तृतीय तथा कोनाड तृतीय म म किमी ने भी ऐसे अधिकार पर बल देने का कोई प्रयास किया हो।

दूसरी ओर यह प्रतीत होगा कि उनमें से कुछ जो 1125 ई में लोथियर का सम्राट रूप में निर्वाचन करवाने वाले थे यह चाहते थे कि समझौते की शर्तों के पक्ष में परिवर्तित कर दी जाए। इस निर्वाचन के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विवरण के लेखक के अनुसार ऐसा ही निश्चय किया गया था कि बिशप का निर्वाचन स्वतंत्र होना चाहिए तथा वह राजा की उपस्थिति एवं भय से नियंत्रित नहीं होना चाहिए तथा सम्राट स्वतंत्र रूप से निर्वाचित तथा अभिविक्त बिशप का प्रतिष्ठापन दण्ड द्वारा राज विघ्ना से करें तथा उस समय बिशप यह शपथ लें *Salvo qualem ordinis sui proposito* इसका यह अर्थ है कि यह समझौता हुआ था कि वास्तव में राजा महत्वपूर्ण बिशपों में परिवर्तन किया जाए—प्रथम यह कि निर्वाचन सम्राट की उपस्थिति में न हो तथा दूसरा यह कि अभिवेक के बावजूद कि पहले लौकिक सम्प्रदायों से प्रतिष्ठापन हो।

यद्यपि वक्तव्य से यह सिद्ध किया जा सकता है कि इस आधार पर कोई समझौता हुआ था तथा लोथियर भी इसमें एक पक्ष था बहुत सन्धि है बनहीम ने दूसरे पक्ष में इनकी स्पष्ट कर दिया है कि लोथियर के वास्तविक शासन ने किसी ऐसे समझौते की पुष्टि नहीं की किन्तु उसने वास्तव में समझौते की शर्तों को सामान्यतः माना।⁶

यदि हम सेंट बार्ड के जीवन चरित्र के एक वक्तव्य पर विश्वास करें तो लोथियर ने जब उसने 1131 ई में नीज नामक स्थान पर पोप इन्नोसेंट द्वितीय से भेंट की तो निस्संदेह पोप-पक्ष के विवादास्पद निर्वाचन का साम उठाते हुए उसने पहले की भाँति ही प्रतिष्ठापन को पुनः प्रारम्भ करने का आग्रह किया किन्तु इन्नोसेंट के पोप की गद्दी पर दावे का सबसे प्रबल समर्थक सेंट बार्ड वहाँ उपस्थित था तथा उसके प्रभाव के कारण पोप की अस्थिरता में बहुत अधिक प्रेरणा मिली।⁷ इस वक्तव्य की पुष्टि कुछ दूसरे उद्धरणों से भी होती है।⁸ यह सम्भव है कि इसी घटना से कुछ सम्बद्ध रूप में हम इन्नोसेंट द्वारा रोम की पुनः प्राप्ति तथा जून 1133 ई में लोथियर के सम्राट रूप में अभिवेक के बावजूद जारी किए गए उसके घोषणा-पत्र को रचना चाहिए जिसमें दृढ़ता पूर्वक जर्मन साम्राज्य के बिशपों एवं मन्थीरों को जब तक वे उन्हें सम्राट से प्राप्त न कर लें तब तक राज बिह्वल के कारण का निषेध किया गया है।⁹ यह सम्भव प्रतीत होता है कि राजकीय माँग को किसी सीमा तक सन्तुष्ट करने के लिए ही पोप द्वारा इसे जारी किया गया था तथा यह विषय बहुत महत्वपूर्ण था क्योंकि बिशप या एबट को लौकिक एवं धार्मिक सत्ता के इसी विभेद पर ही वास्तव में समझौता आधारित था।

लोथियर के उत्तराधिकारी कोनाड तृतीय की स्थिति की परीक्षा विट्टे (Witte) ने यहाँ सावधानी से उसके राज्यपाल के पादरियों के निर्वाचनों पर लिखे गए प्रबंध में की है तथा यह प्रतीत होगा कि कोनाड वास्तव में शर्तों के बंधों पालन का न तो आग्रह करने में समर्थ था न उसकी चला करने की कोई इच्छा ही थी। बन्धी रुमी तथा विशेषतया अपने व्यक्तिगत प्रश्नों में उसने उन पर बल दिया, किन्तु दूसरे समय, तथा उसके साम्राज्य

के दूसरे स्थानों पर वह उनको त्रियाचित नहीं कर सका था या कम से कम उसने उनको त्रियाचित नहीं किया। वह प्रायः निर्वाचना में उपस्थित नहीं रहता था तथा लौकिक सम्पदाओं से प्रतिष्ठापन अभियेक से पूर्व न हाकर बाद में होने लगा। एक मामले में एक विवादास्पद निर्वाचन को राजा के लिए न छोड़कर पोप ने अधिधर्माध्यक्ष तथा प्रात के विशपों की राय एवं नियम से करके अपने नियम करने के अधिकार का दावा किया प्रतीत होता है।¹⁰

तथापि समग्र रूप से यह कहना सत्य होगा कि वाम्स के समझौते के मूल सिद्धान्तों को पूरातया मान लिया गया था—*अर्थात्* विशप की धार्मिक स्थिति तथा उसकी लौकिक सम्पत्ति एवं स्वाभित्त का अन्तर और उसीलिए जबकि पहली वस्तु प्रदान करना चर्च की मत्ता के अधिकार में था तो दूसरी वस्तु प्रदान करने का अधिकार लौकिक सत्ता को था तथा इस समझौते ने कुछ समय के लिए साम्राज्य तथा पोप के सम्बन्धों में शान्ति ला दी।

अब हम फ्रेडरिक बारबरोसा (Frederick Barbarossa) तथा उसके समकालीन पोपों के बीच सदैव के आधारभूत सिद्धान्तों तथा परिस्थितियों का अध्ययन करना है।

फ्रेडरिक प्रथम मारच 1152^१ में राजाओं द्वारा फ्रैंकफर्ट नामक स्थान पर निर्वाचित हुआ तथा उसके प्रथम वर्षों में चर्च से सम्बन्ध में शान्ति बनी रही। वास्तव में उसने वाम्स के समझौते द्वारा लौकिक सत्ता को प्रदत्त अधिकारों को बनाए रखा तथा कम से कम एक मामले में उसने उनकी धाम्या इस ढंग से की जो मूल शर्तों से सगत नहीं थी किन्तु ममवत उम संस्करण पर आधारित थी जो कोडेक्स उदायरिकी (Codex Udairei) में सुरक्षित है। फ्राईजिंग के आगे का गस्टाफीडरिकी नामक ग्रन्थ में कथन है कि ब्यूरिया अर्थात् राजसभा की परम्परा यह थी कि विवादास्पद निर्वाचन के विषय में राजा चाहे जिसे अपने सभास (optimates) की राय से विशप नियुक्त कर देता था।¹¹ स्पष्टतः इसी दावे के कारण ही फ्रेडरिक ने 1152-0 में वाइडमैन (Weidmann) को जो जैडिस (Zeit) का बिषय था मेग्नेवग का आचबिषय नियुक्त कर लिया। पोप यूजीनियस तृतीय (Eugenius III) ने जर्मनी के विशपों को लिखे गए पत्र में नियुक्ति को अस्वीकार कर लिया किन्तु वह इस आधार पर नहीं था कि वाम्स के समझौते की व्यवस्था के अनुसार राजा को सम्राट के रूप में ऐसे विषय का नियम केवल अधिधर्माध्यक्ष तथा सम्प्रातीय विशपों की सम्मति से करना है अपितु इस आधार पर कि फ्रेडरिक ने निर्वाचकों के अधिकारों का अतिव्रमण किया है।¹²

दूसरा धार फ्रेडरिक ने अपने पक्ष में अपने को पोप की मांगों को पूरा करने का एक प्रदशित किया। फ्रेडरिक तथा उसके पुत्रों के पोपों के सम्बन्ध का सटैस की सधि के शर्तों में सबसे अधिक अच्छी तरह से सुरक्षित है जो कि 1153 ई. में की गई थी। इस सधि के द्वारा फ्रेडरिक ने यूनानियों नारमनों तथा रोम के विन्थीहियों के विरुद्ध पोप की सहायता करने की प्रतिज्ञा की जबकि पोप ने उस सम्राट के रूप में अभिषिक्त करने तथा उसके साम्राज्य के नियम तथा गरिमा पर आक्रमण करने वाले किसी भी व्यक्ति को घम बहिष्कृत करके उमका समर्थन करने तथा यूनानियों का मुकाबला करने का प्रतिज्ञा की।¹³

1155 ई. में रोम में फ्रैंक फ्रैंक का सम्राट के रूप में अभिषेक हुआ। तथापि 1156 ई. में पोप की नीति परिवर्तित प्रतीत होती है। जब गार्मेटस की संधि हुई थी पोप ने सम्बंध नारमनों के साथ पराधीन तथा वह उन्हे विच्छिन्न फ्रैंक से समझौता कर लेना करता था किन्तु 1156 ई. में हैड्रियन चतुर्थ ने नारमनों से समझौता कर लिया तथा नए सम्बंधों को वेनेटियन की संधि का रूप दिया गया। इस संधि की सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक व्यवस्थाएँ हैं हैड्रियन ने विनियम उनसे पुत्र रोजर तथा उनके उत्तराधिकारियों को सिसली का राजा एपुनिया का ल्युक्स तथा नेपल्स सायरेनो प्रमत्तजी तथा उनके क्षेत्रों सहित वापुपा का राजा मान लिया जबकि उनके द्वारा पोप हैड्रियन उसके उत्तराधिकारियों तथा रोमन चर्च के प्रति निरपेक्षा की शपथ ली गई तथा उनके प्रति स्वामिमत्ति प्रदर्शित की गई।¹⁴

तथापि 1157 ई. तक फ्रैंक एव हैड्रियन चतुर्थ में कोई गंभीर विवाद उपस्थित नहीं हुआ तथा तब भी वह किसी नीति के वास्तविक प्रयत्न पर नहीं धनितु पोप द्वारा प्रयुक्त एक वाक्य पर हुआ जिसमें यह निहित प्रतीत होता था कि फ्रैंक ने उस साम्राज्य को पोप के अधीनस्थ सामंत के रूप में प्राप्त किया है। उसकी परिस्थितियाँ इस प्रकार थीं स्वीडन में स्थित लुण्ड (Lund) के धार्मिक एस्किल को रोम में लौटते समय बगड़ी के कुछ विद्रोहियों द्वारा बन्दी बना लिया गया तथा वाचक के रूप में रख लिया गया। कुछ कारणों से फ्रैंक ने उसे मुक्त कराने या अवराधियों को दण्ड देने के लिए सक्रिय कदम नहीं उठाए तथा हैड्रियन चतुर्थ ने उसे सिन्डर में प्रतिवाद स्वरूप लिया। उसे हस्तक्षेप करने के वाक्य का ध्यान निताने हुए वह उन प्रसन्नता एव स्नेह का स्मरण लाता है जिससे कि रोमन चर्च ने उसका स्वागत किया था उस पर साम्राज्यिक मुकुट के साथ पूरा प्रतिष्ठा तथा गरिमा प्रनिष्ठित की थी तथा वह उसे और भी अधिक जागीर (Beneficia) प्रसन्नता से देने को प्रस्तुत रहेगा।

यह पत्र फ्रैंक के पास तब पहुँचा जबकि वह बर्सेंस में एक सभा का संचालन कर रहा था तथा फ्रान्जोस के घाटों की मूचना के अनुसार राजाओं में इसने अत्यन्त रोष उत्पन्न किया क्योंकि हमका अर्थ उनके द्वारा यह समझ गया कि जर्मन सम्राट साम्राज्य एव इटली के राजा को पोप के प्रशासन करने के कारण धारण कर रहे थे। भाग्य के अनुसार वे इसे स्मरण करके अन्त विचरित हुए कि ग्रेगोरिय के महान में सम्राट लोथियर तृतीय के चित्र के नीचे एक लेख इन शब्दों में लिखा है।

Rex venit ante foras iurans prius urbis honores Post homo fit papae sumit quo dante coronam ¹⁵

हैड्रियन के पत्र के पठन से उन्मत्त क्षीम उन अविवेकपूर्ण शब्दों का प्रयोग स और भी बत गया जो एक पोप के प्रतिनिधि द्वारा प्रयुक्त वह गए थे यदि पोप द्वारा उसे साम्राज्य नहीं दिया गया तो किसके द्वारा दिया गया? और उन प्रतिनिधियों की हत्या कर दी जाती कि फ्रैंक हस्तक्षेप नहीं करता तथा उन्हें करने निवन्धन स्थान को भेजकर बिना विलम्ब किए दूसरे ही दिन रोम जाने की आज्ञा नहीं देता।¹⁶

अन्ततः फ्रैंक ने एक परिपत्र जारी किया जिसमें पोप के प्रतिनिधि मंडल के

साथ घटी घटनाओं तथा हैडियन के पत्र वस्तु का विवरण किया गया था। उसने शिकायत की कि चर्च का अन्त्य जो कि ईसा की शांति तथा दयालुता का प्रतीक होना चाहिए नुराई का साधन व भगड़े का कारण बन गया है तथा उसने घोषणा की कि उसे साम्राज्य तथा राजत्व राजाओं के निर्वाचन द्वारा केवल ईश्वर से प्राप्त हुआ है जिसने सत्ता को दो तलवारों के अधीन बनाया है तथा जो भी यह प्रतिपादित करे कि उसने शाही मुकुट को सामन्त के रूप में पोप द्वारा प्राप्त किया है उस पर उसने सत पीटर के सिद्धांतों की भवहेलना का आरोप लगाया जिसने मनुष्यों को ईश्वर से डरने तथा राजा का सम्मान करने की आज्ञा दी थी।¹⁷

इस बीच अपने प्रतिनिधियों से किए गए व्यवहार से तथा उन उपायों से जो उसने आरोप के अनुसार फ्रेडरिक ने जमनी से किसी को भी पोप के स्थान पर जाने में रोकने के लिए उठाए थे पोप बहुत विस्मय हुआ तथा उसने फ्रेडरिक के आचरण की शिकायत करते हुए जमनी के आचरित्र तथा बिशपों को पत्र लिखा जिसमें उनके कार्यों को रोकने तथा उसे अधिक तक सगत नीति अपनाने के लिए राजी करने का आग्रह किया। यह उल्लेखनीय है कि उसने स्वीकार किया कि गडबड का मूल कारण उसके द्वारा किया गया शब्द प्रयोग है। *Insigne videlicet coronae tibi beneficium contulimus* किन्तु उसने अब तक इस वाक्य की कोई सफाई नहीं दी।¹⁸ जमन बिशपों ने शिष्टता तथा आदर पूर्वक किंतु हल्का न उत्तर दिया कि पहले पत्र में प्रयुक्त शब्द ही सभी भगड़े की जड़ थे तथा वे इतने प्रस्वाभाविक अपूर्व तथा दुर्भाग्यपूर्ण द्वयथक थे कि वे न तो उनका समयन कर सकते हैं न उनको स्वीकार कर सकते हैं। जसी पोप ने इच्छा की थी वे सम्राट से इस मामले में बातचीत कर चुके थे तथा वे उसका उत्तर सूचित कर रहे हैं। इसमें फ्रेडरिक ने यह स्पष्ट कर दिया कि यद्यपि वह पोप के प्रति सभी उचित सम्मान प्रदर्शित करने का इच्छुक है वह बधानिक एवं परम्परागत शासकत्वों के किसी परिवर्तन को सहन नहीं करेगा। उसने दवी अनुग्रह (*Beneficium divinum*) के कारण प्राप्त राजमुकुट की स्वतंत्रता का दावा किया तथा कुछ विस्तार से निर्वाचन तथा राजारोहण के क्रम का वर्णन किया। उसने इस प्रस्वीकार किया कि कार्डिनलों के प्रति उसका व्यवहार पोप के प्रति घृणा में प्रभावित है किन्तु वह उन्हें कोई ऐसा दस्तावेज ले जाने की अनुमति नहीं दे सकता जो साम्राज्य के लिए हानिप्रद हो। उसने किसी को भी उचित काय से इटली से आने या जाने को मना नहीं किया है किन्तु वह उन दुरुपयोगों को रोकने के लिए कृतनिश्चय है जिससे कि साम्राज्य के चर्च बढ़ें हुए हैं और पुन स्पष्टतः पहले उल्लिखित चित्र का उल्लेख करते हुए वह कहता है कि जो जान पट्टन एक विश्व में प्रारम्भ हुआ की वह नेत्र के रूप में आन लगी है तथा अब इस नल को अधिभार पूरा बनाने का प्रयास किया जा रहा है। वह इस सहन नहीं करेगा तथा साम्राज्य का इतना अनादर होने देने की अपेक्षा अपनी सम्राट पर छोड़ देने को उचित समझता। यदि राजकीय सत्ता तथा धार्मिक सत्ता के बीच मिश्रता स्थापित करनी है तो इस प्रकार के चित्र नष्ट कर देने चाहिए तथा ऐसे पत्र वापस लिए जान चाहिए।

बिशप आग लिखते हैं कि उद्दान सम्राट से जिन्हें वे स्पष्टतया अशांति उत्पन्न करने

पाली सूचना समझने हैं गिसली के विनियम तथा रोजर के साथ सधि के विषय में सुना है निस्सदेह यह उल्लेख बेनेवेण्टम की सधि के बारे में है जो हैड्रियन चतुर्थ तथा सिसनी के विनियम प्रथम व बीन 1156 ई. में हुए थी तथा उन्होंने दूसरी सधियों के बारे में भी सुना है।¹⁹

जून 1158 ई. में पोप के दूत फ्रांसिसकस म रिथन फ्रडरिक के पास हैड्रियन चतुर्थ के पत्र लेकर आए जिसमें पोप ने बुरा लगान वान वानियों का स्पष्टीकरण देने की सावधानी रखी थी जिन्हें उसने अनसार गतन समझा गया। उसने पोपणा की कि बेनेफीसीयम (Beneficium) शब्द का उस पत्र में वह तात्पर्य नहीं जता कि समझा गया है। उसका अर्थ जागीर नहीं किन्तु केवल लाभ है तथा यह उन व्यक्तियों की सुविचारित ईर्ष्या है जो चर्च तथा साम्राज्य की प्राप्ति नहीं चाहते हैं जिनके द्वारा उगकी गतत व्याख्या की गई है।²⁰ फ्रडरिक ने स स्पष्टीकरण को मित्रतापूर्ण ढंग में ग्रहण किया तथा कुछ समय के लिए रोम से मित्रतापूर्ण सम्बन्ध पुनः स्थापित हो गए।

इन परिस्थितियों के महत्त्व के बारे में स्पष्ट निर्णय पर पहुँचना सुगम नहीं। यह समझा जाति कठिन है कि हैड्रियन ने सम्राट से भगडा करने की इच्छा क्यों की होगी तथा उसने यह ढग क्या हुआ होगा। उसने इस शब्द का प्रयोग जानबूझकर किया इस पक्ष में एक मात्र महत्वपूर्ण तथ्य यही तथ्य है कि उसने जमन विशपो के पत्र में इसका स्पष्टीकरण क्यों नहीं किया? सम्पूर्ण रूप से यह बहुत मद्दिग्ध प्रतीत होता है कि हैड्रियन के वाक्य पद उसके इस निश्चय को बताने के लिए जानबूझकर प्रयोग किए गए थे कि वह सम्राट को पवित्र पोप पद के अधीन एवं जागीरदार समझता है यह अधिक संभव प्रतीत होता है कि असावधानी से ही उनका प्रयोग किया गया था। तथापि इस ओर ध्यान देना बहुत महत्वपूर्ण है कि जमन विशपो ने इस सभावित दावे का तत्काल संशकत खण्डन किया तथा पोप ने भी इसका स्पष्टीकरण देने की सावधानी दिखाई।

1159 ई. में हैड्रियन चतुर्थ की मृत्यु से कुछ समय पहले फ्रडरिक तथा हैड्रियन चतुर्थ के बीच फिर भगडा उठ गया हुआ। धर्म के विशप ने साजबग को लिये गए एक पत्र में जिस फ्रांसिसकस के आदों ने गस्ता फ्रान्सीसी में उद्घृत किया है सूचना दी कि पोप ने बहुत महत्वपूर्ण भागें करते हुए फ्रडरिक के पास दो कार्डिनलों को भेजा था तथा कुछ महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को निश्चित किया। उसने घोषणा की कि सम्राट को पोप को बताए बिना रोम को कोई दूत नहीं भेजने चाहिए क्योंकि नगर पर अधिकार और सभी राजचिह्नों पर सत पीटर का सम्मिलन था। इटली के विशपो को बिना सम्मान अर्पित किए सम्राट के प्रति निष्ठा की शपथ लेनी थी तथा उनके द्वारा सम्राट के दूतों का अपने महलों में स्वागत करने की आवश्यकता नहीं थी। उसने रोमन चर्च को टाइबर परेरा भस्सा काउन्सिल माटिडा का सम्पूर्ण क्षेत्र एकवापेन्टे से रोम तक का सम्पूर्ण क्षेत्र स्पोजेटो का एक क्षेत्र तथा सार्डीनिया और कॉर्सिका के टापू लीडान की भागें की।²¹

उसके उत्तर में फ्रडरिक ने पत्रों तो यह कहा कि एक महत्वपूर्ण विषय का उत्तर वह अपने सामंतों से राय लिए बिना नहीं दे सकता तथापि अस्थायी रूप से उसने यह उत्तर दिया यदि वे राजचिह्नों का त्याग करने को राजी हो तो वह इटली के विशपों से कर

नहीं मरिगा। वह यह मानने को राजी था कि विगर्णों को राजदत्ता का स्वागत अपने मन्त्रों में करने की आवश्यकता नहीं थी यदि वे उन भूमि पर बन हा जो विगर्णों की अपनी है किन्तु यदि वे मन्त्रों का भूमि पर उन । तो वे स्वयं म वे मन्त्रों के ही मन्त्र थे। पोप की इस मांग के बावें म कि उम रोम को दून नहीं भेजन चाहिए क्योंकि यहाँ का सम्पूर्ण शानि तथा व्यवस्था पर मन पीटने का हानिकारक है उसने कहा कि यह एक गम्भीर मामला है जिस पर सावधानी से विचार की आवश्यकता है क्योंकि यदि रोम क नगर पर मन्त्रों का अधिकार नही है तो हमका अर्थ यनी होगा कि उसकी राजकीय सत्ता का केवल नाम तथा दिखावा मात्र है।

ऐसा प्रतीत होता है कि लगभग ११५३ ई म दुर्ग सधि क पुनर्जागरण की मांग का किन्तु जसा फ्रेडरिक द्वारा साल्जबर्ग के आचविशप को निभे गए पथ से जाना जाता है फ्रेडरिक ने उस आधार पर इसे अस्वीकार कर दिया कि हैडियन ने बेनवेण्टम म मिमरी क विलियम के साथ ११५६ ई म सधि करके उक्त सधि की शर्तों का उल्लंघन किया है। फ्रेडरिक की मान्यता थी की यह कान्स्टेंस के समझौते का उल्लंघन है कि पोप ने उसमे राय लिए बिना ही सिस्ली के राजा स सधि कर ली।²¹

इस प्रकार उठाए गए प्रश्न निस्मैट्ट गम्भीर एवं गम्भीर थे तथा एक गम्भीर परिस्थिति उत्पन्न कर देते किन्तु हमी समय दूसरे अधिक गम्भीर प्रश्न उठ खड़े हुए।

११५९ ई म हैडियन चतुथ का देहावसान हो गया तथा उसकी मृत्यु के बाद पोप पण्ट का दोहरा निर्वाचन हो गया। रोनेण को एनेक्जण्ट चतुथ के रूप म तथा आक्टोवियन को विकटर चतुथ क रूप म चुना गया। इस परिस्थिति का बहुत स्पष्ट बगन साल्जबर्ग के गेरहोल्ड के एक ग्रन्थ म किया गया है। वह हमनी क सुधारवादी पात्रियों म मवाधिक उत्साही था किन्तु उसने कुछ समय के लिए प्रतिस्पर्धी दावतारों की ओर अनिश्चित दृष्टिकोण अपनाए रखा। यह इस मामले म स्पष्ट था कि जहाँ तक निर्वाचन का प्रश्न है एलेक्जेंडर को बधानिक एवं सद्धान्तिक रूप म कार्निवो के बहुमत द्वारा निर्वाचित किया गया है किन्तु दूसरी ओर उसने गम्भीरतापूर्वक तथा पूर्ण दायित्व से विकटर के समर्थकों की इस मान्यता की सूचना दी है कि एनेक्जेंडर तथा उसका निर्वाचन करन वाग कार्निवल दोनों ही सम्राट क विरुद्ध पडयत्र म तीन थे। यह आरोप लगाया गया कि हैडियन चतुथ की मृत्यु से पहले ही उन सबने सिस्ली के राजा विलियम मित्रान के निवासिया तथा साम्राज्य क दूसरे शत्रुओं से समझौता कर लिया था उन लोगों ने एनेक्जेंडर द्वारा अपने को वाद्य किया था कि हैडियन की मृत्यु के बाद वे पोप पण्ट पर किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं चुनेंगे जो पडयत्र मे उनके साथ नहीं है तथा उनकी विधि म तथा मित्रानवासिया द्वारा यह प्रतिज्ञा करने के लिए रिश्वत दी गई कि फ्रेडरिक को घम-हितकृत किया जाएगा तथा उनकी स्वोदृति के बिना पुन घम-बहिष्कार ममाप्त नहीं होगा।⁴

इन परिस्थितियों में फ्रेडरिक को दो सिद्धांत प्रस्तुत किए। पहला यह कि चर्च का एक सामान्य-सभा द्वारा पोप-पण्ट के दोना अभिलाषिया के गवा का अध्ययन किया जाए तथा

यायालय तथा परिपद् बुलान का आदेश किया है (Indivimus Celebrandum) जिसमें उसने आर्चबिशपों विशपों मठाध्यक्षा तथा दूसरे धार्मिक व्यक्तियों को बुलाया है ताकि लौकिक याय को सम्पूर्णतया दूर हटा कर चर्च के इस महत्त्वपूर्ण विषय का निणय केवल धार्मिक व्यक्तियों द्वारा इस रूप में हो कि ईश्वर का सम्मान हो सके तथा कोई भी रोमन चर्च को पवित्रता तथा न्याय से वंचित न कर सके तथा रोम नगर में शांति स्थापित हो सके । अतः यह ईश्वर तथा कथौनिक चर्च का नाम पर उनको परिपद् में उपस्थित होने तथा धार्मिक पुरुषों के निणयों को सुनने तथा मानने की आज्ञा तथा समादेश करता है ।⁶ ये सिद्धांत बलवन्त हैं जो जर्मन विशपों के पत्र में हैं किन्तु फ्रडरिक रोमन चर्च की सुरक्षा तथा दयभान के विशेष वक्तव्य पर बल देता है तथा वह इस सन्तुह का बलपूर्वक खण्डन करता है कि विवादास्पद प्रश्न के निर्धारण में योगदान के अधिकार का लौकिक सत्ता द्वारा दावा किया गया है । तथापि वह एनेक्जण्टर को परिपद् में उपस्थित होने के लिए बुलाने में अधिकारपूर्ण स्वर का प्रयोग करता है ।

यह ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है कि एक दूसरे पत्र में फ्रडरिक की स्थिति ठाक वही नहीं है । इसमें वह साल्जबर्ग के आर्चबिशप से प्रार्थना करता है कि वह उसे राय लिए बिना किसी भी पत्र को मसखन न करे ताकि साम्राज्य में किसी भी प्रकार की फूट न पड़े वह कहता है कि उसने फ्रांस तथा इंग्लैंड के राजाओं को बचन एक ऐसे प्रत्याशी का समयन करने को कहा है जिस पर वे तीनों सहमत हो जाए । वह यह कह कर उपसंहार करता है कि वह किसी भी एन व्यक्ति का पोप नहीं मानेगा जिस निष्ठावानों ने एकमत से न चुना हो ।²⁷ यहाँ फ्रडरिक का स्वर कुछ भिन्न है । यद्यपि वह चर्च के सामान्य निणय को ही अधिकारी सत्ता मानता है जिसके द्वारा मामल का निणय अंतिम रूप में होगा किन्तु साथ ही साथ वह इस प्रकार की भाषा का प्रयोग कर रहा है मानो उसे तथा फ्रांस और इंग्लैंड के राजा का यायसम्मत प्रत्याशी को मायता देने की कुछ सत्ता वा अधिकार हो । किन्तु यह कहा जा सकता है कि यह सम्पूर्ण चर्च के निणय का घोषणा से पूर्व के समय की ही धोर सक्त करती है ।

एनेक्जण्टर तृतीय ने उसका सम्मोहित इस चुनौती का स्वाकार करने में कोई सकोच नहीं किया किन्तु तुरन्त हा हठना स सम्राट के काय तथा इस दावे का कि सम्पूर्ण चर्च इस मामल का निणय देने का अधिकारी है एण्ड एव निन्दा की । उसके बचनव्य का स्वर शिष्ट था किन्तु उसका दृष्टिकोण समझीते से विमुक्त था ।

उसने मान लिया कि अपनी विशेष स्थिति के कारण सम्राट रोमन चर्च का समर्थक तथा विशप सरक्षक था तथा उसे विश्वास मिलाया कि वह उसका सभी राजाओं से अधिक सम्मान करता है किन्तु उसको ईश्वर का अधिक सम्मान करना चाहिए तथा उसे आश्चर्य है सम्राट रोमन चर्च का वह सम्मान प्रदान करने को प्रस्तुत नहा जो यायचित रूप में उसका है । वह कहता है कि उसे सम्राट के पत्र से विदित होता है कि उसने पाँच राज्यों के धार्मिक पुरुषों को एक परिपद् बुलाई है किन्तु एसा करने में उसने अपने पूर्वाधिकारियों की परम्परा का उल्लंघन किया है क्योंकि उसने रोमन पाप की जानकारी के बिना यसा किया है तथा उसे उपस्थित होने को बुलाया है मानो वह उससे उपर

प्रतिकार रखता हो जबकि ईसा न मत पीटर को तथा उमर माध्यम से रोमन चर्च को यह विश्वासपाधिकार दिया है कि वह सभी चर्चों का मामला का विचार तथा नियंत्रण करेगा तथा स्वयं किसी के भी नियंत्रण से परे होगा तथा उस विश्वासपाधिकार की रक्षा वह प्राण देकर भी करेगा। अस्तु सद्धातनिक परम्परा तथा पवित्र धर्माचार्यों की सत्ता उसे सम्राट के शायतनो में उपस्थित होत तथा उसका नियंत्रण का ग्रहण करने का निषेध करती है तथा यदि वह अपने अज्ञान अथवा दुर्बलचित्तता के कारण चर्च को दासता के स्तर पर लाने का अपराध करेगा तो वह कठोरतम निन्दा का पात्र होगा।²⁸

इसलिए जब 1160 ई. के पूर्वार्द्ध में परिषद् का सभा पादरियो महुर्न तो समकक्षण्डर तृतीय का कोर्ट प्रतिनिधि नहीं था किन्तु विकटर का मामला सभा के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। उक्त प्रतिनिधि का दावा किया कि उक्त विधिबन्धु निर्वाचन के पदारोहण हुआ है तथा रोमन पादरियो द्वारा उसे मायला दा गी है जबकि एलेक्जण्डर के विरुद्ध में विधायकता उसने कहा कि वह साम्राज्य का उद्दिष्ट करने के प्रयत्न में भागीदार है तथा पड़यंत्रकारियों ने सिस्ती के राजा तथा मिशनवासियों से यह समझौता कर लिया था कि हेरिडियन अनुय की मृत्यु होना पर वह अपने म से एर को पोप चुन लेगे।²⁹

परिषद् का नियंत्रण हमारे सम्मुख दो रूप में सुरक्षित है एक स्वयं परिषद् द्वारा प्रकाशित विश्व पत्र के रूप में तथा दूसरा प्रतिक के द्वारा परिषद् के निगम से सहमति व्यक्त करने वाले सावभौम पत्र के रूप में। परिषद् का पत्र पहले यह घोषित करता है कि मामला की उनके द्वारा सद्धातनिक तथा धार्मिक रूप में परीक्षा कर ली गई है (remoto omni seculari iudicio) तथा यह सिद्ध हुआ कि विकटर मत पीटर की सभाधि पर कार्रवाई के अर्थक समझौते के द्वारा (Saniori parte) जनता का प्राथना पर तथा रोमन पादरियो को अभिनाया तथा महमति से चुना गया था। वे मानते हैं कि बीस में सभी कार्रवाई के उमर निर्वाचन का सहमति दी है किन्तु वे इन अस्वीकार नहीं करते कि वे अज्ञान में थे। वे उस बात पर अधिक बल देते हैं कि वह रानेण (एलेक्जण्डर तृतीय) ने बहुत जल्दी पूर्व निर्वाचन हुआ था तथा उमर को प्रशिक्षित करने के लिए वे एक ग्रन्थ का उल्लेख करते हैं जिस में (Liber de Ritu et ordinatione Romanorum Pontificum) कहते हैं तथा यह प्रदर्शित करते हैं कि इस पोप इनासंट द्वितीय के निर्वाचन से संबंधित विवाद में मूलतः पूर्ण माना गया था। वे इस पर बल देते हैं कि रोलेण्ड को परिषद् में निमंत्रित किया गया था (remoto omni seculari iudicio) किन्तु उक्त तथा उसके प्रधान पादरियो न चर्च की किसी भी जांच अथवा नियंत्रण को मायला न्याय अस्वीकार के लिए। वे न केवल उक्त कर्त्तव्यता के अर्थक भी विवरण देते हैं। अतः वे घोषणा करते हैं कि परिषद् ने यह नियंत्रण किया कि विकटर का निर्वाचन जो कि परिषद् में प्रयास तथा चर्च के निगम को मानने को तयार था मुष्ट और ब्रीह्य किया जा तथा रोलेण्ड का निर्वाचन अथवा घोषित हो। वे इतना और वे का ध्यान रखते हैं कि यह सब किसी नौतिक नक्षेप के बिना कर लने के बाद परिषद् की आय तथा प्राधान्य पर तथा सभी विधायक एवं पादरियो के पश्चात् सम्राट ने अंत में विकटर का निर्वाचन का स्वाकार किया तथा उसका बाद उपस्थित राजाओं एवं

विद्याल जनसमूह ने अपनी सहमति दी।³⁰

फ डरिक के विश्व पत्र म एलेक्जण्डर द्वारा पाविया की परिपद में उपस्थित होने से अस्वीकार करने का वर्णन है किन्तु पत्र के प्रमाण पर अधिक बल दिया गया है। वह कहता है कि परिपद कोई लौकिक न्यायालय नहीं थी क्योंकि वह किसी भी अयाजक की उपस्थिति के बिना ही बठी तथा मामले पर विचार किया किन्तु एलेक्जण्डर ने चर्च की जाच को स्वीकार करने से यह घोषणा करके मना कर दिया कि उसे सभी मनुष्यों का निर्णय करने का अधिकार है परन्तु उसका निर्णय को नहीं कर सकता। परिपद का निर्णय पत्र के स्पष्ट प्रमाण के आधार पर किया गया। तथा उस आधार पर कि विक्टर के विरुद्ध इसके अतिरिक्त कुछ भी आरोप नहीं था कि उसका निर्वाचन कार्डिनलों के अल्पमत में हुआ है अतः उस (परिपद) एलेक्जण्डर को दोषा माना तथा विक्टर के निर्वाचन की पुष्टि की। फ डरिक चर्च के निर्णय को मानकर अपनी सहमति प्रदान करता है तथा विक्टर को विश्वव्यापी चर्च का शासक एवं पिता घोषित करता है।³¹

परिपद का पत्र विक्टर के निर्वाचन की अयामगताता एवं शीघ्रता पर अधिक बल देता है तथा फ डरिक का साम्राज्य के विरुद्ध पडयन पर किन्तु वे दोनों यह प्रतिपादन करने में एकमत हैं कि यह निर्णय चर्च का है लौकिक सत्ता का नहीं तथा एलेक्जण्डर ने चर्च द्वारा निर्णय के लिए अपना मामला प्रस्तुत करना अस्वीकार किया।

इस प्रकार जो सन् 1160 ई में प्रारंभ हुआ सत्रह वर्ष अर्थात् 1199 ई में बनिस् की संधि तक चलता रहा जब फ डरिक साम्बाड नगर की माँग को मानने तथा एलेक्जण्डर तृतीय को मायता देने को विवश हो गया। हमारे उद्देश्य के लिए इन वर्षों के इतिहास का सम्प्रति विवरण देना आवश्यक नहीं अतः हम यहाँ एक परवर्ती रूप में नगरों का माँग में वर्तमान राजनीतिक सिद्धान्तों पर विचार करण यहाँ हमारा सम्बन्ध लौकिक एवं धार्मिक सत्ताओं के बीच विवादास्पद प्रश्नों से है।

सन्दर्भ

- | | |
|--|---|
| 1 E. Bernh m, Z r Cesch cht des W rmer Conco data Cord r Ud lrici 214 | 8 Cf B rnheim op cit pp 37 38 |
| 3 Cas um Sa ctu G lli Coptid ; 8 (M G H Scriptorum vol) | 9 M G H Legum Sect 1 Con stit u nes v l i 116 |
| 4 Otto of Fre sing Gesta Friderici | 10 H Witte Fo schungen zur Geschu hte des W rmer Concordat |
| 5 N rratio d elect one Lotharii u Regem Romanorum 6 (M G H S S xi 511) | 11 Otto of Fre sing Gesta Friderici ; (p 392) |
| 6 E Ber he m Lothar III unddas Worme Co codat | 12 Id. d (pp 393 394) |
| 7 Vita Sancti Bernhard 1,5 (M gne P L. i 185) | 13 M G H Leg Sect. Const ; 144 145 |
| | 14 H dri m IV et W lhelmu Regis Co ncordia Ben ve tana (n J m Watt r ch Pontificum Romanorum Vitae vol p 35 |

- 15 सम्भव है जैसा Wilmar (the editor of the *Gesta Friderici* in *M G H Scriptores* vol xx) ने बताया है Lothair III वा Innocent II द्वारा territory (allodium) of the Countess Mathilda के प्रदान वा इस लक्ष्य द्वारा गलत अर्थ न लिया गया होगा।
- 16 *Ott of Fres g Gest F de c 10*
- 17 *M G H Leg Sect Cont 165*
- 18 *Id d 166*
- 19 *Id d 167 (2)*
- 20 *Id d 168*
- 21 *G ta F ide c v 34*
- 22 *M G H Leg Sect IV Const of 179*
- 23 *Id id 180*
- 24 *Ge hoh of R chersbe g (De I vest gat oo e Ant chri t 53*
- 25 *Id id 182*
- 26 *Id d 184*
- 27 *Id d 181*
- 28 *M G H Leg. Sect IV Co t of 185*
- 29 *Id d 187 188*
- 30 *Id d 190*
- 31 *Id id 189*
-

द्वितीय अध्याय

सैलिस्वरी का जॉन

सैलिस्वरी के जॉन का पोलिक्रैटिकस (Polycratu us) 1115 ई तथा 1159 ई के बीच हेडिग्यन चतुर्थ के पोप पद के कार्यालय में लिखा गया था¹ तथा इसलिए उस युग की रचना है जबकि पोप तथा मन्नाट के बीच पहले से कुछ सघष विद्यमान था तथा उस युग से पूर्व का रचना है जब योरोप में एन्क्वेण्टर तृतीय तथा फ्रैडरिक प्रथम के बीच सघष छिडा तथा इंगलड में हनरी द्वितीय तथा थामस एन्क्वेण्ट के बीच स्थानीय किन्तु महत्त्वपूर्ण विवाद छिन्ना । इस प्रकार लौकिक एवं धार्मिक सत्ता के सम्बन्धों के बारे में विचारों की प्रवृत्ति के प्रमाण के रूप में इसका अध्ययन लाभदायक है क्योंकि यह एक ऐसे समय में लिखी गई थी जबकि मनुष्यों की भावनाएँ उग्र सघष से उत्तजित नहीं हुई थी किन्तु इसमें क्षतिपूर्क अभी यह भी है कि किसी सीमा तक इसमें वचारिक तथा सामाजिक सिद्धांतों का प्रतिनिधित्व है जिनके वास्तविक महत्त्व की विशिष्ट तथा यावहारिक प्रश्नों के सन्दर्भ में याख्या का आवश्यकनानुसार परीक्षण नहीं किया गया । जसा हम दखा सैलिस्वरी के जॉन तथा ग्रांसवग के होनोरियस की सद्धान्तिक स्थिति में पारस्परिक सम्बन्धों के कुछ रोचक सूत्र हैं तथा लगभग यह प्रतीत होता है कि प्रथम महान् सघष के समाप्त होने तक उस युग के यावहारिक प्रश्नों के आधारभूत सिद्धांतों के वचारिक विकास पर मनुष्य विचार करने लगे थे ।

जॉन एक उग्र चर्चवा । स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है । वह न केवल लौकिक सत्ता द्वारा चर्च पर प्रत्येक आक्रमण की कठोर निन्दा तथा लौकिक कानून का अन्य सब कानूनों से अष्ट होने का खण्डन ही करता है बल्कि वह बहुत स्पष्टता से धार्मिक सत्ता तथा उसके कानूनों का लौकिक से अष्ट होने का प्रतिपादन भी करता है । साथ ही वह निस्संकोच रूप से धार्मिक सत्ताधारियों द्वारा अवय धनापहरण की आलोचना करता है तथा चर्च के निरकुश शासक की उतनी ही कठोरता से निन्दा करता है जितनी कि वह लौकिक निरकुश शासक की करता है । हम इसी क्रम में दोनों ही स्थितियों का विचार करना चाहिए क्योंकि प्रत्येक महत्त्वपूर्ण है ।

एक स्थान पर वह प्रयोग्य व्यक्तियों की धार्मिक पर नियुक्ति के ऊपर विचार करता है तथा राजा की निरकुश सत्ता के समयको का यह प्रतिपादित करता हुआ प्रदर्शित करता है कि राजा सभी कानूनों पर था तथा जिस व्यक्ति की योग्यता के बारे में सन्देह करना जिस उसने उम्र पद के लिए चना है धर्म गेह जसा अपराध है। वह कहता है कि वे यह मानते हैं कि लौकिक कानून के द्वारा बर्तों कानून नहीं है तथा परम्परा के पूर्वोत्तरणा पर तक के विपरीत होने पर भी थाग्रह करते हैं तथा जो सभी कानूनों के प्रति ध्याये न करने का प्रयत्न करें उस राजा का शत्रु मानते हैं। जानने परतया राजकीय कानूनवत्ताओं के स्वरूप स्वभाव से योग्यपूर्वक हानि उठाई थी अतः लौकिक हस्तक्षेप के विरुद्ध चर्चा एवं उसका अधिकारों का सुरक्षा तथा लौकिक धार्मिकता का अधिकार-क्षेत्र में पारस्परिकों को मुक्त रखने के लिए वरामन विधितथा इसके उपबन्धों के उद्धरण प्रस्तुत करने अपनी स्थिति का गुण बनाता है।³ रामन कानून को उसको अपीन रोचक है तथा हम इस तथ्य का स्मरण जानते हैं कि हम अब ऐसे युग में था पहुँच हैं जिसमें रोमन कानून का पुनः प्रारम्भ किया गया अध्ययन महत्वपूर्ण माना जाना प्रारम्भ हो गया था। हम राजनीतिक सत्ता के स्वरूप के द्वारा में उसके सिद्धान्तों का विवचन करते समय पहले ही दख चुके हैं कि रोमन धार्मिक-व्यवस्था के विस्तृत परिचय का उस पर बहुत प्रभाव पड़ा।⁴ लौकिक एवं धार्मिक सत्ताओं के सम्पर्क में वास्तव में रोम का कानून एक दुधारी तन्त्रकारी⁵ किन्तु सलिसबरी के जान को वह एक सुरक्षा का स्वागत योग्य शस्त्र प्रतीत हुआ।

सलिसबरी के जान में अपने का धार्मिक सत्ता पर लौकिक आक्रमण की निन्दा तथा उसका विरोध करने तक ही सीमित नहीं रखा उसने धार्मिक सत्ता की उद्भूत गरिमा तथा शक्ति का अज्ञपूर्ण प्राप्ति की। एक लक्षण में ही वह हठपूर्वक कहता है कि वह देवी कानूनों के स्वरूप तथा चर्च के अनुशासन से मेल नहीं खाते ता राजाओं के सभी कानूनों निरर्थक तथा अव्यवस्थित हैं वह जस्टीनियन के संहिताओं से उद्धरण देकर यह सिद्ध करता है कि राजकीय कानून धार्मिक सिद्धान्तों के अनुकारी होने चाहिए।⁶ दूसरे स्थान पर वह एक मायता प्रस्तुत करता है जो हम पहले ही सुविदित है तथा प्रतिपादन करता कि राजा ईश्वर के तथा धरती पर उसका स्थान देने वाले व्यक्तियों के उसी प्रकार अधीन है जस कि मानव शरीर अत्मा में शासित होता है।⁷

तथापि वह इन कल्पनाओं का केवल मात्र सामान्य शब्दों में ही प्रस्तुत नहीं करता अपितु एक अत्यन्त महत्वपूर्ण लक्षण में उसको दो तन्त्रकारों के सिद्धान्तों की व्याख्या के रूप में प्रस्तुत करता है तथा घोषणा करता है कि चर्च से ही राजा अपनी भौतिक तन्त्रकार का प्राप्त करता है क्योंकि दोनों तन्त्रकारों पर स्वायत्त चर्च का हा है किन्तु वह भौतिक तन्त्रकार का उपयोग राजा के लिये न करता है। अतः राजा धार्मिक सत्ता का दूत (या अभिकर्ता) है तथा पवित्र पद के उस निम्नस्तराय कृतव्य का पावन करता है जो कि पुरोहित के हाथों से करने योग्य नहीं है।⁸ यह धारणा सत बर्नाड के ग्रन्थ 'डे कन्सिडरेशन' (De Consideratione) के कुछ लक्षणों तथा उसके एक पत्र के ही सम्मानान्तर है तथा उनको उसका मूल स्रोत माना जा सकता है। इनमें संपत्ति में वह

पाप यूजनिक्स तृतीय म आप्रह करता ह कि धार्मिक एव भीतिक दोनो ही तलवारें चच तथा पोप के स्वामित्व म हैं वास्तव में भीतिक तलवार का उपयोग उसे नही करना ह किन्तु उसे पुरोहित क अनुरोध (ad nutum) तथा सम्राट की आज्ञा से ही निवाला जाएगा। दूसरे मे वह यह घोषणा करता ह कि दोना तलवारें सत पीटर की हैं उनमे स एव का उसके अनुरोध पर तथा दूसरी को उसक हाथो स निवाला जाएगा।⁸

यह सिद्धान्त कि दोना तलवारो पर चच का अधिकार ह बहुत मन्त्वपूर्ण ह। जहाँ तक हमने अध्ययन किया ह सलिस्वरी के जान तथा सत बर्नाड क इन वक्तव्या का मध्यनात के प्राचीन साहित्य म ठीक समानता कही नही है। इनम स सबसे निकट समानता ग्रासबर्ग के होनोरियस क सुम्मा ग्लोरिया के वाक्या म ह जिस पर हम एक विछन अध्याय में विचार कर चुके हैं। होनोरियस न यह प्रतिपादित किया कि ससा न अपने चर्च पर शासन के लिए बदल धार्मिक सत्ता की स्थापना की राजरीय सत्ता की नहा तथा सिनवटर प्रथम तथा का सट्टाइन क समय तक उसका शासन केवल पुरोहिता द्वारा ही होना था तथा कासट्टाइन न सिनवस्टर को अपने साम्राज्य का मुद्रा प्रदान किया तथा घोषणा की कि पोप की सम्मति क बिना किसी को भी साम्राज्य प्राप्त न हो। तथापि सिनवेस्टर ने स्वीकार किया कि जो बिगोही हो उनका दमन भीतिक तलवार के बिना न हो सकता अन उसने का सट्टाइन को एक सहायक के रूप म सम्मिलित कर लिया तथा दुष्कम करन वाला को दण्ड देने के लिए उस भीतिक तलवार सौंप दी।¹⁰ सत बर्नाड तथा सलिस्वरी क जान के वाक्या का सम्बन्ध कहा तक हानोरियस से है यह कहना कठिन है। वे उसके समान इस सिद्धांत का सम्बन्ध कि दोनो तलवारें चच का हैं कासट्टाइन क दान स नहा जाउत सत बर्नाड यह सम्बन्ध सीधा ससा गारा मत पीटर को कह गए इस कथन से जोडता है जिनम उस अपना तलवार का अपन भ्यान म रखने की आज्ञा दी गई ह। हम इन वाक्या का कुछ सम्बन्ध पात्र डमियन क उन शब्दो स जोड सकन हैं जिनम वह सत पीटर को दोनो रायों क कानूनो को धारण करता हुआ बताता ह जिन पर हम पहले विचार कर चुके हैं,¹¹ किन्तु ऐसे किसी सम्बन्ध का सुझाव देने का पर्याप्त आधार नही प्रतीत हाता।

मत बर्नाड तथा सलिस्वरी के जान क इन वक्तव्या को हम क्या महत्त्व प्रदान कर ? मत बर्नाड क वक्तव्य का सम्बन्ध यह सक्त करता ह कि इनके आधार पर यह निष्कप निवाला कि उनका का साम्राज्य मह व ह बुद्धिमत्ताहीन होगा। द कसीडेशन म वह सच यूजनिक्स से बह अनु कर ता ह कि रोमन जनता के दुराग्रह तथा अयवस्था के कारण उसके द्वारा न कवन अध्यात्मिक तलवार के ही प्रयोग करने का अपितु उसके तथा सम्राट की आज्ञा स भीतिक तलवार का भी उनक विरुद्ध उपयोग करवाने का औचित्य है। अपने पत्र म व पोप से आप्रह करता है कि पूर्वी चच की सुरक्षा के लिए किए गए धमयुद्ध म उस भीतिक तलवार का प्रयोग करवाना चाहिए। यह वक्तव्य कि दोनो तलवारें चच की है निस्सन्देह स्पष्ट है किन्तु यह विचार निराधार होगा कि सत बर्नाड लौकिक सत्ता तथा धार्मिक सत्ता के मध्य सम्बन्ध के विषय म कोई निश्चित सिद्धान्त प्रस्तुत कर रहा है।

सलिस्वरी के जान के विषय में बात दूसरी है। उसके म. 1 का प्रसंग उत्पीड़क शासक तथा सन्धे राजा के अंतर का विवचन है तथा मूलभूत सिद्धांत जो वह प्रतिपादित करता है यह है कि राजा का दून के अनुसार शासन करता है जबकि उत्पीड़क शासक अपने को उसका ऊपर रखता है।¹² इस सदन में व. नवाश अंत हैं जिन पर हम विचार कर रहे हैं तथा इस अध्याय में तथा इससे अगले अध्याय में जान राजा का ईश्वर एवं चर्च के वाद्यों के साथ सम्बन्ध का विवचन करता है। वह उन म. 1 से प्रारम्भ करता है जिनको म उद्धृत कर आए हैं तथा नाम्स की परिपद में का सटेन्टाइन की विनम्रता का मणित्त चर्चन करता है कि किस प्रकार उसने केवल प्रपक्षता करना ही स्वीकार नहीं किया परन्तु धर्मवृद्धों के साथ वठना भी तथा उमर निणयो का दबा निणयो के रूप में स्वीकार किया। यद्यपि उसने परिपद के सदस्यों को उदारता एवं क्षान्ति के लिए प्रेरित किया किन्तु उसने घोषणा की कि पुरोहिता के निणयो के अग्रान रूने वाद मनुष्य के रूप में उसके लिए उन यत्तिया के मामला की जिनका निर्णय केवल ईश्वर द्वारा ही हो सकता है परीक्षा यादसगत नहीं थी। जान थियोडोमियस के धर्म बहिष्कार की बात भी उद्धृत करता है तथा राजचिह्न तथा साम्राज्य की राजमृग के प्रयोग से सत एम्ब्रोस द्वारा उसे निलम्बित किया गया बताया है तथा य. निष्पन्न निकानता है कि जो आशीर्वा देता है वह आशीर्वा अण्ड करन वाके स महाम है तथा जो प. प्रदान करता है वह प. ग्रहण करन वाके स बडा है जो वधानिक रूप से एक प. प्रदान करता है वह वधानिक रूप से उसे छीन भी सकता है। वह कहना है कि क्या मेम्मुन ने साउल (Saul) द्वारा आना उल्लेखन के कारण उसे प. पुन करके उसके स्थान पर जसप के पुत्र का सिद्धासन पर नहीं बडा दिया था ?¹³

सत विक्टर के ह्य के एक नेलाश में हम सलिस्वरी के जान के इन वाद्यों में समातता पाते हैं। सत विक्टर का ह. धार्मिक सत्ता द्वारा लौकिक सत्ता की स्थापना तथा उसका निणय करन का चर्चन करता है।¹⁴

यह कहना एक प्रवाल होगा कि सलिस्वरी के जान तथा आसवग के होनारियस के अग्रान में हम उस धारणा का प्रथम निश्चित वक्तव्य पाते हैं कि अन्त सभी सत्ताएं चाहें वे लौकिक हों अथवा धार्मिक धार्मिक सत्ता की हैं न कि सत सत्ता तथा सत विक्टर के ह्य के वाक्य जहां तक उनका क्षेत्र में सीमाएं स सम्बद्ध प्रतीत हों। यह कहना अनुचित नहीं होगा है कि वह हनरी अन्नुयस ससय में गैरी संगतम द्वारा ग्रहण की गई मयाध स्थिति के सद्गतिविक्रम का ही प्रतिनिधित्व करता है। हम विकास तथा है, अन्नुयस क द्वारा सद्गतिविक्रम के धारक बरबरोसा को भज गए पत्र में कहा तक सम्बन्ध हो सकता है जिसने असा कि हम दख चके है वही अन्नुयस उपपन्न कर दो थी कहना असम्भव। तथापि यह स्पष्ट है कि यह हैद्वयन के श. किसी एक सिद्धांत को अभिप्रेत करन के उद्देश्य से य. तो इसका जमनी म न केवल तुरन्त उपर्य म भी खडन ही नहीं किया था अपितु अन्नुयस चतय ने भी स्पष्ट रूप से इसको अस्वीकार कर दिया था।

तत्कालीन समस्याओं के प्रति सलिस्वरी के जान के दृष्टिकोण का एक दूसरा भी पक्ष है जो ध्यान देने योग्य है। यदि वह लौकिक सत्ता के प्रयोग को जिसे वह उसका अनौचित्यपूर्ण

दावे बहता है बढोरता स फिदा करता है तो वह धार्मिक व्यवस्था के कुप्रयोग की झालो चना करन म भी कम मकोचनीन नहीं है। उसने उनके पमुख पक्षो को स्वय तथा पोप हैडियन चतुय के मध्य अर्नानाप क रूप म प्रस्तुत किया है जो जब अनुयाय वेदवण्टम मे प्रतिन हुआ था। कर्तालाप के बीच हैडियन न उसमे पूछा कि मनुष्य पोप तथा रोमन चच के बारे म क्या सोच रहे हैं। जान न उत्तर दिया कि धनक अक्ति शिकायत करते हैं कि रोमन चच जो सभी चर्चों की जननी है एक माता के रूप म ध्यवधार न करके विमाता के रूप मे अकार कर रहा है। रोमन पागो कम न यहुनी धमशास्त्रियो तथा फरीसियो की भाति मनुष्यो के कथो पर भारी बोझ डाल दिया है जिसको वे स्वय अपनी प्रगली मे भी नहीं छूने। वे गोमी तथा लानची थे तथा मुक्त रूप म न्याय प्रदान करने के बजाय उसे बेचते थे। पोप स्व अस्तनीय रूप मे भारपूर्ण हो गया था—जवकि चच और बेनिया खट्टर हो रहे थे वह अपने लिए प्रासादो का निर्माण करवा रहा था तथा राजसो और स्वणमय वस्त्र धारण कर रहा था। श्वगीय पाय च के शसको को दणित किए बिना नहीं रह सकता।

जब हैडियन ने उसम पूछा कि वह स्वय बताए कि वह क्या सोचता है तो उसने उत्तर दिया कि वह चाटुकारी तथा अभिनेहात्मक स्वेच्चाचारिकता के मध्य दुखद स्थिति म अपने को पाता है किन्तु उमने कार्गि न सिद्धो ऐस के एक वक्तव्य की शरण ली जो कि पोप यूजिनियस की उपस्थिति मे दिया गया था कि रोमन चच में लालच सबव्याप्त है जो कि सभी बुगइयों की जड है। जान ने यह कहने की सावधानी रखी कि रोमन पात्रियो म उचतम सयनिष्ठा के अक्ति नी हैं तथा उनसे अपना मत बलपूर्वक स्पष्ट कर दिया कि मनुष्यो की शिकायन भी अनुचित नहीं है। उसने पोप से रोमन चच के पनों पर ऐसे अक्तियों को नियुक्त करन की प्राय की जो कि नम्र प और मिथ्या गरिमा तथा धन स छुणा करन थे। उमने यह जानना चाहा कि पोप स्वय उन अक्तियों से उपहार एव धन की माग क्या करता है जो उमके पुत्र थे उसने सुभाव दिया कि वह ऐसा रोमन जनता की पिछा अत्रिन करन के लिए करता होगा किन्तु उसने इस पर बल दिया कि इसका कोई प्रौचित्य नहीं क्योंकि पाय ऐसी वस्तु नहीं जिसे पसा के लिए बेचा जाए।¹⁵

पोप हैडियन हसा तथा उसके निस्तवोच कथन की प्रशसा की और उससे सदा जो वह शिकायतें सुने सूचिन करने का अनुरोध किया तथा उसके कथनो का उत्तर मेनेनियम एग्रिप्पा (Menenius Agrippa's) की पत्र तथा शरीर के दूसरे अर्गों की कहानी द्वारा दिया और जान ने अपने भाषको सतुष्ट प्रदर्शित किया।¹⁶ यह उल्लेखनीय है कि वह अन्तिम विषय पर एक बात की पुनर्क म पुन विचार करता है तथा रोमन चच की कठिनाइयो का कारण रोमन जनता के लालच को सतुष्ट करने का आवश्यकता को बनाता है।¹⁷

दूसरे स्थान पर व अत्यन्त उग्रता से बिगो तथा आचडीकन्स और दूसरे पत्र शिकायतियो की पाय विरुद्ध मांगा की निन्दा करता है तथा पोप के दूतो को भी समान नहीं करता जिनके आचरण से ऐसा सोचने को बध्य करता है कि गतान ही ईश्वर का रूप बनाकर चच व उत्पीडन के लिए चला आया है।¹⁸ यह और भी अधिक महत्वपूर्ण है कि

एक भय स्पष्ट पर यह पुरोहितों से शोध न करने का अनुरोध करता है। यद्यपि वह उन्हें भी अनेक क्रूर तथा निरकुश बतलाता है। यह प्रतीत होता है कि उसका यह कथन व्यापक है कि वह रोमन चर्च के प्रतिनिधियों का उन्मुख नहीं कर रहा है क्योंकि उनका व्याय मनुष्यों द्वारा नहीं हो सकता तथा यह अचिन्तनीय है कि वे प्रतिनिधि बसा दाय करके जो प्रान्तों के गवर्नरों तथा प्रोकोन्सुला के लिए रोमन वातून द्वारा नियुक्त है। कौन विश्वास करेगा कि चर्च के प्रस्तावों जो दुनियाँ के व्यापारियों तथा प्रकाश स्तम्भ हैं उपहारों से प्रेम करते हैं। जबकि वे निष्पक्षता का उपदेश देते हैं तथा इस प्रकार का आचरण करते हैं त्रिमते वे सभी के लिए धानक उपलब्ध करते थे तथा कोई भी उनसे प्रेम नहीं करता था।¹⁹ यदि लौकिक उत्पीड़न शासक का दबी तथा मानवीय विधि के अधीन उच्छेद व्यापकित है तो कौन यह सोच सकता है कि पुरोहित वर्ग के अन्तर्गत उत्पीड़क को प्रेम तथा आश्र प्राप्त होगा।²⁰

संदर्भ

- | | |
|--|--|
| 1 Cf John f Sali bury Polcrat cu
vi. 24 s d vi 23 | 12 देखें अध्या 3 : |
| 2 Id d 20. | 13 वही 4-3। |
| 3. Id d 5 | 14 H gh f St Vector De Sacramenti
: Part 2 c. 4 |
| 4 Cf ol pp 136-145 | 15 J h of Sal bury P ! craticus vi.
24 |
| 5 Cf ol Part I., c. 8 | 16. Id d d |
| 6. Id d., 6. | 17 Id id. vi 23 |
| 7 Id d 2. | 18 Id d 16 |
| 8 Id d 3 | 19 Id d 17 |
| 9 St. Bern d De n deratione
3 | 20 Id d d |
| 10 भाग 3 अध्याय 3। | |
| 11 देखें भाग I अध्याय 4। | |

तृतीय अध्याय

राइखर्सबर्ग का गेरहोह

सबसे महत्वपूर्ण एक जिसकी रचना लौकिक एवं धार्मिक सत्ता के मध्य पुनर्वाहृत संधि द्वारा उठाए गए प्रश्नों के समकालीन स्थापन का निशान करती है राइखर्सबर्ग का गेरहोह है।

वह 1093 ई० अथवा 1094 ई० में उत्पन्न हुआ तथा 1132 ई० में राइखर्सबर्ग के कॉलेजिएट चर्च का अध्यास बना। वह जर्मन पात्रियों के सुधारवादी दल का सबसे प्रसिद्ध साहित्यिक प्रतिनिधि था तथा सम्पूर्ण जीवन पयन्त उसका विषय रचि रहि रही कि कथोपन एवं कॉलेजिएट चर्च के सन्तुष्ट अपने नियम का पूर्णतः पालन करें। वह प्रतिष्ठापन विवाह की अन्तिम अवस्था में पोप के पक्ष का अत्यन्त समयक रहा तथा 1160 ई० में अपने दहावसान के समय तक चर्च के कार्यों में अत्यन्त सक्रिय योगदान रहा।

उसके साहित्यिक ग्रन्थ अिनका सम्बन्ध यहाँ हमें दो वर्गों में विभक्त है। प्राचीन अर्थात् फ्रैंक रिश बारबरोमा तथा एकरणर तृतीय के मध्य के लिखने से पूर्व लिखे गए ग्रन्थ मुख्यतया उसक जैसे जर्मन पात्रियों के वास्तविक समझौते के प्रति दृष्टिकोण उसका जर्मन विचारों की स्थिति पर पाने वाला प्रभाव तथा 'पन्चिहों' को धारण करने वाले विषयों के सामन्ता दावित्वा तथा सामन्ती अधिकार-श्रेष्ठ के कारण उनक लौकिकीकरण के प्रसार के प्रति अत्यन्त अन्तरीर अन्ति का प्रतिकूल करण की स्थिति से लेखक हैं। दूसरे वर्ग के ग्रन्थ संधि के प्रारम्भ के बाद लिखे गए तथा मुख्यतया उमर उषण प्रश्नों में सम्बन्धित है।

यै रचनाएँ विचित्र रूप से एक ऐसे व्यक्ति के निगम का प्रमाणित करण के कारण महत्वपूर्ण हैं, जो यद्यपि एक दृढ़ तथा कठोर मधारक था केवल मात्र शिमी एक पक्ष का अनुयायी नहीं था किन्तु इसके विपरीत लौकिक एवं धार्मिक सत्ताओं के विरोधी दावा के बीच एक ऐसा पक्ष धारण करण को प्रयत्नशील था जिस वह दोनों के बीच एक उचित एवं न्यायसंगत सन्तुलन समझता था। एक ऐसा व्यक्ति जो यद्यपि चर्च का स्वतन्त्रता का निश्चयी समर्थक था किन्तु साथ ही चर्च द्वारा उनक अन्तिम अन्तर्गत की भा

जिसे वह साम्राज्य की स्वतंत्रता अथवा अधिकार मानता था निर्वाह निंदा करता था। वास्तव में यह उल्लंघनीय है कि अपने घनिष्ठ प्रिय डेक्वार्टी विजीविया नाबिटस (De Quarta Vigilia No. 115) में भी निम्न लिखित पत्र लिखते हैं कि उनके पत्र के प्रति निष्ठा के कारण राजसभ्यता में पनायन करने के बाद निष्ठा या वचन गम्भीरता प्राप्त तथा श्रद्धापूर्वक इस सिद्धांत पर बल देना है कि प्रत्येक सत्ता को दूसरी सत्ता के अधिकारों की मान्यता देना एक नकासामावर करना चाहिए।¹

गर्होह के सिद्धांतों के प्रथम पक्ष के सम्बन्ध में हम अत्यन्त सुविधापूर्वक दृष्टियाँ के आर्नोड के मत का अध्ययन कर सकते हैं। उनके सिद्धांतों एवं कार्यों के सम्पूर्ण महत्त्व का विवेचन इस प्रश्न की परिधि में नहीं आता क्योंकि उनका सम्बन्ध मध्यकालीन समाज के कई पक्षों से है। तबमगत् निगयानुसार हम चर्च द्वारा लौकिक सम्पत्ति एवं सत्ता के स्वामित्व सम्बन्धी ओं उसके विचार रहे प्रतीत होते हैं उनके परीक्षण से ही हम सन्तुष्ट रहना चाहिये। उनके सम्बन्ध में भी हम बहुत सावधान रहना चाहिए क्योंकि उसने तथा से यदि वास्तव में कोई भी कुछ भी सुरक्षित नहीं है तथा उसके विचारों की सूचना ऐसे लोगों से मिलती है जो मुख्यतः उनके विरोधी हैं तथा एक दूसरे से सदा सगत भी नहीं हैं।²

उस काल में लेखक सभ्यता में उनके मत का विवरण प्रस्तुत करते हैं। फ्रांसिस का आर्टो कहता है कि वह बिशपों का बहुत प्रलोचन मठवासियों का शत्रु तथा केवल जनसाधारण की चापलूसी करने वाला था तथा उसकी मान्यता थी कि पादरी द्वारा सम्पत्ति धारण बिशपों द्वारा राजविह्वो का धारण तथा मठवासियों के सम्पदा धारण का समर्थन नहीं किया जा सकता। इन सब पर राजा का स्वामित्व है तथा उसके द्वारा केवल जनसाधारण को ही ये प्रदान की जानी चाहिए।³ हिस्टोरिया पोन्टीफिकैलिस (Historia Pontificalis) निश्चयपूर्ण सूचना नहीं देता किन्तु उसको यह शिक्षा देता हुआ दिखाता है कि कार्डिनल का चर्च ईश्वर का चर्च नहीं है तथा वह पोप का इसलिए श्रेष्ठन करता था क्योंकि पोप एवं कार्डिनल समस्त पतित एवं हिसक व्यक्ति थे।⁴

गैस्टा डी फेडरिको (Gesta di Federico) का लेखक कहता है कि आर्नोड लगभग अपने समय के सभी व्यक्तियों पर घम विषय के दोषी होने का आरोप लगाता था तथा उपदेश देता था कि जनता को न तो उनके सम्मुख पाप स्वीकृति करनी चाहिए न उनसे सत्कार कराने चाहिए और वह पोप का भी निन्दा उसकी ईर्ष्या तथा उससे व्यापारिक के भ्रष्टाचार के कारण करता था।⁵ लिगुरीनस (Ligurinus) नामक कविता का लेखक सूचना देता है कि आर्नोड का मत था कि पादरियों का प्रथम फल जनता की स्वतंत्रता के उपहार तथा दशमाश मिलना चाहिए किन्तु यह मठवासियों द्वारा सम्पत्ति के स्वामित्व तथा पोप द्वारा राजकीय सम्पदा के धारण की निन्दा करता था तथा शिक्षा देता था कि सभी वर्तमान सम्पत्ति राजा के अर्धन है तथा जनसाधारण को प्रदान की जानी चाहिए।⁶

इस सबसे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि आर्नोड ने लौकिक सम्पत्ति के स्वामित्व के माध्यम से पादरियों के लौकिकीकरण का विरोध किया तथा ईच्छा की कि

लौकिक सत्तापारी उसे वापस ले लें। उसकी स्थिति अभी तक वसी ही प्रतीत होती है जसी पस्कल द्वितीय भ्रमवा गेरहोह की है। तथापि वह उनमें भी आगे बढ़ गया था तथा प्रतीयमानत यह मानन लगा कि जहाँ तक चर्च इस प्रकार नीजिकीकृत या वह चर्च भी नहीं था तथा निष्ठावानों को उसकी सहभागिता से असंग हो जाना चाहिए उसकी स्थिति ग्यारहवीं शताब्दी के कुछ उपर सुधारवादियों में भिन्न नहीं थी किन्तु वह चर्च की सत्ता तक ही सीमित नहीं थी।

इसीलिए गेरहोह ने उसकी निष्ठा की है तथा गेरहोह उसके सिद्धान्तों की निन्दा से सहमत है तथापि उसने इस पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त की कि चर्च ने अपने को उसकी मृत्यु के लिए उत्तरदायी बना लिया है स्पष्टतया उसका इस उत्तरदायित्व से बचने के उसके प्रयत्नों के प्रति पूर्ण सदेह है।⁷

नागरिक एवं स्थानीय स्वतंत्रता के विकास के प्रसंग में रोम नगर की जनता द्वारा पोप से स्वतंत्र शासन की स्थापना के प्रयत्न से ग्रानोर्ड के सम्बन्धों पर हम अगली पुस्तक में विचार करेंगे जबकि रोमवासियों के सम्राट के निर्वाचन को नियंत्रित करने के दावे का मध्यकालीन राजनीतिक सिद्धान्तों के इतिहास में कुछ महत्त्व नहीं है। तथापि यह उल्लेख योग्य है कि वेज़ेल (Wezel) नामक व्यक्ति के फ्रडरिक बारबरोसा को लिखे गए पत्र में जिसमें ये दावे प्रस्तुत किए गए हैं कान्स्टे टॉर्न के दान को उसी प्रकार भ्रमवा/पूर्वक एक घोषणा बताया है⁸ जैसे कि 1001 ई० में ग्रानो तृतीय ने उसके बारे में कहा था।⁹

गेरहोह के प्रारम्भिक ग्रन्थ जसा हम अभी कह आए हैं सवप्रथम धाम्स के समझौते तथा चर्च पर उसका प्रभाव के प्रति उसके दृष्टिकोण को प्रदर्शित करने के कारण तो महत्त्वपूर्ण हैं ही किन्तु यदि सम्राट प्रतिष्ठापन के अधिकार को त्याग दे तो बिशपों द्वारा राजचिह्नों (Regalia) को समर्पित करने के पस्कल द्वितीय के प्रस्ताव द्वारा उठाए गए प्रश्नों के सम्बन्ध के कारण भी वे रोचक हैं। प्रथम ग्रन्थ में जिससे हमारा सम्बन्ध है तथा जो 1126 ई से लेकर 1132 ई के बीच लिखा गया था वह उन परिस्थितियों के प्रति जिनके अंतर्गत राजचिह्नों प्रदान एवं धारण किए जाते थे गहरी चिन्ता व्यक्त करता है। उन्हीं पर गम्भीर विक्षोभ होता है कि बिशप मठ के अध्यक्ष तथा अध्यक्षता निर्वाचन के पश्चात् राजचिह्नों को प्राप्त करने के लिए राजसभा में उपस्थित होते हैं तथा उसके लिए श्रद्धाजिनि तथा स्वामित्व प्रदान करते हैं।¹⁰ वह इसी शिक्षाप्रद को दूसरे ग्रन्थ में दोहराता है जो कि 1142-43 ई में लिखा गया है। वास्तव में वह स्वीकार करता है कि पोप की एक आना के अनुसार बिशपों को राजा के प्रति 'याय' (Iustitia) प्रदान करना चाहिए किन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं था कि उनकी श्रद्धाजिनि भेंट करनी चाहिए भ्रमवा निष्ठा की शपथ लेनी चाहिए।¹¹ प्रश्न का महत्त्व केवल समान्तर प्रदान करने तक ही सीमित नहीं है यह स्पष्ट है कि गेरहोह को जो बात सबसे अधिक चिन्तित करती है वह बिशपों द्वारा राजचिह्नों के स्वामित्व से जुड़े हुए उनके कर्तव्यों का स्वरूप या बिशपतया सामन्ती सैनिक सेवा प्रदान करना तथा वह पहले उद्धृत ग्रन्थ में शोधपूर्वक प्रतिपादन करता है कि बिशपों द्वारा चर्च के धन का सैनिकों को

बनाए रखने के लिए प्रयोग पूर्णतया अवधानिक था ।¹² इसके कारण यह चर्च की सम्पत्ति के स्वरूप तथा उसके वांछित उपयोग के बारे में विवेचन करने को प्रवृत्त होता है उसका एक भ्रम पादरिपो के योगक्षेम के लिए दूसरा चर्च के निर्माण एवं सम्पत्ति के लिए तीसरा विधवाधो तथा भाषयवता वाले व्यक्तियों की मदद के लिए चौथा स्वयं पादरी एवं उसके कुटुम्ब के भरण पोषण के लिए तथा अतिथियों एवं पबिका के लिए जिनके लिए उसके द्वार हमेशा खुले रहने चाहिए ।¹³ यह चर्च की सम्पदा के तीन भाग करता है—दशमांश रियासतें तथा राज एवं सावजनिक कार्यों के लिए (Regales aut publicas functions) । उसका स्पष्ट मत है कि देवद्रोह तथा भ्रयाय के बिना पहली दो प्रकार की सम्पत्तियां को चर्च में अग्रिग्रहण नहीं किया जा सकता किन्तु तीसरी के बारे में यह कहता है कि चर्च इस सम्पत्ति को बनाए रखने को अधिक उत्सुक नहीं है अतः चर्च के जीवन-समय में फगने की अपेक्षा श्रेष्ठतर हो कि चर्च इस सम्पत्ति से मुक्त हो जाए ।¹⁴

यह एक महत्वपूर्ण धारणा है जो सम्भवतः उन उद्देश्यों पर कुछ प्रकाश डाल सके जो कि पश्चात् द्वितीय के राजचिह्नों को समर्पित करने के प्रस्ताव की पृष्ठभूमि में थे । गेरहोह स्पष्टतः सम्पत्ति के उन दो स्वरूपों में स्पष्ट विभेद करता है जो यायपूर्वक चर्च की अविभाज्य सम्पत्ति है तथा वे जिनका अधिकाधिक केवल सन्धि साम चर्च को हो सकता है तथा जो उसे उसने उचित कृतव्यों के बाहर फसाये तथा जिन्हें यह त्याग सकता है । वास्तव में यह हठधर्मितापूर्वक यह नहीं कहता कि उनको छोड़ देना चाहिए तथापि उसकी स्थिति उसके बहुत निकट है । य ड्यूरा की रियासतें काठडों की जागीर पत्न्यादि ऐहिक वस्तुएं हैं जबकि दशमांश तथा स्वतन्त्रता से प्रदत्त उपहारों पर ईश्वर का अधिकार है तथा यद्यपि वे उन व्यक्तियों को नाराज नहीं करना चाहता जिनका यह मत है कि एक बार चर्च को दे देने के बाद उनको वापस लेना घमद्रोह है वह इसकी पुष्टि करता है कि विशप द्वारा राजकीय एवं सैनिक कृतव्यों का पालन अपने धर्म से निमी सीमा तक धर्म-युति बिना नहीं हो सकता ।¹⁵

इस लेख में प्रदर्शित दृष्टिकोण रोचक एवं महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे यह प्रदर्शित होता है कि कुछ लोगों की यह भावना थी कि यदि पश्चात् द्वितीय के प्रस्ताव स्वीकार कर लिए जाते तो अच्छा होता । गेरहोह कई वर्षों तक इस विषय में गम्भीरतया चिन्तित रहा यद्यपि यह दृष्टिकोण होगा कि उसका निर्णय इस विषय में समय-समय पर बदलता रहा ।

1142-43 ई में लिखा गया प्रश्न जिसको हम पहले ही उद्धृत कर चुके हैं बहुत अधिक मात्रा में नसी विषय का विवेचन करता है । वह इस कथन से प्रारम्भ करता है कि राजाधो और विशपो दोनों के शत्रुओं के रूप में उसका विरोध किया गया है क्योंकि उसने यह माना है कि जो ईश्वर का है मनुष्यों को उसे ईश्वर को दे देना चाहिए तथा जो सीजर का है वह सीजर को क्योंकि दोनों में से कोई भी अपनी सीमा में रहने से सन्तुष्ट नहीं है किन्तु राजा विशपों के अधिकारों को हृष्य गए हैं तथा विशपों ने राजाधो के राजचिह्नों को हृष्य किया है ।¹⁶ यह स्पष्ट भाषा में उन विशपों की निन्दा करता है जो भाजमणों को संचालित करते हैं तथा चर्च के धन को सैनिक कार्यवाही में

सच करते हैं तथा उसका यह निश्चित मत है कि जब बिशप राजा को श्रद्धांजलि देते हैं तथा निष्ठा की शपथ लेते हैं तो चर्च सांसारिक कर्मों में रत हो ही जाएगा।¹⁷ तथापि यह प्रतीत होगा कि वह उस समय यह मानने को तयार नहीं था कि राजचिह्नों को समर्पित कर देना चाहिए किन्तु यह मानता था कि उनका प्रशासन बिशपों द्वारा बुद्धिमत्तापूर्वक किया जाना चाहिए।¹⁸ वह पस्वान द्वितीय तथा हेनरी पंचम के बीच सधि वार्ता का विवरण देता है तथा सूचना देता है कि पस्वान राजचिह्नों को सौंपने का प्रस्ताव करने को राजी कर लिया गया था किन्तु इसके लिए वह अपनी सन्मति व्यक्त नहीं करता तथा उसकी भी सूचना देता है जिसे वह उस प्रस्ताव का प्रत्याक्षर ममभता है।¹⁹

वन् वाम्स के समझौते के उपबन्धों तथा अपने युग की परिस्थितियों के बारे में भी एक महत्त्वपूर्ण वक्तव्य अपने ग्रन्थ में देता है। वह कहता है कि समझौते के इन उपबन्धों की सूचना कि जमनी व बिशपों का चुनाव सम्राट की उपस्थिति में हो तथा वे दण्ड एवं मुद्रा द्वारा राजचिह्नों को प्राप्त करें नेटरन की परिपद् में शोध एवं सदेहपूर्वक ग्रहण की गई थी तथा वह इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त करता है कि पहली शत का प्रयोग नहीं हो रहा है और प्राशा व्यक्त करता है कि श्रद्धांजलि तथा निष्ठा की प्रथा भी समाप्त हो जाएगी।²⁰ निष्कर्ष रूप में यह ग्रन्थ वाम्स के समझौते की उम यात्या का खण्डन करता है कि वह बिशपों पर श्रद्धांजलि तथा निष्ठा की शपथ का दायित्व डालना है जिम्को हम पहले ही उद्धृत कर चुके हैं।²¹

दूसरे ग्रन्थ में जिसका शीर्षक डे नावीटेगीबस ह्यूइस टेम्पोरिस (De Novitatibus hu Temporis) है तथा जो 1155-56 ई. में लिखा गया था वह अपने मूल विचार से और भाग बन गया प्रतीत होता है। वह कहता है कि इस पर विवाद है कि क्या चर्च से राजचिह्नों को ले लेना चाहिए तथा वह यह प्रतिपादित करता प्रतीत होता है कि यह नहीं करना चाहिए। वह स्वीकार करता है कि इस धारिता में कुछ कतव्य भी निहित हैं जिनका पालन बिशपों को करना चाहिए अतः यह ध्वानिक था कि बिशप राजा के प्रति निष्ठा की शपथ लें *Salvo Sui or dnis of ficio* तथा यदि बिशप इन शपथ को भंग करे तो वह अपने धार्मिक तथा यायाधीश द्वारा तथा उस सत्ता द्वारा जिससे वह राजचिह्नों से मूलित होना = धार्मिक तथा लौकिक दोनों गरिमाया से वंचित किया जा सकता है। उसी ग्रन्थ में दूसरे लेखक से यह स्पष्ट है कि वह उम समय इन कतव्यों में सामन्तों की सैनिक सेवा भी सम्मिलित मानता था जिनको कि बिशपों द्वारा वह भूमि जो उन्हें राजचिह्नों के रूप में प्राप्त हुई थी जागीर में दी गई थी। वह केवल यह चाहता है कि उनको नई अधीनताएँ नहीं बनानी चाहिए तथा दशमाया एवं स्वतन्त्रता उपहारों का ऐसा उपयोग नहीं करना चाहिए।

गेरहोह के दृष्टिकोण में यह परिवर्तन जो इन दो प्रबन्धों से विदित होता है स्पष्ट है किन्तु उसके धार्मिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की परीक्षा से यह स्पष्ट हो जाएगा कि उसका चित्त अभी भी इस सारे मामले से बहुत क्षुब्ध था। डी इवेस्तीगेशन एंटी क्रिस्टी (De Investiture Antichristi) नामक ग्रन्थ में जो कि 1161-62 ई. में लिखा गया था, वह यदि सम्राट प्रतिष्ठापन का अधिकार त्याग दे तो राज सम्पत्ता के सम्पण के

कारे में हेनरी पंचम तथा परक्ल द्वितीय के मध्य समझौता बार्ता का दूसरा विस्तृत बयान प्रस्तुत करता है।²³ वह इस प्रस्ताव की हेनरी पंचम की ओर से परन्तु असह्य के प्रस्तुत किया गया प्रदर्शन करता है क्योंकि यह जानना था कि जमन एवं गैरीजन विशप उससे सहमत नहीं होंगे।²⁴ परक्ल ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया किन्तु विषयों ने इसका तुरन्त शोधपूर्वक स्पष्टन कर दिया। यह बहुत उन्मत्त योग्य है कि गेरहोह बाप की घटनाओं का विचारण देन में हेनरी का उद्देश्य परक्ल को पकड़ने में था तो प्रतिष्ठापन के राजकीय अधिकार को स्वीकार करने का राजचिह्नो का त्याग करने के लिए उसे विवश करता थातना है तथा वह परक्ल द्वारा दूसरी बात को स्वीकार करना प्रशंसित करता है।²⁵ यह परक्ल द्वितीय की भूमि के बाद भी हेनरी को वही स्थिति बनाए रखते हुए—अर्थात् यह मानते हुए कि या तो चर्च राजचिह्नों को त्याग दे या सम्राट को विषयों की नियुक्ति का अधिकार बना रहे प्रदर्शित करता है।²⁶

गेरहोह दोनों पक्षों की ओर से प्रस्तुत किए गए या प्रस्तुत किए जा सकने वाले तर्कों का एक रोचक सारांश प्रस्तुत करता है। चर्चवादी दल का यह तर्क था कि यह उचित एवं न्यायसंगत था कि चर्च राजचिह्नों द्वारा प्रदान किए जाने वाले धन एवं गरिमा का उपयोग करें राजकीय पक्ष मानता था कि दशमांश एवं स्वतंत्रता आह्वति पर चर्च का न्यायोचित अधिकार था तथा उनमें सम्राट की सेवा का कोर्न दायित्व निहित नहीं था किन्तु उनकी मायता थी कि राजचिह्नो का प्रथम स्वयंसे भिन्न था। यदि चर्च इनको रखना चाहता है तो विशयों को सम्राट की सेवा तथा नजराना प्रदान करता होगा तथा यदि पान्री के लिए नौतिक और सैनिक मामलों में योगदान करना बंधानिक नहीं तो उन्हें उन राजचिह्नों को छोड़ देना चाहिए जिनके साथ ये दायित्व जुड़े हुए हैं। यदि विशय यह कहें कि वे सम्राट की ये मवाएँ करने तथा धार्मिक कृत्यों का भी पालन करने में भी समर्थ हैं तो राजकीय पक्षियों का कहना था कि फिर यह उचित था कि सम्राट को उनकी नियुक्ति का प्रथम अधिकार प्राप्त हो क्योंकि यह न्यायोचित नहीं था कि किसी को भी दूसरे सामंतों की राय से सम्राट के प्रतिरिक्त धर्म किसी के द्वारा राजपद प्रदान किया जाए।²⁷ सम्राट चर्च को स्वतंत्र निर्वाचन का अधिकार न देने को भी कृत निश्चय थे तथा विशय भी राजचिह्नों को न सौंपने के लिए उतने ही कृतनिश्चय थे किन्तु सम्राट के प्रति परम्परागत सेवा भी करने को तयार थे।²⁸

गेरहोह कहता है कि उसके अधिकार में न तो विशयों के कार्यों का निराय करना और न यह निश्चित करना था कि राजा के प्रति निष्ठा की शपथ एवं नजराने ने विशयों का दायित्व उन नौतिक मामलों में कहां तक बढ़ा दिया था जिसकी कि सत पाल ने निन्दा की है वह कहता है कि वास्तव में इस प्रकार प्रतिबंधित होन पर भी वे प्रायः एव अध्ययन के लिए कुछ समय निकाल सके हैं और इस प्रकार अपने दायित्वों के बाधरूढ लगभग स्वतंत्र रहे सकते हैं। ईश्वर ही यह निराय करेगा कि राजचिह्नों का स्वाभित्व चर्च का कर्न तर्क साधक अथवा बाधक है। अतः ईश्वर ही अपने चर्च को वह स्वतंत्रता प्रदान करे जो उसके योग्य है।²⁹

कुछ भागे बढ़कर गेरहोह उसी प्रश्न में इसी विषय का पुन निरूपण किसी सीमा तक

भिन्न शब्दों में करता है। उसने स्पष्टतः अनुभव किया कि राजचिह्नों के स्वामित्व में लौकिक एवं धार्मिक सत्ताओं के कर्तव्यों के मध्य जाति की बहुत घनिष्ठ सम्भावना थी तथा वह वनपूर्वक उन दोनों के अन्तर का प्रतिपादन दो तनवारों की शाखावली द्वारा करता है। स्वयं ईसा ने धर्म ग्रन्थ में इसका सत्ताप्राप्त म विभेन किया है जब उसने शिष्यों के इस कथन के उत्तर में कि दोनो ये दो तनवारों हैं उसने कहा कि यही पर्याप्त है। किन्तु गेरहोह कहता है कि अब एक एसी तीसरी शक्ति हमारे बीच है जो दोनों का सम्मिश्रण है वह स्वतन्त्र का एक प्रभावशाली उदाहरण इसमें पाता है कि कभी कभी बिशप के सम्मुख केवल प्राप्त ही धारण नहीं किया जाता जो चर्च के पक्ष एवं ईसाई विनम्रता का प्रतीक था किन्तु ड्यूक का राजचिह्न भी जो उस राजा द्वारा अपराधियों को दण्ड देने के लिए अधिकार के प्रतीक रूप में उसे प्रदान किया गया है। गेरहोह का यह विद्वत एवं अविचल पूरा प्रतीक होना है वास्तव में यहूदी पुरोहितों को लौकिक तलवार प्रयोग करने की अनुमति थी ईसाई पुरोहितों को नहीं।³⁰ वह कहता है कि यदि यह प्रतिपादित किया जाए कि राजाओं ने अपनी धार्मिक उत्तरदायिता के कारण बिशपों को ड्यूक के तथा अन्य पदों के अधिकार-क्षेत्र की धारण प्रदान की है तथा उनमें निहित पाप की दवस्था का अधिकार भी प्रदान किया है अतः यह उचित ही है कि इस अधिकार के प्रतीक बिशप क प्रागे ले जाए जाए तो वह उनमें दगा कि यद्यपि वह स्वतन्त्र उदारता के लिए राजाओं की प्रसंसा करता है तथापि उसके मत में यह अधिक अस्वीकार्य होता यदि वे पाप प्रदान करने की सत्ता अपने पास ही रखे रहते तथा प्राय को बिशपों को प्रदान कर देते।³¹ रोम में उसके अनुसार जो बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवस्था थी उसका वपरीत्य बल्क फ्रंस की निम्नीय परम्परा से प्रदर्शित करता है। बल्क कहता है कि रोम में नगर का प्रधान पाप संदीवानी मामलों के निष्णय का अधिकार प्राप्त करता था किन्तु फौजदारी अधिकार क्षेत्र की प्राप्ति सम्राट से होती थी जयपि इन साम्राज्यों में बिशप अपने प्रतिनिधि (Vicarias potestates) नियुक्त करते थे जो दीवानी व फौजदारी दोनों प्रकार के मामलों का धारण करते थे और इस प्रकार अपने को रक्तपात के लिए उत्तरदायी बनाते थे जो पादरी के लिए अज्ञित था।³² कुछ ऐसे व्यक्ति थे जो यह तर्क देते थे कि अज्ञततोगत्वा यह भी वसी ही बात थी जसी कि पुरोहितों द्वारा राजाओं का नियुक्ति किन्तु वह इस मायता का खण्डन वनपूर्वक उन शांति में करता है जो बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। वह कहता है कि बिशप न तो सम्राटों का निर्माण करते हैं न उनकी नियुक्ति किन्तु वे उनकी बचन आशीर्वाद देते हैं तथा ऐसे व्यक्तियों के सिर पर राजमुकुट रखते हैं जो या तो सामंता एवं जनता के निर्वाचन से अथवा वंश परम्परा के उत्तराधिकार से उसके पान वन हैं। राजा पुरोहितों के आशीर्वाद से नहीं बनते किन्तु दिव्य नियमों के अनुसार मानवीय निर्वाचन एवं सहमति से बनते हैं।³³

गेरहाह उस सिद्धांत का खण्डन करता है जिसमें वह अशिया के मार्गोल का सिद्धान्त बताता है कि चर्च जिसने लौकिक मामलों में अपने को निष्ण कर लिया है अब ईश्वर का चर्च नहीं रहा है। तथापि बल्क रोमन चर्च द्वारा मार्गोल के बच में योगदान पर गहरों चिन्ता यक्त करता है तथा उसकी कठोर निंदा करता है। वं विषय के विवाद का उपसंहार यह कहकर करता है कि वह चर्च के अधिकारियों द्वारा राजचिह्नों के धारण का

विरोधी नहीं है यदि वे विनम्रता से एक धार्मिक रूप से उनका प्रयोग करें किंतु जब पादरी या बिशप अपने कृतव्या को त्याग दें तथा अपने को लौकिक मामला में व्यस्त बनाएं जब वे लौकिक तलवार का प्रयोग करने विच्छेद करें जिनको कि वे अपने शत्रु समझते हैं शब्दानुष्ठा द्वारा प्रकृत दण्डमात्र तथा श्राद्धतिया के घन का प्रयोग करना और रक्षा से अपने को सुरक्षा जत करने के लिए करें तो ऐसा प्रतीत होता है कि धार्मिक स्वभाव में विध्वंस के शृणित कार्य को प्रतिष्ठित कर रहे हैं क्योंकि ऐसे कार्य ईसा के अनुकूल न होकर ईसा विरोधियों के अनुकूल हैं।³⁴

हम बिशपों द्वारा राजचिह्न के स्वामित्व के विषय में गेरहोल्ड के दृष्टिकोण पर विस्तारपूर्वक विचार कर चुके हैं क्योंकि यह पफ्लस द्वारा उद्घोषण के महत्व पर पर्याप्त प्रकाश डालता है। यह स्पष्ट है कि सुधारवादी दल के प्रतिज्ञा से क्या मकसद कम कुछ था। एमे वे जो यह अनुभव करते थे कि इनकी धर्म चर्चा को बड़ी कठिनाई में डाल देती है तथा उसको लौकिकीकरण की ओर प्रवृत्त करती है तथा बिशपों एक पादरिया के उचित कृत्यों से विमुक्त करती है। स्पष्टतः गेरहोल्ड इससे अधिक विमुक्त एवं व्याकुल था। अपने प्रारम्भिक दिनों में वह यह स्पष्टतः मानने को प्रस्तुत प्रतीत होता है कि राजचिह्न का योग लाभपूर्वक किया जा सकता है किंतु बाद का रचनाओं में उसका यह समग्र रूप से विचार प्रतीत होता है कि उनको बनाए रखना चाहिए किन्तु वह उनसे ध्यान बाल गतरी चर्चा के लौकिकीकरण के खतरों तथा जसा हम देख चुके हैं प्रथम लौकिक एवं धार्मिक सत्ताप्राप्ति के उचित कृत्यों में अन्वयस्था के खतरों का प्रबल अनुभव करता था। वह प्रतिष्ठापन विवाद में पोप की मायता का तथा धार्मिक सत्ता की स्वतंत्रता का निश्चय तथा उत्साह समर्थक था किन्तु यह दाना सत्ताप्राप्ति के मूलभूत अन्तर से अभिन्न था। हम देख चुके हैं कि वह दोनों तलवार में कितना स्पष्ट विभेद करता है।

इस प्रकार हम उस बिन्दु पर आ जाते हैं जहाँ गेरहोल्ड की मायता के दूसरे महत्त्वपूर्ण पक्ष को स्वाभाविक सन्नमण उपनयन होता है जिसका सम्बन्ध लौकिक तथा धार्मिक सत्ता के पारस्परिक सम्बन्धों से है। इस विषय में उसकी धारणाएँ मुख्यतः पोप एलेक्जेंडर तृतीय के निर्वाचन से प्रारम्भ होने वाले फेरिक् बारबरोसा तथा पोप 5 के बीच हिंसक सभ्य के सदृश में विकसित हुई थी। किन्तु उनका वर्णन करने से पूर्व गेरहोल्ड के एक प्रारम्भिक ग्रन्थ में वर्णित कुछ मायताप्राप्ति का संक्षिप्त उल्लेख करना। चौसठवें साम (Psalm Lxiv) पर अपनी टीका में जिसका काल 1151 ई. माना जाता है वह इसकी पुष्टि करता है कि पोपा में कई राजाओं और सामंतों का उनकी अयोग्यता एवं क्रूरता के कारण पदच्युत एवं धर्म-बहिष्कृत भी किया है तथा उनके स्थानों पर दूसरों को प्रतिष्ठित किया है ताकि वे तलवार से उन पर आक्रमण कर सकें जो जब एक साम्राज्य के शत्रु हैं किन्तु वह चर्चा के अधिधारिया का चेतावनी देना है कि वे सावधान रहें ताकि वे अपने शत्रुओं की मृत्यु के लिए अपने को उत्तरदायी न बना लें।³⁵ वह उन बिशपों की निन्दा करता है जो अपने यत्न चर्चा के पद तथा काउंट के पद की गरिमा में विभेद नहीं करते थे तथा युद्ध करके निर्दोष व्यक्तियों की भी हत्या करते थे तथा वह अपनी यह उल्लेख अभिलाषा व्यक्त करता है कि धार्मिक कार्य धार्मिक व्यक्तियों द्वारा किए जाए तथा

लौकिक काय लौकिक व्यक्तिग द्वारा तथा दोनों सत्ताओं की उचित सीमा बनाए रखी जाए।³⁶ गेरहोह स्पष्टतः चर्च के शत्रु राजाओं तथा सामन्तों के घम बहिष्कार एवं पद-युति की निन्दा नहीं करना चाहता है। कुछ भागे जाकर वह स्पष्टतया कहना है कि उसके मत में यह प्रौचित्यपूर्ण एवं वायोचित था।³⁷ वह एक अथ सिद्धांत का सुभाव देता है जिसका इन्फोर्मेट तृतीय के दावों में महत्वपूर्ण विकास हुआ कि विभिन्न देशों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में हस्तक्षेप किया जाए जिस पर हम अगने खण्ड में विचार करेंगे। वह सुभाव देता है कि यह उचित है कि किसी देश के अन्तरिक झगड़ों में एक देशों के पारस्परिक विग्रह की दशा में चर्च यह घोषित करे कि कौनसा पक्ष वायपूर्ण है तथा उस पक्ष के समर्थकों की अपने प्रतिनिधियों द्वारा सहायता करे तथा वह इस तथ्य का अनुमोदन करते हुए बयान करता है कि जबकि कुछ समय पूर्व हंगरी के राजा ने यूनानियों से युद्ध करने का विचार किया तो उसने पहले बिशपों की एक परिषद् बुलाई तथा जब उन्होंने घोषणा की कि हंगरी के द्वारा ही शांति संधि का तोड़ा गया है तो वह अपनी परियोजना से विरत हो गया। वह प्रतिपादन करता है कि यदि चर्च के बिशप विवादपूर्ण मामलों के त्रिसे युद्ध की सम्भावना हो वायपूर्ण या अवायपूर्ण होने का नियम दें तथा विशेषतया यदि उनका नियम की पुष्टि पोष कर दे तो कोई भी राजा उनका प्रतिरोध नहीं कर सकेगा क्योंकि पोष रायों के ऊपर स्थापित किया गया है तथा उसे उनको बनाने का व मिटाने का अधिकार है।³⁸

यह स्पष्ट ही प्रतीत होता है कि उस समय गेरहोह उन सामान्य सिद्धांतों को मानता था जो कि हम अधार्मिक शासकों को पद-युति एवं घम बहिष्कृत करने के पोष के अधिकार के विषय में हिन्ड्रेण्ड का मत कर सकते हैं। यद्यपि वह प्रत्यक्षतया हिन्ड्रेण्ड या हेनरी पचम का नाम नहीं उता किन्तु उनकी ओर संकेत बहुत स्पष्ट प्रतीत होता है और निश्चित ही ऐसे मामलों में कार्य करने के पोष के अधिकार के सिद्धांत की पुष्टि स्पष्ट है। तथापि हम यह ध्यान देने की आवश्यकता रखनी चाहिए कि गेरहोह इसे दोनों सत्ताओं के कर्तव्यों में अन्तर के अपने सिद्धांत का खण्डन नहीं मानता। कुछ भागे चलकर उसी ग्रंथ में वह इस बात पर बल देता है कि पादरियों को अपने को दण्ड पाप में पृथक् रखकर अपना काय लौकिक अधिकारियों को यह शिक्षा देना मात्र मानना चाहिए कि क्या ठीक है तथा न्यायोचित है तथा वह अपने मत का सार पोष निकोलस प्रथम के सम्राट माइकेल को लिखे पत्र में स पोष जिलेसियस के इन शब्दों के उद्धरण से प्रस्तुत करता है जिनमें कहा गया है कि ईसा द्वारा दोनों सत्ताओं को अलग करके उन्हें अलग-अलग काय प्रदान किए गए।³⁹ तथापि गेरहोह के मत को पूरतया समझने के लिए हम नए सघष छिन्ने के बाद लिखे गए प्रबंधों पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे।

उसका डी इन्वेस्टीगेशन एंटी क्रिस्टी (De Investigatione Antichristi) नामक ग्रंथ जिससे हम बहुत से उद्धरण पहले ही दे चुके हैं जसा हमने बताया था 1161-62 ई० में पोप के विवादास्पद निर्वाचन के लगभग दो वर्ष बाद लिखा गया था तथा गेरहोह सुभाव देता है कि यह विपत्ति चर्च पर ईश्वर के दण्ड का एक भाग थी। दूसरे घमद्रोहों की दशा में यह नियम करना सुगम था कि कथोलिक चर्च कौनसा है, किन्तु

इस मामले में बुद्धिमान एक सरपंच प्रमियों के प्रतिरिक्त किता दूतों के लिए किसी निष्पक्ष पर पहुँचना सुगम नहीं है।⁴⁰ वह वास्तविक निर्वाचन का विस्तृत विवरण देना है तथा निष्पक्ष निष्ठासता है कि यह संभवतः सत्य है कि एन्ब्रजण्डर का पक्ष अधिकांश था।⁴¹ किंतु वह बयान करता है कि जिस प्रकार एन्ब्रजण्डर के विरोधियों ने उस पर आरोप लगाए जिनका हम पढ़ें हैं उतना सच नहीं है—अर्थात् एन्ब्रजण्डर तथा उसके पक्ष के कार्यकर्तों ने हथियार चतुष्टय के जीवन रहते ही सम्राट के विरुद्ध सिसना तथा मिलेनीज के राजा से मित्रता पट्टा बना लिया था तथा अपघ्नक प्रतीका भी थी कि वे किसी भी ऐसे व्यक्ति को पों नहीं छेनेगे जो पट्टा का सत्य नहीं था तथा सिसना व मिलेनीज के लोगों द्वारा इसका प्रतीका बनने के लिए उनका स्वीकार ही गई थी कि वे प्रतिक्रिया को घम बहिष्कृत कर देंगे तथा उनकी राय के बिना उन दाग मुक्त नहीं करेंगे।⁴² वह बयान करता है कि उसमें विक्टर तथा एन्ब्रजण्डर के आचरणों में अंतर भी बताया गया है जबकि विक्टर ने पाविआ में उपस्थित होकर अपनी दावा परिपक्व के सम्मुख प्रस्तुत किया था एन्ब्रजण्डर ने गंधर्वक घसा करने से अस्वीकार कर लिया था।⁴³

ऐसा प्रतीत होता है कि गेरहोह इन कारणों से बहुत विचलित हो गया तथा उसने यह आभास हुआ कि चर्च का निष्पक्ष सत्य विषय में इतना विभाजित है कि किसी भी निष्पक्ष पर पहुँचना उस कठिन प्रतीत हुआ। एन्ब्रजण्डर के समर्थक यह प्रतिपादन करते थे कि एंटाओक (Antioch) तथा यरूशलम के घम पीठ उन्में स्वीकार करते हैं। किंतु विक्टर के अनुचरों के अनुसार दूसरे चर्चों के निष्पक्ष का विचार करना भी आवश्यक था क्योंकि विशेषतः पूर्वीय चर्चों की जानकारी बहुत कम थी।⁴⁴ गेरहोह एन्ब्रजण्डर द्वारा पाविआ की परिपक्व के सम्मुख अपनी स्थिति की निर्दोषिता सिद्ध न करने के काय से परेशान हो गया था। वह प्रतिपादन करता है कि इसी में सिप्या द्वारा अपने पुनर्जीवित होने पर सदेह करने पर स्वयं स्वयं से उतर कर दगन लिए थे तथा सत पीटर न सन पाल की भिडकी के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था।⁴⁵ वह विक्टर के पक्ष में निष्पक्ष करने की वाला था कि उस तूलूज (Toulouse) में एक परिपक्व के हान का समाचार मिला जिसमें एक सौ विंगप प्राप्त इंग्लंड तथा स्पेन के राजा विक्टर के दूत एन्ब्रजण्डर तथा सम्राट उपस्थित थे तथा परिपक्व ने एन्ब्रजण्डर के पक्ष में निष्पक्ष किया तथा विक्टर को घम-बहिष्कृत कर दिया।⁴⁶ तथापि वह इससे विश्वस्त नहीं हुआ क्योंकि परिपक्व ने पट्टा के आरोप पर विचार नहीं किया था तथा वह अनुभव करता था कि यह सवागिक गम्भीर प्रश्न है तथा आरोप की सत्यता या असत्यता का निर्धारण केवल सामान्य परिपक्व में ही हो सकता है।⁴⁷

गेरहोह के मन में मुख्यतः दो प्रश्न थे क्या पट्टा का आरोप सत्य है तथा क्या सामान्य परिपक्व के सम्मुख उस पर लगाए गए आरोपों को प्रस्तुत करने से अस्वीकार करना एन्ब्रजण्डर तृतीय के लिए उचित था। वह सम्राट के विरुद्ध यह सत्य आरोप सत्य हो।⁴⁸ पट्टा की निंदा करने में सहोचरहित है तथा सामान्य परिपक्व के निष्पक्ष के प्रतिरिक्त उस इस कठिनाई से उबरने का को भी माग नहीं लिखा देता।⁴⁹ वह विस्तार पूर्वक इस प्रश्न की परीक्षा करता है कि किस प्रकार एक किन शर्तों में पों अपने ऊपर लगाए गए आरोपों से अपने को मुक्त कर सकता है। वह कहता है कि सत पाल ने यरूशलम

म प्ररित्तों से विचार विनिमय किया था ताकि उनके सिद्धांतों से किसी भी प्रकार से भिन्न होने के कारण वह लोक निंदा को जन्म न दे तथा वह चलन करता है कि किस प्रकार पोप मार्सेलस (Marcellus) ने जिसने मूर्तियों के प्रति चढावा अर्पित किया था धर्मचार्यों को यह स्वीकार करने पर कि उसका निराण को भी नहीं कर सकता तथा क्योंकि वह अपने को चर्च के सम्मुख दोषमुक्त नहीं कर सका था उसने स्वयं अपने को धम बहिष्कार तथा पञ्च्युति का दण्ड लिया था तथा किस प्रकार पोप लियो तृतीय ने सावजनिक रूप से शान्तिमान तथा जनता की उपस्थिति में अपने जार उगाए गए आरोपों से अपने को मुक्त किया था।⁵⁰ वास्तव में गरहोह इस सिद्धांत का प्रतिपादन करता है कि कोई भी पोप का त्याग नहीं कर सकता⁵¹ तथापि वह उसे स्वीकार नहीं करता कि यह सिद्धान्त विवादास्पद निर्वाचन की दशा में प्रयाग किया जा सकता है। उस मामले में उसका विचार है कि दावेदारों को अपने को अपने भाग्यो (निर्वाचक विशेषों) के सामने प्रस्तुत करना चाहिए तथा अपना दावा प्रस्तुत करना चाहिए ताकि इश्वर का चर्च दावों का प्रतिरोध एवं अद्भ्युत्तों को स्वीकार कर सके।⁵² वह विकृति तथा उसके समयक को कार्निना के साक्ष्य के आधार पर जो स्वयं उमम भागीदार थे उम पण्यत्र के प्रति अपनी आशय की पुनर्पुष्टि करता है जो सम्राट के विरुद्ध किया गया था तथा भाग करता है कि जिन पर यह आरोप उगाया गया है वे अपने को उससे दोषमुक्त करें तथा साम्राज्य के शत्रुओं से सम्बंध तोड़ लें विशेषतः इसलिए कि सम्राट उनके द्वारा सभा शिकायत किए गए मामलों में त्याग करने को तयार है।⁵³ गरहोह ने जिस प्रकार प्रारम्भ किया था उसी प्रकार वह यह कहकर अध्याय का उपसंहार करता है कि इन कठिनाइयों का एक मात्र हल सामान्य परिपद को बुलाने में है जो दो दावेदारों के बीच निराण कर सके तथा धार्मिक एवं राजकीय सत्ता के बीच शांति स्थापित कर सके।

यह बहुत उल्लेखनाय है कि गरहोह सारी परिस्थिति से इतना विशुद्ध था कि उसने पोप की राजसभा (Romani) की सम्पूर्ण नीति का बंदोर निंदा अपनी पुस्तक में चालू रखी। उसने उन पर सत्रने बढकर अभिमान तथा लाजब का आरोप उगाया तथा अक्वशा पूर्वक मुभाव देता है कि वे अतन सभी दिशाप पनों को समाप्त करके चर्च के सभी अंगों को प्रत्यक्षत रोम के शासन के अधीन ले आए व शासकों एवं प्रजाओं के राजनीतिक सम्बंधों में हस्तक्षेप करना जो उनकी आनापालन न करेंगे उनको धम-बहिष्कृत करेंगे और य सब बाय वे धन के लिए करंगे।⁵⁴ वह वर्तमान सघप एवं धम विद्रोह का कारण रोमनों के लाजब को बताता है जो कि सिसेलियन राजाओं तथा मिलन वासियों के स्वण द्वारा अष्ट बना दिए गए हैं तथा वह मिलन द्वारा राजकीय सत्ता के प्रतिरोध का कारण रोमवासियों के समर्थन को बताता है।⁵⁵ उस वास्तव में इसका खयाल है कि उत्साह के अतिरेक के कारण उसकी निंदा हो सकती है किन्तु उसकी मान्यता थी कि वह ये तक व्यक्तिगत रूप से किसी के विरुद्ध नहीं दे रहा है किन्तु केवल उन भयंकर परिणामों की ओर संकेत कर रहा था जो इन दोषों के कारण होने क्योंकि उसका वास्तविक भय था कि यदि इन लोकापवादों की अपेक्षा की गई तो रोमन चर्च के प्रति आनापालन में उसी प्रकार व्यक्तिगत होगा जसा यूनानियों ने किया था।⁵⁶

एक बार फिर वह एलेक्जण्डर के निर्वाचन की वयता के पक्ष एवं विपक्ष म तब देता है तथा कहता है कि वास्तव म चर्च तीन भागों म विभाजित था एक भाग एलेक्जण्डर को स्वीकार करता था दूसरा विक्टर को जबकि तीसरा दोनों म से किसी को भी न स्वीकार करता था न प्रस्वीकार किन्तु परिस्थितियों के अधिक परिपूर्ण तथा उचित विचार की प्रार्था करता था जो केवल राजाओं की समिति से बुलाई गई सामान्य परिषद् म ही सम्भव था। उनमे स्वयं को किसी नियम पर पहुँचने म प्रथमथ पाया किन्तु वह तीसरे पक्ष से सटतत प्रतीत होता है।⁵⁷

यह ग्रन्थ पोप के दम म पायी जाने वाली इस प्रवृत्ति की जो सम्राट के ऊपर राजनीतिक सत्ता की माँग करती है ग्रन्थ न बढोर निम्न मे गमा त होता है। जब व चित्रा तथा पत्रा म प्रशिक्षित करते हैं कि सम्राट पाप को नाराजा देता है—जो जिस हृ हैद्वियत चतुथ तथा प्र डरिक् बारबरोसा व मध्य शोधपूर्ण पत्र व्यवहार का उत्तर है जिसका हम पहले ही वणन कर चुके हैं⁵⁸—जब व सम्राट तथा उसके विरुद्ध विरोध करने वाले व बीच मध्यस्थ बने तब उन्होंने पोप को सम्राटो के ऊपर प्रधीश्वर बनाया तथा सम्राट को एक सामन्त की स्थिति म ला पटवा। वास्तव म यह उस सत्ता को नष्ट करना है जिस ईश्वर ने बनाया है ईश्वर के आदेशा की अवहेलना तथा दोनों गलवारो की प्रवृत्ति व मध्य भ्राति उत्पन्न करना है। प्रत्येक सत्ता को अपने स्थान एवं कार्या से सतुष्ट रहना चाहिए⁵⁹ राजा या सम्राट को उस वस्तु को अपनी नहीं समझना चाहिए जो कि प्रोहितो की हो तथा बिशप को सोडर की वस्तु सोडर का सौंपनी चाहिए तथा यदि व राजबिहो को धारण करना चाह तो उनको राजा का उपमुक्त एवं पायोचिन सम्मान करना चाहिए। व पुन हमका प्रतिपादन करता है कि यह उचित नहीं कि बिशप नडराना व राजा को इसी से सतु ट हो जाना चाहिए कि बिशप निष्ठा की शपथ न तथा यह कि व अपने पद का सुरक्षित रखत हुए राजमुकुट को रक्षा करेगा।⁶⁰

यह ग्रन्थ पोप के निर्वाचन व विषय म तात्कालिक विवाद तथा दोनों सत्ताया के पारस्परिक सम्बन्धा के बारे म धार्मिक ग्तियों के मन की दशा व विषय मे विद्यमान जमनी की विचारधारा पर पर्याप्त रूप म प्रकाश डालता है। क्योंकि यह उल्लेखनीय है कि व उसकी धार्मिक भावनाओं की गहनता है जो कि गरमो को से बारे म सावधान बनाती है कि वही चर्च लौकिक मामला मे लिप्त न हो जाए। व चर्च की स्वतंत्रता की आवश्यकता की परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है उने अयाजक प्रतिष्ठापन के विरुद्ध शपथ को आवश्यकता एवं पाप के विषय मे कोई सन्दह नहीं है किन्तु जसा उसने अनुभव किया कि उस युग की यह इतनी समस्या नहीं था कि चर्च को किस प्रकार लौकिक सत्ता के आक्रमण से रोका जाए जितनी यह थी कि वह लौकिक मामला म फगने से अपने को किस प्रकार बचाए जिनमे अपनी सफलताओं के कारण व फस गया था।

यह सभी बातें उसकी कुछ या की रचनाओं म बहुत स्पष्टता से वर्णित हैं। 1166-67 ई म उसने रोमन चर्च के कार्डीनलो को एक लेख मे सम्बोधित किया। वास्तव म उसन जब डी इवेस्टीगशन एटीक्रिम्टी लिखा था तब से परिस्थिति बहुत बदल गई थी। विरोधी पोप विक्टर की मृत्यु हो चुकी थी तथा पस्कल उसका

उत्तराधिकारी बन चुका था। उसका निर्वाचन जमन राजाओं के मई 1165 ई के विश्व पत्र में रोमन चर्च के बिशपो एव कार्डिनलो द्वारा लम्बार्डो तथा टस्कनी के बिशपो एव रोम के नगराध्यक्ष तथा अन्य नागरिकों की उपस्थिति में हुआ तथा साम्राज्य के चर्चों एव राजकुमारों ने उसे मायता दी थी।⁶¹ तथापि गेरहोह उसके प्रस्वीकरण के विषय में स्पष्ट रूप से था तथा उसने यह आरोप लगाया कि किसी भी कार्डिनल बिशप ने उसके अभिषेक में भाग नहीं लिया था तथा अब वह निश्चित रूप से एलेक्जण्डर तृतीय को वधानिक पोप मानता था।⁶² तथापि वह उस बड़ी कठिनाई को भी बताता था जो कि उसके समयको को इस कारण होती थी क्योंकि सिसली के राजा तथा मिलन वासिया के साथ उसके पडयत्र के आरोप का खण्डन नहीं किया गया था तथा एलेक्जण्डर के कुछ समयको की यह मायता भी थी कि हैरिपिन चतुथ के काय को निन्दा नहीं की जा सकती।⁶³ उसने तब दिया कि एलेक्जण्डर तथा उसके समयको को यह समझ लेना चाहिए कि यद्यपि यह सत्य था कि पोप एव उसके काय किसी मानवीय न्याय के अधिकार क्षेत्र में नहीं आते किन्तु यह केवल उसके धार्मिक पद एव कार्यों के विषय में था न कि लौकिक मामलों से उसके सम्बन्धों के विषय में इनके विषय में उसके काय सशोधन योग्य थे।⁶⁴ तथा उसने अनेक दृष्टान्तों से यह दिखलाया कि स्वयं पोपों ने इसे स्वीकार किया है तथा इन मामलों से सम्बन्धित आरोपों से अपने को मुक्त किया है उसने लियो चतुथ के शब्दिकरण को भी इसमें सम्मिलित किया था।⁶⁵ अत यदि शिकायत की जाए कि पोप तथा कार्डिनलो ने कोई ऐसा काय किया है जिससे साम्राज्य को खतरा उत्पन्न हुआ है तथा चर्च का विभाजन हुआ है तो यादोचित यही होगा कि या तो इस सिद्ध किया जाए या इसका खण्डन किया जाए।⁶⁶ यदि यह सिद्ध हो जाए कि पोप ने गलती की है तो इस बदला एव सुधार जा सकता है यथा करने के अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं यह अनेक दृष्टान्त प्रस्तुत करता है जिसमें सत पीटर बोनीफम द्वितीय पस्कल द्वितीय एव वेलीवटस द्वितीय सम्मिलित हैं।⁶⁷ वह सुझाव देता है कि सिसली के राजा के साथ आरोपित समझौता जिसके बारे में इतना सघष हुआ था पोप हैरिपिन द्वारा दबाव में आकर किया गया था तथा वह कार्डिनलो से प्रायना करता है कि सावजनिक रूप से यह सिद्ध कर दें कि यह कभी किया ही नहीं गया था या इसका औचित्य सिद्ध कर या इसका सशोधन करें।⁶⁸

गेरहोह ने पोप तथा कार्डिनलो को चेतावनी दी कि उनका निरंतर विद्यमान सौम्य भंगों को इतनी सीमा तक बड़ा देगा कि राजसत्ता एव धार्मिक सत्ता एक दूसरे को नष्ट कर देंगी तथा वह उनको जिलेशियस के शब्दों का स्मरण दिलाता है जिसको वह पोप निकोलस प्रथम के सम्राट माइकल को लिखे गए पत्र से उद्धृत करता है जिसमें यह बताया गया है कि यह स्वयं ईसा ही थे जिसने लौकिक एव धार्मिक सत्ताओं को उनके विशिष्ट काय सौंपे। वह कहता है कि यदि ये सिद्धांत स्मरण रने जाते तो दोनों सत्ताओं में वर्तमान सघष ही नहीं होता य दोनों सत्ताएँ तब तक चलती रहनी चाहिए जबतक कि ईसा स्वयं अपनी अंतिम विजय के लिए उपस्थित नहीं होते।⁶⁹ अत उसने कार्डिनलों से अनुरोध किया कि यदि वे चर्च के विभाजित सदस्यों को वास्तव में मिलाना

चाहते हैं तो वे इसे स्पष्ट कर दें कि उनका प्रति आरोप के विरुद्ध वे साम्राज्य को नष्ट नहीं करना चाहते।⁷⁰

एक अन्य तैसा म उल्लेख प्रमुख किया है कि नीच शासक यदि वे अत्यापूवक शासन की सहाय करें तो उनको अनुचित करना चाहिए न कि उन्हें नष्ट करना चाहिए तथा यह सूचना देता है कि अनेक वार्ताओं में सम्राट ने उससे यह स्पष्ट कर लिया है वह अपने व्यापक अधिकारों की सीमा का उल्लेख नहीं करना चाहता वह पोप का समर्थन करने को प्रवृत्त है यदि वह इनको स्वाकार कर ल किन्तु वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति से किसी भी ऐसे व्यक्ति का प्रतिरोध करने को वृत्तनिश्चय है जो उसके बावों में हस्तक्षेप करता है तथा जो विश्वास है कि नीचे सत पीटर का सच्चा उत्तराधिकारी नहीं हो सकता यदि वह पोप-पद का नाम पर यह प्रयत्न करे कि वह न केवल पापियों ही का वरु साम्राज्य का भी शासक है।⁷¹ गेरहोल्ड ने जसा वह कहता है यह भाषा की थी कि यह अठिनाइयाँ या तो साम्राज्य परियुद्ध या व्यक्तिगत वार्ताओं से मुक्त हो सकती हैं तथा सम्राट को उससे सहायकारों ने इससे सहमत होने की राय भी दी थी किन्तु पोप के सहायकारों ने इन प्रस्तावों का विपरीत राय दी। अतः वह सुभाव देता है कि अन्ततः माग यही होगा कि चर्च तथा साम्राज्य का प्रमुख व्यक्तियों को सम्बाधित पत्र में अपने विरुद्ध लगाए गए आरोपों की पोप स्वयं परीक्षा करे।⁷²

गर्ह का अन्तिम ग्रन्थ डी क्वार्टा विजिलिया नॉक्चुम (De Quarta Vigilantia Noctis) उसकी मृत्यु के दो वर्ष पूर्व 1167 ई. में लिखा गया था। अपनी ऐलेक्जेंडर तृतीय का प्रति निष्ठा के कारण वह रोडरिक्सबर्ग से निष्कासित कर लिया गया था तथा यह ग्रन्थ एक ऐसे व्यक्ति के स्वभाव की रोचक एवं हृदयस्पर्शी अभिव्यक्ति है जो सम्राट द्वारा चर्च का मामला में हस्तक्षेप के अन्वय एवं अनौचित्य का बारे में अपने विश्वासों का प्रति हृदय और साध ही चर्च के दोषों का प्रति तथा पोप के समर्थकों की जो उच्च स्तरताक प्रवृत्तियाँ प्रतीत होती थी सच्चा और निष्कपट आलोचक था वह एक ऐसा व्यक्ति था जो रोम के आन्तपालन के लिए निष्ठावान था साध ही साम्राज्य का एक निष्ठावान नागरिक भी था। उसकी वृद्धावस्था में जसा वह कहता है उसने अपने आपको अपने आश्रय से निष्कासित एवं शत्रुओं का सम्मुख अनातृप्त पाया जो उनके विनाश का प्यासे थे तथा जिन्होंने उसके आश्रय को नष्ट कर दिया क्योंकि वह पोप के प्रति निष्ठावान था तथा नकली पोपों के विरुद्ध और पक्षकों को मात्रता नहीं देना था।⁷³ तथापि वह अपने निष्कपट एवं निष्पक्ष मत पर मुहूर्त रहा जो उसके सम्पूर्ण ग्रन्थ में अभिव्यक्ति में होता है तथा उसकी हृदय धारणा है कि चर्च का कष्ट तथा लौकिक सत्ता के आश्रय का चतुष्टय एवं अन्तिम प्रश्न के दुःखद लक्षण नहीं थे जितना कि चर्च में बढ़ता हुआ लालच।⁷⁴

वह वास्तव में इस गंभीर दोष के लिए चर्च को निन्दा सीधे एवं निस्संकोच ढंग से करता है। वह हत्या से पोप एवं कार्डिनलों की वैधानिक स्थिति का संरक्षण करता है किन्तु चर्च पर नूट खसोट एवं भ्रष्टाचार के आरोप लगाता है। चर्च के निष्पक्षों के व्यापक होने पर भी उनका भ्रूय मांगा जाता था तथा कभी वे अत्यापूवक भी होते थे तथा रिश्दत द्वारा प्राप्त किए जाते थे।⁷⁵ वह हम पर से प्रकट करता है कि वेगोरी

सप्तम और हेनरी चतुर्थ के बीच सघप छिड़ने के बाद से पोप विशाल धनराशि देकर रोमन जनता का समर्थन प्राप्त करने के लिए विवश हो गए थे तथा रोमनों के लालच को सतुष्ट करने के लिए उस धन को प्रत्येक स्थान से उगाहने को बाध्य हो गए थे।⁷⁶ वह अत्यन्त गभीरतापूर्वक कुछ कार्डिनलो की घुटता एवं लालच को भी निन्दा करता है।⁷⁷

पोप द्वारा धर्मविद्वेषकारियों के प्रति कथोनिक्को से युद्ध करने के आग्रह के औचित्य का प्रतिपादन करने में उसे कोई सकोच नहीं है⁷⁸ तथा वह बखण करता है कि किस प्रकार ईश्वरीय न्याय ने सम्राट तथा उसकी सेना पर प्रहार किया जबकि वे विरोधी पोप पस्कल सहित रोम आए तथा उनमें से बहुत से प्लेग के शिकार हो गए तथा मारे गए।⁷⁹ दूसरी ओर वह पोप को लौकिक सत्ता का दावा करने के विरुद्ध गम्भीर चेतावनी देता है क्योंकि उसे कोई अधिकार नहीं है। वह पोप से सावधान रहने का आग्रह करता है ताकि वह लौकिक सम्मान प्रदान करने के अधिकार का दावा न करे जैसे कि वे उसकी जागीर हो पड़पि वह स्वीकार करता है कि कान्स्टेन्टाइन के दान ने उसे रोम नगर के लौकिक मामलो के प्रशासन का अधिकार प्रदान किया है तथापि वह अनुरोध करता है कि सम्राटों ने रोम और ससार पर भी शासन किया है।⁸⁰

सम्राट द्वारा पोप को इस प्रकार के सम्मान के प्रतीक प्रदान करने की वह अत्यन्त कठोरता से आलोचना करता है जो कि स्वयं उसके लिए असम्मानजनक हों। वह स्वीकार करता है कि अपनी विनम्रता के कारण एक बार कान्स्टेन्टाइन ने पोप सिल्वेस्टर के सैनिक (Strator) के रूप में काय किया था तथापि सिल्वेस्टर ने उसे कभी भी अपना सेनापति (Marshal) नहीं कहा और न कभी चित्रों में बसा प्रदर्शित किया तथा तब से लेकर अबतक किसी भी सम्राट को उस रूप में प्रदर्शित नहीं किया गया है। दूसरी ओर रोमन पोपों तथा सम्राटों ने सब एक दूसरे का आदर एवं सहायता की है तथा वह हम पर आश्चर्य प्रकट करता है कि अब रोमन बसा चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास करें वह उनसे सन्त पीटर के शब्दों पर ध्यान देने का अनुरोध करता है जिसने कहा है ईश्वर से डरो राजा का सम्मान करो।⁸¹

गेरहोह स्पष्टतया उस लोकापवाद को नहीं भूला था जो हैड्रियन चतुर्थ के फंडरिक को निषेध गए पत्र के शर्तों एवं परिस्थितियाँ से उत्पन्न हुआ था।⁸² तथा वह यह स्पष्ट करने को कृतनिश्चय था कि वह तथा रोमन धर्मपीठ के जर्मनी में विद्यमान निष्ठावान नागरिक पोप द्वारा किसी ऐसी लौकिक सत्ता के दावे को स्वीकार करने को राजी नहीं हैं जो वस्तुतः उसके अधिकार में नहीं हो। दूसरी ओर वह सम्राट को भी चेतावनी देता है कि वह उस अधिकार का दावा न करे जो कि उसका नहीं है तथा विशयो को नियुक्त एवं पञ्च्युन करने के अधिकार का भी दावा न करे जो सम्पूर्णतया उसके क्षेत्र से परे है।⁸³

वह लौकिक एवं धार्मिक सत्ता के अधिकारों के तात्कालिक स्रोत के सिद्धान्तों को एक सक्षिप्त किन्तु सारगर्भित लेखाश में सहित करता है। वह कहता है कि जैसे ईश्वर ने आदम को पृथ्वी की धूम से बनाया था तथा ईश्वर ने फिर उसमें प्राण फँक लिए और इस प्रकार सभी जीवित प्राणियों से ऊपर उसे बनाया इसी प्रकार सम्राट या राजा भी जनता या सेना द्वारा बनता है तथा जब सामन्त या जनम सबश्रष्ट व्यक्ति उसके शासन को

मायता दे देने हैं तो वह पुरोहिता के आशीर्वादों से उसे जीवन की अन्तरारमा के रूप में प्राप्त करता है। इसी प्रकार पोप या बिशप भी पहलू पादरिया के निर्वाचन एवं अभियेक गरा (in spiritu promovendus) होता है तथा बाद में (tamquam formandus in corpore) प्रमुख योगों की सहमति से सम्राट या राजा द्वारा सम्मानित होता है तथा उसकी सहायता में (conniventia) राजविहियों को धारण करता है।¹

इस वाक्यसमूह में स्पष्ट है जो अस्पष्ट है किन्तु उनकी सामान्य प्रवृत्ति यह स्पष्ट कर देती है कि यद्यपि यह हो ही नौतिक आत्मक को आशीर्वाद देने में पोप या पादरी के भूले वपुण स्थान का तथा शिक्षण द्वारा राजविहियों के स्वामित्व के विषय में लौकिक सत्ता के महत्त्व को स्वीकार करता था तथापि वह इदनापूर्वक प्रतिपादित करता था कि न तो सम्राट न राजा ही बिशप या पोप को नियुक्त कर सकते थे न बिशप और पोप ही राजा या सम्राट को नियुक्त कर सकते थे किन्तु प्रत्येक दशा में उनके अधिकार के श्रोत वही थे जिन्हें उनको चुनने का अधिकार था।

यदि बचन प्रत्येक अपनी सत्ता में सतुष्ट रहे तथा जो दूसरे के अधिकार में है उस पर दावा छोड़ें तो राजा के चतुर्थ प्रश्न में भी सच्ची शांति ही सचती है तथा यह हो एक कविता की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत करता है जो कुछ व्यक्तियों के विचार में 1091 ई में लिखी गई थी।

querit apostolus regem depellere regno Rex frange contra papatum
tollere papae Si foret in medio qui item rumpere posset Sic ut rex
regnum papatum papa teneat Inter utrumque malum fieri discretio
magna

किन्तु वह भाव भरे शब्दों में कहता है कि इस संघर्ष को कौन समाप्त कर सकता है जबतक कि प्रभु ईसा स्वयं पीटर के ज्ञानपोत में आकर लोभ के तूफान को शांत न करें वह नोम जो कि चरम ईसा विरोधी है।²

वह इस प्रायना से समाप्त करता है कि ईसा उसके चर्च में आएँगे जो इस चौथे प्रहर में सबसे अधिक खतरों में हैं उन भूले पुरोहितों का दमन करेंगे जो उसके घर में ध्यापार और लूट-वसूल कर रहे हैं तथा उन राजाओं का दमन करेंगे जो धर्म के बढ़ाने अत्याचार को प्रोत्साहन दे रहे हैं—प्रभु ईसा आकर चर्च तथा सत्तार को बचाएँगे तथा राजसत्ता और धार्मिक सत्ता के बीच शांति स्थापित करेंगे।³

संदर्भ

1 इ भाग देख हमी अध्याय में।

2 अर्नाल्ड के सम्बन्ध में विशेष दृष्टव्य R Breyer Arnold von Bresen in Raumer Historisches Taschenbuch, Sachate Folge Ach

ter Jahrgang मुझे इसके अर्थ स्पष्ट करना पड़ता है।

3 Otto of Frisinger Gest. Fridrici 20

4 Hist. P. t. f. cal. 31

5 Gesta di F. d. co I (d. Monaci)

6	Gerhoh of Reichersberg De Inves- tigatione A tich ist 40	44	Id id 55
7	Monumenta Corbe e sia 404	45	Id id d
8	M G H L g Sect IV Co st v l 26	46	Id d 56
9	Gerhoh of Reichersberg—De edi- ficio Dei 12	47	Id i l d
10	Id D O d ne do orum S cti Sp- tus (p 283)	48	Id d d
11	Id De ed f c o D 13	49	Id d 57
12	Id d 17	50	Id d d
13	Id id 25	51	Id d d
14	Id id 22	52	Id id d
15	Id De O d e don rum Sa cti Sp tus (p 74)	53	Id d d
16	Id id (pp 276 277)	54	Id d 58
17	Id d (pp 278 279)	55	Id d d
18	Id id (p 279)	56	Id d d
19	Id id (p 280)	57	Id d 68
20	See p 347	8	Cf p 313
21	Id De Novit l bus h Tempo s 12	59	Id d 72
22	Id d 19	60	Id d d
23	Id De I vest gat e A t chri t 24	61	M G H Leg Sect IV C st ol i 223
24	Id id id	62	Ge h h Opusculum ad Card ales (p 401)
25	Id d 25	63	Id d (p 401)
26	Id id 27	64	Id d (p 401)
7	Id id id	65	Id d (pp 401 40 410)
28	Id id d	66	Id id (p 402)
29	Id id 35	67	Id d (p 405)
30	Id id 36	68	Id d (p 405)
31	Id d 36	69	Id d (p 402)
32	Id id 37	70	Id id (p 403)
33	Id id 38	71	Id id (p 408)
34	Id id 40	7	Id d (p 404)
35	Id Comm o ps Lx v (p 454)	73	Id D Qua ta V gil a Nocti 2
36	Id id (p 454)	74	Id id 10
37	Id id (p 462)	75	Id id 7
38	Id id (p 467)	76	Id id 8
39	Id d (p 462)	77	Id id 11
40	Id d p 465	78	Id d 12
41	Id id p 53	79	Id id 15
42	Id d id	80	Id d 17
43	Id d id	81	Id id 12
		82	Cf p 313
		83	Id d 17
		84	Id d 17
		85	Id d 17
		86	Id d 21

चतुर्थ अध्याय

उपसंहार

हमन इस ग्रन्थ में दसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से लेकर बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक लौकिक एवं धार्मिक सत्ताओं के सम्बन्धों के सिद्धान्तों का विकास प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमने इसोसोट वृत्तीय के पन्जरोहण से पूर्व ही इस ग्रन्थ को समाप्त कर दिया है क्योंकि हमारे विचार में उसके बायीं ओर सिद्धान्तों का विवेचन बारहवीं शताब्दी के सिद्धान्तों एवं परिस्थितियों के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध की दृष्टि से करना अष्ट होगा जिसका विवेचन हम आगली पुस्तक में करेंगे। हमन बायीं तथा सिद्धान्तों दोनों का ही विवेचन यथा सम्भव तटस्थ रूप से करने का प्रयास किया है ताकि जहाँ तक सम्भव हो वे अपने आप अपने को प्रकट कर सकें और जब यदि हम कुछ सामान्य निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न करें तो हमें आशा है कि इनको हमारे द्वारा पूर्व कथित तथ्यों से पूरातया पृथक् रखा जाएगा।

हम प्रारम्भ में यह कहना चाहते हैं कि यदि किसी विश्वसनीय निष्कर्ष को प्राप्त करना है तो हमें इन शताब्दियों के इतिहास का पश्चिम में कास्टेटाइन के घम परिवर्तन के युग से लेकर धार्मिक एवं लौकिक सत्ताओं के सम्बन्धों के सम्पूर्ण इतिहास के सन्दर्भ में अध्ययन करना होगा। ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दी के महान् संघर्षों को पृथक् करने के प्रयत्न से विभ्रम के अनिर्दिष्ट और कुछ उपज नही होगा और वास्तव में बन् विभ्रम उत्पन्न हो भी चुका है। यदि हम उत्तरकापीन संघर्ष को समझना चाहें तो विशेषतः दोनों सत्ताओं के नवीं शताब्दी के सम्बन्धों के जीवन स्वरूप का गायधाना से अध्ययन आवश्यक है।

वास्तविकता यह है कि मध्ययुग के परम्परागत राजनीतिक सिद्धान्त का सर्वाधिक विशिष्ट तत्त्व मानव समाज की रचना की विधिनाम सिद्धान्त है जो जो जीवन के धार्मिक एवं लौकिक पक्ष की द्वयता से पीटर के यहूती अधिकांशियों को सम्बोधित शब्दों में स्पष्टतया वर्णित है। अन्तर्गत के स्थान पर ईश्वर का आनापानन करना चाहिए (Acts v 29)। निस्सन्देह यह सम्भव है कि जब साम्राज्य ने ईसाई धर्म स्वीकार किया तो एक क्षण को सकीच हुआ हो किन्तु पश्चिम में यदि कोई सकीच था तो वह केवल क्षणिक था, तथा सामान्य सिद्धान्तों का बलन एवं चिन्ता विशेषतया सत सम्बन्धी

द्वारा चौथी शताब्दी में एव जिनेसियस प्रथम द्वारा पाँचवीं शताब्दी में किया गया अर्थात् इस सिद्धान्त का कि मानव समाज का शासन दो सत्ताओं द्वारा होता है, न कि एक के द्वारा जो क्रमशः लौकिक एव धार्मिक हैं वे सत्ताएँ दो अधिकारियों में निहित हैं धार्मिक एव लौकिक दोनों सत्ताओं में से प्रत्येक अपनी आपत्ति में दबी है तथा प्रत्येक अपने क्षेत्र में दूमरी से स्वतंत्र है। इस सिद्धान्त का स्पष्ट एव बलपूर्वक वर्णन पुनः नवीं शताब्दी में किया गया तथा ग्यारहवीं एव बारहवीं शताब्दी में भी यह मनुष्यों के अस्तित्व में वर्तमान था।

पश्चिमी जगत में तात्त्विक रूप से यह एक नया सिद्धान्त था इसमें सन्देह नहीं। हम अबतक यही बताने का प्रयास करेंगे कि हेनेनिक एव रोमन दोनों सम्प्रदायों के देशों में तथा ईसा के तुरन्त पूर्व की शताब्दियों में ग्रीकों के देशों में विचारों एव भावों के अन्तर्गतों का उसने अधिक स्पष्ट एव गहन विवेचन होना चाहिए जितना अभी तक किया गया है। नयी धारणा के महत्त्व की व्याख्या की जायद ही कोई आवश्यकता हो अर्थात् इस धारणा के महत्त्व की कि धार्मिक क्षेत्र का जीवन लौकिक सत्ता के अधीन नहीं है किन्तु उसमें स्वतंत्र है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व के महत्त्व के नवीन विकास का एक पक्ष है और सर्वाधिक अनुपेक्षणीय नहीं यह स्वतंत्रता की एक नई धारणा है।

यदि यह सफलता महत्त्वपूर्ण एव उसके परिणाम दूरगामी थे तो मानव समाज के आवाहारिक संगठन में उसके प्रयोग का प्रयास अत्यन्त कठिन था और आज भी वही है। यह देखना था यह सोचना कि हम लौकिक तथा आध्यात्मिक के मध्य अन्तर देख रहे हैं सरल है जब हम उनके विषय में सामान्य रूप से या जीवन की वास्तविक यथावस्थाओं से पृथक् का विचार करते हैं किन्तु जब हम इस विभेद का इन पर प्रयोग करने का प्रयास करते हैं तो यह बहुत भिन्न हो जाता है। हमने प्रथम पुस्तक में नवीं शताब्दी का परिस्थितियों से उसके कुछ पक्षों के उदाहरण देने का प्रयास किया है तथा दसवीं और ग्यारहवीं में बिशपों तथा मठाधीशों के पक्षों के सामन्ताकरण तथा उनके बढ़ते हुए राजनीतिक महत्त्व से व्यावहारिक कठिनाइयाँ बहुत बन गयी थीं परन्तु इनके अतिरिक्त दोनों शक्तियों के आपेक्षिक सत्ता के प्रश्न में भी पर्याप्त कठिनाइयाँ उत्पन्न कर दी थीं तथा मध्ययुग में उनका कोई अंतिम हल नहीं निकला और न इस मामले में हमें अभी तक ही सफलता मिली है।

वह विषय जिस पर हम इस ग्रन्थ में विचार कर रहे हैं वह प्रश्न है कि ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दियों में द्वय सत्ता की रूपना को कर्ण तक मत्ता की एकता का सिद्धान्त द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया था जिसमें एक सत्ता का दूमरी पर प्रभुत्व था। यदि हम किसी निष्कर्ष पर पहुँचना चाहें तो हमें प्रश्न के तीन पक्षों में स्पष्ट विचार करना होगा प्रथम वास्तव में एक सत्ता कहाँ तक दूमरी के कार्यों में हस्तक्षेप करती थी अथवा दूमरी पर सत्ता का प्रयोग करती थी अर्थात् कहाँ तक इसका कोई सिद्धान्त या तत्त्व विकसित हुआ और तृतीय कहाँ तक सभाविन धर्मनामों या मनुष्यों द्वारा निर्मित सिद्धान्तों का वास्तविक महत्त्व मध्यकालीन राजनीतिक जीवन एव विचारों का यथावत् स्वरूप पर पड़ा।

हमारे मत में प्रथम प्रश्न आधुनिक महत्त्व का है क्योंकि यह स्पष्ट प्रमाण होना है कि

जिस समय का हम विचार कर रहे हैं उसमें चाहे जिन सद्धान्तिक नियमों पर बल दिया जाता हो वे अधिकांशतः वैचारिक रूपना के परिणाम या प्रसिद्ध विचारों की अभिव्यक्ति नहीं थे किन्तु वे किन्हीं व्यावहारिक कठिनायों तथा व्यावहारिकताओं के कारण उभरे थे। उनमें प्रथम वस्तु जिसका ध्यान रखना चाहिए यह है कि हमारे द्वारा वर्णित सभी सिद्धान्तों एवं कार्यों की पृष्ठभूमि में दसवीं शताब्दी में उत्पन्न हुए धार्मिक सुधार का महात्वात्मानोत्पन्न चर्च एवं पोप पद की उच्च परिस्थितियों का विस्तृत विवेक था जिसकी एक अभिव्यक्ति काननिक सुधार थे तथा काननिक युद्ध समय के लिए जिसका कारण था। यह स्पष्ट है कि आगे प्रथम से लेकर हेनरी तृतीय पप-पत्र एवं चर्च सम्बन्धी सगठनों पर सम्राट व्यापक अधिकार रखते थे उसका पहला कारण तो यह था कि चर्च की सम्पूर्ण व्यवस्था धर्म एवं प्रसंगिक थी और दूसरा कारण महात्वात्मानिक पत्र अधिकारियों का राजनीतिक महत्त्व था। निम्नलिखित आगे प्रथम के पोप-पत्र सम्बन्धी कार्यों के निर्धारण में राजनीतिक महत्वाकांक्षा एवं धार्मिक सिद्धान्तों के प्रभाव में स्पष्ट भेद कर सकना असम्भव कठिन है किन्तु यह कहना सत्य होगा कि उसके द्वारा तथा उसके तात्कालिक उत्तराधिकारियों द्वारा प्रयुक्त अधिकारों का शौचिक उनसे परिणामों से स्पष्ट होता है। और यह हेनरी तृतीय के कार्यों के बारे में अधिक स्पष्टतया सत्य है।

यह स्पष्ट है कि जहाँ तक साम्राज्यिक कार्य सुधारवादी भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता था अथवा उनसे मेल खाता था तबतक अधिकांश प्रसिद्ध एवं उल्लेखनीय चर्च के सदस्यों ने उसका कर्तव्य विरोध नहीं किया। हमारे मत में यह पीटर डेमियन तथा कार्डिनल हम्ब्रज जैसे व्यक्तियों के दृष्टिकोण से स्पष्ट प्रतीत होता है। यद्यपि उस समय भी कुछ ऐसे व्यक्ति थे जो साम्राज्यिक कार्यों के शौचिक को अस्वीकार करते थे अथवा उनमें सन्देह करते थे जिनमें मसबग का वोटमार नीज का वजो तथा डी आरडीनेन्ने पोन्टीफिस (De Ordinando Pontifice) नामक निबंध (tract) का रचयिता जैसे मनुष्य थे—किन्तु वे अपवाद प्रतीत होते हैं। अतः तथा ग्यारहवीं शताब्दी में लौकिक सत्ता के कार्यों का शौचिक सिद्धान्त पर उल्लेख आधारीत नहीं है जितना कि शैक्षणिक दशाब्द पर है तथा यह ध्यान देने योग्य है कि प्रारम्भिक दारवरोसा का एनेन्नेन्ने तृतीय के विवादास्पद निर्वाचन के बारे में काय उसी प्रकार के कारणों से अधिकांशतः रूप से उचित सिद्ध हुआ है—अर्थात् उस मापदण्ड के आधार पर कि यदि चर्च प्रशासन की व्यवस्था को उसके स्वयं के अधिकारियों से कर्तव्य खतरा हो तो लौकिक सत्ता का कर्तव्य है कि वह अपनी सत्ता से शक्तिपूर्ण व्यक्तियों के निर्धारण के लिए उचित चर्च सम्बन्धी व्यवस्था को शक्ति देने के लिए हस्तक्षेप करे।

बिशाप एवं भटाधीशों की नियुक्ति में राजाशा एवं सम्राटों द्वारा जिस अधिकार का दावा किया जाता था उसका भी आंशिक रूप से शौचिक समाप्त परिस्थितियों के कारण हो सकता था परन्तु वास्तव में दसवीं शताब्दी में विकसित सामन्ती व्यवस्था की दशाब्दों के अन्तर्गत बड़े पान्तियों की राजनीतिक स्थिति का परिणाम था तथा जवाबदाय को सिद्ध हुआ उसे पूरातया दूर कर देना असम्भव था। हेनरी तृतीय का मृत्यु तक सुधारवादी दल निर्वाचकों के अधिकारों पर बल देते हुए भी सामान्य रूप में नियुक्ति के विषय में समाज

के राजनीतिक प्रध्यक्ष के महत्त्वपूर्ण स्थान के औचित्य को अस्वीकार नहीं करता था ।

इसलिए यदि यह सत्य है कि लौकिक सत्ता द्वारा धार्मिक मामलों में अधिकारों के प्रयोग का अर्थ तब सम्मत औचित्य इन शर्तियों की वास्तविक परिस्थितियों के कारण था तो यह भी सत्य है कि उनके विरुद्ध विरोह नई परिस्थितियों के कारण ही उठा तथा नई परिस्थितियों के कारण ही उसका औचित्य था तथा ये नई परिस्थितियाँ सब मिलाकर स्पष्ट हैं । हेनरी तृतीय की मृत्यु के साथ साम्राज्य ने सुधार के आन्दोलनों का प्रतिनिधित्व करना समाप्त कर दिया और वास्तव में शीघ्र ही वह भ्रष्टाचार का वैश्व प्रतीक होने लगा तथा इसी कारण अयाजक प्रतिष्ठापन अर्थात् लौकिक सत्ता द्वारा नियुक्ति का विरोध होने लगा । स प्रकार सुधारवादी दल के लिए यह सघष चर्च की स्वाधीनता का सघष बन गया । निस्संदेह यह सत्य है कि उसमें अन्य कारण तथा महत्त्वाकांक्षाएँ भी सम्मिलित हो गयी थीं किन्तु यह मुभाव हम विवेकहीन प्रतीत होता है कि स्वतंत्रता की माँग अवास्तविक थी सुधारवादी चर्च के नेताओं के लिए स्वतंत्रता सुधार की आवश्यक शर्त हो गयी थी । हल नूट निकालने के पहले गभीर प्रयत्न अर्थात् पस्कर द्वारा राजचिह्न के समर्थन के जिसका तात्पर्य बड़े पा रियों की राजनीतिक स्थिति एवं अधिकारों के समर्थन से था क्रान्तिकारी प्रस्ताव को इसी कारण वास्तविक महत्त्व प्राप्त है । जब चर्च के नेताओं को इस क्रान्तिकारी प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए सहमत करना असम्भव सिद्ध हो गया तो यह स्पष्ट हो गया कि एक मात्र सभव हल समझौता था तथा 1122 ई में वास्त के समझौते का यथाय स्वरूप यही था ।

यदि हम अब इस प्रश्न के दूसरे पक्ष को देखें और यह पता लगाए कि किन प्रकार एवं किस सीमा तक धार्मिक सत्ता लौकिक सत्ता पर अधिकारों का दावा तथा उनका प्रयोग करने लगी तो यह प्रतीत होगा कि हम पुन अस्तुनिष्ठ तथ्यों एवं उनके परिणामों का विवेचन कर रहे हैं । साम्राज्यिक सत्ता में सुधारवादी भावना के अभाव का परिणाम स्वाधीनता की माँग हुआ तथा ग्रेगोरी सप्टम के मत में साम्राज्य में तथा फ्रान्स में भी लौकिक सत्ता न केवल सुधारों की विरोधी अपितु भ्रष्टाचार का वास्तविक कारण थी विशेषतः धर्म विक्रय को जिसके कारण केवल अपराधी धार्मिक अधिकारियों पर ही आक्रमण करने के स्थान पर वह लौकिक अधिकारियों पर भी आक्रमण करने को प्रेरित हुआ । निस्संदेह यह एक नई नीति थी क्योंकि सम्पूर्ण इतिहास की भाँति व्यक्तिगत व्यक्तित्व की मौलिक अथवा निर्माणकारी शक्ति ने यहाँ भी महत्त्वपूर्ण या निर्धारक योगदान दिया किन्तु यह नीति स्वयं में स्पष्ट तथा वास्तविक परिस्थितियों से सगत थी । निस्संदेह यह यदि एक पूरतया नवीन वस्तु नहीं तो कम से कम उस युग का एक क्रान्तिकारी काम तो था ही कि राजा या सम्राट को धर्म-बहिष्कृत कर दिया जाए किन्तु यह वाय धार्मिक सत्ता के भूतभूत सिद्धांत एवं उस युग की वास्तविक परिस्थितियाँ दोनों का प्रतिनिधित्व करता था । यह काय विवेकहीन था किन्तु उसमें निहित परिणाम उससे अधिक दूरगामी था क्योंकि ग्रेगोरी के मत में धर्म बहिष्कृत करने के अधिकार में पदच्युत करने का अधिकार भी निहित था ।

यह विचार करने का कोई कारण नहीं कि ईसाई चर्च के मध्य बने रहने का अधिकार

छोने जाने पर राजा को पान्युन करने के अधिकार का दावा करते समय ग्रेगोरी लौकिक मामलों में लौकिक सत्ता पर किसी सद्धान्तिक अधिकार का दावा करता चाहता था किन्तु वास्तव में ग्रेगोरी के बाप में और उस बाप के द्वारा धार्मिक सत्ता लौकिक सत्ता पर व्यापक एवं असीमित अधिकार का दावा कर रही थी तथा यद्यपि ग्रेगोरी के समय में लॉसेप्ट तृतीय तक के पोपों ने किसी सीमा तक हेनरी चतुर्थ को मृत्यु के बाप भी इस पर बल देने का कोई गंभीर प्रयास नहीं किया तथापि यह सत्य है कि इस अधिकार का दावा किया था तथा इस दावे का परित्याग नहीं किया गया।

हम ऐसी स्थिति में पहुँच चुके हैं कि जहाँ हम दूसरे प्रश्न पर स्पष्टतया सौचना चाहिए वह प्रश्न यह है कि इस काल में कहीं तक एक सत्ता का दूसरी पर प्रभुत्व का सिद्धान्त विकसित हुआ। यदि हमें भ्रम में पड़ने से बचना है तो हमें यहीं पहले से ही कुछ भ्रम करने की आवश्यकता रखनी होगी। इसकी प्रतिपादित किया जा सकता है कि एक सत्ता अपने महत्व एवं मूल शौरव के दूसरी से धाँध भी या इसका अभिप्राय यह हो सकता है कि एक सत्ता का स्वरूप दूसरी से इतना उच्छिष्ट था कि यदि उन दोनों के बीच कोई विवाद उठता तो उच्छिष्टतर सत्ता का मन माना जाता अथवा उसका अभिप्राय यह हो सकता है कि दोनों सत्ताओं में से एक दूसरी के अधिकारों का खोन थी तथा उसके अपने क्षेत्र में भी उस पर सद्धान्तिक रूप से सत्ता धारण करती रही थी।

उन मायताओं में से प्रथम सामान्यतः स्वीकृत थी। मध्यकालीन विचारक सामान्यतः यह मानते थे कि वे मामले जिनमें धार्मिक सत्ता का सम्बन्ध था लौकिक सत्ता के अधिकार के मामले से अधिक महत्वपूर्ण थे तथा धार्मिक पद का शौरव लौकिक पद से कहीं अधिक था। यह मत पुरो के ह्य का है तथा नेटीनो के ग्रेगोरी जैसे कुछ लेखकों तथा डॉर्क ट्रवेट के लेखक द्वारा प्रयुक्त वाक्यों के बावजूद इसका खण्डन अत्यन्त बठिन है।

दूसरी मायता एक और अधिक बठिन प्रश्न को उठाती है क्योंकि मध्ययुग की सामान्य मायता यह थी कि प्रत्येक सत्ता का अपना भिन्न क्षेत्र है और सिद्धान्त इस पर सदेह का प्रश्न नहीं उठता। किन्तु वास्तव में यह सत्य है कि सभी लौकिक एवं धार्मिक सत्ता ईश्वरीय नियमों तथा प्रकृति के नियमों के अधीन समझी जाती थी तथा धार्मिक या लौकिक सभी कानून जो उनके विच्छेद से अवैधानिक समझे जाते थे। किन्तु ईश्वर एवं प्रकृति के कानूनों को चर्च के कानूनों या धार्मिक कानूनों से अभिन्न नहीं समझना चाहिए हमने इस मामले पर उन ग्रंथों की दूसरी पुस्तक में विस्तार से विचार किया है तथा वहाँ हमने यह प्रमाणित किया है कि इसका बहुत कम प्रमाण है कि यह माना जाना था कि इन कानूनों के अर्थ की दशा में धार्मिक सत्ता का विराय अंतिम था।

निस्सदेह यह सत्य है कि हमारे लिए मध्ययुगीन मन स्थिति की व्याख्या करना अत्यन्त बठिन है हम अब भी बड़ी सीमा तक राज सत्ता की उस सर्वपना से प्रभावित हैं जो चर्च या राजा में किसी निरकुश एवं किसी सीमा तक स्वेच्छाकारी सत्ता का प्रतिनिधित्व करती है परन्तु जो मध्ययुग में पूर्णतया अज्ञात थी। एवमात्र राजसत्ता जिसे वे स्वीकार करते थे कानून की थी तथा वह भी ईश्वर एवं प्रकृति के अधीन थी। उनकी दृष्टि में दोनों कानूनी व्यवस्थाओं के मध्य के संपर्क का प्रश्न उठने कहीं भिन्न था जसा कि आज हमारे

लिए है। यथाय रूप में उनमें सत्य तभी सम्भव था जबकि एक सत्ता दूसरी के क्षेत्र में हस्तक्षेप करता।

तो हम तीसरी मायना के बारे में क्या कहना है? वास्तव में हमारे द्वारा परीक्षित साहित्य से यह स्पष्ट है कि यदि धार्मिक सत्ता के लौकिक सत्ता पर उसके क्षेत्र में प्रभुत्व के बारे में कोई सिद्धान्त ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दी में था तो वह बसल ग्रेगोरी सप्तम के कुछ पत्रों में या ग्रागसबर्ग के होनोरियस या सलिसबरी के जान में और सम्भवतः कनोनिस्ट रूफीनस में ही उपलब्ध होता है क्योंकि हमारे द्वारा परीक्षित किसी भी ग्रन्थ लेखक में वह स्पष्टतया उपलब्ध नहीं होता। अतः सबसे प्रथम प्रश्न करना चाहिए कि क्या इस प्रकार का सिद्धान्त ग्रेगोरी सप्तम की रचनाओं में अन्तर्निहित है? सामान्य रूप से हम सोचते हैं कि ऐसा नहीं है।

यह दावे वस्तुतः व्यावहारिक रूप में श्रान्तिकारी थे किन्तु यदि हम उन्हें समझना चाहें तो हम प्रश्न करना चाहिए कि सिद्धान्तिक रूप में ये क्या थे तथा हम सोचते हैं कि सिद्धान्त पर्याप्त रूप में स्पष्ट हैं। ग्रेगोरी ने सम्राटों तथा राजाओं पर उसी धार्मिक अधिकार क्षेत्र का दावा किया जसा किसी भी अन्य लौकिक व्यक्ति पर क्योंकि उचित कारण होने पर उसे उनको धम-बहिष्कृत करने अर्थात् निष्ठावाना के समाज से पृथक् करने का अधिकार था। उसने इससे यह निष्कर्ष निकाला कि उचित धार्मिक कारण होने पर तथा एक मात्र इसी कारण से उसे उनको धम-बहिष्कृत करने के साथ-साथ पञ्च्युत घोषित करने का भी अधिकार है तथा उनके प्रति ली गई निष्ठा को धर्मनिरपेक्ष घोषित करने का भी अधिकार है। यह सत्य है कि वह वास्तव में कहीं भी इसके समर्थन में प्रमाणों का विवेचन नहीं करता तथा कुछ सदिग्ध दृष्टान्तों को उद्धृत करने में अधिक कुछ नहीं करता किन्तु यह विचार करना तत्पुक्त होगा कि उसके मत में ईसाई समाज में धम-बहिष्कृत शासक का स्थान होना सम्भव था।

यह बसा ही सिद्धान्त नहीं है जसा कि यह दावा कि भाष्यात्मिक सत्ता को जिसका प्रतिनिधित्व पोप द्वारा किया जाता है—लौकिक मामलों में सर्वोच्च अधिकार प्राप्त है। वास्तव में हम यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि 1076 ई. से 1080 ई. तक उसका आचरण इसका स्पष्ट प्रमाण है कि वह इस प्रकार का दावा नहीं करता था तथा उसका कोई ऐसा सिद्धान्त नहीं था। उसके लिए हेनरी तथा रूनेफ की स्थिति बेनोसा में हेनरी के दोषमुक्त कर दिए जाने के बाद से जमन जनता द्वारा निश्चित किया जाने वाला मामला था। यदि यह प्रस्ताव कि यह प्रस्ताव उसका प्रतिनिधि उस स्थिति में था तो उसका कारण यह था कि उसे बसा करने का निमन्त्रण था। हमारा यह कहने का अभिप्राय नहीं है कि ग्रेगोरी सप्तम का उन परिस्थितियों के बारे में बसा ही स्पष्ट दृष्टिकोण था जसा कि हमने इन स्थानों में व्यक्त किया है किन्तु हमारा विचार है कि उसके आचरण में कुछ इस प्रकार की बात निहित है। ग्रेगोरी के कार्यों और शब्दों में निस्संदेह एक सिद्धान्त निहित है किन्तु वह सिद्धान्त यह है कि धार्मिक सत्ता धार्मिक मामलों में उन लोगों पर भी जो लौकिक सत्ताधारी थे उतनी ही पूरा था जैसे कि अन्य सभी मनुष्यों पर तथा धम-बहिष्कार उनको सत्ताधारण के अयोग्य बना देता था यह वह सिद्धान्त नहीं था कि लौकिक

सत्ता धार्मिक स उद्भूत है अथवा लौकिक मामला में भी उसके अधीन है।

प्रासदा के होनोरियस तक हम एक किसी विचार को नहीं पाते। यहाँ हम इस प्रकार को कुछ मान्यता उल्लेख होती है। अन्त में हम वहाँ सिद्धांत उल्लेख होता प्रतीत होता है जो धर्मनिरपेक्ष रूप से वितर्कित सिद्धांत में रूप से अलग है। क्योंकि वह इस पर बल देना प्रतीत होता है कि धार्मिक सत्ता ही सत्ता की एक मात्र एवं सच्चा प्रतिनिधि है तथा लौकिक सत्ता उससे उच्च है। यह सत्य है कि यह मान्यता उसका गारा कान्स्टेन्टाइन के दान के प्रसंग के कारण किसी सीमा तक अभ्युत्थान प्रतीत होती है। होनोरियस तथा नोनांटुआ का प्लेसीडस पहले जसक हैं जिनके बारे में हम आश्चर्य हाकर बच सकते हैं कि वे दान का अर्थ यह समझते थे कि कान्स्टेन्टाइन ने पोंट को पश्चिम में सारी साम्राज्यिक सत्ता सौंप दी बाकि म इसी शक्तों में कनोनिस्ट पंचपातिया (Pancapalea) ने एसी ही व्याख्या प्रस्तुत की है तथा होनोरियस स्वका अभिप्राय यहाँ तक समझता है कि कान्स्टेन्टाइन ने साम्राज्य के सभी भागों पर ही अपना सम्पूर्ण अधिकार स्थापित किया। तथापि यह धारणा होनोरियस की अधिक कल्पित धारणा से अलग नहीं थी कि मूल रूप में सभी राजनीतिक एवं धार्मिक सत्ता के बीच तथा लौकिक शक्त की शक्ति भी उससे ही उद्भूत है।

जान ग्राफ सलिसबरी भी इसी मत का प्रतिपादन प्रतीत होता है क्योंकि वह यह प्रतिपादित करता है कि दोनों तलवारों पर धार्मिक सत्ता का स्वामित्व है तथा उससे ही राजा अपनी तलवार प्राप्त करता है राजा धार्मिक सत्ता का सभी अर्थों में सेवक है तथा धार्मिक पक्ष उस भाग का प्रमातृ होता है जो पुरोहित द्वारा करत व मान्य नहीं है। तथापि जॉन का यह विचार उस अर्थ में अशुद्ध है तथा वह किसी सीमा तक ही विचार है कि उसमें निहित सभी शक्तों पर बल देना उस अर्थोपेक्ष था।

बनाउ - इस प्रकार के धारणाओं जो जान ग्राफ सलिसबरी के मन में बगान हो सकते हैं इतने प्राकृतिक एवं आनुवंशिक है कि हम उनकी इस प्रकार व्याख्या नहीं कर सकते कि उसका यह मत था तथा सन बिक्टर व हू के वाक्य इतने स्पष्ट हैं कि हृदय काई निर्णय नहीं ले सकते। जहाँ तक हम जानते हैं कि दारहवी शताब्दी में अर्थ एवं सेवक है जिसका दो सत्ताओं का विवरण इस शिष्टा में प्रवृत्त प्रतीत होता है तथा वह है रोमन के डेक्लर (D. return) पर लिखने वाला कनोनिस्ट रक्षीनस। हम इस धारणा का शिष्टा में विस्तार से विवरण कर चुके हैं तथा पुनः हम अर्थ में यह कह सकते हैं कि वह रोमन के डेक्लर के इस वाक्यांश की व्याख्या करता प्रतीत होता है *clavigero (i. e. petro) tarreni simul et ceteris imperiure commissa* जिसका अर्थ यह बताया है कि किसी सीमा तक पार की धार्मिक एवं लौकिक दोनों विषयों में ही अधिकार हैं उसके साथ ही भी सुझाव प्रतीत होते हैं कि वह स्वका अर्थ इससे अधिक कुछ नहीं समझता कि सम्राट के नियंत्रण की पुष्टि करना तथा यह धर्मनी सत्ता का वे अर्थों में करें ता उन्हे और अन्य लौकिक शासकों को दोष देकर सत्ता पोंट के अधिकार में था।

होनोरियस सलिसबरी के जॉन तथा रूडीमर की धारणाएँ अर्थोपेक्ष हैं, क्योंकि

व एक नए सिद्धांत के प्रथम दशन को सूचन करती हैं एक सिद्धान्त जो कि चर्च के परम्परागत मत के विपरीत चर्च में सत्ता की एकता की धारणा को स्थापित कर देता। धर्मनी पुस्तक में हमें तेरहवीं शताब्दी में इस धारणा के इतिहास एवं महत्त्व का विवेचन करना होगा। परन्तु कोई प्रमाण नहीं है कि दसवीं तथा ग्यारहवीं शताब्दी के किसी लेखक ने इस धारणा को प्रस्तुत किया था। बारहवीं शताब्दी में यह होनोरियस तथा सभवतः सनिस्वरी के जान एवं रूफीनस में उपलब्ध होती है किन्तु यह ध्यान रखने की बात है यह केवल उनमें ही मिलती है।

सभवतः यह सुझाया जा सकता है कि हम इसके साथ हैरियन चतुर्थ के फ्रेडरिक बारबरोसा को सम्बोधित पत्र की विचित्र घटना को जोड़ना चाहिए जिसमें उसका यह अभिप्राय निहित होने की शक्यता की गई थी कि साम्राज्य पोप के अधीन एक जागीर है तथा सम्राट पोप के अधीन सामन्त है। यदि हम यह सोचें कि हैरियन चतुर्थ इस पर बल देना चाहता था तो निस्संदेह हमका यह व पोप पक्ष की नीति के विषय में होगा किन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि हैरियन ने ऐसे दावे को स्पष्ट रूप में अस्वीकार कर दिया था अथवा इन शब्दों से इस प्रकार का अर्थ निकालने का स्पष्ट खण्डन किया था। किसी भी अर्थ में सामन्ती प्रभुता का दावा धार्मिक सत्ता के लौकिक सत्ता की तुलना में मौलिक अर्थों के दावे से पूर्णतया भिन्न वस्तु होता है।

इस प्रकार लौकिक सत्ता के अधिकारों के धार्मिक सत्ता से उद्भूत एवं उनके अधीन होने का सिद्धांत जहाँ तक उसका बारहवीं शताब्दी में अस्तित्व था केवल मात्र एक अत्यन्त सम्मति थी जिसे एक अथवा सभवतः तीन महत्त्वपूर्ण लेखकों ने अर्पित किया था उसको चर्च में कोई अधिकृत रूप से स्वीकृत या सामान्य रूप से या व्यापक रूप से माने जाते हुए प्रदर्शित नहीं करता चाहिए। उसे किसी भी परिपक्व या किसी भी पोप की सहमति नहीं मिलती।

हमें अतः प्रश्न करना चाहिए कि जिन सिद्धान्तों का हम विवेचन कर रहे हैं ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दी के वास्तविक सावजनिक जीवन में उनका यथाथ रूप से कितना महत्त्वपूर्ण स्थान था। इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न करते समय हम धर्मनिरपेक्ष क कार्यों एवं सिद्धान्तों तथा बारहवीं शताब्दी के उन लेखकों के सिद्धान्तों में जिनका हम अभी विवेचन कर रहे थे सूक्ष्म विभेद रखना चाहिए।

धर्मनिरपेक्ष क कार्यों में एक तूफान का जन्म देने में योग दिया जो कि कम से कम हनरी चतुर्थ की मृत्यु तक चरना रहा तथा पोपों द्वारा इस सिद्धांत को कई शताब्दियों तक प्रतिपादित किया जाता रहा कि धार्मिक अन्तर्गत क कारण लौकिक शासन को न केवल अस्वीकार करने अपितु परन्तु उन करने का भी अधिकार पोपों को है। तथापि हमका यो अभिप्राय नहीं है कि परन्तु करने का भी अधिकार स्वीकार कर लिया गया था सभवतः परन्तु करने का अधिकार जो गभीरतापूर्वक चुनौती नहीं दी गई थी किन्तु परन्तु करने का अधिकार एक भिन्न वस्तु थी तथा कई व्यक्ति जैसे हेनरी चतुर्थ के कासस में भी अस्वीकार करने थे। अर्थ यह है कि किसी राजा या सम्राट के विरुद्ध अथवा कारणों में जब कभी अन्तर्गत का विरोध होता था उस दशा को छाड़कर उसका सामान्यतः कोई

महत्त्व नहीं था। हम इस मामले का प्रगल्भ पुस्तक में जब हम तेरहवीं शताब्दी का वर्णन करेंगे अधिक पूर्णता से विवेचन करेंगे। जहाँ तक बारहवीं शताब्दी का प्रश्न है इस मामले का बहुत छोटा महत्त्व था।

होनोरियस सलिस्वरी के जान तथा रयूफीनस के सिद्धान्त जहाँ तक बारहवीं शताब्दी का प्रश्न है वेबन कुछ व्यक्तियों के सिद्धान्त से जीवन की वास्तविक दशाओं एवं तथ्यों से उनका कोई सम्बन्ध नहीं था उनका द्वारा स्वयं उनसे कोई व्यावहारिक निष्कर्ष नहीं निकाले गए तथा यह सोचने का भी कोई आधार नहीं है कि उस युग के विचारों में भी उनका कोई महत्त्वपूर्ण स्थान था। वास्तव में ठीक उसी समय इंग्लैंड तथा फ्रांस के महान् प्रशासकों के हाथों में राज्य की सत्ता एवं अधिकार सुगठित एवं विस्तृत हो रहे थे तथा यह विचार करना तर्कहीन है कि महान् राजा एवं मंत्री यह स्वीकार करते थे कि उनको प्राप्त अधिकार पोंप द्वारा प्राप्त हैं। सत्य यह है कि दोनों सत्ताओं के अधिकारों की ठीक सीमा रेखा में स्पष्ट विभेद कर पाना अत्यन्त कठिन था किन्तु यह विभेद सामान्यतया किया जाता था तथा दली व्यवस्था का एक घन समझा जाता था।

हमारे द्वारा वर्णित युग में दोनों सत्ताओं के सम्बन्धों के सामान्यतः स्वीकृत सिद्धाता की सब दृष्टि अधिव्यक्ति टूरनाई के कैनोनिस्ट स्टीफेन (Canonist Stephen of Tournai) के शब्दों में मिलती है जो कि बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लिखे गए थे। एक राष्ट्र मंडल एवं एक राजा के अधीन दो जनताएँ दो जीवनचर्याएँ, दो सत्ताएँ तथा द्विविध काय क्षेत्र हैं। वह राष्ट्रमंडल चर्च है दो जनताएँ चर्च की दो व्यवस्थाएँ हैं अध्यात्मी पादरी एवं अध्याजक वगैरे दो जीवनचर्याएँ धार्मिक धार्मिक एवं लौकिक हैं। सत्ता पुरोहित वगैरे तथा राजा हैं द्विविध कायक्षेत्र दली एवं मानवीय कायक्षेत्र हैं। प्रत्येक को उसका देय दो तथा सभी कानुनों में सामाजिक हो जाएगा।⁴

संदर्भ

1 कृ. देख लच्छ 2।

2 Cf. 1।

3 Cf. ol।

4 St. ph. n. f. To. rn. S. mm. De. re. t. Int. od. ct.

Texts of Authors Referred to in Volume IV

- Abbe of Fleury *Collectio Canonum* — Migne *Patrologia Latina* vol 139
- Adalbero *Carmen* — Migne *Patrologia Latina* vol 41
- St Adalbert *Vita* — Migne *Patrologia Latina* vol 137
- Alexander II *Epistles* — Migne *Patrologia Latina* vol 146
- Annales Hildeshemenses* — *Monumenta Germaniae Historica Scriptores* vol 3
- Annales Paderbornenses* — *Monumenta Germaniae Historica Scriptores* vol 3
- Annales Romani* — *Monumenta Germaniae Historica Scriptores* vol 5
- Anonimus Haserensis* — *Monumenta Germaniae Historica Scriptores* vol 7
- Anselm *Continuator Siberti Gemblacensis* *Monumenta Germaniae Historica* vol 7
- Anselm *Historia Dedicationis Ecclesiae S. Remigii* — Migne *Patrologia Latina* vol 12
- Anselm of Lucca *Liber contra Wibertum* — *Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite* vol 1
- Arnulf *Gesta Archiepiscoporum Mediolanensium* — *Monumenta Germaniae Historica, Scriptores*, vol 8
- Atto of Vercelli *De Pressuris Ecclesiasticis* — Migne *Patrologia Latina* vol 137
- St Bernard *Vita* — Migne *Patrologia Latina* vol 185
De Consideratione — Migne *Patrologia Latina* vol 182
Epistles — Migne *Patrologia Latina* vol 182
- Bernard of Constance *Epistola in Bernald Libellus II* — *Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite* vol 2
- Bernard of Constance *Liber Canonum contra Henricum Quartum* *Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite* vol 1
- Bernald *Libelli* — *Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite* vol 2
- Berthold, *Annales* — *Monumenta Germaniae Historica Scriptores* vol 5
- Bontzo *Liber ad Amicum* *Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite* vol 1

- Bruno De Bello Saxoni — Monumenta Germaniae Historica Scriptores vol 5
- Bruno of Segni Epistola Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 2
- Calixtus II Epistulae — Migne Patrologia Latina vol 163
- Casuum Sancti Galli continuator — Monumenta Germaniae Historica Scriptores vol 2
- Clement II Epistles — Migne Patrologia Latina vol 14
- Codex Udaldi in Monumenta Barbarogensia ed P Jaff
- Concordia Benignorum in J M Wierh Pontificorum Romanorum Vitae vol 2
- Constitutiones — Monumenta Germaniae Historica Legum sect iv vol 1
- Continuator Reginonis — Monumenta Germaniae Historica Scriptores vol 1
- Councils — M n i Concilia
- De Ordinando Pontifice Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 1
- De Unitate Ecclesiae Conservanda — Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 2
- Deusdedit Collector Canonum ed V W von Glanvell 1905
- Libellus contra invasores et simoniacos — Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 2
- Dicta cuiusdam de discordia Papae et Regis — Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 1
- Disputatio vel Dissensio Paschalis Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 2
- Edm r Historia Novorum Rolls Series
- Ekkehard Chronicon — Monumenta Germania Historica Scriptores vol 6
- Fulbert of Chartres Epistle — Migne Patrologia Latina vol 141
- Gebhardt of Salztur Epistola Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 1
- Gerbert Epistulae — ed J Ha et 1853
- Gregory of Rerhersbr — Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 3
- Gradi Federio I ed Monaci
- Godfrey of Vendome Libelli — Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 2
- Gregory V Epistulae — Migne Patrologia Latina vol 137
- Gregory VII Regnum ed Jaff Bibliotheca Rerum Germanicarum vol 2

- Gregory of Catino *Orthodoxa Defensio Imperialis* — *Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite* vol 2
- Gunther Ligurinus — ed Dümge
- Hatto of Mainz *Epistola* — *Mansi Concilia* vol 18 A p 204
- Historia Pontificalis* — *Monumenta Germaniae Historica Scriptores* vol 10
- Honorius of Augustburg *Summa Gloria Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite* vol 3
- Hugh of Fleury *Tractatus de Regia Potestate et Sacerdotali Dignitate* — *Monumenta Germaniae Historica Libelli de Lite* vol 2
- Hugh of St Victor *De Sacramentis* — *Migne Patrologia Latina* vol 176
- Hugo Cantor *Historia Roffis Series*
- Hugo M tellus *Certamina Papae et Regis* — *Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite* vol 3
- Humbert of Silva Candida *Adversus Simoniacos* — *Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite* vol 1
- Hunold *Carmen de Anulo et Baculo* — *Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite* vol 3
- Ivo of Chartres *Epistolae* — *Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite* vol 2
- John XIII *Epistles* — *Migne Patrologia Latina* vol 135
- John of Salisbury *Policraticus* — ed C C I Webb 1909
- Lambert of Herself *Annales* — *Monumenta Germaniae Historica Scriptores* vol 5
- Lanfrance *Vita* — *Migne Patrologia Latina* vol 150
- Leo IX *Epistles* — *Migne Patrologia Latina* vol 143
- *Vita* — *Migne Patrologia Latina* vol 143
- St Lietbert *Vita* — *Migne Patrologia Latina* vol 146
- Ulprand of Cremona *De Pibus Cistis Ottonis* — *Monumenta Germaniae Historica Scriptores* vol 3
- Maneold *Ad Gebhardum* — *Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite* vol 1
- Monumenta Bambergensia* — ed I Jaff *Bibliotheca Rerum Germanicarum* vol 5
- Monumenta Corbeiensia* — ed P Jaff *Bibliotheca Rerum Germanicarum* vol 1
- Narratio de electione Lotharii in Regem Romanorum* — *Monumenta Germaniae Historica Scriptores* vol 12
- Nicholas II *Epistles* — *Monumenta Migne Patrologia Latina* vol 143
- Otto of Freising *Gesta Frederici* — *Monumenta Germaniae Historica*

- Scriptores vol 20
- Paschal II Epistle — Monumenta Moguntina P Jaffe Bibliotheca Rerum Germanicarum vol 3
- Peter Crassus Defensio Henrici Regis — Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 1
- Peter Damian Disceptatio Synodalis — Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 1
- Epistles and Sermons — Migne Patrologia Latina vol 144
- Liber Gratissimus — Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 1
- Opuscula — Migne Patrologia Latina vol 145
- Placidus of Nonantula Liber de Honore Ecclesiae — Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 2
- Rangerius Liber de Anulo et Baculo — Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol
- Ratherius of Verona Praelectionum Migne Patrologia Latina vol 136
- Regesta Pontificum — ed Just Wattenbach
- Rodolphus Glaber Historiae — Migne Patrologia Latina vol 14
- Rufinus Summa Decretorum ed H Singer
- Siegfried of Mainz Epistles — Migne Patrologia Latina vol 146 and Monumenta Bambergensia Jaffe Bibliotheca Rerum Germanicarum vol 5
- Sigebert of Gembloux Chronicon — Monumenta Germaniae Historica Scriptores vol 6
- Leodicensium Epistola adversus Paschalem Papam — Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 2
- Silvester II De Informatione Episcoporum Migne Patrologia Latina vol 139
- Stephen of Tournai Summa Decretorum — ed J F von Schulte
- Suger Vita Ludovici VI — Monumenta Germaniae Historica Scriptores vol 26
- Thietmar of Merseburg Chronicon — Monumenta Germaniae Historica Scriptores vol 3
- Tractatus Eboracenses — Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 3
- Tractatus de Investitura Episcopali Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 2
- St Udalricus Vita — Migne Patrologia Latina vol 135
- Urban II Epistles — Migne Patrologia Latina vol 151
- Wenrich of Trier Epistola — Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 1

- Wido of Ferrara *De Scismate Hildebrandi* —*Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite* vol 1
- Wido of Osnaburg *Liber de Controversia Hildebrandi et Henrici*
Monumenta Germaniae Historica Libelli De Lite vol 1
- William the Conqueror *Epistle—in Gregory VII Epistolae Extra
Vigantes Migne Patrologia Latina* vol 148
- William of Malmesbury *Gesta Rolls Series*
- Wippo *Vita Chuonradi* —*Migne Patrologia Latina* vol 142



Index Of Names Referred To In Volume IV

- Abbo Abbot of Fleury
Adalbero nephew of St Udalric
Adalbero Archbishop of Rheims
Adalbert Archbishop of Mainz
Alexander II Pope
Alexander III Pope
Altmann Bishop of Passau
Ambrose St
Ambrosiaster
Annales Romani
Annals of Hildesheim
Anselm Bishop elect of Lucca
Anselm of Canterbury
Anselm Monk of Rheims
Aquilaia
Arnold of Brescia
Arnulf Archbishop of Rheims
Arnulf historian of Milan Church
Arnulf Bishop of Auxonn
Atto Bishop of Vercell
Augusburg
Avisgaudus
Bamburg Bishop of
Benedict V
Benedict IX
Benedict X
Beneventum Treaty of
Bernald
Bernard of Constance
Bernard St
Bernheim E
Berthold
Bisancon
Bonizo Bishop of Sutri
Breyer R
Brixen Council of
Bruno of Toul
Bruno Pope Gregory V
Bruno Bishop of Segni
Bruno D Belle Saxonico
Burchardt Count
Cadalous of Parma Antipope
Calixtus II Pope
Cannossa
Cachulfus
Celestine I Pope
Clement II
Clement Antipope
Clermont Council of
Cluny Abbey of
Conrad II Emperor
Conard son of Henry IV
Conard III
Constance Treaty of
Constantine I
Constantin Donation of

- Corsica
 Councils of
 Troslianum
 Augusburg
 Frankfurt
 Paris
 Mantz
 Rheims
 Cremona
 Rome
 Sutri
 Guastalla
 Lateran
 Nordhausen
 Pavia
 Toulouse
 Deimbert Archbishop of S ns
 Damasus II (Pope of Brixen)
 Pope
 De Unitate Ecclesiae Conservenda
 De Ordinando Pontifice
 Deusdedit Cardinal
 Dictatus Papae
 Disputatio vel Defensio Paschalis
 Papae
 Dummler E
 Ecclesiastical and secular autho-
 rities—
 Gelasius doctrine
 Otto III
 Conrad II
 Leo VIII
 Benedict V
 Leo IX
 Peter Damian
 Gregory VII
 Elster Battle of
 Fskil of Lund
 Eugenius III (Pope)
 Faenza
 Fredrick I Emper r
 Fulbert Bishop of Chartres
 G bhardt Archbishop of Salzbur
 Gebhardt Bishop of Eichstadt
 (Pope Victor II)
 Gelasius I
 Gelasius II Pope
 Gerhoh of Reichersberg
 Gierke Otto von
 Glaber Rodolphus
 Godfrey Abbot of Vendome
 Gotofrid elected Archbishop of
 Milan
 Grado
 Gregory of Catino
 Gregory I
 Gregory V Pope
 Hermann Bishop of Metz
 Hermann Archbishop of Cologne
 Hermann of Salm elected King
 of Germany
 Hildebrand
 Honorius of Augusburg
 Honorius II Antipope
 Hugh of St Victor
 Hugh King of Italy
 Hugh Archbishop of Lyons
 Hugh of Fleury
 Hugo Metellus
 Humb rt Cardinal of Silva Can-
 dida
 Hunald

Innocent I Pope	at Siena
Innocent II Pope	Otto I
Isidore of Seville	Otto III
Isocerannus Archbishop of Lyons	Papal deposition—
Ivo Bishop of Chartres	John XII
John IX Pope	Benedict V
<i>John XII Pope</i>	<i>Gregory VI</i>
John XIII Pope	Henry IV
John XV Pope	Papal election—
John XIX Pope	Leo VIII
John of Salisbury	John XIII
Kuno Cardinal	Clement II
Lambert of Hersfeld	Damasus II
Lanfranc Archbishop	Leo IX
Leo I Pope	Victor II
Leo III Pope	Stephen IX
Leo VIII Pope	Benedict X
Leo IX Pope	Nicholas II
Liege Attack by Paschal II	Paschal II Pope
Lietbert Bishop of Cambrai	Paschal Antipope
Lothair I	Patrician of Rome
Lothair III	Pavia Council of
Louis the Pious	Peiser Cerson
Lustprand Bishop of Cremona	Peter Crassus
Maccabean Period	Peter Damian
Maintz Council of	Peter Leonis Prefect of Rome
Manegold of Lautenbach	Peter Leonis Cardinal
Martin St of Tours	Peter St Abbey of
Mau Archbishop of Reims	Philip I King of France
Megenard	Palacidus of Nonantula
Merseburg	Poppo of Brixen
Milan Archbishopric	Rainald Bishop of Angers
Mirbt C	Rangerius Bishop of Lucca
Nicholas II Pope	Ratherius Bishop of Verona
Nithard Bishop of Liege	Reignos Chronicle
Odoramnus monk of St Peter	Rodolpus Glaber

- Rudolph of Suabia
 Rufinus
 Saltet Abbe Louis
 Sancho King of Aragon
 Sigebert of Gembloux
 Silvester II (Gerbert) Pop
 Stephen II Pope
 Stephen of Tournai
 Suabian revolt against Henery
 Suder of Bamberg
Theobald Count of Chartres
 Theodric Bishop of Verdun
 Theophano Empress widow of
 Otto III
 Thietmar of Merseburg
 Toulouse Council of
*Tr ctatus d Investitura Episco
 porum*
Tractatus Eboracenses
Transmarinum imperium
 Trier Archbishop of
 Troslanum Council
 Udalric St
 Urban II Pope
 Verdun
 Victor II
 Victor III
 Victor IV Pope
 Vincent St abbey of
 Wazo Bishop of Lieg
 Wenrich of Trier
 Werner Count
Wibert Archd acon of Toul
 Wido Bishop of Ferrara
 Wido of Osnaburg
 Wiger Archbishop of Ravenna
*William of Champeaux Bishop
 of Chalons*
 William I the Conqueror
 Wippo author of *Life of Conrad
 I*
 Worms Settlement of
 Worms Council of
 Wurzburg
-